

कालापानी



लेखक

वै. वि. दा. सावरकर

अनुवादक

श्री. आनंदवर्धन विद्यालंकार, दिल्ली



प्रकाशक
वि. गं. केतकर
अ वि. गृह प्रकाशन
६२४, सदाशिव पेठ, पुणे २



मुद्रक
वि. गं. केतकर
लोकसंग्रह छापखाना
६२४, सदाशिव, पुणे २

प्रकाशककी ओरसे

मराठी साहित्यके अुच्चकोटिके जो कलाकार-महोदय हैं, अुनमें बॅ. वि. दा. सावरकरजीको विशेष महत्त्वका स्थान दिया जाता है। आप निबंधकार हैं, कवि हैं, अुपन्यासकार भी हैं। इन सब विविध रूपोंमें आपकी लेखनी गतिशील, चमकीली ओर हृदयको आकृष्ट करनेवाली ठहरी है। यह सत्य है कि, आपने जो कुछ लिखा है, अुसमें आपने भारत-माताके सबंध-में जनताके कर्तव्यको जगानेकी भरसक चेष्टा की है। केवल मनरजन का साहित्य आपने कभी भी निर्मित नहीं किया है। प्रस्तुत “काला पानी” अुपन्यास भी अिस सिद्धान्तको अपवादरूप नहीं है।

जहाँ भारतके अनेक सुपुत्र जेलमें बंद कर दिये गये थे, जेलर और रखवालदारोंसे त्रस्त किये जाते थे, जहाँ निवास करने के बाद बचकर वापस आना असंभव माना जाता था, जहाँ स्वयं लेखक महोदय अँधेरी कोठरीमें जीवन बिताते थे, वहाँकी अर्थात् अन्दमान की कथा अिस अुपन्यासमें ग्रथित है। कभी कैदियोंको कुछ वर्षोंकी सजा भुगतनेके अनन्तर अन्दमानमेंही कारागृहके बाहर रहकर जीवन निर्वाह करनेकी सुविधा दी जाती थी। अैसे कैदियोंका जीवन, जगल तोड़नेकेलिये जेलके बाहर जानेका मौका आतेही कैदियोंकी मनोवृत्तिमें होनेवाला आन्दोलन, जेलके अन्दर सरकारी कर्मचारियोंके द्वारा कानून के अनुसार या अुसके विरोधमें भी ब्रदियोंकी होनेवाली भयानक मारपीट—अिन सब घटनाओंका जो वर्णन अुपन्यासमें चित्रित किया है, अुसे पढ़कर पाठक मुग्ध हो जाता है।

कथानकका आरंभ भारतमें होता है, अुपन्यास के पात्रोंको अन्दमान जाना पड़ता है, वहाँसे भागकर ये पात्र—माल्ती, अुसका बंधु दोल्काष्ट और माल्तीका रक्षक और अन्तमें अुसका पति किशन—सब मिलकर अेक

(२)

छोटी-सी नावमें भारत लौटने लगते हैं। अपने देशके किनारेके नजदीक हम आये हैं, इस तरहका कुछ आभास उन्हें जब होने लगा था, तब अकाअक प्रचंड मत्स्यकी फटकारसे उनकी नाव अलट जाती है। यहाँ उपन्यासकी समाप्ति होती है।

वीर सावरकरजीने 'जन्मठेपमें' अपनी जेलकी और अन्दमानकी परिस्थिति सुंदर और ओजपूर्ण शब्दोंमें अंकित की है। जब वह अनुपम पुस्तक जन्त हो गई थी तब उस विषयकाही सौम्य आविष्कार कहानीद्वारा—इस उपन्यासके द्वारा—जनताके सामने आया।

मूल मराठी उपन्यासके दो संस्करण निकले चुके हैं। राष्ट्रभाषा हिंदीमें यह पहलाही संस्करण छप रहा है। अनुवादका कार्य नयी दिल्लीके श्री आनन्दवर्धनजी विद्यालंकारने सुचारु रूपसे किया है इस लिये उन्हें धन्यवाद। विश्वास है कि पाठकगण इस रचनाको अपनायेंगे।

वीर सावरकरजीने यह उपन्यास प्रकाशित करनेका कार्य हमारी संस्थाको सौंप दिया, इस लिये उन्हें हम धन्यवाद देते हैं।

गीताजयति,
मार्गदर्षि, शु, ११
शके १८७१. १-१२-४९

} वि. गं. केतकर
कार्याध्यक्ष, पुणे अ. वि. गृह

अनुक्रमणिका

	पृष्ठें
१ मथुरा क्षेत्र में ?	१- ९
२ महत योगानन्द का भजन-रंग.... ...	९- १५
३. पर हमारी मालती कहाँ ? .	१६- २५
४. 'बता दे सखी, कौन गली गये श्याम ?'	२५- ३३
५. अलाहाबाद की जेल है यह ! . .	३३- ४९
६. अरे राक्षस ! क्या कर डाला यह ? ...	४९- ६८
७. 'रोशन !.बत्ती बाहर लाव !	६८- ८६
८ फूल नहीं— काँटा!	८७- ९९
९. समुद्र में डुबायेंगे क्या ?	९९-११६
१०. कटक बाबू क्या कहूँ ! .. .	११७-१३५
११. अदमान टापू ..	१३६-१५१
१२. 'मैयारी मरा ! मरा !!'	१५२-१८१
१३. मिल गयी न; तुम्हारी मैत्रिणी ! ..	१८१-२००
१४. मुँहपर फडाफड़ जड़ दिये थे !	२००-२१८
१५. हिंदू सस्कृति का नया जानपद	२१८-२३८
१६. "बाबूजी, छुपजाव पहले !"	२३९-२५९
१७. "यह देखा तुम्हारा चोर !"	२६०-२७५
१८. 'तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ' !	२७५-२८९
१९. "तूही ! तूही वह रफिअुद्दीन है।"	२८९-३०१
२०. —वह कौन — पुलिस ?	३०१-३१४
२१. सबकी आँखे भर आयीं	३१४-३३०
२२ ".....चली मातृगेह को "	३३०-३५१

कालापानी

मथुरा क्षेत्र में ? :

: : १

४४ बुद्धिमा, अक गाना तो सुनाओ ना, हम तुम्हे अतने मीठे मीठे और सुरीले गाने गा कर सुनाते हैं और तुम हमें अक भी गाना गाकर न सुनाओ ? यह कहो की रीत है भला । ” मालती ने झूले पर अक और अँचा झोंका लेते हुअे लाडभरे कठ से रमावाओ से कहा ।

“ बेटा, तुम अक की बात करती हो, मैं अक लाख गाने सुनाने के लिये तय्यार हूँ तुम्हारे लिये । पर अब मेरा गला तुझ जैसा सुरीला नहीं रह गया है । केले की छाल से डोरा निकाल कर असमें गेदे के फूल पिरोये जा सकते हैं, पर बेटा, जूही के फूलों को पिरोने के लिये रेशम का मुलायम डोरा ही चाहिये, नहीं तो माला के फूल खराब हो जायेंगे । प्रेमभरे गीत तेरे मीठे कठ में से होकर और भी अधिक मिठास ढोलने लग जाते हैं । अभी लिये, मैं कहती हूँ मीठे मीठे गाने तुझ जैसी लडकियों को ही गाकर सुनाने चाहियें । मुझ सरीबी माओ का तो मुनकर ही अन करण तृप्त हो जाता है । मैं अगर गाने लगू तो मेरे फटे वास के से गले में निकलती हुओ चीखभरी आवाज सुनकर गाने की सारी मिठास किरकिरी होजायगी और तुझे हँसी आयेबिना नहीं रहेगी । ”

“हँसी आयेगी तो आने दे। वह अद्भुत प्रतीत होगी, किसी बात पर न आयेगी हँसी ? पर्वह नहीं। पर मेरे मनोरजन के लिये ही क्यों न हो, तुझे दो चार पद सुनाने ही होंगे। देवता की पूजा में बैठते समय घटो गीत, पद और स्तोत्र पाठ करती है, तब नहीं लगती आवाज चीखती हुयी। पर मेरे ऊपर से दो चार पद सुनाते हुये आवाज फटती सी प्रतीत होने लगती है ? माताओं को सिर्फ लड़कियों के गाने सुनने ही का था तो माताओं के गाने योग्य गाने लिखकर रखे ही काहे को हैं लोगो ने ? पर माताओं के गाने के लिये कितने वात्सल्यपूर्ण गीत लिखे हुये हैं ? उनमें से कुछ तो मैं भी जानती हूँ, समझी ?”

“तो फिर, जब तू मा बन जायगी न, तब अपने बच्चे के लिये गाकर जरूर सुनावियो।” रमावाभी निर्मल अंतःकरण से हँसी।

“तबकी तब देखी जायगी, पर तू तो नहीं न सुनायेगी मुझे अकेलापन भीठा गाना ?”

और तत्काल माके साथ लिपट कर और उसकी ठोड़ी के पास अपने नन्हें नन्हें ओठ ले जाकर वह किशोरी उसे मनाने लगी,

“अँसी भी भला कौन बात है, तुम मेरी मा हो न, तब तुम नहीं सुनाओगी तो मुझे और कौन गाकर सुनायेगा माके दुलार भरे गाने ?”

“तुम मेरी मा हो न।” ये उस भिकलौती बिलिया के दुलार भरे शब्द कान में पड़ते ही रमावाभी के हृदय में वात्सल्य का स्रोत जिस वेग से अमड पड़ा कि—अंक दूध पीते बच्चे की तरह उसके सुरेख मुख को अपनी छाती से लगाकर उसका चुबन लेने के लिये रमावाभी के ओठ फडक अठे। पर माताका प्रेम जितना मुत्कट होता है, उतना ही अमर में आभी हुयी लड़की के साथ व्यवहार करते समय सकोची भी होता है।

मालती के गालों के बिलकुल नजदीक आते हुये अपने मुँहको पीछे ले जाकर उसकी मा ने अम वयःप्राप्त होती चली आनेवाली बेटी के मुँह को थोड़ी देर दोनों हाथों से दबाया और तत्काल हाथ पीछे लेती हुयी वह मालती को आश्वासन देने लगी,

“अच्छा, ले, सुनाती हूँ, पर बेटा, दो चार ही सुनाओगी अ।”

“ हा, हा, अब आयेगी असली मजा ! ” यह कहकर मालती ने झूले को जोर जोर से झोके देना शुरू किया । “ यह क्या, सुनाती काहे को नहीं, कामचोर गवय्ये की तरह ताल-मुर वगैरे ठीक करने ही में आधी रात गुजार दोगी क्या ? ” अिसतरह अेक बार फिर मालती के कोहनी के धक्के से सूचित किये जानेपर, रमावाभी के मुँहमें अूस वक्त जो भी गाना आया वही वे सुनाने लगी—

अेरी रत्नों की खान, अपनी—

मत जतला टसक, अैसी,
देख, गोदी में मेरी भी कैसी,—रत्न माला ?
आते जाते राजा के बेटे,
देखियो ना, चोरी—चोरी,
डीठ लग जायेगी मेरी —मालती को !
सौपती हैं अपनी सारी ,
संचित सुकृतों को ढेरी,
करें संरक्षण श्री हरी—लाडली का ।
चंद्रकला सी बढ़ती जावे
जन्मभर हे नारायण ,
कन्या मेरी सुलक्षण—अिकलौती !

गाने की धुन में ज्योही मुँह से अिकलौती शब्द निकला त्योंही अेकदम विच्छू के दण के सदृश किसी तीव्र मर्मव्यथा के स्मरण से रमावाभीका चित्त व्याकुल हो अुठा । अपनी बेटी को अैसे आनंद के अवसर पर अपने अत करण का शून्य चुभोकर व्याकुल करना ठीक नहीं यह सोचकर भले ही रमावाभी ने चेहरे पर खिन्नता की छाया न आने दी हो, पर वह गाना जो अूसके मुँह से बाहर निकल रहा था वही का वही अकम्मातू धम गया । मालती ने समझा, शायद गाने गाते मा की मास फूल गयी है, अिसी लिये वह चूप होगयी है । मा को थोडा विश्राम देने के लिये तथा गाने की जो धुन मशर थी अुममें भी किसी प्रकार का विघ्न अुपस्थित न हो अिसके

* पृष्ठ ३ और ४ के ये पद मराठी के ‘ओवी’ नामक छंद में लिखे गए हैं । भाषांतर भी अुनी छंद के समकक्ष करने का यत्न किया गया है ।—अनु

अुसने झट अपना सिर अपनी मा की गोद में रख दिया—तत्क्षण अुसकी मुखाकृति विषादयुक्त हो गयी और तुरत अुसकी आँखों में पानी अुतर आया । तत्पश्चात् अपने नित्य के स्वभाव के अनुसार अुसने अपना अश्रुपूर्ण मुख मा की ठोड़ी के समीप ले जाकर अत्यत व्याकुल स्वर में बोलना शुरू किया,

“अैसा क्यों भला, मा, मैं तेरे विषाद को कम करने के लिये तथा तुझे आनदित करने के लिये गाने लगी, भूल से तेरे दुख की खिपली ही अुखड गयी—जाने क्यों मेरे मुँह से अैसी गीतपक्तियों निकल पड़ी । ”

मालती के मन को वह भूल अितनी चुभती हुयी दिखायी दी कि, अुसकी मा को अपने पुराने दु खकी अपेक्षा अिस समय का मालती का यह राने का दु ख ही असह्य प्रतीत होने लगा और रमाबायी ने तत्काल अपना राना बंद कर के मालती का समाधान करना शुरू कर दिया,

“पगली कही की । अरी, तेरी गीत पक्तियों से नहीं—वरच मैं ही गीत सुनाते समय तुझे अपना अिकलौता वच्चा बोल गयी थी न, अुसी का मुझे अितना खेद हुआ है, समझी । परमेश्वर द्वारा दो वच्चे मिलने पर भी दैव ने मुझमें अेक छीन लिया और अब सिर्फ अेक ही अवशिष्ट रह गया है, यह बात मेरे हृदय को तीर की तरह भेद गयी । चुप हो बेटी, तूने मेरी दु खकी खिपली को नहीं अुखाडा है । अिसके विपरीत, अुस दु ख को किंचित् न्यून करनेवाला यदि कोयी रसायन है तो वह तेरे मुखपर आविर्भूत होनेवाला आनद का प्रकाश ही है । खैर, जो गुजर गया वह लौटकर थोडकी आने वाला है । तेरे भायी की तुझपर अितनी अधिक ममता थी कि अुसके वियोग के दु ख से भी यदि मैंने तुझे रुलाया तो वह मुझपर विगड खडा होगा । अुसका आत्मा जहाँ भी होगा वही वह तिलमिला अुठेगा । और तू मेरे लिये अुसी की स्थानापन्न है न ? तब तुझी में मेरे दोनों वच्चे समाविष्ट हैं—हैं न ? चुप । अरी, चुप हो । आज रातको अुस नये आये हुअे साधू के कीर्तन में जाना है न, चल, तो अुठ । अब मैं चूल्हा सुलगाती हूँ, तू झाड़ू-बुहारी कर । हमारा भोजन समाप्त होते न होते नायडू बायी बुलाने के लिये आ ही पहुँचेगी । ”

वे दोनों मा-बेटियाँ घर में गयी । यह अेक छोटा सा मुहावना सा घर रमाबायी ने गत मास ही मथुरा-वपेतर के निवास के लिये आने के वाद स्वतन्त्र रूप में किराये पर लिया था ।

रमावाभी के पति दो वच्चे होने के पश्चात् अेकाअेक गुजर गये । रमावाभी का जीवननिर्वाह आसानी से हो सके अितना द्रव्य और कुछ गहने अुनके पति अपने पीछे छोड गये थे । अुसी के बलपर रमावाभी ने अपने दोनों वच्चों का पालनपोषण कुछ वरस तक नागपुर की तरफ के अपने असली गाव में ही रहकर किया । आगे चलकर अुन के पुत्र को फौज में नौकरी लगी । वह अुधर चलागया और अब अुन के समीप मालती ही रह गयी । दोचार वरस ही में भारतवर्ष से बाहर आग्रेजों के साथ चलने वाले किसी युद्ध में भारतीय फौज भेजी गयी—अुसी में रमावाभी के पुत्र को भी जाना पडा । परंतु वहाँ जाने के पश्चात् वह लगभग लापता ही हो गया । अत्यंत परिश्रम के पश्चात् रमावाभी को अेकवार अेक अफसर की ओर से यह वृत्तांत ज्ञात हुआ कि, वह सैनिक किन्हीं कारणों से अपने अफसरो से लड झगड कर फरार हो गया था और कदाचित् वह शत्रुपक्ष की तरफ से मार डाला गया हो ।

अुस बात को बीते पाच-छे वरस का अर्सा हो चुका था । रमावाभी का पुत्र फौज में भर्ती हुआ सो अुधर ही समाप्त हो गया । अिस बात पर गाववालों का अितना अधिक विश्वास बैठ गया था कि, सब अिस बात को भूल ही गये थे । पर रमावाभी अिसे भला पूरी तरह से, कैसे विसरा सकती थी ? अुन्हे अपने पुत्र का विस्मरण नहीं हुआ था—अितना ही नहीं, अुनका पुत्र मर चुका है, और अब अिस लोक में अुसकी मूलाकात कभी नहीं होगी यह बात भी अुन्हे कभी-कभी सत्य नहीं प्रतीत होती थी । लडायी में मरे हुए सैनिकों के अत्यंत प्रेमी सम्बन्धियों में भी अनेक बार अिस प्रकार की मनोवृत्ति दिखायी देती है । अभी भी रमावाभी को अपने पुत्र की मृत्यु का सवाद सत्य नहीं प्रतीत होता था । यद्यपि किसी प्रकार की कोभी आशा नहीं रह गयी थी, तथापि यह शका दूर नहीं होती थी । अुन का पुत्र दूर देश में लडायी पर जाकर मर गया, अिन शब्दों का अुच्चारण भी अुनके लिये अत्यंत कठिन हो अुठता था, अत यदि कभी प्रसंग आही जाय तो वे अितना ही कहती कि, मेरा बडा बेटा अुधर लडायी में लापता हो गया है ।

पुत्र की मृत्यु का समाचार मिलने के पश्चात् दुःख से भग्न हुयी अुम मा के प्राण अपनी बची हुयी अिकलौती लडकी के स्नेह के अूपर ही

टिके हुंसे थे । मालती के लाड पूर्ण करने में अन्होंने किसी किस्म की न्यूनता नहीं रहने दी थी । वह जो बढ़ने लगी, चद्रकला के सदृश उत्तरोत्तर अधिकाधिक शोभापूर्ण दिखायी देने लगी । अुसके अुस दुलार भरे चपल किंतु सुशील बोलने चालने में अैसी कुछ मोहकता रहती थी कि केवल अुसकी मा के ही नहीं, जो भी कोअी अुसे देखता अुसी के नयनो को वह चतुर्थी की चद्रकला के सदृश आल्हाद प्रदान करती थी । सुंदर मोतियों को देखने पर स्वभावत ही वह किसी शोभायमान अलकरण की सामग्री होगी अैसा प्रतीत होता है, अुसी प्रकार मिस किशोरी को भी देखकर यह प्रतीत होता था कि, किसी मोहक, मंगल और सुखकारक जीवन के लिये ही मिसका निर्माण हुआ होगा । अुसके चौदह बरस अब पूरे हो चुके थे और अुसकी मा के मन में अुसके भविष्य के बारे में सुनहरी आशाओं और आकांक्षाओं का अेक अुद्यान का अुद्यान विकसित होने लग गया था ।

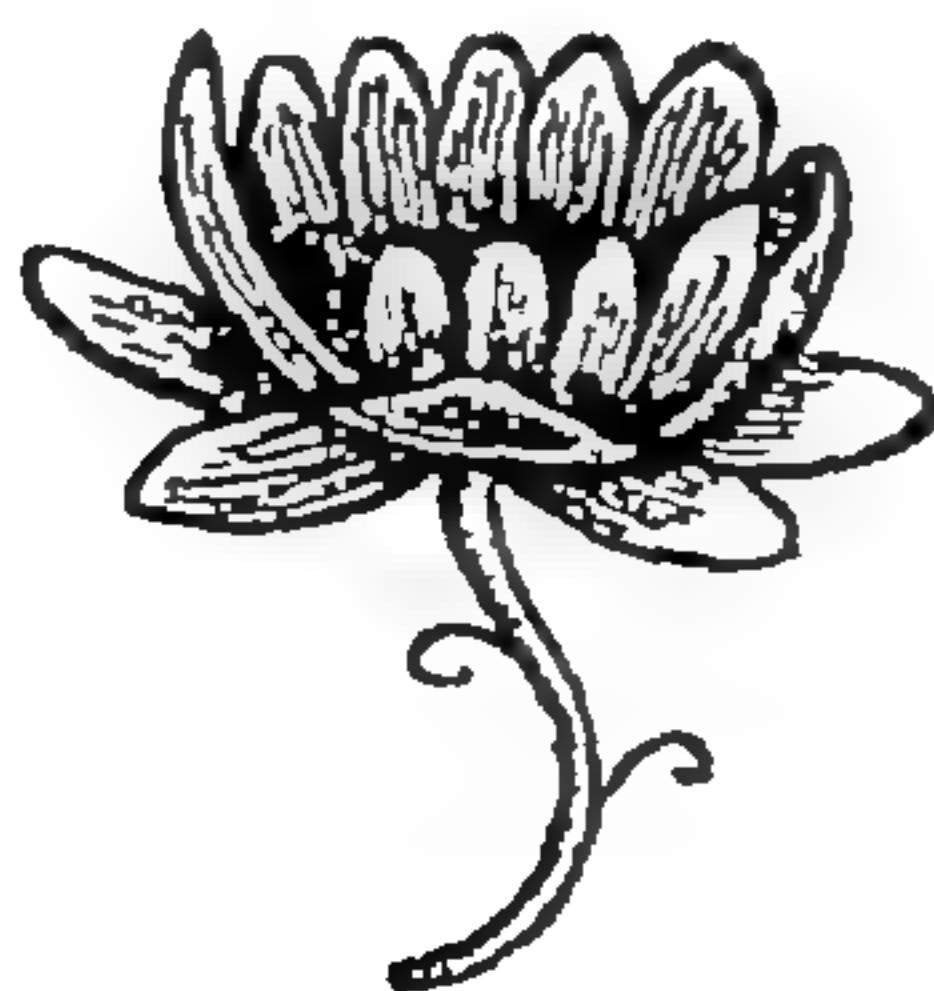
रमाबायी की बहुत पुरानी सखी अर्थात् सूतिका अन्नपूर्णाबायी नायडू आजकल मथुरा में नौकरी पर थी । अुन्हीं के आग्रह से तथा अुनके देवभक्त मनको तीर्थयात्रा की अभिरुचि होने के कारण से रमाबाई मालती को साथ ले १५ दिनों के लिये मथुरा चली आयी थी । मथुरा की प्रख्यात जगहे, मंदिर और साधु सतों का दर्शन करने के लिये मार्गदर्शक का काम नायडू-बायी ही करती थी । अुन्हे भी साधु सतों की बड़ी अभिरुचि थी । कोअी भी साधु मथुरा में प्रख्यात हुआ कि अुसका अुपदेश सुनने के लिये तथा अुसकी यथाशक्ति प्रसंग पड़ने पर सेवा करने के लिये अन्नपूर्णाबायी सहमा कभी कभी नहीं करती थी ।

अुनके घर के समीप के घाट पर गत मास जो योगानंद नाम का साधु अपनी शिष्यमंडली के साथ आकर अुतरा हुआ था, अुसके यहाँ आजकल अन्नपूर्णाबायी नायडू भजन-पूजन-दर्शनार्थ जाने आने लग गयी थी । अुस योगानंद के बारे में चारों ओर यह फैला हुआ था कि, अुसे भूत भविष्यत् तथा वर्तमान को जानने की दैविक शक्ति प्राप्त है । रात को अुस साधु के मठ में भजन कीर्तन का कोलाहल अपने पूर्ण जीवन पर आया कि सैकड़ों लोग नामसकीर्तन के रग में रगे जाकर भक्ति के आवेश में नाचने लग जाते थे । नायडूबायी के द्वारा

रमावाभी की जानकारी उस योगानंद साधू के कानों तक पहुँच गयी थी; अतः उन्होंने देवता का प्रसाद अपने हाथों से—अपनी विशेष कृपा के निदर्शन के तौर पर—रमावाभी के पास भिजवाया। रमावाभी मालती के साथ उस भजनोत्सव में भी गत दो-तीन दिन से जाने लगी थी। स्वतः योगानंद ने भी अंक दो मर्तवा थोड़ी बहुत पूछताछ करने की कृपा रमावाभी पर की थी।

योगानंद का गाव की बदचलन मढ़ली में भी अपहास न होनेपावे अतना अधिक देवभक्त, निर्लोभ, सरल तथा सादा व्यवहार था। भजन के रग में रग जाने पर उस सत्पुरुष की जग और देह की सुधबुध ही लुप्त होगयी हों, ऐसा दीखता था। उसकी मुख्य साधना भजनकीर्तन—यही थी। इससे भिन्न अन्य कोई भी ढोंग धतूरा उसके मठ में दिखायी नहीं देता था। शिष्यसंप्रदाय मात्र भरपूर था। उस साधु के पीछे चलते समय तथा मठ में रहते समय सदा अनुशासित रूपमें नजर आता था। मथुरा से उनका पडाव अब शीघ्र ही हिलनेवाला था। इस लिये इस आखीर के सप्ताह में भजन कीर्तन धूमधडाके के साथ चालू था। सैकड़ों लोग रातको वहाँ भीड़ मचाये रखते थे।

रमावाभी मालती को लेकर आज की रात भजनमहोत्सव के लिये वही जानेवाली थी। उन दोनों मा बेटियों का भोजन अभी समाप्त होने में न पाया था कि, अतने में उन के दरवाजे पर नायडूवाभी की थपथपाहट की आवाज सुनायी दी। तत्काल वे तीनों घाट पर के स्वामीजी के मठ की ओर जाने के लिये जल्दबाजी में निकल पड़े।



महंत योगानंद का भजन-रंग : : २

शुमावाभी जिस समय मालती को साथ लेकर भजन की जगह पहुँची, उस समय भजन अपने पूरे रंग में था। उस घाट पर चारों तरफ लोगों की भीड़ ही भीड़ जमा थी। हिंदी भजनकीर्तन की विधि के अनुकूल पचास-साठ गोस्वामी साधु सत हाथ में बड़े बड़े झाज लेकर योगानंद के अतराफ घेरा डाले जोर जोर से नामसकीर्तन द्वारा वातावरण को गुँजा रहे थे। मुख्य दमवीस शिष्य पखवाज, मृदंग, वीणा, आज प्रभृति वाद्य लिये ताल-स्वर-ठेका वगैरे ठीक ठाक किये योगानंद महंत के समीप तैयार खड़े थे। और उन सब के बीचोबीच महंत स्वयं कभी बैठे हुंसे, कभी भक्ति के आवेश में खड़े होकर, बूँचे स्वर में तन्मय होकर भजन बोल रहे थे। उस दूर की जगह से भीड़ को चीर कर अंदर जाने का रास्ता ही नहीं था। परंतु नायडूवाभी के परिचयानुग्रह से पहले से ही महंत के मंदिर में अन्हें स्थिरीकृत जगह पर लेजाकर बिठाने के लिये एक शिष्य को नियुक्त किया हुआ था। उसने उन लोगों को राह पर खड़ा देवते ही योगानंदकी आज्ञा से उन तीनों को ले जाकर बिठा दिया।

अधर भजन का जोर अपनी पूर्णविस्था पर था। श्रीमान् साधु तुलसीदासजी के एक पद का वह चरण उन सौ भजनीको के सौ कठों में एक साथ निकल कर सम्पूर्ण वातावरण में व्याप्त हो रहा था —

तुलसी मगन भये । हरि गुण गानों में
मगन भये हरि गुण गानों में ॥ ध्रु० ॥
कोभी चढे हाथी घोडा पालको सजा के ।
साधु चले पैयां पैयां चींटी यों घचाके ।
मगन भये हरि गुण गानों में ॥ तुलसी० ॥

आजो की झन्झनाहट रक्त के एक एक बिंदु के भीतर स्पंदन पैदा करने लगी। भक्तिरस के कुंड में मानो सारा समाज डूबा जा रहा था। हरिनाम के अतिरिक्त अन्य किसी भी मनोवृत्ति की ध्वनि सुनायी नहीं

पडती थी। अंक की आवाज दूसरे को सुनायी नहीं पडती थी। खुद की आवाज तक खुद को सुनायी पडती थी या नहीं, किसे मालूम ?

अतने में अुस अूँचे चढे हुअे शतकठ-निनादी स्वर को कम-कम करते हुअे पद्य के चरण योगानंदजी अकेले ही अितनी तालीन मुद्रा में बोलने लगे कि शिष्यादिक भजनीको ने झाजो का कोलाहल बढ कर चिपलियों (करताल) बजाना शुरू किया, 'तुलसी मगन भये हरिगुण गानो में' अिस चरण को लोटपोट कर सुकुमार स्वर में गाते हुअे योगानंद खडे हो गये।

योगानंद जी अुस पद का अर्थ नहीं बतलाते थे। पर जिनको वह समझमें आता था अुन्हे अुस भजन में अर्थों के पोथे के पोथे सुनायी देते थे। अिस जीवन की साधना हरकोअी अपनी अपनी रुचि के अनुसार करता है, हर कोअी आनंद प्राप्ति के पीछे पडा हुआ है, कोअी भोगद्वारा-कोअी योग द्वारा। जैसी जिसकी जितनी मनकी अुन्नति, वैसी अुसकी रुचि। 'स्वभावो मूर्ध्नि तिष्ठते।' तब बाह्य साधनो का बाद चाहिये ही काहे को ? तुम्हे जिस में आनंद की अनुभूति होती हो, तुम अुसमें रमो। औरो को जिसमें आनंद प्रतीत होता है वे अुसमें रमैगे। हा मेरे बारे में पूछते हो, तो "तुलसी मगन भये। हरिगुण गानो में। हरिगुण गानो में। हरि गुण गानो में।"

कोअी अूँचे-अूँचे चढन के पलंगो पर गादियो और गदेलो पर लोट पोट होने के लिये खटपट करते हैं, अुन्हे अुस में आनंद प्रतीत होता है। पर कोअी विद्यमान पलंग ही नहीं बल्कि कामुक पत्नियो को भी छोड कर बुद्ध भगवान् के समान बोधिवट के नीचे, खुले प्रदेश में जमीन पर ही पडकर सो रहते हैं, अुन्हे गाढी नींद वहाँ लगती है। गाढ निद्रा का लगना ही यदि ध्येय हो तो वह जिसको जहाँ लगे अुसका वही मोना योग्य है। मेरे अुपाय का अवलंबन तुझे करना ही चाहिये अैसी हठधर्मी क्यों ?

कोअी हाथीपर, कोअी घोडे पर, कोअी पालकी पर सवार हो बडी शान से अितराता हुआ चलता है, अुन्हे अुसमें ही आनंद मालूम पडता है। अुनका वही स्वभाव है। पर अिस साधु को देखो, अुसे हाथी पर चढना फाँसी पर चढने जितना ही दुखद है। हम पालकी में बैठें और दूसरे अुसे ढोयें अिम वृत्ति की अुसे शर्म अनुभव होती है। अितनी अधिक कि, पालकी का स्पर्श होते ही अुमे अँगारे के स्पर्श की प्रतीति होती है।

अतः वह पैदल चलता है, और उस वक्त भी रास्ते की चींटियों और कीड़ों से पैर को बचा कर नीचे की ओर आँखें गड़ाये। अतनी अधिक भूतदया की भावना उसमें रहती है। उसे उसीमें सच्चा आनन्द आता है।

कोओ चढे हाथी, घोडा पालकी सजाके।

साधु चले पैयों पैयों चींटियों बचाके।

पैयों पैयों। चींटियों बचाके॥

पैयों पैयों। चींटियों बचाके॥

यह चरण अत्यंत शांत, मंद स्वर में दुहराते दुहराते योगानन्द साधु अपने पग भी अंक अंक करके गिनते हुए शांति के साथ रखने लगा और वीणा के स्वर पर फिर फिर गाने लगा, "पैयों पैयों, चींटियों बचाके॥ साधु चले पैयों पैयों चींटियों बचा के॥"

उस समय तुलसीदास के पद में निर्दिष्ट साधू यही है ऐसा हर किसी को भास होने लगा। क्यों कि योगानन्द की यह खास आदत थी कि रास्तेपर, घाटपर, हाटपर, जहाँ कहीं भी वह जाता, नीचे देखकर और अंक अंक कदम अठा अठाकर रखता।

अपने अर्थात् साधुत्व को जिस तुलसीदास के पदों द्वारा जनता के हृदयों पर विवित करने ही के अद्देश्य से भलेही वह भजनकीर्तन न करता हो, पर वस्तुगत्या इसका प्रभाव जनता पर पड़ता अवश्य था। तुलसीदासजी की कसौटी पर भी यह साधु खरा अुतरता है, यह हर कोओ बगैर कहे समझने लगा।

अमे भजनोत्सव में ही आधी रात बीत गयी। आरतीके वक्त, साधुजीका चरणस्पर्श करनेके लिये लोगोंकी बड़ी भारी भीड जमा होगयी और उसी गडबडी में जब वह समुदाय लौटने लगा तो बक्का-मुक्की बढ़ गयी। इसीबीच, नायडू-वायी रमावायी और मालती जिघरमे बाहर निकल रही थी वहाँ अकस्मात् दसवारह आदमियोंका लडाई-झगडा शुरू होकर बड़ी भारी गडबड मचगयी। अुमे तितर बितर करनेके लिये साधुजीके पांच छै शिष्य हाथमें छडी लेकर अदर घुसे। जो जादमी जिघर में भागा वह अुवर ही लोगों को बकेलता हुआ ले चला। बीचमें जबर्दमन भीड घुसती चली आयी। उस भीड मडक्के में रमावायी,

नायडूवाभी और मालती तीनों अके दूसरे से विछुड गये-कौन कहाँ चला गया जिसका किसी को पता न रहा। पर जिसी बीच, बुरी तरह दिङ्मूढ हुयी हुयी, लोगो के पैरोतले कुचली जाते जाते बची हुयी रमावाभी का हाथ साधु के अके शिष्य ने पकड अुन्हे अुस भीड में से बाहर निकाला और कहा—
“साधुजी की आज्ञा से स्त्रियो को विशेष तत्परतापूर्वक अपने अपने घरों को रवाना करने के लिये हमें भेजा गया है। अब आप अपने घर चलिये।”

“पर मेरी मालती कहाँ है? मालती?” गडबडा कर और घबराकर रमावाभी पूछ ही रही थी कि अुसने झटपट अुन्हे आगे आगे ले जाते हुअे ही कहा—“सबको घर पहुँचवा आया हूँ—आप आगे चलिये—बस।”

आधी राह तक भीड में धक्का मुक्का खाते हुअे रमावाभी बाहर हुयी। शिष्य अुन्हे लगभग घसीटता हुआ ही खीच लाया “जाअिये, अब सीधा घर चले जाअिये। बाकी दो माताओं को पहले ही मैं वहाँ पहुँचा आया हूँ” अैसा आश्वासन देकर, अुत्तर सुनने के लिये, समय का अपव्यय न करते हुअे वह शिष्य अन्य किसी-भीड में पडी हुयी-स्त्री को बचा कर घर तक पहुँचवाने की बुद्धि से वहाँ से चला गया और भीड में अतर्हित होगया।

रमावाभी घडघड करती हुयी छाती से झपट कर पग बढाती हुयी घर की ओर चली। साधुमहाराज के भीड भडक्के से बाहर निकाल कर सुरक्षित रूप से घर पर पहुँचाने की व्यवस्था के अुपकार का स्मरण करती हुयी, तथा मालती दरवाजे पर अकेली बैठी राह देखती होगी और घबरा रही होगी-अैसा विचार करते करते अपने घर आपहुँची। अँधेरे में से ही अुन्होंने बरामदे की ओर देखा, पर मालती या अन्य किसी की कोअी आहट न सुनाअी दी। लालटैन लगा कर देखा तो क्या, दरवाजेपर ताला वैसा का वैसा लगा हुआ है! मालती आगे निकल आअी हो जिसका अके भी चिन्ह नहीं। भजन की समाप्ति के बाद जब धक्का मुक्की शुरू हुयी, वही किसी के पैरो के नीचे पडकर कुचली गअी मालती जोर जोर से रो रही है, अैसा भाग होने लगा।

“मालती! ओ मालती!”

रमावाभी ने न जाने किस अुद्देश्य से अुस जनशून्य अधकार में ही जैसे तैसे दो बार हाक मारी, तीसरी हाक मारने जाते ही अुनका गला रुध आया और रुलाअी आकर अेकदम वे नीचे बैठ गअी। अुस जगह कोअी भी नहीं

है, यह जानते हुअे भी सिसकियाँ भरते हुअे वे पूछ बैठी, "मेरी मालती कहा है? मेरी मालती आगभी क्या?"

वस्तुतः अुस समय अिस प्रकार घवराने का कोअी कारण नहीं था। साधूमहाराज के शिष्य ने जल्दवाजी में मगर स्पष्ट रूप से कह दिया था कि, "अुन सबको आगे पहुँचा आया हूँ?" यहाँ न पहुँचाया हो तो नायडू-वाजी के यहाँ ही पहुँचा दिया होगा में भीड़ में अकेली ही घिर गयी थी, पर वे दोनों साथ साथही रही होगी। अुन्हें साथ साथ रहना ही चाहिये। तब मुझे खोजते हुअे अितनी दूर तक अिस गडबडी में से आने के बजाय अुन दोनों ने वहाँ से समीप विद्यमान नायडू वाजी के घर में ही पहुँचाने के लिये अुस शिष्य से वितति की होगी।

अैसा विपरीत विचार रमावाजी को जँचने लगा। स्वयं जाकर वहाँ मालती को देखा जाय अिस बुद्धि में वे दो बार सडक तक आयी, पर तब तक मालती ही यहाँ आ पहुँचे और अुन्हे वहाँ न पाकर वह बेचारी फिर अकेली रह जायगी। और हो सकना है वह अुन्हे ढूँढने के लिये फिर लौट पडे। लंबा रास्ता, रातका तीसरा पहर, मधन अधकार, जाना ठीक होगा या नहीं, अित्यादि विचारचक्रों के अुलट फेर में पडते हुअे ही न जाने कब अुनकी आँखों को झँपकी लग गयी।

चौक कर जो अुठी तो मालती का विछौना पास ही में रिक्त दिखायी दिया। अिम में पूर्व वह विछौना अिस प्रकार कभी न दीखा था। हर रोज मबरे अुठने पर गाढ निद्रा में मोयी हुयी मालती के बिखरे हुअे सिर के बालों को हाथ से सँवारकर, अुमके मुँहपर हाथ फेर कर, ओढनी ठीक ढग से अुढाकर, हँसते हुअे मुँह से वे झाडने-बुहारने तथा छिडकने-लीपने के कामों में लग जाती। यह अुनकी रोजकी आदत थी। अुस विछौने पर वह दुर्ललित मुख आज दृष्टिगत नहीं होना था। छाती में बडकी भर गयी। अनिष्ट-सूचक विचार ही बारबार मन में आने लगे। पर अुनका मनोमयी भाषामें भी अुच्चारण न करते हुअे रमावाजी जो अुठी सो सीधा नायडूवाजी के घरकी ओर मालती की खोज में निकल पडी।

वे रास्ते पर चलते हुअे थोडीदूर ही गयी होगी—नायडूवाजी स्वयं अुनकी ओर आती हुयी दिखायी दी। —पर अकेली।

घवराभी हुयी आवाज में रमावाभी ने पूछा,—‘अयू’—मालती कहाँ है ? ”

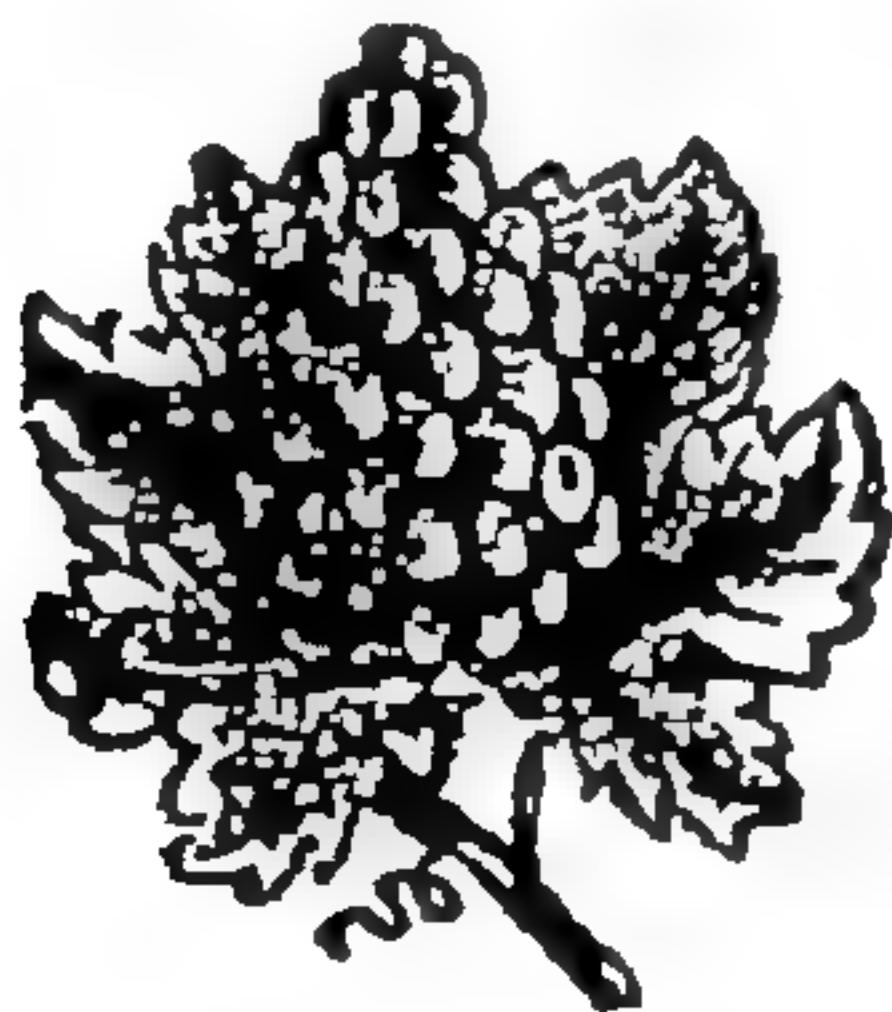
आश्चर्यपूर्ण स्वर में नायडूवाभी ने जवाब दिया—“अयू” मालती तुम्हारे साथ गयी है, ऐसा मुझे साधुजी के अंक शिष्यने ही कहा था । ”

“हे भगवान्, मेरी मालती, कहाँ होगी वह ? ”

गद्गद् युक्त रुधे हुये कंठ से बिन्ही किन्ही शब्दों में अद्भुत व्यक्त करती हुयी अंक छोटे वच्चे की तरह चिहुँक चिहुँक कर रमावाभी रोने लगी ।

नायडूवाभी अन्की अपेक्षा अधिक धैर्यशालिनी थीं—किंवा अन्की अकलौती अंक अपुवर कन्या तो अपहरण नहीं की गयी थी न, बिसलिये भी अन्का धीरज कायम रहा होगा । रमावाभी को हाथका सहारा देते हुये वे बोलीं, “असी क्या घवराती हो बिलकुल ! जैसे साधुजी महाराज ने तुम्हे हमें तथा अन्य सभी स्त्रियों को सुरक्षित रूप में अपने अपने घर पहुँचवा दिया था वैसे ही मालती को भी भीड़ में से बाहर निकाल कर अपने पासही कही सुरक्षित रूप में रख लिया होगा । चलो, साधुजी की ओर चले पहले, हो न हो मालती वही सुरक्षित है । चलो । ”

रमावाभी का धीरज अिस तरह वैवाते हुये नायडूवाभी साधुजी के मंदिर की ओर चल तो पड़ी, पर अन्के भी हृदय में—आगे क्या होगा, अिस आशका से कुहराम मचे बिना न रहा ।



पर हमारी मालती कहाँ ? : : ३

योगानन्द जिस मंदिर में अतरे हुये थे उसके प्रागण में उस दिन सवेरे, कुछ दर्शनार्थी और प्रश्नार्थी गण साधुजी के बुलावे की प्रतीक्षा में अघर अघर घूम रहे थे। परिचित-परिचित अलग-अलग २-४ का झुंड बनाकर, योगानन्द के भूतभविष्यद्वर्तमान के ज्ञान की प्रशंसा कर रहे थे। कोअी आशका कर बैठता तो दूसरा भावुक उसकी शकानिवृत्ति के लिये योगानन्द-द्वारा बतायी गयी भूतभविष्य की बातों के अुदाहरणों का जरा नोन-मिर्च-मसाला लगाकर वर्णन करता। स्वत योगानन्द कभी भी धार्मिक अुपदेश नहीं दिया करते थे—न कीर्तन में न व्यक्तिगत बातचीत में। सामान्यत वे किसी से ज्यादाह बोलते ही न थे। केवल अुन्ही लोगों को अपनी अेकांत कोठडी में बुलाते जिनके भूतभविष्यत् को देखने की अिच्छा अुनके मनमें आती थी। वहाँ महत गिने चुने प्रश्न पूछते तथा सुनते थे। तत्पश्चात् जलादर्श नामका अेक तात्रिक यत्र सामने लेते और प्रत्यक्ष रूप से उस यत्र में जो कुछ अुनकी दैविक दृष्टि को दीग्वता अुतना भर कह देते थे। किसीने यदि उसके खरे खोटे के बारे में कुछ कहा, तो वे उसके साथ अधिक वाद नहीं करते थे। 'प्रभुने बतलाया, मैंने कहा, सब झूठ प्रभुका अधिकार। मैं अेक उसके शब्दों का ध्वनि हूँ।' यह निश्चित अुत्तर वे देते और प्रश्नार्थियों को शिष्यों के द्वारा बाहर भिजवा देते। मिस जलादर्श में से भूतभविष्यत् के कथन के बदले में किसी से भी वे अेक दमडी तक न लेते थे। अुम परिग्रह-शून्य लोभ-हीनता के कारण ही अुनके वचनों पर न सिर्फ विश्वासशील व्यक्तियों का ही बल्कि अर्धसंशयी व्यक्तियों का भी विश्वास बैठता था। महत जी वाक्-मयम के नियम का पालन करते थे, अत अुनके मुँह से जो कोअी गूढार्थ-गर्भ शब्द निकल आता उसका अर्थ अपनी मर्जीके अनुसार लगाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र था। कीर्तन के समय सिर्फ भजन ही वे स्वत तन्मय होकर सुरीले राग में किरयासमभिहार पूर्वक बोलते थे। उस समय के अुनके तल्लीन-ता के आविर्भाव से ही लोग यह समझते थे कि अवश्य ही यह कोअी बडा सिद्ध पुरुष होगा। पर अुस कीर्तन में भी भजन के अतिरिक्त वे अन्य कुछ भी नहीं

कहते थे—प्रवचन का तो लेश भी नहीं—। 'भजन सतो का' सतो से ज्यादा मैं क्या कहूँ। 'यह एक वाक्य बस, अवसर पडने पर बोलकर वे चुप हो जाते थे।

पर योगानंदजी की इस मौनवृत्ति के कारण उनके वेदांत की गूढ़ता के सबब में लोगों के हृदयों पर अतना अधिक प्रभाव पड़ता था कि अनेक वेदांत-प्रवचनकार भी उनके सामने फीके पड़ जाते थे। लोग समझते, उनका ज्ञान अतना गूढ़ है, अतना गहरा है, कि उनके व्यक्तीकरण के लिये शब्द असमर्थ रहने ही चाहियें। 'गुरोस्तु मौन व्याख्यानम्' यही परम सिद्धि की पहचान है, ऐसा भावनाशील लोग आपस की बातचीत में कहते सुन पड़ते थे। खुली हुई बावड़ी की गहराई के बारे में थोड़ा बहुत तर्क लड़ाया जा सकता है, पर जिस बावड़ी का मुँह ही बंद है, उसकी गहराई की अगाधता जितनी बढ़ाते चलो उतनी बढ़ती चली जायगी। ऐसा—किंवा, व्याख्यान देने की शक्ति जिसमें नहीं उस गुरु के लिये भी 'गुरोस्तु मौन व्याख्यानम्' वाक्य का प्रयोग किया जा सकता है, ऐसा यदि कोई कह बैठता तो 'अरे जाने भी दो, उस कुतर्की के मुँह क्या लगते हो।' कहकर चारों ओर के भावुक लोग शोर मचाने लग जाते।

रमाबाई की उस साधु पर भक्ति थी। और उसी कारण वे उस रास्तेपर जाते हुअे थोड़ी शक्ति महसूस कर रही थी। योगानंद के मठ में मालती न भी हो—कल के भीड़ भड़के में वह कहीं खो भी गयी हो तो भी योगानंदस्वामी अपने जलादर्श यत्र में देखकर यह बतला देंगे कि वह इस समय निश्चित रूप से कहाँ है, तथा किस अवस्था में है यही एक विचार था जो इस भावना-प्रवण ब्रह्मालु मा को आधार दे रहा था। वह साधु अपने को इस विपत्ति में से अवश्य उबार कर रहेगा—असी बात का अन्धे सतोष प्रतीत हो रहा था। उस निर्लोभी साधु पर विद्यमान श्रद्धा की लकड़ी पकड़े हुअे लडखड़ाती अवस्था में भी वे मंदिर की ओर वेगसे चली जा रही थी।

नाथडूवाभी श्रद्धालु अवश्य थी, किन्तु विवेकगून्य नहीं थी। लुच्चे साधु अन्होंने देखे थे। पर अतने ही पर यदि कोई कह बैठता कि सारे ही साधु लुच्चे होते हैं, तो वे उसका वृत्ति तरह प्रतिवाद करतीं! योगानंदजीके बारे में उसका मत अनुकूल था। इसके दो कारण थे—एक तो वे किसी से दमड़ी

भी न मागते हुअे—अुतना ही बताते थे जितना अुनकी समझमे आता था—दूसरे, अुन्हो ने भूतभविष्यत् की जो बातें लोगो को बतायी थी, वे विलकुल झूठी है अैसा कहीं भी सुनने मे नहीं आया था । वह सच्छील, परोपकारी साधु पुरुष है, यह तो स्पष्ट ही था । पर अुसके समीप कोभी दैवी दृष्टि अेव अतर्जनि विद्यमान है, मिस विषय मे भी नायडूवाभी का विश्वास बढ़ता जा रहा था । थोड़ी सी शका मनमें पैदा होती थी अवश्य । वह अुसकी भीमान-दारी के बारे में नहीं बल्की भूत भविष्यत् का ज्ञान बतलाने की सिद्धि की अचूकता के बारे मे । अुसके सत्यासत्य की परीक्षा का मौका यह अच्छा हाथ आया, अैसा विचार नायडूवाभी के मनमें आया, साथही मालती पर टूटे हुअे विपत्ति के पर्वत की कल्पना करके अुनका कलेजा मुंह को आये बगैर भी न रहा ।

मंदिर के प्रागण मे ज्योही ये दोनों महिलाअे प्रविष्ट हुअी, त्योही महत्त का अेक शिष्य अुनके सामने पहुँचा और निश्चित मार्ग से महत्त के निवास-स्थान की ओर ले गया । वहाँ पहुँचने पर थोड़ीही देर में, अबतक जैसे तैसे दवाकर रखा हुआ अुच्छ्वास छोडते हुअे रमावाभी ने शिष्य से पूछा,

“ पर हमारी मालती कहाँ है ? मालती ? ”

शिष्य अुसके मिस अुतावले प्रश्न की प्रतीक्षा में ही था । आश्वासन-सूचक मुस्कराहट के साथ अपने दोनों हाथो के पजो को बरदहस्त की अवस्था में हिलाते हुअे स्वीकृतिसूचक ग्रीवा को थोडा झुकाकर अुसने ‘सब ठीक है’ अैसा सूचित किया । मिस से रमावाभी की जान में जान आयी । चिंता जिस वेग से न्यून हुअी, अुत्पुक्ता अुसी वेग से द्विगुण हो गयी । “ तो बुलवाअिये न अुसे, यहाँ कहीं भी वह नजर नहीं आ रही, क्या बात है ? जल्दी मेरे पास ले आअिये अुसे । ” अैसे विकल कठ से वह प्रार्थना करने लगी । शिष्य ने आकृति पर अैसा आविर्भाव लाकर कि ‘ निरुपाय होकर कुछ न कुछ बोलना ही चाहिये—अत बोल रहा हूँ—, अुत्तर दिया—

“ माताजी, गुरुमहाराज अभी बुलाते ही हैं आपको । धवराअिये मत । गडबड भी मत मचाना । ”

जिस तरह योगानंदमहाराज कम बोलते थे, वैसाही अुनके शिष्यो को भी आचरण करना पडता था । अुनकी आज्ञाके अतिरिक्त वे न किमी से

कोभी प्रश्न पूछ सकते थे न उसका वाचिक उत्तर ही दे सकते थे । जो लोग मिलने आते थे अन्हें भी सतमहाराज जितने प्रश्न पूछने दे अतने ही पूछने का अधिकार था । वहाँ की यह प्रथा नायडूवाभी को मालूम थी । अन्हो ने अिशारे से रमावाभी को रोकते हुअे कहा “ थोड़ी देर चुप रहिये । ”

अितन में महत की कोठरी के दरवाजे खुले । दोचार प्रअ्नार्थी गृहस्थ बाहर निकले । अुन दोनों को शिष्य अदर लेगया । पर मालती वहाँ भी नहीं नजर आभी । जब रमावाभी को अिशारा किया गया—‘ कहिये ’ तब अन्होने हाथ जोड कर पूछा,

“ मेरी लडकी मालती को आपने कल की भीड में से बाहर निकाल अपने पास सुरक्षित रखकर मुझपर जो अुपकार किया है, अुमे मैं कभी भूलूंगी नहीं । मैं अुसे लेने आभी हूँ । कहाँ है मेरी मालती ? ”

महत के अिशारेपर शिष्य बोला,

“ मातानी, आपकी लडकी को मैं भीड में से बाहर लाया और आपके घर की ओर पहुँचाने के लिये ला भी रहा था, पर वह अपने परिचय के अेक अस्स के साथ यह कह कर चली गयी कि, मैं अब अपने आप घर चली जाअूंगी । ’ अुसने यह भी कहा कि, “ वह मेरा निकट का सवधी है । ”

“ मतलब ? वह कौन ? ” बुझता हुआ घर फिर भडक जाय वैसे ही अुनकी बुझने को आभी हुआ चिन्ताओं की ज्वाला अुनके हृदय में अेकवार पुन जटाल रूप में भभक अुठी और वे अत्यन्त आर्तवाणी में पूछने लगी, “ महाराज, यहाँ हमारा कोभी सवधी नहीं है । महाराज, कुछ न कुछ घात होगया है । महाराज—”

निश्चयी मुद्रा में अपने हाथ की तर्जनी अुठा कर महत ने अुस स्त्री को ‘ ठहरिये ’ का अिशारा किया । रमावाभी का वह असवार्य भावावेग भी अुस-तर्जनापूर्ण किन्तु महानुभूतियुक्त अिशारे से तत्काल सवृत होगया । अुनके वे वाक्य, जो अेक के बाद अेक आकर बाहर निकलने के लिये अुनके ओठों पर अेकत्र हो रहे थे, वही के वही ठहर गये ।

महत ने अपनी आँखों को अर्ध निमीलित करके ध्यानमुद्रा का थोड़ी देग्नक अभिनय किया । तन्पश्चात् अत्यन्त दयार्द्र स्वर में बोलना शुरू किया,

“मय्या, तेरी लडकी नहीं खोयी मेरी खोयी है। परमेश्वर की अच्छा होगी तो देखो, अभी मैं उसे खोज निकालता हूँ। पर एक बात है, जितना पूछू उतना ही बोल, दीखे उतना ही देख, बोलू उतना ही सुन, पहले अपनी सारी मनोवृत्ति मुझे मौप दे। एक भी तेरा अपना विचार मनमें न आने दे। दे दिया न, मुझे अपना सारा मन रिक्त करके?”

“दिया महाराज।” ऐसा कहकर रमादेवी सचमुच शून्यमनस्क होगयी और महत की चेष्टाओं की ओर टक बाध कर देखती रही।

शिष्य ने गुरुजी के सकेतानुसार एक साफ परात लाकर सामने रखदी। उसमें लवालवा पानी भर दिया उस परान के कुछ ऊपर एक साफ आधीना दीवार पर टोंग दिया। एक समझी (दिशादानी) जला कर पास रखदी। महत योगानदजी ने मन्त्रोच्चारण करके एक चमसाभर पानी आँखों पर छिड़का—चारों ओर छिड़का और एकाग्र चित्त हो मन्त्र का जाप करते हुअे वे उस परात में विद्यमान पानी की ओर टकटकी बाँधे देखते रहे। मारे लोग अपनी साँस तक साधकर निस्तब्ध होगये।

थोड़ी ही देर में महत ने अपनी गरदन ऊपर उठायी और नायडूवायी से पूछा,

“अिनका एक बडा लडका भी है न?”

रमावायी चमक गयी। ‘अिन्हे कैसे मालूम पडा? सचमुच अत-ज्ञानी है यह पुरुष।’

पर नायडूवायी को विशेष अचरज नहीं हुआ वे बोली

“हा, मैंने वह पहले स्वयं ही आपको बतलाया था कि रमावायी का एक बडा बेटा था, वह लडायी पर गया था और वही वह मार डाला गया था—अुस वानको बीते अब ५-६ वरम का अरमा होगया।”

“पर वह मारा नहीं गया है। मैं यही कह रहा था कि, अिनका वह बडा बेटा जीवित है, और अच्छा हड्डा कट्टा है। यह देखो, मेरे सामने जैसे तुम लोग बैठे हो वैसे वह प्रत्यक्ष बैठा है—बोल रहा है।”

महत के प्रत्येक वाक्य के साथ साथ रमावायी ही के नहीं बरच, नायडूवायी के शरीर में भी आश्चर्य की विजली कौंधती चली गयी। रमावायी थरथरती हुयी आवाज में बोल गयी

“ मेरा बेटा ! जीवित ! परमेश्वर, तेरे मुँह में मिश्री पड़े ! ”

नायडूवाभी आश्चर्य के पाश में से अपने को थोड़ासा छुड़ाती हुई बोलीं,

“ पर वह भिन्ही का पुत्र है यह किस आधारपर ? क्या हो, पर मिथ्याभास—”

“ व्यर्थ का तर्क सार हीन है ! सुनो, बताता हूँ, वह भिन्ही का पुत्र कैसे है ? उसके माथे पर एक घाव का गहरा चिन्ह है ! क्यों था न वैसा ? ”

नायडूवाभी को इस बारे में कुछभी ज्ञान नहीं था। अतः उन्होंने रमावाभी की ओर देखा। रमावाभी हिचकिचायी, क्योंकि उनके पुत्र के माथे पर किसी भी किस्म का घाव का चिन्ह नहीं था। यदि वह नहीं था ऐसा कहे तो महत खोटा ठहरेगा और महत का अतर्जान झूठा सावित होकर मृतपुत्र के पुनर्जीवित होने तथा हृत कन्या की प्राप्ति की अत्यधिक समीप आयी हुयी सुखद शक्यता भी पुनः संशय में पड़ जायगी।

“ न हो तो साफ़ अिन्कार कर दो, हिचकिचाओ नहीं । ” महत ने टोका।

“ उस किस्म का कोई भी घाव का चिन्ह उसके माथे पर नहीं था ” रमावाभी विमोहाविष्ट मन स्थिति में अकेलाके बोल गयी।

“ अच्छी तरह याद कर, रना में भर्ती हो जाने के बाद तेरा बेटा, लटाभी पर गया था न, हाँ, ठीक है, यह घाव वही लगा है । ”

“ ओहो, ठीक है, महाराज, याद आया, बिल्कुल सही ! अपने आखीर के खत में उसने लिखा था कि उसके माथे पर चोट आगयी है, सच मुच ! आपका अतर्जान त्रिकाल सत्य है । ”

खुद रमावाभी को भी जिसकी याद नहीं थी तथा उन सबमें से किसी को पता तक न था, वह वृत्तांत इस महत को मालूम हो—वहभी अितने अधिक तत्पुवद्ध स्वरूप में ? और सत्य सावित हो ? अत्यंत सहजगत्या ? नायडूवाभी चकित हो गयी। रमावाभी के सदृश ही महत पर अब नायडूवाभी का भी श्रद्धाभाव न बैठे—यह असंभव था। वे अकदम परकीय अेव अपरिचित थी। महत ने अितने वेगसे उस पुत्र की अितनी निशानियाँ। था घर की जानकारी बनायी कि, अवश्य ही उसका पुत्र उसकी आँखों के समक्ष उसकी अतर्दृष्टि

में दीख रहा होगा।—पाखंड का पाखंड भी जिसमें इनकार नहीं कर सकता था।

रमावाही के अचरज का तो ठिकाना न रहा। अपने पुत्रके जीवन रहने के समाचारसे आनंद की लहरो द्वारा उनका हृदय अितनी हिलकोरियाँ खाने लगा कि थोड़ी देर के लिये मालती के खोजाने की याद भी विला गयी। अपहृत कन्यका के अन्वेषण में लगी हुयी मा को उसका चिर दिवगत पुत्र जीवित मिल गया।

“पर कहने की बात तो अभी बाकी ही है।” महत झटपट आगे कहने लगा, उस तुम्हारे पुत्र का यह मित्र देखो, वह और, हा यह देखो, मालती आगयी! ठीक! नागपुर की ओर ही तुम्हारा घर है न? हा, देखो, उस जगह मालती उसके साथ प्रेम का वार्तालाप कर रही है। यह ही है वह शस्त्र! कल उसी के साथ मालती गयी। हा विलकुल आनंद के साथ चली है देखो! विलकुल जैसे तुम लोग मुझे यहाँ दीखते हो, और यह जैसे सच है, वैसे ही वह भी मुझे दीख रही है और वह भी अतना ही सच है। निकले! रेलगाडी छूटी! क्या? अवधर अस्पष्ट! पर नागपुर की ओर! मालती अपने प्रियकर के साथ नागपुर की ओर चली गयी है।—होम् होम् हूम् वषट्! नेत्रत्रयाय फट्!”

अेकाग्र चित्त के अवधान में परिश्रात हुआ हुआ वह महत मन्त्रोच्चारण-समकालमेव शनकै हरिणाजिनपर मुद्रित-नेत्र पड गया।

शिष्य ने अनेक प्रश्नों और जिज्ञासाओं से आवरात चित्त उन दोनों स्त्रियों को अिगारे में चुप रहने के लिये कहकर वह यत्र तोड डाला। उसके साथ ही न जाने कहीं से अेक आवाज गूँजती गूँजती चली गयी और घटों का अेक समूहित निनाद खनखनाने के पश्चात् करमेण मद पड गया। परात, समभी (दियादानी), आमीना प्रभृति पदार्थ झटपट अपनी अपनी जगहों पर उस शिष्य ने रख दिये। हवा करते हुअे कुछ देर वह गुरुजी के पास बैठा और उन स्त्रियों से कहना शुरू किया,

“अब जिससे अधिक कुछ कहना संभव नहीं है। स्फूर्ति अतर चुकी है। केवल ‘आगे क्या करना चाहिये—’ यह सवाल पूछना हो तो पूछो। योगकी तद्रा अतरने से पहले पहले गुरुजी ने यदि कुछ कहा तो अतना ही सुनना

चाहिये, और किसी प्रकार की चर्चा न करते हुये लौट जाना चाहिये । कल की कल । ”

रमाबायी को अेक ही साँस मे अेकसौ सवाल पूछने के थे—महत की बतायी हुयी बातो ने अुनके हृदय मे अितना अधिक चिंतायुक्त विचारो का बवडर खडा कर दिया था । पर निरुपाय । अेक अुत्तर ने अुन सभी प्रश्नो को वही का वही जमाकर बरफ बना डाला । वह अुत्तर था अुस अुग्र शिष्य का ‘चुप’ रहने का अिशारा । फलत जिस अेक प्रश्न के पूछने की अनुज्ञा मिली थी वही प्रश्न रमाबायीने आकुल होकर पूछा,

“अब हम आगे क्या करे जिस से यह सकट टल जाय ? महाराज, कृपा करके—”

शिष्य ने “हैं । ” कह कर फिर अुगली का अिशारा किया । रमाबायी के वाक्य की लवायी ठहराये हुये नाप मे आगे बढ़ रही थीं ।

महत ने नीद के नशे में ही शरीर को थोडा हिलाया डुलाया और श्रुति अेव विसगत शब्दो मे अस्पष्ट बोलने लगा,

“हा ?—आगे । अच्छा । किसको भी अिघर अुधर मत बोलो । बोलोगे तो मालती बची खुची लाज विसरा कर तुम्हारी दुश्मन बन जायगी—यहा मालती के खोने के बारे मे किसीसे कुछ न कहना । अबी के अबी थेट नागपुर को जाव । लडकी मैदान में मिलेगी । पर देर करोगी यहा—अेक रात बिताओगी—तो मिलने की नही । नागपुर से—लडकी—बस, चलदेगी दूर दूर दूर । जाव जल्दी—नागपुर—मैदान मे । देख देख, देख । । यह देखो, मालती । आ आऽ आऽ वेटा,—आ । माके पास जा । ”

महत निश्चेष्ट पड गये । शिष्य बोला, “माताजी, टलगया तुम्हारा सकट । सुनी न तुमने अभी गुरुजी की बात । वे सावधात्कार के शब्द । अुन शब्दो के अनुसार काम करोगे तो लडकी वापस मिल जायगी—चलती हुयी आ जायगी । अिस प्रात मे, अिस जगह किसीमे कुछ न कहते हुये—ढिंढोरा न पीटते हुये आज के आज निकल कर नागपुर जा पहुँचो । लोगो में बदनामी होगी । वह मालती और अधिक निर्लज्ज होकर दूर भाग न जाये अैसी अिच्छा हो तो अेक शब्द न निकालते हुये जबतक वह नागपुर मे है तबतक तीन चार दिनमे अुमे जा पकडो । बस्—अच्छा है आअिये । हरे, हरे, हरे,

यह क्या, फल-दक्खिणा ? हरे, हरे, माता, फूल तक दूसरे का जिस देवता को चलता नहीं ! यह महत अक अलौकिक साधु है ! वैसे तो लाखों तुम देखते हैं ! परंतु माताजी, यह तो सावपात्कारी पुरुष ! अच्छा चलिये ! — अ ह, अब अक शब्द अधिक बोलना नहीं ! बाहर—।”

शिष्य के मुस आखिरी शब्दमें अतनी ठसक भरी हुअी थी कि अब अगर बाहर न निकले तो धक्का ही मार बैठेगा ! वे दोनों नमस्कार करके फल और दक्खिणा वापस ले चुपचाप अुन्ही कदमों से बाहर निकल आअी, चुपचाप मंदिर से बाहर आअी । रास्ते पर आतेही रमाबाअी कुछ बोलना चाहने लगी अतने ही में नायडूबाअीने सचेत क्रिया—

“अ ह ! रास्तेपर नहीं । जो कुछ बोलना हो वह घर में ।”

नायडूबाअी के ही घरमें पहले वे लोग गये । जाते ही नायडूबाअी ने पूछा,

“है क्या वह शस्त्र तुम्हारी जान पहिचान का ? तुम्हारे लडके का कोअी मित्र तुम्हारी लडकी के साथ असा निर्लज्ज व्यवहार करेगा क्या ? मालती किसी के प्रणयपाशमें थोडी सी फँसी हुअी थी क्या ? और तुमने असे अिनकार किया था क्या ?”

सबरे से लेकर अबतक रमाबाअी का मस्तिष्क अतने चमत्कारपूर्ण धक्को से हिलता आया था कि अब अुनके मस्तिष्क की विचारशक्ति ही अकदम बढ़ पड गअी थी । वे नायडूबाअी के आखिरी सवाल से तो चौंक ही गअीं और बोली—

“नहीं तो, अपनी मालती को मैं ने कभी भी जिस तरह अुलटा सुलटा बोलते नहीं सुना । तब ना वैसे और हा कैसी ? अब, जब कभी अपनी सहेलियों के साथ घूमने फिरने बाहर जाती तो वह सामान्यतः मंदिरों में जाती, कभी नाटक देखने भी गअी होगी—पर असा कोअी पुरुष अुसके परिचय का नहीं था । असी हालत में वह मेरे लडके का मित्र कहा में ?—मैं तो क्या कह सकती हूँ ! जगभर घूमा हुआ मेरा लडका ! पर मालती असी निकली ! हायरे दैव !”

“अह, दैव के तो देव के समान अुपकार हुअे हैं तुम्हारे अूपर ! पुराणों की कहानियाँ जिस युगमें घटित हुअी ! तुम्हारे मृत पुत्र का आज पुनर्जन्म हो गया नहीं ? तब खोअी हुअी लडकी के दोवारा मिलनेकी चिंता काहे को ?

मैं कहती हूँ, तुम अब सारे तर्क वितर्क छोड़ दो, उस महत के अके अके करके ठीक सावित हुअे हुअे अद्भुत अतर्ज्ञान पर विश्वास कर के उसके द्वारा बताये हुअे मार्ग पर ही जाओ । ”

“ वैसा कुछ नहीं, तुम आओगी तभी मैं जाऊँगी नागपुर को ” रमावाजी हठ ठान कर बैठ गयी । अपने पैरो पर वे अुठकर खड़ी ही नहीं हो सकती थी !

मालती के अुम कीर्तन के भीड़ भडक्के में खोये जाने का समाचार उस रात में किसीके भी कान पर न डालते हुअे रमावाजी और नायडू बाजी दोनों की दोनों आखीरकार, नागपुर की तरफ अुसी दिन निकल गयी ।



‘ बता दे सखी, कौन गली गये श्याम ? ’ : ४

रमावाजी और नायडूबाजी के तत्काल नागपुरकी तरफ रवाना हो जाने की वजह से तथा मालती के अपहरण के सबधमें किसी से कुछभी न कहनेकी वजह से, अुनके पड़ोसियों तक को इसकी खबर नहीं थी तब अन्य लोगो को तथा पुलिसवालों को खबर कहाँ से रहेगी ?

अुसी दिन रातको योगानदस्वामी का मथुरावासियों को अंतिम दर्शन होनेवाला था । आखिरी कीर्तन सुनने को मिलनेवाला था । क्योंकि स्वामीजी का मोर्चा भजन समाप्त होतेही हिलनेवाला था । स्वभावत ही लोगोकी भीड़ और दिनो की अपेक्षा ज्यादाह थी । अपने चार शिष्योंकी चौकड़ी के ठीक मध्य में दीणाहस्त योगानदजी खड़े होकर भजन गाने लगे । रग चढता गया । थोड़ी देर में स्वामीजीकी आज्ञा से वे हजारो लोग खड़े होकर नामघोष करने लगे, बड़े बड़े पक्खवाद्य, मृदंग, झाज-सारंगियाँ और हजारो तालियाँ अेक साथ झाकार करती हुअी अुस शतकठ निनादी नामघोष का साथ देने लगी—महत भक्ति के आवेश में आकर हाथ अूँचा करके ताल की गति द्रुततर करने के लिये निरंतर मिशारा करने लगे और अुस द्रुततर ताल पर नामघोष का अेकमात्र रण-सभ्रम मचाने लग गये । अुस समय अुस ध्वनि-सिध् की अुत्ताल अूमियों के साथ लोगो के हृदय कपित हो अुठे और हरकिसी

को ऐसा प्रतीत हुआ, मानो उसका देहभान ही विलुप्त हो गया हो । भक्ति के आनंद में तल्लीन होकर कितने तो नाचने लगे, कितनों की आँखों से प्रेमाश्रुओं की धारा प्रवाहित हो चली, नामधोष की गर्जना से सारा वातावरण ध्वनिकपित हो उठा ।

पर अतः में, लय साधकर महत ने दोनों हाथ भूँपर उठाये और “ शात हो जाविये ” का भिशारा किया । किसी बड़े भारी हार्मोनियम का, अतः संगीत के वहार में, भाता ही फूट जाय तो जैसे वह मूक हो जाता है, वैसेही वह विशाल सभा अकदम निःशब्द होगयी । अक हल्की सी आवाज भी कही नहीं सुनायी देती थी । प्रत्येक व्यक्ति उस सावु के मुँह की ओर टक लगा कर देख रहा था तथा किसी नवीन भावरमार्द्र भजन-पद की अत्कठापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था ।

गाढ निद्रामग्न पक्षियों के कुलाय में से प्राभातिक जागृति की प्रथम चिरमधुर गीतरेखा के सदृश उस निःस्तब्ध सभाकी शातता में से कुछ वषण पश्चात् शनकै अक सारंगी का मजुल स्वर पुनः अद्गत होने लगा । स्वामीजी के भजन का साथ देने वाले शिष्यों ने उनकी पसद का मीरावाणी का निम्न पद सारंगी पर रक्खा—

वतादे सखी, कौन गली गय श्याम ।

कौन गली गये श्याम ॥ घृ० ॥

गोकुल ढूँढी । वृंदावन ढूँढी ।

ढूँढि आयो व्रज वाम ॥ वतादे सखी० ॥ १ ॥

“ कौन गली गये श्याम । ” यह रसार्द्र चरण अतने मुक्तार्त कट से वह भक्त गाने लगा—शब्द शब्दको पर्याय से अँचे उठाते हुअे और नीचे ले जाते हुअे अतने मधुर आलाप लेने लगा—कि प्रत्येक के हृदय में अपने अपने प्रियकर की मूर्ति दीखने लगी । वे ही स्वयः अपने प्रिय को खोज रहे हो ऐसा भास होने लगा । ‘ कौन गली गये श्याम ? ’ सखे, वताओ न किस गलीमें मेरा प्रियकर छिपा बैठा है ? मैं गोकुल ढूँढ आयी, वृंदावन ढूँढ आयी, व्रज में भी देख लिया पर मेरा प्रियकर दिखायी नहीं देता । वताओ ना, वह मनोमोहन कहाँ है ? कौन गली गये श्याम ?

ससारपरवण तरुण तरुणियों के हृदय में उनके ऐहिक प्रियकरों की स्मृति जाग अठी और प्रीति की मधुर व्याकुलता सकप हो कर पूछने लगी “ कौन गली गये श्याम ? ”

अध्यात्मपरवण साधु-सत भक्तों के हृदयों को उनके प्रियकर का आकर्षण व्याकुल करने लगा । यह जीव जन्म जन्म के गोकुल-वृंदावनों में जिसकी खोज करता हुआ, जिसके आकर्षण से खिंचा हुआ, रस रूप-रग-स्पर्श के प्रसूनो वाले कुजों-कुजों में अुस आनंद-कंद देव की खोज के लिये अनवरत दौड़ता जा रहा है, अुसके दर्शनो की अुत्कठा आर्तस्वर से पुकार अुठी ‘ कौन गली गये श्याम ? ’ वताओ ना सखे, वह देव कहा है, जिसके आकर्षण से यह जीव विव्हल होकर युग युगात् से निरंतर दौड़ रहा है ? जिसकी मुरली के नाद से जीवित रहने की लालसा प्रबल हो अुठती है वही-हा वही-मुरलीधर कहाँ है ? कौन गली गये श्याम ? ’

वह रसाल पद चल रहा था , अितने में कर्णकर्कश दस बारह मोटरों के भोपू की आवाज सुनायी दी । अुस सात्त्विक मजुलता में रसमग्न हुई सभाको यह आवाज सुनकर अैसा लगा-पुष्पशय्या पर सोने के लिये जातेही अकम्मात् किसी ने कटु कर के डम लिया हो ! मंदिर के जिस प्रागण में यह कीर्तन चलता था, अुसकी तीनों दिशाओं में विद्यमान तीनों दरवाजों पर अुन मोटरों में से दो-दो मोटरे भो भो करती हुई घूमकर आखड़ी हुई । योगानंद स्वामी की कलकीर्ति बहुत दूर तक पहुँची हुई थी, बड़े बड़े लोग अपनी अपनी मोटरे लेकर दूर दूर से अुनका कीर्तन श्रवण करने के लिये सदैव आया करते थे । अुन्ही में से किन्ही की ये मोटरे होगी । तथापि कीर्तन के अैन रंगीन समयमें अिस प्रकार का रसभगकारी अौद्धत्य करते हुअे अिन मोटरवालों को कुछ तो सकोच अनुभव होना ही चाहिये था ! लोगों ने थोडासा त्रस्त होकर आपसमें काना फूँसी की । पर महत् योगानंदजी पूर्ववत् तद्गतेन मनसा गाते रहे ।

अितने में अेक तगडा, अुगर और अूँचा पूरा गृहस्थ (शस्त्र) प्रागण के सामने के दरवाजे में से अदर घूमकर ढिठाई के साथ रास्ता निकालता हुआ, वाक्पीठ (स्टेज) पर जहाँ महत्जी अपनी भजनी मडलीके साथ बैठे हुअे थे सीधा अुधर ही को जाने लगा । आसपास के लोग चिल्लाकर अुससे कहने लगे, ‘ नीचे बैठो ’ ‘ ओ महापुरुष ’ ‘ अरे बिठाओ नीचे, हाथ पकड़ कर

विठाओ बिसे' पर चिल्लाने या खिल्ली भुडाने की तरफ किंचित् भी ध्यान न देता हुआ वह वाक्पीठ के पास पहुँचा और किसी को न पूछता हुआ ही ऊपर चढ़ गया। भजन के रगमे मन पूर्वक रगे हुअे ओकाव भक्त के शरीर में दैवी आवेग का सचार होता है अथवा किसी अर्ध-विक्षिप्त मनुष्य की परचढ़ जन-समर्द के देखने से ही बात-भविष्य की सी स्थिति हो जाती है—वह बीराने लगता है। पर यह गृहस्थ तो अर्धविक्षिप्त भी नहीं मालूम पड़ता था, बाबला भी नहीं मालूम पड़ता था। म्वच्छ व्यवस्थित वेशविन्यास—तेजस्वी, तथा समजस मुद्रा थी उसकी। अतः वाक्पीठ पर अधिष्ठित होते ही महत की उस चौकड़ी में से ओक शिष्य ने अत्यन्त नम्रतापूर्वक प्रश्न किया,

“कहिये, आप क्या चाहते हैं? इस तरह ओकदम वाक्पीठ पर चढ़ना सभाविनय के अनुकूल नहीं है।”

पर उस गृहस्थ ने ओमे सुना अनसुना करके सीधे महत के पास पहुँच कर महत से कहा—

“तुम्हे बाहर ओक बड़े महानुभाव मिलने के लिये बुलाते हैं, चलो।”

महत ने उस गृहस्थ को स्वतः उत्तर न देकर शिष्य को अशारा किया। शिष्य बोला,

“अन बड़े महानुभाव को अदर आने के लिय कहिये, महत ओक देव को छोड़ कर अन्य किसी के भी अभ्युद्गमन के लिये नहीं जाते।”

उस शिष्य की ओर दुर्लक्ष्य करके वह गृहस्थ योगानदसे डपटकर बोला,
“तुम्ही को चलना होगा बाहर।”

उस डपट को सुनकर महत भी चमके बिना न रहे। “भजन की समाप्ति तक हमारा आना न होगा।” वे थोड़े से शकाग्रस्त हो लडखड़ाते हुअे बोले।

“तुम खुद नहीं आने तो मैं तुम्हे लेने के लिये आया हूँ, बोलो चलते हो या नहीं?”

“हा, यह अद्वैतपना यहाँ नहीं चलेगा।” शिष्य ने गुस्से में आकर उस गृहस्थ को फटकारा, “अैसे है तो कौन वे अिनने बड़े महानुभाव, नाम तो चनाअिये।”

“पोलिस मुपरिटेडेड साहब।”

यह सुनते ही योगानंद स्वामी की वह प्रशांत मुद्रा तथा वह भक्तिशील नख शिखात आविर्भाव अंक पलक में बदल गया और वह दूसरा ही कोभी तत्त्व-तरार-गुस्सैल और झगडालू तबीयत का आदमी नजर आने लगा । बुलाने के लिये आये हुअे शख्स ने पुलिस सुपरिटेण्डेंट का नाम भी अभी पूरी तरह नहीं लिया था अतः ही में अंक वज्र बलोत्कट मुट्ठीका मुक्का उसकी नाक पर जड़कर नीचे जो छलांग मारी, वह अतनी दूर थी कि,—वह लंबा तगडा आदमी नाकपर मुक्के के प्रहार से चक्कर खाकर अपने को संभालते हुअे उसके पीछे कूदा तो वह कूद उसकी आधी दूरी तक भी पहुँच न पायी । अतः चारों गिण्डो ने भी अपने धारदार चिमटे हाथ में लिये और योगानंद के पीछे ही वाक्पीठ से नीचे कूद पडे । ठसाठस बैठे हुअे लोगो में गोस्वामियो की अतः धडा धड मारी हुअी छलांगो से अंकदम बडा भारी हल्ला गुल्ला हुआ । चीखते-चिल्लाते अघर के लोग अुठ खडे हुअे, और धक्का मुक्की शुरू होगयी ।

पर यह सब अतः अप्रत्याशित रूपसे तथा शीघ्रता से हुआ कि लोगो की भीड के शोरो शरावा करने हुअे अुठने तक दूसरी तरफ के लोगो को घटना का ठीक ठीक ढंग से ज्ञान भी नहीं हुआ । और जिन लोगो की अतः दीक्षा कि, धक्का मुक्की शुरू होगयी है, महत छलांग मारकर लौट रहे हैं, अतः लोगो को भी अिस बात की बिलकुल कल्पना नहीं थी कि अैसा हो क्यों रहा है ? “अरे, बात क्या हुअी ?” हर कोभी अंक दूसरे से जोर जोरसे यही पूछने लगा । यह क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है, अतः प्रश्नो के मन में आने तक का भी टामीम नहीं मिला । बडाधड छलांग मार कर वह गोस्वामी मडली भीड में जो घुसी अंकदम अदृश्य सी होगयी । क्यों कि, नैकडो लोगो ने आकस्मिक चीखो पुकार की वजह से, धक्का मुक्की करते हुअे, आगे घुसे आकर अुस प्रागण में अंक अजीबो गरीब हंगामा मचा दिया था । वह अतः गोस्वामियो के लिये फायदे का ही रहा । कोभी बोला—“महत के शरीर में ‘महावीर जी का मचार हुआ ।’—हनुमानजी का सचार हुआ । अतः अेव वे अुडाने भरते हुअे रामचंद्र के देवालय की तरफ दौड रहे हैं ।” कोभी बोला—“किसी बेहूदे ने महतजी को तकलीफ पहुँचायी, अतः वे अूब गये ।” अुस प्रशांत भक्तिरस की शांतता में निमग्न होने के कारण कुछ लोग अिस सहसा अुत्पन्न हुअी हुअी चिल्लाहट और गडबडी से अंकदम

वेसुधसे हो गये । अूस साधु के सुगीले भजन वाले प्रभात प्रागण से से मुटाकर किमीने अुन्हें पहलवानो के अखाडे में लेजाकर पटक दिया हो, अैसा अुस दृश्य परिवर्तन (ट्रांसफर सीन) के होते ही अुन्हे भामने लगा ।

अिवर, पुलिस सुपरिटेण्डेंट का सदेसा लानेवाला वह आदमी जिस भामने के दरवाजे से घुसा था अुस दरवाजे की तरफ छलाग न मारते हुअ दूसरे ही दरवाजे की ओर छलागें मारकर भीड में गायब हो जाने का जो प्रयत्न अुन गोस्वामियो ने किया था वह जानबूझकर ही किया था । अुस दरवाजे की तरफ लगभग अैसे ही लोग बैठायें हुअे थे जो भजन के लिये नियमपूर्वक रोज आया करते थे, जो देखने पर बहुत ही श्रद्धालु दीखते थे और सबसे पहले आकर बडी आस्थाके साथ अपनी अपनी जगह पकड कर बैठा करते थे । अैसा आस्थाशील, कीर्तन-प्रिय समाज जिस दरवाजे पर था, अुसी दरवाजे से बाहर निकलना आसान होगा अैसा महतने अदाज लगाया । पुलिस सुपरिटेण्डेंट का सदेसा जिस सामनेवाले दरवाजे से आया था अुमके आसपास पुलिस वाले खडे होंगे अैसा मोचकर अुस चतुर महत ने तथा अुसके शिष्यो ने अुस दरवाजे को छोडकर श्रद्धालु लोगो से भरे हुअे दरवाजे की ओर बढ़ना अुचित समझा । अुम सदेसा लानेवाले आदमी के हाथों से छूटकर वे लोग अुस दरवाजे पर आकर पहुँच भी गये । अब क्या था ? अेक जोर की छलाग मारने भर की कसर थी कि दरवाजे से बाहर ।

अिस निश्चय के साथ वे पाचो गोस्वामी अुस दरवाजेपर जा भिडे और वहाँ विद्यमान श्रद्धालु लोगो से ज-दी से कहा—“ रास्ता छोडिये । ”

पर श्रद्धालु लोगो की वह भीड अेक अेक आदमी की कतार बना कर अेक दूसरे से कघा भिडायें अुन पाचो के चारो ओर अेक वर्तुलाकार दायरे में घेरा डाल कर खडी होगयी । अुनसे से प्रत्येक ने देखते देखते अपनी अपनी पिम्तीले निकाली और वे अुस गोस्वामी की ओर तान कर खडे होगये । अुनके मुखिया ने योगानंद को हुक्म दिया,

“ खडा रह यही, वरना अेक पैर आगे बढ़ाया तो ढेर कर दिया जायगा । ”

वैष्णवी तिलक, वैष्णवी मद्रा, माला, भगवे कपडे प्रभृति धारण किये हुअे, भजनमें नल्लीन नजर आने वाले, नित्य नियमपूर्वक प्रारभ से लेकर अनन्तक भोदुओ की सी शकल बनाकर बैठनेवाले और सीधे सादे नजर आने

चालें ये रोज के इरोता लोग आज अेकाअेक पिस्तौले तान कर अुस वेचारे साधुशील सत्पुरुष पर अुलट पडे ! देवावतारी भगवद्भक्त कहकर प्रत्यह जिस के पैरो पर माथा टेकते थे आज अुसी की जान लेने के लिये खडे होगये “ आखिर यह मामला है क्या ? ” दिडमूढ हुअे लोग आपस मे कानाफूसी करने लगे ! मैकडो भयभीत होकर प्रागण मे से बाहर निकल कर जाने लगे ! कुछ लोगो के मन मे सहानुभूति अुत्पन्न हुअी और अुन्होने अुस धर्म-परायण भक्त को छुडाने के लिये दगा करने की ठानी ।

पर अुस महत के ध्यान मे पूरी तरह से आगया कि, ये नाना प्रकार के वेशविन्यास करके आनेवाले तीस चालीस मी आभी डी के लोगही अिन तीनो दरवाजो पर प्रत्यह आकर भजनमे बैठा करते होंगे ! अुनका कपट अपने पर प्रकट नहीं हो पाया यह ठीक है, अब हम पूरी तरह अुनके पर्जे मे आ पडे है यह ठीक है— तथापि अन्तिम अुपाय समझ कर अुसने अत्यंत कर्कश और अूँची आवाज मे अुस भीड के लोगो को संबोधन करते हुअे कहा,

“ यहां धर्म का सच्चा अभिमानी कोभी नहीं है ? भगवान्, अब तूही अपने भक्त की रक्षा के लिये दौड । ”

यह सुनते ही कुछ भोले भाले गुस्मे मे आगये ! अुस महत के बारे में अुन्हे जो कुछ जानकारी थी, वह अुसमे अमीम श्रद्धा को अुत्पन्न करनेवाली थी ! अुस अपरिग्रही निर्लोभी, स्वधर्म प्रचारक भक्त पर किसे मालूम अीसाभी मिशनरियो ने कोभी खड्यन्त्र रचा हो— अैसी भावना मे कुछ माहमी स्वधर्म-भिमानी लोगो का पाग चढ गया ! पुलिस वालो पर दो तीन पन्थर भी आकर गिरे— गालियो की वौछार का तो कहना ही क्या है ?

अितने मे मुख्यद्वार से लाठीचद पोलीसो की टुकडी के साथ स्वतः पुलिस सुपरिटेण्ट अदर आये, बाक्पीठ पर चढे और रोवदार आवाज मे सब लोगो को संबोधित करते हुअे हुक्म देने लगे—

“ नगरवासियो, योगानंद नामधारी अिस शख्स ने यहाँ जो आजपर्यंत आडवर रचा है, अुमपर मे आप जैसे कायदा-पमद नागरिको को यह लगना स्वाभाविक है कि यह कोभी बडा भारी भगवद्भक्त होगा । पर हमे अिसके बारे में जो अित्तिला मिली है अुमसे आप लोगो की समझ मे आसानी ने आजायगा कि अिस शख्स पर श्रद्धा रखना नहीं था अिस साधु का भेस बनाकर

विचरनेवाले शरस का असली नाम मुनकर आपको तअज्जुब हुअे वगैर नही रहेगा । अिम योगानंद स्वामी का असली नाम रफिअुद्दिन अहमद है । यह पजाबी मुसलमान है । अिसपर पहले अत्यंत बरतापूर्वक दोवार डाके जनी करने का आरोप मिद्ध होकर अिसको पहले पजाब मे सात बरस की कालेपानी की सजा हुअी थी । अुसके मुताबिक अिसको कालेपानी भेज दिया गया । वहाँ से चार बरस बाद यह निकल भागा । गुजिश्ता दो बरसो में अिसने अिन चार चेलो की तरह अनेक दुष्ट लोगो को जमा करके फिर अनेक चोरियो डाकेजनी और अपहरण सदृश भयकर अुपद्रव मचाने शुरू कर दिये है । गुजिश्ता साल अिसकी टोली को पुलिसवालो ने जगल में घेर लिया था । अुस टोली ने पुलिसवालो पर गोलियो चलायी और अिसने पुलिस के अफसर को घायल कर दिया और अुसके घोडे पर सवार होकर यह दुष्ट साहसी भाग खडा हुआ । अुसके बाद वह लापता होगया । यह वही है, अैसा हमें जब सशय आया तब हमने, अिसके मयुरा आने के बाद अपने गुप्त पुलिसवालो को किस्म-किस्म के भेस पहनवाकर अिसपर पहरा बिठा दिया । ताकि अिमके बारे में पूरी तौर से जानकारी हा मिल कर के वारंट निकलते ही अिसके समस्त साथियो के साथ अिमको पकडा जा सके । अिसके बारे मे सब किस्म की जान कारी हमने हासिल की । अिसके साथियो से अिसकी जो निशानियो मालूम पडी थी अुस के आधारपर अिसे पूरी तरह पहचान लिया । अिलाहाबाद से अिसके नाम जो वारंट जारी हुआ है, वह यह है, यह आज ही साझ को हमारे पास अिलाहाबाद मे आया है । और यह टोली आज ही भजन के खन्म होने बाद गुप्त होकर निकलनेवाली है, यह सूचना हमें मिलने ही भजन के बीचमें ही अिसको गिरफ्तार करना निश्चित हुआ । ये जबरदस्त लोग अकेले दुकेले को कुछ नही गिनेगे, यह हमे पहले ही मालूम था । अत हम अिन पर अिस तरह सशस्त्र छापा मारना पडा । आप लोग यह समझ बैठेंगे कि अेक साधु पर जुल्म हो रहा है, और अिस विपरीत समझ के कारण किसी किस्म का दगा फसाद न होने पाये अिमी लिये हमे अिम बारे में अितना स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता महसूस हुअी । अब आप लोग दस मिनिट के अदर अिम मैदान को वाली करदे । अुसी तरह रास्ते पर भी कल सवेरे तक किसी किस्म का जमाव नही होना चाहिये । नही तो लाठी चलाकर पुलिसवालो को अुमे

तितर वितर करना पड़ेगा । वारंट के मुताबिक हमें अपना फर्ज पूरा करना ही चाहिये । उसका तथ्यातथ्य निर्णय करना न्यायालय का काम है । पोलीस ! दस मिनटों के अंदर भिन पाचो अपराधियों को वेटी पहना कर जेल की तरफ ले चलो, और यह मैदान साफ कर दो । । ”

दस मिनट के अंदर अंदर अून पाचो को हथकड़ियाँ और वेडियाँ पहना कर जेल पहुँचा दिया गया । और वह सारा मजमा खुदबखुद तितर-वितर होगया—अस मैदान में अब अेक भी आदमी नजर नहीं आता था ।

पर वह पकड़ा गया गोस्वामी वास्तवमें कौन था ? स्वामी योगानंद या रफीअुद्दीन अहमद ?

और मालनी ? असका क्या हुआ ?

अलाहाबाद की जेल है यह ! : : ५

डि अलाहाबाद के कैदखाने के कैदियों पर जिसे मुख्य जमादार नियुक्त किया हुआ था, उसे भिन बातका मस्त हुक्म मिला था कि, आज कालेपानी से भागकर आया हुआ पक्का डाकू रफीअुद्दीन अपने साथियों के साथ कैदखाने में लाया जानेवाला है, असके आने से पहले यहाँ के कैदियों को अेक शब्द भी मालूम नहीं होना चाहिये । और असके वास्ते पक्का अितजाम किया जाना चाहिये । “ अगर भिस बारे में थोड़ी सी भी गफलत हुअी तो याद रखो, जमादार, तुम्हारे पैरों में वेडियाँ पड जावेगी । ” अैसा कैदखाने के साहब ने जता दिया था ।

जेलर साहब के सामने तन कर खड़ा हुआ वह मुसलमान जमादार अंग्रेजी पद्धति का सैनिक मैल्यूट करके बोला,

“ जी हुजूर, वह बड़ा डाकू होगा । पर मैंने अैसे छप्पन डाकुओं को अपने आगे पानी भरने लगाया है । वह कालेपानी से भागकर आया होगा, पर असमें कहियेगा कि यह लालपानी है । भिस डंडे की अेक चोट

से खून की भुलटी कराने लगाभूगा !—कमर तोड़ कर रख दूंगा—कमर ! ” जमादार ने कमर में लटके हुअे डंडे को हाथ में लेकर हवा में अेक तडाखा भी जमा दिया !

“अह ! मारना वारना करने की जरूरत नहीं, समझे ? वे लोग अपने प्राणों पर अुदार हुअे हुअे गुडे है !—पुचकार कर काम निकालना होगा—तब है तुम्हारी करामात ! मारपीट करते हो तुम और भुगतना पडता है हमें ! ”

“अच्छा हुजूर, ये लीजिये, लटकाये देता हूँ यह डंडा अपने कमर से—अब मे अपनी लचकीली जीभ ही का अिस्तेमाल करूंगा ! हुजूर, मेरी जीभ अिस डंडे से ज्यादा करामानी है ! अिस डंडे से तो आदमी सिर्फ घायल होता है, यह जीभ तो अुमे जिंदा ही मार डालती है ! तलवार से गर्दन तोड़कर जान ली जा सकती है, मगर खून बहता है, जीभ से गर्दन को सही सलामत रखकर भी जान ली जा सकती है ! और प्रमाण के लिये खून का कतरा तक गिरा हुआ मिलेगा नहीं ! तभी तलवार से की गयी हत्या पकड में आ जाती है, पर जिसे जीभ द्वारा जान लेनी आती है, अुसे सौ हत्याओं की छूट है ! ”

“चूप ! लगा बकने को !—जाव ! तेरे डंडे की तरह तेरी जीभ को भी सँभालते सँभालते नाक में दम आ जाता है मेरी ! ”

“अच्छा साहब, जैसे डंडा कमरसे लटका लिया है वैसे ही यह लीजिये, जीभ भी लटका ली अपनी तालू से ! ” फिर अेकवार मुजरा ठोक कर जमादार बाहर लौटा !

“अे ! जमादार !—अदर आव, हमारा बूट कियर है आज ? Damn fool ! भूल गया तुम ? जाव लाव ! ”

बदीपाल (जेलर) की वह गाली अपने विस्मरण स्वभाव की कीमत करनेवाला अेक अंगरेजी शब्द है, अिस मतलब से जमादार ने अुसे सुना, लजाकर जीभ बाहर निकाली—दातों से काटी, तत्काल अुस अभिनय से भी लज्जित हो मुंहपर हाथ रखकर वह हँसा और अुसके साथ ही साथ चोर की तरह बाहर जाकर बूट ले अदर चला आया ! अपने मुंह पोछने से लेकर नाक छिनकने तक के सभी कामों में अुपयोगी पडनेवाला रमाल निकाल कर बूटों की झाड

फोछकर उस बदिपाल के सामने धीरे से रक्खा और रुमाल साफ करने के लिये थोड़ा झटकने लगा, त्योही मुंह की मिगरेट निकालकर बदिपाल बोला,

“अरे झटकता क्या है, रुमाल को । मेरे बूटो में तेरा रुमाल मैला नहीं हुआ बल्कि तेरे गलीज रुमाल से ये मेरे बूट ही मैले होगये होंगे । ”

“सचवात है हुजूर । आपका बूट ही मेरा अन्नदाता है साहब । आप के पैतानो की सेवा बारह वरस से करता आया हूँ, तभी तो आज सिपाही का जमादार होगया है यह बदा । ”

यह फिर बकते तो नहीं न बैठेगा, जिस भीति से उसे कोजी भी नया विषय न मिल सके यह सोचकर, पाम के टाबिप करते बैठे हुअे क्लार्क को सम्बोधित करके जेलर साहब बोले,

“अच्छा दादा, लाव तुम अपने कागज । दस्तखत वगैरे काहे पर करने हैं सो बताओ, देखे । ”

जमादार को चला गया देखते ही वह अधगोरा जेलर उस क्लार्क की ओर देखते हुअे, पर मन ही मन बोला,

“क्या मिटबोला है यह गर्दन मारनेवाला । अभी वे कैदखाने के डाकू भले मगर जिन सिपाहियों की शक्लमें जिन डाकुओं से तो भगवान् ही बचाये । ”

क्लार्क को यह मालूम था ही कि, भले ही जेलर ने नाम न लिया हो, पर उसकी भी गणना दूसरे ही वर्ग में है, असा जेलर साहब अभी वाक्य में कह रहे हैं । जेलर क्लार्क के समीप उन सिपाहियों के सबब में जो मत व्यक्त कर रहा था वही मत वे क्लार्क दादा और सिपाही अकेल में बैठने पर उन जेलर साहब के बारे में भी व्यक्त किया करते थे । अतः सदा जैसे को तैसा व्यवहार होते रहने की वजह से पीठ पीछे कहे गये शब्दों से कोजी भी व्यथा अनुभव नहीं करता था । प्रत्येक व्यक्ति के आंतरिक छिद्र प्रत्येक को विदित होने के कारण और प्रत्येक की बद मुट्ठीमें प्रत्येक का थोड़ा बहुत हिस्सा होने के कारण गत बारह वरसों से वह जमादार, जेलर और क्लार्क सभी अकेल संयुक्त कुटुंब की तरह अम जेल रूपी रियासत का कारोबार चलाते थे । नये नये पर्यवेक्षक (सुपरिटेंडेंट) आते और जाते, पर उस बंदी गृह की तरह ही जमादार, दादा, और जेलर का वह समिलित कुटुंब अटल का अटल ही रहता !

वदिपाल की आज्ञा सुनकर जमादार कैदखाने के अंदर जाते जाते मन में विचार कर रहा था। उसने दो लोहे के फाटक खुलवा कर अतवर्ती अकेल मध्यभागस्थित मैदान में पैर रखते ही हाक मारी,

“शिवराम ! शिवराम हवालदार कियर है ? बलाव अनुको ! ”

थोड़ी ही देरमें शिवराम हवालदार हॉफले हुअे, टाप पर टाप मारकर, तनकर खड़े होकर, मुजरा ठोक कर, जमादार के सामने खड़ा हुआ। सब लोगो का ‘चले जाव’ हो चुकने के बाद जमादार अकेले शिवराम से बोला,

“शिवराम ! आज कालेपानी से भागकर आया हुआ कोभी डाकू अपने साथियो के साथ यहाँ लाया जानेवाला है। जेलर साहब ने सख्त हुक्म दिया है कि यह खबर किसी के कानो पर न पडने पाये। ”

“अच्छा, जमादार जी। ”

“अच्छी तरह सुन, उस खतरनाक डाकू को अंदरके फाँसी के चौक में तनहाओ में बंद करना है, तेरे और मेरे मित्र और किसी को अंदर नहीं जाने देना है। ”

“जेलर साहब या सुपरिटेण्डेंट साहब को भी ? ”

“गवारूपना मत कर। ठट्ठे में, दान जिस तरह दिखाओ देते हैं, उसी तरह झड भी जाते हैं अकाध बक्त। कोभी झाडूवाला, रसोबिया, कहार, अंदर ले जाना हो तो हम दोनों में से किसी एक का उस बक्त हाजिर रहना लाजमी है। अगर किसी को उसके साथ बातचीत करते हुअे देखा, तो बाद रख, गला ही दवा डालूंगा तेरा। ” बिन तरह सख्ती से बोल बैठने के बाद उस अभिनयपटु जमादार ने अपने उस घनिष्ठतायुक्त हवालदार के गले में हाथ डाला

“किसी को भी बातचीत करने न दीजियो। ”

“जस्स, जस्स, मगर अभी काहे को गला दवाये डालते हैं मेरा—किसी को उसके साथ बातचीत करने द तब न, दवाधिरेगा ? देखें, कौन बदमाश उस डाकू से बातचीत करने आता है—फिर चाहे वह बिस कैदखाने का बडा जमादार ही क्यों न हो। —नही नही जमादार साहब, माफी चाहता हूँ। आपका हुक्म मैं कैसे लपज-ब-लपज बजा लाऊंगा यह कहने की शोक में वैसा बोर गया। ”

“अरे, पर मुझे जो चाहिये—अंक नुक्त—अं नजर से तू वही बोल गया है बाबा ! यह देख शिवराम, जो खुशकिस्मती के बारे में बोलना है, वह सब पहले पहल तू ही बोलियो ! जब तक तू पूरी तौर पर सब काम तय करके नहीं आयेगा, मैं अपनी जुवान से अंक ऊफज भी नहीं निकालूंगा । इस काम में तू ही है पक्का दाव पेंच जाननेवाला ! तभी तो मैं तुझे हमेना ऐसी विश्वास की जगहों पर तैनात करता हूँ । यह देख जब कभी ऐसा कोई असली डाकू पहुँचता है यहाँ, तभी हमारी कुछ खीर पकती है । ऐसे आसामी सौ-सवासी से नीचे तो क्या जायेंगे ! ऐसे ही लोगों के पास गिनियाँ देखने को मिलती हैं—यो रोजमर्रा के छोटे मोटे चोरो के पास क्या रहता है, जो हमारी जेब गरम कर सके ! वह कैदखाने से भाग न जाय—असका पक्का बदोबस्त रक्खा तो होगया खत्म हमारा सरकारी फर्ज ! यो अदर ही अदर, जो मौज अुसको अुडानी हो अुडाने दे—अगर हमारी खाली मूट्टियों को भर कर वह वैसा करना चाहता हो तो ! मगर खबरदारी से हा !—पहले देख, आसामी कैसा है,—अच्छी तरह टटोल कर—नहीं तो फट् कहते ही ब्रह्महत्या ! आया दिमाग में ? अच्छी बात है, अब जा अदर ! वह चौक, वह दालान, वह तनहाजी खाली करके, झाडकर, ताला लगा कर रखदे ! वह टोली आज शाम तक आ ही जायगी, पर किसी के सामने अुनके आने के बारे में अंक लफज तक नहीं निकालना ! ”

“अह, अुस बात की फिकर ही न कर ! ” ऐसा आश्वागत देकर शिवराम हवालदार वह पामीवाला चौक साफ सूफ करने के लिये चला गया । अुसने पहले ही थडक्के में अपने अंक विश्वस्त कैदी को बुलाया । अुस कैदी को आठ-दस बरस की सजा हुमी थी—काम की दिलचस्पी और लियाकत को देखकर अुमे हवालदार के हाथ के नीचे मुकद्दम बना दिया गया था । अुस कैदियों के मुकद्दम को शिवराम हवालदार ने फासी की सजा मिले हुअे तथा अितर घातपात करनेवाले भयकर कैदियों को अलग से बद करने के लिये नय्यार की गभी अेव बीच बीच में अिस्तेमाल में लायी जानेवाली कोठरियों के चौक को, दालान को, तथा तनहाजियों को झाड ब्रूहार कर साफ करने का जल्दबाजी का काम बतया और अत्यंत कडाजी के साथ जताया कि,

“आज यह चौक इस तरह खोलकर रक्खा गया है, इस बात की

खबर किसी को लगने न पाये । आजतक कभी नहीं रहा ऐसा बन्दोबस्त रखना है, बड़े भयकर डाकू हैं वे लोग । ”

मुकद्दम की जिज्ञासा बढ चली । मगर अुसने यह सोचकर कि अुन डाकुओ के वारे मे सीधे मुँह कुछ पूछने से बात को छिपाने की कोशिश वह और ज्यादा करने लग जायगा, अत बातको घुमा फिरा कर वह बोला,

“आप भी क्या फरमाते हैं, हवालदारजी, गुजिस्ता साल कालेपानी की सजा पाये हुअे लोगो की टोली जब यहाँ आयी थी, तब काले पानी जाने तक, आपकी दुआ से मैनेही तो अुन्हे सभाले रक्खा था न ? आपने अुनकी चिट्ठियाँ दी थी, अुन्हे जेल का सामान बेचने के वाम्ते बाहर जाने पर अुनके घर किसन पहुँचाया था ? ‘हलदी’ कौन लाया था मुठ्ठीमें भरकर ? अिम पठ्ठेने जान पर बीतने वाली कसरत बी थी वह हवालदार जी । ”

“अरे काले पानी को जाने वाले डाकू की बनिस्वत कालेपानी से भागकर आया हुआ डाकू कितना खतरनाक होगा बाबा । ”

“यह कालेपानी से भागकर आया हुआ कोबी डाकू है न, तब ? ”

“हा, चुप, वह मैं नहीं बताऊँगा—पर क्यों रे मुकद्दम, यह आसामी भी खासा गँठा हो तो अुमकी भी चिट्ठियाँ ले जायगा न, या कालेपानी से आया जान दुम दबा लेगा । जो ‘हलदी’ मिलेगी अुससे तुझे भी नये दून्हे की तरह हलदी से भी ज्यादा पीला कर दूँगा । ”

मुकद्दम को जो बात चाहिये थी सो सब मालूम पड गयी । “वैसा ‘हलदी’ का सारा काम मेरी तरफ रहा साहब । कालेपानी से कोबी भाग आया हो तो वह अिन्मान न रहकर भेडिया थोडबी हो जाता है ? ” (अुस जेलखाने की डिक्शनरी मे ‘हलदी’ का अर्थ सोने की मुहर होता है, यह बताने की जरूरत नहीं ।)

मुकद्दम को लेकर हवालदारजी फाँसीवाले दालान मे गये । मुकद्दम ने अपने हाथ के नीचे के बड़े-बड़े कैदियो के जरिये चौक, कमरे वगैरे भराभर माफ करवा लिये और अुन्हे आवश्यक प्रोत्साहन देने के लिये चुनी हुअी गालियो तथा हमेसा की डडे-मारी की ययायोग्य बौछार करनी शुरू की । यह देखकर, काम ठीक ढग मे चल रहा है, अिस अिनमीनान से हवालदार अुन कोठरियो मे मे अेक मे अपना पट्टाबट्टा खोल, पैर पसार कर, पेटा निकाले आराम लेता

हुआ पड़ गया । मकदमने अेक कैदी लडके को उसके शरीर की मालिश करने के लिये नियुक्त कर दिया । उस मजे की झोक में दालान के बडे दरवाजे को अदर से ताला लगाकर बंद करने की जरूरत भी हवालदार को अतनी महसूस नहीं हुअी ।

अितने में जैसे किसी पर भूत सवार होगया हो वैसे ही आवेशमें दौडते-दौडते जेलर आगे और उसके पीछे पूरी तरह दौड लगाते हुअे जमादार और दो तीन सिपाही उस खुले हुअे दरवाजे से भीतर दालान में घुसे ।

“ हवालदार, अे, किदर है हवालदार ? ” जेलर गरजा ।

“ अदर-अदर-वे वहाँ । ” गटवडा कर मुकदम हकलाया । और हवालदार को उसके मुकदरपर छोटकर-अपने काममें हम लगेहुअे हैं, असा दिखाने के लिये कैदियों को ‘ यह कर ’ ‘ वह कर ’ हुकम देने लगा और जमादार से बोला—

‘ सब कुछ साफ-सूफ, ठीक-ठाक होगया है । ’

अितनेही में वह जेलर “ किदर है वो साला ! हवालदार ! अे हवालदार ! ” अिस तरह बेलगाम गुरगुराता हुआ उसी कोठरी के बरामदे पर बूटों की आवाज करता हुआ चढ गया । अितने ही में वह हवालदार गडबडाकर अुठता हुआ उस कोठडी के सामने ही दिखाअी दिया । जेलर की पहली गरज के अेकाअेक सुन पडते ही हवालदार के होश पहले ही फास्ना होगये थे । सँभलकर अुठने की उसने बहुत कोशिश की—पर अभी वह आधा भी न सँभल पाया था कि, अेकदम जेलर सामने आकर खडा हो गया । लडका जिस पैर को रगड रहा था अुम पैर की यूनियार्म की पट्टी खुली हुअी थी, बूट निकाला हुआ था, दूसरे पैर की पट्टी ठीक ढगसे लपेटी हुअी थी और बूट पहना हुआ था, जल्दवाजी में टोप का सा वह फेटा सिरपर रखने जाते समय तिरछाही झुका हुआ था, और अुमका सोगा छूटकर किसी पहलवान की तरह कंधेपर से छातीपर गल रहा था, कमरका पट्टा दूर कोने में पडा हुआ था और फाटको की तालियों का गुच्छा उस कैदी लडके के हाथ ही में भूल से लटक रहा था—असा उस हवालदार का अस्तव्यस्त ध्यान बूट पहने हुअे अेक पैरपर ही खडा हुआ देखकर उस गुस्से में भी अपनी-असली विनोदी वत्ति के कारण जेलर को हँसी आये बना न रही ।

“क्यों जमादार तुम जो, हमेशा कहा करते हो कि विकट परिस्थिति के कामों में शिवराम हवालदार अकेले पैरपर तय्यार रहता है, वह विलकुल सच है। देखो, वह अकेले पैर में पुलिसका पोशाक चढ़ा कर सचमुच अकेले ही पैरपर खड़ा हुआ है। दूसरे पैर में उसने बूट तक नहीं पहना है। क्यों रे, वह अपना बूट रहित पैर और तरह केवल अलगसे अठा कर पकड़ने के लिए रखता ही काहेके लिये है अर्थहीन बम्बू की तरह? ठहर उसे अभी तोड़कर फेंक देना है। चोर?” जेलरने गुस्से में लाल होकर हाथकी लकड़ी का अकेले तडाका शिवराम के पैरपर कसकर जमाया।

“मैयारी। जेलर साहब, पैर पड़ता है, पर पहले मेरी बात तो सुन लीजिये, चलते चलते मेरे पैरकी पिंडली का गोला अकेले अना चढ़ गया कि मैं वोव मारने लगे जमीनपर ही गिर पड़ा। इस लिये इस कोठड़ी में, दबवाकर वह पैरका गोला अतरवा रहा था। सरकार, कृपालु इसमें अगर कोई कसूर हो तो वह माफ कीजिये।” हवालदारने अकेले वहां तो बनाया पर वह वहां ही रहा।

“माफ? कामपर रहते लगे पट्टा फेरकर फैलकर पड़ रहा तू यहाँ। तुझे माफ कर दू तो कल सारे सिपाहियों के पैरोंकी पिंडलियों के गोले जब मर्जी लगी तब इसी तरह अठकर चढ़ने लग जायेंगे। ला वह पट्टा अघर! जमादार, सिपाहियों के कमरका यह पट्टा इसके गलेमें कुत्तेके पट्टेकी तरह ऐसे लपेटो, अ-ह, अमे। हा ठीक। और इस को इसी हालत में, सारे कैदियों की कतारों में से अघर ऑफिस की तरफ बड़े फाटक के पास ले आओ। चलाव। (चलो-आओ)। तेरे बापका-अम सुपरिस्टेडेंट साहब का मुझे अभी फोन आया है कि, अकेले डाकुओंकी पकड़ी लगी टोली अभी आनेवाली है,—और तू यहाँ पैर रगड़वाने पड़ा हुआ है क्यों?—चलाव।”

सबके सामने अम हवालदारजीका वह विचित्र स्वाग, अमके पीछे मुंह पर रुमाल रखे हंसनेवाला वह जमादार, अमके पीछे वह मुकद्दम वे कैदी,—अम प्रकारका यह जुलूम आगे आगे,—रास्ते में जहाँ जहाँ कैदियों की कतारों में से जाना पड़ा वहाँ वे कतारों दोनों ओर ठहाका मार कर हँसती—और वह तमाशा देखता हुआ मन मनमें हँसनेवाला पर अघर में गुस्से में तना हुआ वह अघगोरा जेलर सबसे पीछे,—असी वह सवारी कैदवानों के बड़े फाटकमें विद्यमान दफ्तर के नजदीक आओ।

अतनेमें अुस भयानक कैदखाने के अुस मुख्य लोहे के दरवाजे की बड़ी बड़ी सीखचो को पकडकर बाहरकी तरफ खडा हुआ अेक गोरा सार्जेंट सगीने और वद्रूके ताने हुअे दस-पाच सिपाहियो के साथ खडा हुआ जेलर को दिखायी दिया । अुसके पीछेही सुनायी पडनेवाली वेडियो की खन् खनाहट भी सुनायी दी । जो डाकुओ की टोली आनेवाली थी सो आभी पहुँची यह बात जेलर के ध्यानमे आयी । सो अिस बाह्य सकटका मुकाविला करने के लिये गृह-कलह को मिटाकर कार्यतत्पर और विश्वस्त जमादार-हवालदारोकी अन्तर्गत अेकता करना प्रथम आवश्यक है, अैसा विचार करके अुस कैदखाने की बालिष्ठभर राजनीति के बखेडे को दूर करने के अिरादेसे अेक झटके मे जेलरने जमादार से कहा,

“ शिवराम को छोड दो । बेचारे की भद् काफी अुड चुकी । अुसमे बोझो, आगे से अैसा न करे । ”

जमादार भी वही विनति करनेवाला था । शिवराम कामका आदमी था । अदरकी मैशीनरी अुसीके हाथो चला करती थी । और अुसमे जेलर महाभाग का भी हिस्सा रहता था । जमादार और जेलर की आँखो-ही आँखो में यह भाषण-बगैर बोले हो चुकासा था ही, मतैक्य जमगयासा था ही । तत्काल शिवराम हवालदार के दोनो बूट, पगडी, पट्टा, चावियो का गुच्छा-अित्यादि सब अुसके शरीर पर यथा स्थान शोभायमान होने लगे और वह “ अे गद्दा, अिधर आव । अे चोर अुपर जाव । ” अैसी अनुशासनानुकूल भाषामें आज्ञा देते हुअे अपने हाथ के नीचे काम करनेवाले मुकद्दम कैदियो के बीच, अिस तरह घूमने लगा-जैसे गलीमें जूझनेवाला मुर्ग पुकार मचाता हुआ फिरता है ।

कैदखाने का वह विशाल दरवाजा कर्रर्र, अिस आवाज के साथ खुल गया । सार्जेंट अुस पैर मे वेडियाँ खनखनानेवाली डाकुओ की टोली के साथ भीतर आया । जेलरने अुसके सामने का अतवर्ती दूसरा लोहेका दरवाजा खुलवा कर मुख्य कैदखाने के भयानक परतु भव्य मैदान में अुन दम बारह कैदियो को कतार बाधकर खडा करवाया । अुनपर शिवराम हवालदार को देवरेख करने के लिये कहा और खुद दफ्तर मे जाकर सार्जेंट की तरफ मे सारे कागज समझवा लेने लगा ।

अधर अम मुकद्दमने कैदखाने में जाकर अपने विश्वस्त कैदियों को कभी का यह बता दिया था कि, आज कालेपानी से भागकर आये हुअे कुछ पक्के गुनहगार आनेवाले हैं। —पर यह बात किसी दूसरे को पता न चलने पाये। ”

अन कैदियों ने दूसरे कैदियों को तथा अन्होंने तीसरे कैदियों को किसीको न बताने की शर्तपर, कर्ण परपरया वह समाचार बतला दिया। इस तरह यह खबर हर अेक कैदी के कानमें पहुँच गयी थी कि, “आज कोभी कालेपानी से भागकर आया हुआ डाकू आनेवाला है, पर यह किसी को मालूम होने न पाये। ” अत जिस जिसको कोभी वहाना मिल गया वह वह कैदी, बॉर्डर, मुकद्दम, सिपाही अुस टोली को देखने की गरज से अुस मैदान के नजदीक आकर रैगने लग गया था। सिपाहियों का मजमा भी वहाँ खड़ा ही था।

अितने लोगो के सामने अैसे पक्के डाकू पर मैं अधिकार चला रहा हूँ, जिसवान की गविष्ठ जानकारी शिवराम हवालदारकी फूली हुयी छाती में समायी न जा रही थी। अपने कड़े अनुशासन का प्रदर्शन करके अन सब पर अपनी छाप बिठाने की जवर्दस्त अिच्छा अुमें हुयी और अन डाकुओं में से जो थोडा सा डरा हुआ सा तथा सौम्यसा डाकू, नजर आया अुम अेकको हवालदारने विलावजह ही उडा चुभोते हुअे कहा—

‘अे, सीधा खड़ा हो। यह घर नहीं है तेरा, अिलाहाबाद का कैदखाना है यह। यहाँ हरेक को तमीज के साथ खड़ा रहना चाहिये। ’

शिवराम हवालदारकी वह अँठमरी आज्ञा अुम सौम्य डाकूने सुनली। पर अुनमें से जो अेक अूँचा खुरीट प्रियदर्शन, दुष्ट, मुस्काते हुअे चेहरेवाला डाकू था, अुमको अुस हवालदारके रोवपर कुछ मौज मालूम हुयी हो अैसा नजर आया। हवालदारके पीठ फेरते ही वह हवालदार की अकड़ का स्वाग भर कर जोर से बोला,

“अे, सीधा चलो, यह घर नहीं है तेरा, अिलाहाबाद का कैदखाना है यह। ”

अपने को किमी ने पागल बनाया है, यह शिवराम के ध्यान में आया। आमपास के लोग हँसे। पर कालेपानी का वह पक्का डाकू यही होगा अैसी शका मनमें आनेपर शिवराम हवालदारने अदाज लगाया कि अुमके नामपर

जाकर अुसने गलती की और अुमका मुह बनाना जैसे अपने ध्यान ही में नहीं आया ऐसा दिखलाते हुअे वह दूसरी तरफ को घूमने लगा।

अितने में सार्जेंटका 'टॉम' कुत्ता अुम मैदानमें प्रविष्ट हुआ। अुसको अुस कठोर अनुशासनवाले कैदखानेमें भी किमीने नहीं रोका। मनुष्योकी अपेक्षा किन्ही देशोंमें कुत्ते को ज्यादा आजादी हासिल रहती है। अुनमें से भी वह सार्जेंटका कुत्ता था। गिवराम हवालदार अुसे सहलाने लगा। अितनेमें अुस खुर्रांट डाकूने बड़ी नम्रता के साथ हॉक मारी।

“ थोडा अधर आधियोगा जनावेमन, अेक अर्ज है गुलाम की। ”

“ अच्छा तो अिस धूर्त और अुद्धत आदमी पर भी मेरा दवदवा बैठ गया। ” ऐसा हवालदारने अुसके 'जनावेमन' अिस नम्र मबोधन को सुनकर ताड लिया और अुसकी ओर दयाभरे वडप्पन के साथ वह गया और बोला,

“ क्या चाहिये ? बोल, डर मत। ”

वह लुच्चा डाकू अदरही अदर हँसकर जोर से बोला,

“ मैंने आपको कहाँ बुलाया है ? मैंने तो अुस टॉम कुत्ते को बुलाया था। अुमसे कहना या कि, अिस तरह वदतमीजी से खडा मत रह। यह अिलाहाबाद का कैदखाना है। हरेकको यहाँ तमीज के साथ खडा रहना चाहिये। ”

फिर सारे कैदी और सिपाही भी हँस पडे। हवालदार सतप्त हो अुठा,

“ पूरे गदहे हो तुम लोग। ”

नम्रतया हास्य करते हुअे डाकूने अुत्तर दिया,

“ और आप हमारे सरदार! जो कहियेगा सो ही ठीक। ”

अुतने ही में जेलर अुस मैदानमें, सार्जेंट के साथ, अुन कैदियों की पहचान सार्जेंटकी ओर से रीतिपूर्वक करवा लेनेके हेतु से दाखिल हुआ। पहले ही घडक्के में सार्जेंटने जेलर को दिखाया वह खुर्रांट, अूँचा, सदा ओठो पर शरारत भरी मुसकान बनाये रखनेवाला गुनहगार।

“ यही है वह योगानद रफिअुद्दीन कालेपानी पर से भागकर आया हुआ कैदी! अिन डाकुओं की टोलीमें पहले नवरका आरोपी। ”

किसी राजाकी प्रशस्ति भाटके द्वारा गाये जाने पर जैसे वह राजा और ज्यादा रोव के साथ फूलने लग जाता है, तद्वत् वह आरोपी योगानद

अर्थात् रफिअुद्दीन भी उस अपनी प्रशस्तिको साजेंटके मुंह से बहुत तनकर सुन रहा था। लज्जा और भयकी तो दूर, चिंता की भी छाया उसकी आकृतिपर नहीं थी। उसके गाल भरे हुए थे। ओठों को बायीं ओर मोड़कर बायीं भौंहको चढ़ाकर, दहिनी आँख मिचकाकर अदर ही अदर छद्मपूर्ण हँसी हँसने की उसकी जो एक विशेष रीति थी—उसके अनुसार हँसते हुए वह बोलकर रुके हुए साजेंट से कहने लगा,

“साव ! ऐसी बेअिन्साफी काहे को भला, करते हैं आप ? मुझे चार मर्तवा कोड़े लगाये गये हैं, और कम-अज-कम १४ कैदखाने तो मैंने देखे होंगे—अितनी तो मेरे बारे में अिन प्रिजनरमाहव में आपको ज्यादा कहना चाहिये ! तभी मेरी जसली लियाकत अुन्हें मालूम पड़ेगी और उसके मुताबिक ही प्रिजनर साहव मेरी खानिरतवाजो और मेहमाननवाजी कर सकेंगे । ”

साजेंट की और उस डाकू की गत एक महीने से—जितने दिनों वह उसके हाथों में रहा, अुतने दिनों तक—खूब घुटती थी। और आरोपी के उस निरुपद्रवी बकवास में जो एक व्यग्र रहना था वह साजेंटको भी पसंद आने लगा था। जेलरको जेलरभाव कहने के बजाय रफिअुद्दीन जब प्रिजनर साव ! कह अुठा तब उसके अंग्रेजी भाषा के अज्ञान की गिल्ली अुडाने के लिये साजेंट जोरसे हँस पड़ा ।

“खूब, बहुत खूब, जेलका यह अफसर अगर ‘प्रिजनर साव’ होगया तो तुझ सरीखे जेलके डाकू बंदी को ‘जेलर साव’ कहने में कोअी हर्ज नहीं—नहीं क्या ? ”

“ऑफकोर्स मि साजेंट साव ! यम् ! आपकी बचची अिग्लिशको वह ठीक नहीं मानूम पडता होगा, मगर करेक्ट ग्रैमेटिकल अिग्लिश वहीं है जो मैं बोलता हूँ ! प्रिजन के मानी भी कैदखाना और जेलके मानी भी कैदखाना तब प्रिजनर और जेलर अिन दोनों शब्दोंका कोअी सा अेक ही मायना होना चाहिये न ? कायदे के मुताबिक तो जो जेलर वही प्रिजनर, प्रिजनर और जेलर दोनों अेकही धैले के चट्टे बट्टे ! अिग्लिश किसके साथ खानी चाहिये सो मुझे भी मालूम है समझे मि साजेंट साव ! ”

“योगानंद ही है तू । है । अच्छा क्यों रे रफीअुद्दीन, यह नहीं बतलाया तूने कि तुझे चार मर्तबा कोड़े की सजा काहे को हुअी ?—” सार्जेंटने जानना चाहा ।

“अुसकी वजह बिलकुल सीधी सादी है अगर अिन जेलर साब को गुस्सा न आये तो बतलाऊंगा । दो जेलरो ने मुझे मेरे कहे के मुताबिक अफीम खाने नहीं दी-अिसपर गुस्से में आकर मैंने अुनके सिरपर तसला अुठाकर दे मारा अिस लिये मुझे दो दफा कोड़े खाने पड गये । और दो जेलरो को मैंने अुनकी मर्जी के मुआफिक पैसों की घूस नहीं दी अिस वास्ते मुझे कोटे खाने पडे । ”

घूस खाने की बात बातचीतके दौरान में निकलते ही सार्जेंट साहब के पेट में गोला अुठा । किसे मालूम यह बाष्कल आरोपी अुसके अपने बारे में कुछ बोल बैठे तो । क्योंकि गुजिअ्ता दस-अ्दरह दिनों में सार्जेंटको भी चालीस पचास रुपये अुस आरोपीने खिलाये थे । हाथघड़ी (रिस्टवाच) देखनेमें गढे हुअे की तरह दिखाकर सार्जेंटने रफीअुद्दीनके अुस वाक्य की ओर दुर्लक्ष किया । बेल होगअी अैसा जेलरको सुझाकर अुस सारी टोली को जेलर के हाथों यथा रीति सुपुर्द करके सार्जेंट कैदखाने के फाटक से बाहर निकल गया ।

तत्काल अुन डाकूओं की टोली को फोडकर निराली निराली कोठड़ियों में अुन्हे बंदकर दिया गया । अुनमें से दो तीन के चेहरेपर चिता की भयानक छाया पसरि हुअी थी । अेक शख्स—अुसका नाम किशन था—तो बुरी तरह पश्चात्तप्त दिखाअी देता था । बाकी के सारे कैदघर में भी नाच-घरकी तरह निश्चित, निडर और पकेहुअे खुरांटों की तरह बरताव करते थे । सबसे ज्यादाह निडर और खुरांटे था वह योगानंद-अर्थात् रफीअुद्दीन अहमद ।

अुसे फौसी की तनहाअी में खाम बंदोबस्त के साथ रखा गया था । अर्थात् अुसके कमरे के पास जमादार और शिवराम हवालदार को छोडकर और कोअी भी नहीं जा सकता था । पर अुमी वजह से वह सबसे ज्यादाह चैनमें था । जैसी कि अुम्मीद थी—शिवराम के हस्तको द्वारा अुम डाकूके जो कुछ अैसे साथी अभी तक लुके छिपे अिलाहाबादमें रहते थे जिन्हें

पकड़ा नहीं गया था, अन्के पाम अुस कैदघर के रफिअुद्दीन की छुपी छुपी चिट्ठियाँ जाने लगी और खूब 'हलदी' अुस कैदखाने में जाने आने लगी। थोड़ी अफीम, खूब तमाखू और बीच बीचमें मिठाभी रफीअुद्दीनकी अुस अकेली कोठड़ी में गुप्त रूपसे पहुँचने लगी और अप्रत्यक्ष रूपसे अुसकी पोली धमक मोनेकी गिनियाँ जमादार, दादा और जेलर के खीसेमें पडने लगी।

योगानद के स्वरूपमें विद्यमान जटा, दाढ़ी, मूछे सब अुतर चुकी थी और रफिअुद्दीन अब अेक छँटा हुआ वदमाश मसलमान बना हुआ था। अुसे योगानदके भेसमें और भजनमें तल्लीन जिन लोगो ने देखा था, अुन्हें वह अेक डाकू मुसलमान है, यह सपने में भी सत्य नहीं प्रतीत हो सकता था और अुसी तरह अुसको जिन्होंने फाँसी की अिस तनहाभी में पक्के मुसलमान डाकूकी शक्लमें देखा है, वे अिसबात पर यकीन किसी हालतमें भी नहीं कर सकेंगे कि अेक बार अुसने अेक साबुका भेस बनाकर हजारो लोगो को झुलाया और झुलाया है। तबभी अुसमें योगानद का अेक लक्षण बाकी था—मुख-दु खे समेकृत्वा तुल्यनिदा स्तुतित्वका—। जब कोभी अुसमें पूछना कि, अब तुझे भयानक सजा होनेवाली है, अिसका भय या चिन्ता नहीं मालूम देनी तुझे ? तो वह हमेशा की तरह अपने ओंठोको मोडकर और भौंह चढ़ाकर अदर ही अदर हँस देता।

“अुसमें फिकर और परेशानी कैसी ? फाँसी तो मुझे होती नहीं—कालेपानी की अुम्र कैद हुअे बिना रहेगी नहीं।—और हमको कालापानीमें तो जो पुण्य और मजा आती है वह तुम्हारे काशीजी में भी नहीं मिल सकती। मक्काजी में भी नहीं मिल सकती। हम लोगो की कालापानी हि काशी जी है।”

“पर तुझे फाँसी होगी ही नहीं यह किस वृत्तेपर ? भयकर क्रूरता में कितनो को तूने जानमें मारा है—लडको लडकियों के गले काटे हैं—अुसे राक्षसी आरोप तेरे अुपर है। तुझे फाँसी होगी अैसा खुद जेलर साहब कहते हैं।” अैसा कभी गिवराम अुसे टोक बैठना तो वह हँसता।

“अरे, जेलर क्या जनता है। छप्पन भापा, छप्पन भेस, छप्पन कैदखानो का पानी पिये हुअे मुझजैसे डाकू को—प्रमाणो का, सजाका, अपराधो का, कायदेकानूनका जितना अनुभव से प्राप्त ज्ञान रहता है, अुतना अैसे

जेलरोको तो क्या, बड़े बड़े जजो तक को नहीं रहता । अुस ज्ञान के जोरपर हम जो डाके डालते हैं—वे कायदे से डालते हैं । जिन्हें हम जान से मार डालते हैं, मुन्हें भी अिस ढंग से नहीं मारते जिससे हमें फाँसी की सजा होजाय । हम अितने गदहे नहीं हैं । बाबा, तुम हिंदू लोगो की गीता भी मैंने पढी है ' हत्वाऽपि स अिमाल्लोकान् न हन्ति न निबध्यते ' अिसी को कहते हैं, ' योग कर्मसु कौशलम् । '

हिंदू अफसरों के मामने वह अिस किस्मके सस्कृत के श्लोक बोलता और भजन गाता कि अुन ने दोको यह लगता कि वह सचमुच कोअी अतर्ज्ञानी अवधून है और अिस तरह कंदस्वाने में हिंदू सिपाही बगैरों की भी अुसको सहानुभूति मिलती ।

मुसलमान अफसरों के सामने अूटपटाग बाते करने समय कुरान की दसपाँच आयते पढकर सुनाता और बची खुची दाढी पर दस मर्तबा हाथ फेर कर दिनभर निमाजही पढता रहता और कहता,

“ देखो, मैंने जोअी डाके डाले, जो लडकियाँ भगाअी, जिनके हाथपैर तोड डाले—और तुडा डाले, जानें ली, लूटमार की, वे सब काफिर हिंदू थे । अीमानदारों (मुसलमानों) के बाल को भी धक्का नहीं लगाया । अल्ला रहीम है । काफिरो को सजा देने की वजह से मेरे अूपर वह मेहरबानी ही करेगा । ”

“ विलकुल । ” वह मुसलमान जमादार कहता और तल का पता न लगनेवाली पुरानी अँधेरी बावडी में जैसे आँकते हैं अुसी प्रकार वह भी अुसकी आँखों में आँखें डालकर अपने मनमें बोलता,

“ यह कोअी न कोअी ओलिया, कोअी न कोअी खुदाअी खिदमतगार है, सचमुच । ”

जेलमें पक्के चोर-डाकुओं में जो जो मुसलमान रहते हैं अुनमें से सिंधी चल्ची, पठान, पजाबी अपराधी तो अपने खून, चोरियों और डाको का समर्थन अिमी युक्ति परपरा से करते हैं ।

“ हमतो केवल काफिर हिंदू को हि मारते हैं । लुटते हैं । ”

और अुनके वे पापकृत्य भी पुण्यकृत्यों के सदृश प्रतीत होते अेव कितनेही धर्मांध मुसलमान सिपाहियों और जमादारों को अुनके विषय में सहानुभूति प्रतीत होने लगती । अैसे सैकड़ों अुदाहरण देखने और सुनने का अवसर

स्वतः हमको भी प्राप्त हुआ है। इस विषयमें अपवादस्वरूप बगाली तथा मराठी मुसलमान अतने घमाँघ नहीं होते, अतनी बात थोड़ी सी अच्छी है। डाकुओं में से उत्तरदेशस्थ मुसलमानों का अमीलिये दक्षिणदेश के मुसलमानों पर ज्यादा भरोसा नहीं रहता है।

इस योगानंद अर्थात् रफिउद्दीनकी टोली में भी अतमें वही अनुभव आया। अतमें से जो आरोपी कारागारमें पैर रखते ही घबरा गये और डर गये—ऐसा हमने ऊपर लिखा है—अतमें से हसनभाभी नामका महाराष्ट्रीय मुसलमान और पश्चात्तापदग्ध किसन—अिन दोनों ने पुलिस वालों को अत टोली के बारे में बहुत सी जानकारी दी और अपने अपराध स्वीकार किये। अतकी अत स्वीकारोक्ति से पुलिसद्वारा अेकत्र किये गये स्वतंत्र प्रमाणों में महत्वपूर्ण सहायता हुई। सरकार ने अतपर अभियोग चलाया तथा अतकी निश्चिन की गयी तारीख की रफिउद्दीन परभूति सब आरोपियों को अितिला दी गयी।

अभियोग के दिन, जिस तरह 'वर' सजबज कर तय्यार होता है, अुसी तरह रफिउद्दीन ने भी अपनी सजावट की और पैरों की वेडियों को बड़ी अदा के साथ खनखनाते हुअे सिपाहियों के सगीनों के पहरे में कारागृहके दरवाजे से बाहर हँसते और खिलखिलाते हुअे निकला। अतको ऐसा लग रहा था कि सारा त्रिभुवन अतको अिस भावनाके साथ देख रहा है कि "यही ह वह पराक्रमी पुरुष जो कालेपानी पर से भाग कर आया है।" और अिस समय अतके दिमाग में यही आरहा था कि, अैसी कौनसी चाल चली जाय जिसमें जजको भी हँसा हँसा कर विलकुल ठडा करदिया जाय। अपने भयकर क्रूर कृत्यों की कथा सुनकर किन्हीं लोगों के शरीरपर काटे खडे हो जायेंगे, अपने को कुछ लोग राक्पस कह कर मुँह पर थूकेगे, अिस बात की बुकबुकी अतके मन में भी नहीं पैदा हो रही थी। स्मशानवर्ती धर्मशाला में पड़े हुअे मुर्दों को देखकर, लोगों के रोनेवोने को सुनकर तथा चिन्तापर जलते हुअे मुर्दों को निहारकर जिस तरह स्मशान के चौकीदार को श्मशान की भीति नहीं मालूम पडती अुसी तरह अत खुराट डाकूको भी न्यायालय, परमाण, सजा, वेडियाँ, कैदखाना, अुम्रकैद, कालापानी अिन्यादि सब बातों का अिनना अधिक अभ्यास हो गया था कि, अतको अत चीजों से कुछ भी डर नहीं

मालूम होता था । शैतान की ही भाँति उसने भी अपने मन से यही स्वीकार किया हुआ था—“Oh Evil ! Thou be my Good ”

उसका मन राक्षसी अथवा मानुषी वृत्तियों का एक अविभक्त कुटुंब था । जैसे वह राजमहल में नीरो वैसा ही यह काले पानी में रफिअुद्दीन ।

असुख यदि किसी बातका डर था तो, जैसे नीरो को मौत का था वैसेही फाँसी का ।—और यदि किसी से लगाव था, मायाममता थी तो एक अफीम की और दूसरी स्त्री की ।

न्यायालय में जाते जाते भी उसके मनमें एकदो मर्तवा घबराहट पैदा होती कि—कैसे मालूम फाँसी ही होगी तो । और एकदो मर्तवा वह क्रूर भी व्याकुल होकर मन में भर आया—

“मालती ! हाय हाय ! अब फिर कैसे फँसेगी वह लड़की मेरी मजबूत मुठ्ठियों में ।। ”

अरे राक्षस ! क्या कर डाला यह ? : : : ६

कोर्ट में उस भयंकर डाकू का अभियोग पूरी बहार में आया हुआ था । वकील, उनके मुहर्निर, सिपाहियों का सशस्त्र जमघट, पखेवाले, ऐसे डाकूओं के अभियोग देखने की विशेष अभिरुचि रखनेवाले बहुत से सम्मगृहस्थ, कुछ गुटे, वगैरह वगैरह की खासी भीड़ जमा थी । उस क्रूर नरपशु की नृशंस कथाओं को सुनकर न्यायासन पर बैठे हुए परिपक्व जजके हृदय को भी चोट लगती थी । पक्षपातशून्यता को भी असवाय करोध आता था । गुंडों के शरीरपर भी काटा खड़ा हो जाता था । नृशंस अथवा क्रूर श्वापदों को मनुष्य अपनी वस्तियों से निकालकर जंगलों में हँकाल देने में समर्थ हो सका, किंतु मनुष्य के मन के अंदर जो श्वापद आज भी घूम फिर रहे हैं उनको मनुष्य निकाल कर बाहर नहीं कर सका । मनके अतर्वर्ती भूमिगृहों के द्वार जब खुल जाते हैं तब ये श्वापद बुरी तरह भगदड़ मचाने लग जाते हैं—अस समय अन्हें

काबू करना मुश्किल हो जाता है। जिसे हम मनुष्यता के नाम से पुकारते हैं वह एक 'क्वेटा' नामक सुशोभित नगरी है, ऐसा समझिये। अुसी के नीचे सदा खौलते रहने वाले भूकपीय राक्षसता के थर के थर जमे हुअे होते हैं ! केवल दया-दाक्षिण्य, मायाममता, न्यायान्याय के ही आधारपर मनुष्यता खड़ी है और वह अविचल है, जिस भ्रम में पड़ा हुआ जो व्यक्ति असावधान हो सोता रहता है, वह अकेलाअकेला अप्रत्याशित रूप से विनष्ट हो जाता है। इसी प्रकार राष्ट्र के राष्ट्र लौट पोट हो जाते हैं।

रफिअुद्दीन भी एक मनुष्य ही था, क्यों कि वह हँसा करता था। कितनेही प्राणिशास्त्रज्ञोंका मत है कि अितर प्राणियो से मनुष्य भिन्न है, जिस बात को प्रदर्शित करनेवाला मुख्य वैशिष्ट्य अुसका हँसना है। मनुष्य ही सिर्फ हँसा करता है। यह अभियोग जिनके सामने चल रहा था, वे न्याय-मूर्ति ऑकलैंड साहब, जिस अघोरी आरोपी की तरफ सिर्फ अपराधी की निगाहो से ही नहीं देख रहे थे। जिस प्रकार वैद्य रोगियो की परीक्षा करता है, किंवा मात्रिक सर्पों के विष की परीक्षा करता है, अुसी प्रकार से वे अेतादृश अघोरी पापियो के स्वभावविशेष की परीक्षा किया करते थे। अपराधविज्ञान भी मनोविज्ञानहीका एक भाग है, अैसी अुनकी धारणा थी। इसी लिये वे प्रमाणो के साथ साथ अघोरी किंवा विविषप्त अपराधियो के मनोविकारो की, चेहरेकी, भाषणकी, हालचाल की, मन ही मन छानबीन करने में लगे रहते थे। और वह छानबीन हो सके, इसी अुद्देश्य में अपराधियो को आरोपी के कठघरे में रहते समय भी योग्य परिमाण में स्वाभाविक रूपसे बोलने चलने और हँसने-रोनेकी छूट दिया करते थे। अुनमें अपने आप वानचीत शुरु करके अुन्हे बोलने लगाते थे। जिस मकट के यत्रपाद्यमें आवद्ध होते ही बड़े बड़े दुर्जन भी थर थर कांपने लग जाते हैं, लजा-सकुचा जाने हैं, अुस मकट में भी रफिअुद्दीनको निश्चिन्त, निर्लज्ज, निस्कोच अेव हँसते हुअे देखकर न्याय मू ऑकलैंड साहब जो लगता था कि, जिसे अेकवार अेक-स्थिर ने देना होना तो अच्छा होता। अेकम्पयर ने अेक दुष्ट घानवी और गूढकृत्यकारी मनुष्य का, अेक पात्र के मुँहमें, यह लक्षण कहलवाया है कि, 'He seldom laughs' अर्थात् अुसे शायद ही कभी हँसी आती है। वह लक्षण कभी कभी कितना अप्रमाणित मिद्ध होता है, यह भी

असने किसी अन्य अवसर पर, किसी दूसरे पात्र के मुँहसे, कहलवाया होता । रफिअुद्दीन जितना कूर था, अतना ही वह विनोदी था, अेव जितना वह दुर्वृत्त था अतना ही वह प्रियदर्शन भी था । न्या मू ऑकलैड मनही में कहते, असने अेक महाकवि के अपरिनिर्दिष्ट सूक्त ही को नही प्रत्युत दूसरे महाकवि के 'नह्याकृति स्वसदृश विजहाति वृत्तम्' अस कालिदासीय सूक्तको भी वितथ कर डाला है । सुदर मनुष्य सद्वृत्त होता है—अैसा कोभी नियम नही है । अितना ही नही, असके दुर्वृत्त से भी असकी सुदरता कभी कभी अधिक विषैली सावित होती है । गुलाबो के सघन पुष्पावृत कपुसमूहो के आवरण के पीछे कपट का परभाग भी वही विद्यमान है, यह वह अवगत तक होने नही देती ।

पुलिसवालोने अस डाकुओ की टोलीद्वारा किये गये नृशस करौर्यपूर्ण अत्याचारो की कथा परिपूण-प्रमाण-पुरस्सर अुनके समक्ष अपस्थित की । अुन प्रमाणो में जो अेक महत्त्वपूर्ण किंतु अप्रत्यक्ष प्रमाण रफिअुद्दीन की टोली के, कपमाका साक्षीदार बने हुअे हसनभायी नाम के आरोपी ने अपस्थित किया था—अुसकी अस स्वीकारोक्ति में से यदि छोटकर अेक सक्षिप्त सा आशय हम यहाँ लिखे, तो पाठको को रफिअुद्दीन के कूर कार्यों की रूपरेखा का परिचय पर्याप्त रूपमें मिल जायगा, अैसा हमें विश्वास है । पुलिस के स्वतन्त्र प्रमाणोद्वारा समर्थित अस स्वीकारोक्ति के अदर आया हुआ वह आशय निम्न प्रकार है ।—

"मेरा नाम हसनभायी । मैं हाथीस्कूलपर्यंत पढा हूँ । बलार्क ी था । आगे चलकर जुअे के व्यसन में फँसकर चोरी करने लगा । मेरा असली गाव खानदेशमें । रफिअुद्दीन के माथ अुमके काले पानी जाने से पहले ही से मेरी जानपहचान । पजाब और लखनअूकी ओर लूटमार करके लायी हुयी कुछ संपत्ति वह मेरे घर में लाकर रखा करता था । अिसी लिये वह मुझ प्रत्यक्ष डाका डालने के लिये अपने साथ कभी नही ले जाता था । और मेरी ओर पुलिस का ध्यान आकृष्ट न हो अस विचार से वह मेरे पास खुले तीरपर कभी नही आता था । आगे चलकर अुसे सजा हुयी और वह काले-पानी भेज दिया गया । अस तरह अुसका और मेरा सबध विलकुल टूट गया । कुछ घरसो के वाद जब वह अचानक मेरे दरवाजे पर आकर खडा हुआ—तो मुझे अैसा लगा जैसे किसी मरे हुअे आदमी को जिंदा हुआ देखकर लगा करन

है । काले पानी में गया हुआ मनुष्य जिंदा लौट कर आसकता है, जिस बात की कल्पना तक नहीं थी मुझे । उसने कहा कि वह मंत्र के बल से अदृश्य होकर, समुद्रपर से पैरो पैरो चलते हुअे आया है । उसने मंत्रद्वारा अभिमन्त्रित अक ताबीत भी मुझे दिखलाया । मेरे पास उसकी जो पीछे की ३-४ हजार की धरोहर थी वह मुझे बक्शीस के तौर पर दे दी है, असा आश्वासन भी उसने मुझे दिया । उस उसके शर्करासमुत्पादक वाक्यविन्यास का मुझपर अद्भुत परिणामहुआ । मुझे वह अक अद्भुत मात्रिक और अनिर्वचनीय साहसी पुरुष प्रतीत होने लगा । और वह जो कहता अमे करने के लिय मैं फिर तय्यार होगया । सिंध और पंजाब की ओर मुसलमानी धर्मके प्रचार के हेतु से मैंने अक बड़ी भारी सस्था स्थापित की है, वह अक प्रकार का धर्मयुद्ध-जिहाद-है, उसकी सहायता करना प्रत्येक मुसलमान का कर्तव्य है, असा उसका कथन भी मुझे उस समय सत्य ही प्रतीत हुआ । मुसलमान बनाने के लिये खानदेश में जो भी हिंदू लड़के-लड़कियाँ मिले, अन्हे बहकाकर उसके सुपुर्द करना-उसकी जो चीजे और द्रव्य छिपाने के हो अन्हे पूर्ववत् छिपाना, वह जब बुलायेतव उस के पास जाना-जिस सब के लिये जो खर्च पड़ेगा वह खर्च तथा अपर से तो रुपये मासिक वह मुझे देगा-असा उसका और मेरा विकरार हुआ ।

“अमका यह अब का काम मैंने न सुना तो पिछली धरोहर के लिये यह कुर्रकर्म मेरी जान लिये बिना न छोड़ेगा जिस बातकी भीति मुझे थी, पहले पहल मैं डरते डरते ही जिस टोली की सहायता करता था । पर जिसकी डाकेजनीकी बातें सुन कर आगे चल कर मैं भी आदमियों को अिकट्ठा करके छोटे मोटे डाके डालने लगा । कारखानों में से धर्मशालाओं में से और स्टेशन-पर अच्छी अच्छी हिंदू लड़कियों के अुठाने में तो मेरी टोली अितनी अस्ताद हो गयी थी- कि, जिनके पेट के बच्चों को हम अुडाते थे अउनका रोनाधोना सुनकर हमें अक प्रकार का मनोविनोद ही प्रतीत होता था । उस वजह से रफिअुद्दीन मुझपर सदा प्रसन्न रहा करता था । अउन लड़कियों को दूर-सिंध बलूचिस्तान तक लेजाकर उसकी टोली या तो मुसलमानों को बेच देती थी या फिर आपमही में बाट लेती थी । बड़े बड़े मौलवी भी हमारे अिन दुष्ट कृत्यों को परदेके पीछे ने ‘ धर्मकृत्य ’ का नाम देकर बखाना करते थे । उसकी

चजह से तो हमारी अुस नीच विषयवासना को और धनलोभ को अेक प्रकार का धर्मोन्मादका अुत्साह और शिष्टत्व प्राप्त होने लगा, जिसके कारण हमारे मन की लज्जा भी दूर होगयी और जनकी लज्जा भी । डर यदि किसी बात का था तो सिर्फ सरकारी सजा का । वह भी खास कर अंग्रेज या कठोर हिंदू पोलीस अफसरों का ।

“ हम दक्षिणी मुसलमानों को अुत्तर की तरफ के ये पठान, बलूची डाकू अविश्वसनीय समझते थे । हमारा भेष, भाषा, चालढाल सब हिंदुओं जैसे, हमारे हाथ से करूर कृत्य अुतने क्षपाट्टे से घटित नहीं होते । अत वे हमको डरपोक और ‘आधे काफिर’ समझते थे । अपनी डाकेजनी में हमें प्रत्यक्ष भाग नहीं लेने देते थे । पर विहार में अेकदफा बिस टोली की अेक डाके के मामले में धरपकड होगयी, तब रफिअुद्दीन कुछ लोगों के साथ छूटकर खानदेश चला आया और मेरी टोली को अुसकी टोली में मिलना लाजमी होगया । वह तब से हिंदू गोस्वामियों के भेषमें फिरने लगा । वह पक्का बहुरूपिया है । अंग्रेजी, संस्कृत, बंगाली, मराठी, जिसकी जरूरत पड जाय, थोडा थोडा याद कर लेता है । गाता है नाचता है, लावनियाँ और भजन तो वह अैसा रग कर बोलता है कि कहना क्या । योगानंद के स्वाग में तो अुसने हजारों हिंदुओं को धोखेमें डाल दिया । अुसे सिर्फ दसपाच भजनही आते हैं, किसी किस्म का शास्त्र बगैरह कुछ नहीं आता । बिसी लिये वह मौन का ढोंग रचता था और केवल भजनही गाता था । पाच पचास संस्कृत के श्लोक अुसे पाठ थे पर वह अुन्हे बिस ढंग से थोडा बोल कर चुप हो जाता था , ताकि लोगों को अैसा प्रतीत हो कि अखंड विद्वत्ता होने पर भी वह अत्यंत विनयशील है । अुसके योगानंद वेष का हमें बहुत अधिक अुपयोग हुआ । हजारों रुपये न मागते हुअे हिंदू लोग हमें दे जाते थे । यह खुद किसीको भी हाथ नहीं लगाता था । परंतु जो लोग कुछ भेट जबदस्ती रख जाते थे, अुन्हे हम लोग अेकत्र करते और अुसे बिसके साथ साथ हम सब आपसमें बाँट लिया करते । भजन के समय होनेवाली भीड में हम ने कुछ नहीं तो कमसे कम सौ सवासी हिंदू लडकियों, बिस बरस डेढ बरस के दरमियान भगा कर गुलाम हुसेन नामके बलूची के हाथों अुत्तर की ओर भिजवायी होगी । अुस प्रत्येक शिकार के पीछे हमें स्वतंत्र ‘बख्शीश’ मिला करती थी । मुसलमानों को न लूटने

का यह जो वहाना बनाता था, वह कितना खोटा है, यह हमें तब मालूम पड़ा जब कि वह हमारी टोली में आकर मिला। किसी मुसलमान को लूटना हो तो वह उसे 'काफ़िरो का दोस्त' कहकर गाली देता और अपनी सौगंध से मुक्त हो जाता। हमें भी उसका यह सुगम षाम्त्र दिलसे पसंद आता था। यह जितना ही क्रूर है, उतना ही विनोदी भी है। परंतु वद्वरूपियापनमें यह अतना अधिक निष्णात है कि इसका मूल स्वभाव विनोदी है या क्रूर है, यह बताना मेरे लिये भी दुःशक है। पागलपन के स्वाग के लिये भी इसका यह विनोदी प्रकार बहुत अपकारक होता है। वह चाहे कुछ हो, अतना मात्र सत्य है कि जब वह अत्यंत क्रूर कृत्य करता है, तभी विनोद के अुच्चाक पर पहुँचता है।

“ इस की क्रूरता से मुझे नफरत होने की दो घटनाएँ हैं, वे मैंने अपनी आँखों में देखी हैं, अतः अुन्हे यहाँ प्रमाण के रूप में अुपस्थित करता हूँ। खानदेशके जिस मुसलमान डाक्टर के घर डाले गये डाके का हमपर इस अभियोग में आरोप है, उसमें मैं भी था। हम ज्योंही दरवाजा तोड़कर अंदर घुसे त्योंही वहाँ से भागकर अूपर की मजिलपर जाने की कोशिश करते हुअे डाँक्टर रहमान के पैरपर इसने कुल्हाड़ी का वार किया। पैर का टुकड़ा गिर पड़ा और, डाँक्टर वही मर गया पर तोभी कुल्हाड़ी चलाने के निर्भर आनंद में जोर जोरसे हँसते हुअे— मेरे मना करने पर भी—अुस डाँक्टर की वोटी वोटी अुड़ा डाली। अितने में पलग के नीचे छिपे हुअे अुसके दो वच्चे दिखायी दिये। वे चुप थे। मैं करुणा-भाव से बोला, “ रहने दो अुन्हे, डरके मारे वे चुप, अर्धमृत तथा अचेत पड़े हुअे हैं। ”

“ वह कहने लगा, ‘ वेसुध हालत में सभी आँखें मूंद कर चुप रहते हैं। सुध आजाने पर अेकदम वाणी वाचाल हो अुठती है और आँखें खुलजाती हैं। और तब कोर्ट में डाकू कौन है, यह योंही खुली हुअी आँखें और वाचाल वाणी पहचान लेगी और तब हमारे गलों के चारों ओर रस्सी बाँधने में मदद करेगी। अैसा कह कर इसने अुसी कुल्हाड़ी के अेक प्रहार ही में अुन वच्चों में से प्रत्येक को दो-दो टुकड़ों में विभक्त करदिया। अुस अघोरी कृत्य को देखतेही मुझे बेहोशी आने लगी। पर अुस डाके में हमारे हाथ पड़ी हुअी

दस हजार की लूट ने मेरी उस बेहोशी की कुछ कम कर दिया और मेरा मन पूर्ववत् उसी अनुमार्गपर चलता रहा।

“ दूसरी जो दुष्ट घटना मैंने अपनी आँखों से देखी, वह तो इस घटना की कहरता को भी फीका कर देती है। रफिअुद्दीन हमसे हमेशा अपनी शान बघारते हुअे कहा करता था कि, अब वह अंक वरस के लिये अंक सुरेख स्त्री को अपने नजदीक रखता है। वरस खत्म हुआ कि उसे जान से मार डालता है, और दूसरी औरत ले आता है। सारे लोग जिस तरह अपने सत्कृत्यों को बढा चढा कर कहते हैं, उसी तरह यह विविषप्त अपने दुष्कृत्यों को बढा-चढाकर बड़ी शान बघारते हुअे कहा करता था। अतः उसके इस प्रतिज्ञा-वाक्य में कितना सार है, यह मैं ठीक ठीक कह नहीं सकता। पर जब यह खानदेशमें भागकर आया था, उस समय मात्र उसके साथ विहार से भगाकर लाम्बी गम्भी अंक हिंदू कायस्थ की तरुण कन्यका थी जरूर। वह इसके कडे पहरे में रहा करती थी। उसके अर्पर इसका ऐसा कुछ विषयाव प्रेम था कि, उसे देखकर ऐसा लगता मानो, दुनियाँ में, इस जैसा कोभी भी प्रणय-मुग्ध स्वभाव का आदमी नहीं होगा। यो देखने पर, यह हमारी टोली के सहचारियों के साथ भी जब तक रहती तबतक अच्छी मैत्री बनाये रहता था। यह उस तरुण रमणीपर भले ही लुब्ध था, किंतु वह मात्र झुलसती चली जा रही थी। कभी कभी तो वह अपने प्राणों का मोह भी छोड़ बैठती थी। अंक बार रफिअुद्दीनने देखा, वह देवताके समक्ष हिंदूधर्म की पद्धति से हाथ जोड़ कर प्रार्थना कर रही थी। रफिअुद्दीनने अत्यंत लाडसे उसके सिरपर हाथ फेरते हुअे पूछा,

“ क्या हो, इस भावना से तू उस पत्थर के देवता से प्रार्थना कर रही है।

“ वह अकदम चिठकर बोली, ‘तुझे फौसी हो इस भावना से।’

“ फौसी यह शब्द मुनते ही वह माँपकी तरह गुस्से में गया था। जोश का झटका बैठने ही वह हँसा करता है, उसी तरह वह हँसा और बोला,

“ ‘सचमुच इसका वरस पूरा होने को आ रहा है, है न?’

“ उस दिन उसने मुझसे कहा, ‘मैं आज शाम को तुझे अंक तमाशा दिव्याभूगा नदी के किनारे। जगली टोले के अंश दुर्जपर जाकर बैठ।’

“साक्ष के समय मैं उस जंगल के अंदर टीले के सबसे ऊँचे बुरज पर जाकर बैठ गया। बरसात की बौछार पर बौछार आरही थी। नदी बाढ़ के कारण दोनों कछार भर के बह रही थी। उस वीरान पड़े हुए टीले के बुरज तक नदी का पानी चढ़ आने का मतलब होता था नदी के अंदर बाढ़ का आजाना। उस किस्मकी भयानक बाढ़ उस नदी में आभी हुई थी।

“थोड़ीही देरमें रफिअुद्दीन अपनी उस सुस्वरूप तरुणी को लेकर वहाँ आया। उसका बुरका निकालकर हिंदू तरुणी के सदृश कंधे पर पल्लव डाले, बाढ़ का मजा दिखलाने के लिये विलकुल अन्मुक्त स्वरूपमें आज वह उसे वहाँ ले आया था। बहुत दिनों के पश्चात् मुखपरका आच्छादन हटा था—श्वासोच्छ्वास के लिये शुद्ध मुक्त वायु उसे प्राप्त हो रही थी अतः वह कुछ चित्तमें प्रसन्नसी दीखती थी। रफिअुद्दीन मीठी मीठी लाडलाव की बातों से ही उसकी आराधना कर रहा था। मेरे सामने, उसको बुरके से बाहर इस तरह अंकात में ले आना यह एक कुतूहल ही की बात थी। तिसपर भी जब वह अत्यंत विषयोन्मत्त की तरह से अंकदम उसको अपने से चिपटाने लगा तब मुझे यही नहीं सूझता था कि क्या कहूँ और क्या करूँ? सचमुच उस सुंदर तरुणी से उसी प्रकार आलिंगन करनेकी इच्छा मेरे भी मन में प्रबल हो उठी।

“रफिअुद्दीन के फंदे से वह छूटने का प्रयत्न कर रही थी—तो भी जबरदस्ती उसको भुजाओं में भर उसने ऊपर उठा लिया—और छोटी बच्ची की तरह उसको दोनों हाथों में तिरछा लेकर ‘मेरी—मेरी यह लाडली’ ऐसा कह कर उसे थोड़ामा झुलाया—झटमे खींचकर उसकी साड़ी भी खोल डाली और वह कामोन्मत्त मुझसे अत्यंत निर्लज्जतापूर्वक कहने लगा,

“देख ले—देखले, इस परी को पेटभर कर देख ले ।।’

“यह विषयाद्य इस विकृत मनोवस्थामें उसके साथ क्या करनेवाला है, यह सोच कामावेश से थरथराता हुआ मैं भी आँख भरकर उसकी ओर देख ही रहा था कि—

“अुतने ही में।

“किसी एक पत्थर को अुठाकर जिस तरह हम भिरका (= फेंक) देते हैं, उसी प्रकार के सावेश बलसे उसने उस सुंदर लडकी को उस बुरज

पर से, उस नदी की भीषण बाढ़ में दूर फेंक दिया । ' वरस घूरा ' होगया उसका ' ऐसा कह कर वह जोर से ठहाका मार कर हँसा ।

" राक्षसके बच्चे । ' मैं अकेल चिल्लाया ।

" ' पहले वह तमाशा तो देख । यही तमाशा दिखाने के लिये तो तुझे यहाँ बुला कर लाया था । '

" दो बार वह निरपराध सुदरी लहरो के ऊपर आयी । दो बार लहरो के साथ नीचे गयी । उस बाढ़ के प्रवाह के मध्यमें एक चट्टान ऊपर सिर निकाले खड़ी थी । एक प्रचंड लहर उसी ओर को मुड़ी, उसमें अलझी हुई वह तरुणी और उसकी गुलाबी साड़ी स्पष्ट दिखायी दी ।

" ' ऊँचे टाँगें गये काचों के झूमर के अकस्मात् टूटकर नीचे गिर पड़ने से जिस प्रकार उसके काच के ठीकरे-ठीकरे अड़ जाते हैं और तदन्तर्वर्ती ज्योति की चिनगारियाँ अच्छिन्न होकर बुझ जाती हैं, तद्वत् वह प्रचंड लहर उस चट्टान पर टकरा कर, जलोघ के ठीकरो के रूपमें परिणत होगयी और उस अत्यंत अनागस काचनगौर तरुणी के माथे के टुकड़े-टुकड़े खिल गये और उस की पाँचों प्राण-ज्योतियाँ अकेलम निर्वाण हो गयी । वह पुन जलपृष्ठपर नहीं आयी ।

" ' राक्षस के पडपोते, क्या कर डाला यह तूने, मरण के आवर्त में क्यों ढकेल दिया उसको ? ' मैं शोकत्वेष से चिहुँक अठा ।

" ' मरण के नहीं, पगले, उसके वारे में बोलना ही तो उसी की जवान में बोल । उसकी संस्कृत भाषामें पानी को मरण नहीं कहते । पानी को जीवन कहते हैं । मैंने उसे जीवन के महापूर में फेंक दिया है, वह हँसा ।

" ' वह आज मर न गयी होती तो कल उसने जाकरसी आयी डियो को मेरा पता बतला दिया होता । है किस ख्याल में तू ? '

" महाराज, मैं उसके समान अलटे कलेजेका नहीं था तो भी पाप कृत्यों की चाट मुझे लगी हुई थी । उसमें भी, अलौकिक सत्कृत्यों के सदृश अलौकिक दुष्कृत्यों में भी लोगों के मनो पर छाप डालनेकी एक दु शक्ति रहती ही है । उस छापके कारण उसके भयकर दुष्कृत्यों का प्रभाव हमपरभी अतरोत्तर बढ़ता ही गया और उसके योगानंद के ढोंग घतूरे की वजह से

हमारा बहुत कुछ स्वार्थ सिद्ध होता जाता था, अतः हम इसका साथ देते ही रहे।

“तत्पश्चात् हम मथुरा आये। इसने कर्ण पुत्तलिका के सदृश जलादश-नामक यत्रका अंक नया ढोंग आरम्भ किया था। अस यत्रकी सहायता से यह भूतभविष्यद्वर्तमान की सारी बातें ठीक ठीक बतला देता है, इस बारे में हमने लोगों में बहुत अधिक इसकी ख्याति व्याप्त कर दी थी। कहीं भी जाने पर, हम लोग परदेशी, व्यापारी, डॉक्टर आदि का स्वागत कर-अलग-अलग गांवों में घूमते और योगानंद ने अमुक चमत्कार हमारे सामने किया है, इस बात का झूठ मूठ का प्रचार करते। यह देखकर कि कोभी-गृहस्थ इससे भूतभविष्यत् की बातें पूछने आ रहा है, झटपट हमसे एक आदमी-परकीय गृहस्थ बनकर उसके सामने पहुँच जाता और इससे-कुछ पूछता और जब यह उसे कुछ जवाब देता तब,

“‘ओह क्या अचरज है! कितनी अद्भुत दैवी दृष्टि है! आप कहते हैं, सो अक्षर-अक्षर सही निकला! विलकुल-बिनचूक सही साबित हुआ!’ ऐसी इसकी ‘वाह-वाह’ करके एक बड़ी रकम जवर्दस्ती उसके देवस्थानपर रख कर चला जाता। परिणामतः जिनके सामने हम यह सब करते वे लोग भावुकता और अधश्चर्या के जनपदविध्वंसक रोग से अभिभूत होकर इसको आदर की दृष्टि से देखने लग जाते। उसकी झूठ साबित हुई बातों को वैसेही छोड़ जो कोभी बात गोल अर्थ से या दैवयोग से सच साबित होती, हम लोग उसी को लेकर गाँव-गाँव में इसके बारे में ढोल पीटते फिरते थे। मथुरा में भी हमारा यह पाखण्ड खूब फल लाया। वहाँ डॉ. नायडू नामकी औरत हमारी भक्त बन गयी। बातचीत के दरमियान उन्होंने अपने परिचय की एक नागपुर की तरफ की औरत तथा उसकी अकलौती बेटे का जिक्र किया और उन्हें वह मथुरा भी बुला लायी है, यह बतलाया।

“यह वृत्तांत सुनकर इस योगानंद डाकूने अंकात में ले जाकर मुझसे कहा,

“‘मैं जब काले पानी में था, तब मेरे साथ एक सजायाफ्ता फौजी कैदी रहा करता था। अन्य किसीभी आदमी को मेरे साथ रहने नहीं दिया जाता था, अतः उसके साथ मेरी घनिष्ठता बहुत बढ़ गयी। अपने घरकी

सारी कहानी अुसने समय-समयपर मुझसे कह सुनायी । डॉ नायडूवायी जिमे लाने की बात कहकर गयी है, वह ही अुस कैदीकी मा और अुसकी नौजवान वहिन होनी चाहिये ! डॉ नायडू ने जो नाम-ग्राम-वृत्त बतलाया है वह अक्पर-अक्पर ठीक बैठता है । वही है ! वही है यह लडकी ! आगयी, मेरे हाथ मे आगयी ! लिपटालिया देख, मैंने अुसको ! क्या बतलाया था अुसका नाम नायडूवायीने ? माल-माल-मालती, हा रे हा, मालती ही ! हाय रे ! मालती ! अुसे मैंने दसवार अपनी सेजपर लिया है ! मालती ! मेरी मालती !

“ ‘ अरे, कालेपानी मे था न तू अुस वक्त ? —अुमे सेजपर लेने की बात कर रहा है, सो क्या स्वाब मे ? अुसके सिर्फ नामपर ही अितना लपट मे अुपहसने लगा । वह बोला ।—

“ हसन, किसी हिंस्र पशुको भूखा पिंजरे मे बंद कर और मास दे ही मत ! और अेक रक्ताक्त अस्थिखड ही अुसके सामने फेंक कर देख, वह हिंस्र पशु किस तरह मटक मटक कर अुसको चाटता है ! ठीक अुसी तरह मनके पिंजरे मे जहाँ वर्षानुवर्ष कामविकार भूखा बंद करके रखाजाता है, अुस काले पानी मे स्त्रीका जो नाम कानपर पडा, वह नाम अितना अधिक मनमे भर जाता है कि, अुस स्त्रीकी अेक मूर्ति बन जाती है, अुस काल्पनिक मूर्ति पर ही मन लपट हो अुठता है, वास्तव मे नही तो स्वप्न मे ही अुसके साथ रममाण होता है ! हिंदू लोगो का अुषा का आर्यान तूने सुना है ? स्वप्न मे का प्रिय पुरुष अुसे प्रत्यक्ष दिखायी देनेवाले पुरुष की अपेक्षा भी अधिक विव्हल करनेवाला हुआ ! वैसा ही मेरा भी हुआ । बारबार अुम अकेले कैदखाने के साथी के साथ बातचीत का मौका पडने के कारण और अुस बातचीत मे अिस अुपवर लडकी की ही बातचीत बारबार होने के कारण मेरी अुपोषित कामवासना पर अुम कल्पना की, अुस नामकी, जो अेक छाप बैठी वह अब दूसरी किसी भी प्रत्यक्ष स्त्रीकी बैठती नही ! और क्या तमाशा है देखो, अुस नामकी अुम स्त्री की वह कामातुर कल्पना ही अब प्रत्यक्षरूप से भोगने को मिलेगी ! वय, अुसे भगाना है ! ’

“ अुसको भगाने का निश्चय होते ही हमने हमेशा की युक्ति-योजना की । भजन समाप्त होकर जनसमर्द लौटने लगा । भीड मे जिस जगह

मालती अपनी माता के साथ चली जा रही थी, वहाँ हममें से दोचार आदमियों ने झूठमूठकी मारामारी शुरू की। अकदम भीड़में हगामा मचने लगा। अूसमें मालती को अपनी मा से अलग कर लिया। योगानदजीके अेक शिष्यन अुसे घरतक पहुँचवाने के लिये अपने साथ ले लिया और सीधा गुलाम हुसेन के अड्डेपर लेजाकर छोड दिया। वह रात अिस दुष्टने मालती कीही बलात्कारित सेजपर व्यतीत की।

“ दूसरे दिन अिस अपहरण की बात लोगो तक न फैलजावे अिस बुद्धि से हमने चाल चलकर मालती की मा को मीठी मीठी बातों में फुसलाकर दूर के अुलटेही रास्ते पर लगा दिया। अिस लुच्चे को मालती के भाभी का काले पानी में रहते समय से रगरूप आदि सारा वृत्त मालूम था। अुसीको अतदृष्टिका नाम दे कर अिसने अुसकी मा को कह सुनाया। जिस बातका ज्ञान अुसकी माको भी नहीं था,—अुस माथेपर के घावके चिन्ह को जलादर्श यत्र और अतज्ञान का पाखंड रचकर अिसने अुन्हें बतादिया। वे विचारी अिसके अन्तज्ञान के फदेमें फँस गयीं। यह देखतेही अिसने मालतीको मासे कहा कि, मालती अपने अेक प्रियकर के साथ यहाँ से नागपुर की तरफ चली गयी है, अगर तुम वगैर हल्ला गुल्ला किये नागपुरकी तरफ चली जाओगी तो तुम्हे वहाँ मालती मिल सकेगी। अैसी भविष्यत् कथापर पूर्ण विश्वास करके वे वगैर पुलिस को अितिला दिये नागपुर की ओर रवाना हो गयी। हम भी अब मथुरा से पौवारह करनाही चाहते थे कि अकस्मात् अन्य अस्मदीय प्राक्तनकृतकर्मणाविपरिपाकवशात् हम लोगो की यह अवस्था होगी। यह अिलाहावाद का वारट छूटा और हम अुसके साथही पकड लिये गये। अुस गडवडी में वह राक्षस गुलाम हुसेन अुस अुपवर मालती को लेकर कहाँ चपत होगया अिसका सुगावा (= पता) मात्र अभीतक किसी को भी नहीं लगा है। अुस अत्यत निष्पाप, निरपराध, असहाय, कोमल कन्यका की क्या क्या विडवना हुयी होगी—दुर्गति हुयी होगी यह देव जाने। ”

न्याय—सयत होते हुअे भी अुस न्यायावीश के ओठ गुस्सेके मारे अेक ओर फडकने लगे तो दूसरी ओर आँखों से करुणा का अुत्स भी प्रस्त्रवित होने लगा। श्रोताओं में भी अनेको के नेत्रयुग आर्द्र हो अुठे।

वह दीखने में कुरूप, वाणी का सयत, वय से तरुण मन से कोमल, चाल-चलन से रोवदार मालम पड़ता था। सारे अभियोग-प्रकरणमें वह गर्दन नीची किये बैठा रहता था। वह अब अपना वक्तव्य (Statement) देने के लिये जब अुठा तब गर्दन सीधी तानकर शातता के साथ अेक अेक शब्द चुनचुनकर अुपयोग में लाता हुआ और मालती की अुपरिनिर्दिष्ट विडवना के अुल्लेख के समकाल ही अेखों में आये हुअे अरुओ का परिमार्जन करते करते बोला—

“मालती भीड़की गडबडी में अपनी मा से विछुडगयी है, उसे उसके या नायडवाभी के घर सुरक्षित पहुँचवाना है । नायडूवाभी के साथ वह जब

भी कभी यहाँ आभी तब मैं तुझे ही अन्के साथ घरपर भेजा करता था, अतः वह तुझपर विश्वास करती है, और यदि तू साथ रहे तो वह आज रात को ही मेरे मोटर ड्राइवर के साथ मोटर में बैठकर वापिस जाना चाहती है। अतः तू उसे ले जा।'

"मैंने आनन्द से यह स्वीकार कर लिया। मालती से कुछ सान्त्वना के शब्द मैं कहने में तल्लीन होगया। अतः ही मैं मोटर मथुरा के किसी अपरिचित भाग में घुसकर किसी अपरिचित घरके सामने जाकर खड़ी होगयी। मेरे पूछनेपर मोटर ड्राइवरने कहा,

'नायडूवाजीने यहाँ अतरने के लिये कहा है। वे अदरही हैं।'

"असा कहकर मालती को वह घरमें ले गया और तत्काल बाहर आकर मुझसे बोला—'चलो, लौट चले।' किसीभी विश्वासघातका किंवा गूढकर्म का लवलेश भी परिचय अथवा शका न रहने के कारण मोटरसे अतरते समय मालती के अदर आनेके लिये कहने पर भी मैं उसके साथ भीतर नहीं गया और मोटरवालेकी बात सुन अभी समय में लौट गया। पर मुझे उस समय मठमें न ब्लाकर अन्यत्र ही रक्खा गया। दूसरे दिन रात को सभा के समय ही संगीत में साथ देने के लिये लाया गया। उस सभा के अंत में इस टोली के अदर मैं भी था, अतः मुझे भी पकड़ लिया गया। मैं मालती के विश्वास के लिये अपात्र तथा उसकी सहायता के लिये अक्षम सिद्ध हुआ इसका मुझे अत्यंत खेद है। यदि मेरा कोई अपराध है तो मेरे मत में यही है।—न्यायाधीशके मतमें कौनसा अपराध सिद्ध होगा सो मैं नहीं कह सकता।"

आरोपियों में से सबके वक्तव्य, पुलिसवालों के सारे सबूत तथा अदालत का सारा काम लगभग समाप्त होने को आ रहा था। पर रफीअद्दीन अर्थात् योगानन्द अपने वचाव के बारे में कुछ भी नहीं बोला था। कभी मजाक अड़ाता था—या हैसता था वस। अतः सब आरोपियोंकी ओर से वकालत के लिये सरकारने स्वयं एक वकील दिया था। पर रफीअद्दीन कभी कभी उसकी भी मखौल अड़ाया करता—अससे ज्यादा कोई सबब उसने उससे नहीं रक्खा था। उसके विरुद्ध उसकी टोलीमें से फूटे हुअे साक्षीदारों ने उसके कुरुर कृत्यों के बारे में जो बयानात दिये थे, उस वक्त वह अन्पर भी गु में

में आया हुआ सा नजर नहीं आया । न्यायाधीश के साथ मात्र उसकी खूब घुट रही थी । इस पैशाचिक मनुष्य के अघटित मनका शास्त्रीय विषय के समान गभीर अध्ययन करने की बुद्धि से न्यायाधीश उसे खोदखोद कर सवाल करते थे—उसे हँसने देते थे, बोलने देते थे तथा बहुत वारीकी से उसकी ओर देखा करते थे । अतमें अभियोग का काम समाप्त करने से पूर्व एक बार फिर वे रफिअुद्दीन से बोले,

“तुझ अपने ऊपरके आरोपो के बारेमें या बचावो के बारे में अभी कुछ कहना है क्या ?”

“कहता हूँ थोड़ा सा ।” सभा के अत्यंत आग्रह के कारण जिस तरह कोभी दुड्डाचार्य भाषण देने के लिये खड़ा होता है तद्वत् रफिअुद्दीन भी अदा के साथ हिंदी—अर्दू में बोलने लगा,

“मेरे ऊपर अिन चालीसपचास साक्षीदारो ने अितने असंख्य आरोप लगाये हैं कि, अलगसे मुझे आज अुनकी याद भी नहीं रह गयी है । अत अुन सब का अलहदा-अलहदा जवाब मैं क्या दूँ ? अुन सबको मिला कर जो एक बड़ा आरोप मुझपर लगाया जा सकता है, वह यह कि—मैं एक खतरनाक गुनहगार हूँ । और मुझे कड़ी से कड़ी सजा मिलना ही ठीक होगा ।

‘अिन पुलिमवालो ने तथा अिन आरोपियोने मुझपर अितने आदमियों के मारने और अितनी लडकियो के विगाडने का अिलजाम लगाया है, मानो मैं कोअी कहानी की किताब लिखनेवाला, नाटक करनेवाला या फैमला सुनानेवाला जज ही हूँ । अपनी कहानी की किताब के पन्नेपर जितनी मर्जी अितनी लडकियोपर जिम से मर्जी अुसमे नग्न बलात्कार करवा कर अपनी मानसिक कामचेतना की तटस्थ रूपसे सभ्यतया पूर्ति करने समय, या अपने नाटक के अेकही प्रवेश में रगभूमि पर न समा सकनेवाले मुर्दे पटापट मारकर गिराते समय, या अपने निर्णयपत्रके अेक छेदक में “फामी” अिन दो अक्परो के गडहे में दो-दो सौ जीवो को गाडते समय, अगर कुछ टपकेगी तो म्याही की बूंदेही कलमसे टपकेगी मगर आँखो से आसुओ की अेक बूंद तक न टपकेगी ।—अैसे किसी नभ्य कहानीलेखक, नाटककार अेव सदय न्यायाधीश के अतिरिक्त अन्य कोअी मनुष्य अितने भीषण कृत्य, अितनी

सफाई से और अितनी जल्दवाजीमें कर ही कैसे सकता है, आप इसपर भी तो खयाल कीजिये ।

“ तो क्या अिन सब पुलिसवालो ने, साक्षीदारो ने आरोपियो ने जान-बूझ कर, कपटनाट्यरचना करके ये सारे झूठे आरोप मुझपर लगाये हैं, ऐसा मेरा कहना है ? नहीं महाराज । मैं खुद को जितना गुनाहो से खोफ खाने वाला समझता हूँ, अुतना ही अिन पोलिसवालो को भी समझता हूँ । मैं भी निर्दोषी और ये सब भी निर्दोषी ! तब यह सारा विक्लिप्तविपरिपाक हुआ कैसे ? इसका अुत्तर अेकही शब्द में कहा जा सकता है, और जिस अेक शब्द के अुच्चारतेही पुलिसवालो के पास मौजूद मेरे खिलाफ अिलजामोका जबर्दस्त सबूत स्रोटा न ठहरते हुअे भी मुझे निर्दोष सिद्ध करने का जो गुरुमंत्र आपकी विवेकबुद्धि को हस्तगत हो जायगा, वह शब्द है गलतफहमी—समझका विपरकार । !

“ और अुसका कारण मेरे अदर—मेरी सर्वथैव निरुपाय स्थिति के कारण विद्यमान अेकमात्र दोष । देवने मुझे किसी सभ्य, सद्य, और साबुन से धुले हुअे न्यायाधीश सरीखा मुँह और शरीररचना न देकर अेक अत्यंत भयकर डाकू सरीखी दी है । पर अिस दोषके लिय जो सजा मुझे देनी है वह मुझे न देकर देव को ही देनी चाहिये ।

“ पजाब में डाकेडाल कर काले पानी में गये हुअे, काले पानी से भागकर आये हुअे बिहार खानदेश प्रभृति प्रांतो में अक्कम्य अत्याचारो का भयकर ताण्डव मचा देनेवाले किसी रफीअुद्दीन अहमद नामके अधमाधम, हत्यारे और नृशंस डाकू के मुँह जैसा मेरा मुँह और शरीररचना जैसी मेरी शरीर रचना दुर्देवने हूवेहूव घड कर तय्यार की होगी और अुसी वजह से अिन सारे सज्जनो को मैंही वह पापी हूँ अैसा सात्त्विक क्रोध के आवेश में, अीमानदारीके साथ प्रतीत हुआ होगा ।

“ महाराज ! अपने अिस कथन को भरपूर सबूतो के साथ मैं सिद्ध कर देना चाहता हूँ । अत जबतक असली खरा पापी डाकू रफीअुद्दीन अहमद मुझे न मिले तबतक मुझे निर्दोषी समझ कर छोड दिया जाय, अन्यथा पोलिसवाले ही अुस को पकडकर ले आवे, अुसे देखतेही मेरा कहना कितना अक्परश सत्य है, यह आपके तत्काल ध्यान में आ जायगा । महाराज, आरोपी को

स्वसरक्षणार्थ आवश्यक सबूत उपस्थित करने के लिये यथाशक्ति सहायता देना न्यायाधीश का कर्तव्य है । और मुझे अपने वारे में जो सबूत पेश करने हैं उसके लिये मैं आप से सहायता चाहता हूँ । वह देना आपके लिये दुःसाध्य भी नहीं है । मुझे निर्दोषी समझकर छोड़ दीजिये मैं उस असली रफ़ीअुद्दीनको पकड़ कर लाता हूँ ! नहीं तो मैं उसीकी साक्षी उपस्थित करता हूँ ! आप कोर्टकी तरफ से—जबतक मैं उसे पकड़ कर न ले आऊँ तबतक के लिये जमानतपर छोड़ दीजिये ! वस, यही है मेरा बचाव—मेरा Defence ! (पुलिसवालों की तरफ देखकर) क्यों दम सोनारकी और अंक लोहारकी है कि नहीं ? ”

अदर ही अदर हँसते हुअे रफ़ीअुद्दीन अर्थात् योगानन्द नीचे बैठ गया ।

“न्यायालयातर्वर्ती मंडली की यथाशक्ति रोक रक्खी हुअी हँसी जबतक समाप्त नहीं हुअी तब तक न्यायाधीश भी ओठों से अखड़ लेखनी की नोक लगाये हुअे छतकी ओर विचारपूर्वक देखते रहे । फिर अन्होंने पूछा—

“रफ़ीअुद्दीन अर्थात् योगानन्द, तुझसे सामान्य जानकारी के आखीर के कुछ सवालात मुझे अभी पूछने हैं । ठीक ठीक और सच्चे जवाब देगा तो उसमें तेरा ही हित है । ”

हाथ जोड़ वह आरोपी नम्रतया खड़ा होते हुअे बोला,

“पूछियेगा महाराज । ”

“तेरा सच्चा नाम क्या है ? ”

“योगानन्द गोस्वामी ”

“तेरा धधा क्या था ? तू क्या किया करता था ? ”

“धधा कहने के लिये, कुछ भी नहीं था । हा, देव का भजन किया करता था । ”

“अिन आरोपियों में से ये कुछ डाकू तेरे शिष्य बने थे यह सच है क्या ? ”

“कुछ लोग मेरे शिष्य बने थे यह सच है, पर वे डाकू हैं या नहीं यह मुझे क्या मालूम ? ”

“अच्छा, तेरे विरुद्ध साक्षी देनेवाला यह हसनभाभी तेरे परिचय का है क्या ? इसकी कौन कौन सी जानकारी तुझे है ? ”

“अस मनुष्य को मैं पहचानता हूँ, पर उसके अस नाम को मात्र मैं नहीं पहचानता। वह अस जेल में आने के बाद ही से सुनने में आ रहा है। असके बारे में मुझे जो जानकारी है, वह अतनी ही कि यह ‘रामलाल’ नाम अपना बताकर मेरा शिष्य बना था, यह एक बात। दूसरी बात यह कि, असको भाग, गाजा और चरस का भयकर व्यसन है। उसके नशे में असको अटपटांग बातों का आभास हुआ करता है—अस नशे में सभी को वैसा होता है। पर असके बारे में खाम बात यह है कि, नशे में आभास हुयी हुआ घटनाओं की अस के चित्त पर अमी छाप बैठती है—जैसे डरे हुअे आदमी के दिल पर भूतों की बैठनी है—कि, होश में आने के बाद भी उसे वह आभास न होकर घटनाओं ही थी, Facts ही थी, ऐसा निश्चित रूप में प्रतीत होता है। मेरे बारे में असने घटना का नाम देकर जो कुछ कहा है, वह उसके गाजे के तथा भाँग के नशे में—हुअे हुअे अैसे ही कुछ आभास थे। जेल में भी उसे भाग, गाजा, चरस अित्यादि न मिलता तो उसकी पीनक में पुलिसवालों ने उसे जो कुछ झूठमूठ बातें कही अन्हे सच मान कर असने यह मावपी में कहा हुआ गप्पोड पुराण कभी न कह सुनाया होता।”

“अच्छा तुझे मालती की जानकारी है ?”

“है न ? बाह महाराज ! मालती की जानकारी के बारे में क्या पूछने हैं आप ? वह मालूम है, अतना ही नहीं, मुझे वह बहुत पसंद भी है।”

“मालती को पहले पहल तूने कहाँ देखा था ?”

“रानी के बाग में।—मुबअीम ! वहाँ पहली ही बार अपने छुटपन में मैंने जब मालती को देखा, तभी वह मेरे मन को अतनी मुहायी कि मैंने उसकी एक कलम लाकर अपने वगीचे में लगा ली। महाराज, मुझे जपा और यथिका की अपेक्षा भी मालती बहुत ही भाती है। भजन के समय मैं अस मालती के फूलों का ही हार अपने गले में डाला करता था। बहुत ही प्यारा झाड है यह, नहीं ?”

अच्छा न होते हुअे भी अंगेताओं ही के नहीं वल्कि न्यायाधीश के मुंह पर भी अस ठीठ आरोपी के अस अप्रत्याशित श्लेष के कारण अकस्मात् हँसी आये वगैर न रही। अमे तत्क्षण दवाकर अन्हो ने पूछना शुरू किया—

“तू भूत भविष्यत् वर्तमान की बातें बतलाने की अतर्दृष्टि के नाम से लोगो को धोखा दिया करता था—यह सच है क्या ? ”

“महाराज ! भजन में तल्लीन होते ही, मेरे अतश्चक्षुओं के समक्ष भिच्छामात्र से भूत-भविष्य का चित्रपट खड़ा हो जाता है, यह सर्वथा सत्य है ! पर मैं अमुका ठिठोरा पीटकर लोगो को धोखा देता था, यह विलकुल झूठ है ! मेरा भविष्यत्कथन सत्य साबित होता है या असत्य यह तक मैं किसी से पूछता नहीं था ! किसी से ज्यादा बोलता ही नहीं था ! कपड़िका तक किसी से लेता नहीं था ! मैंने लोगो को ठगा नहीं !—अलटे, यदि किसीने ठगा है तो मुझ भोले भाले को अिन लूच्योंनेही ठगा है, ऐसा मुझे अब लगने लगा है ! क्योंकि, साधुगील शिष्य के रूप में मेरे अतराफ जमा होकर अिन लोगो ने मेरे नामसे न जाने कितना गुरुडम फैलाया ! कितनो को लूटा, कितनो पर जुल्म किये, कितनो को ठगा वह अेकमात्र देव ही जानता है ! मेरा ध्यान ही अधर नहीं था ! ”

“वह तेरी अतर्दृष्टि आज भी खुली है क्या ? हो तो अभी का अभी मेरे वागे में भी अेक दो भविष्यत्कथन बता कर दिखायगा क्या ? ”

“हा मरकार ! यह खवा जैसे मेरे बाह्य चक्षुओं को अिस समय स्पष्ट दीख रहा है, अुसी प्रकार आपके भविष्यकी भी दो बातें मेरे अतश्चक्षुओं के सामने कल से विलकुल स्पष्टरूप से प्रकट हुई हैं ! मैं कहने ही वाला था, पर—”

“यदि वे भविष्यत्कथन असत्य साबित हुअे तो ? ”

“तो आप मुझमें तीसरा भविष्य न पूछें—होगया ! ! ”

“अच्छी बात है, मेरे द्वारे का भविष्य कह कर तो बता पहले ! मगर गडबड गडबड और अगडम सगडम भाषा में नहीं—औं, विलकुल स्पष्टार्थ सूचक शब्दों में चाहिये ! कह ! ”

“अत्यन्त स्पष्ट रूप से मरल अन्वययुक्त भाषामें, महाराज, मैं आपके लिये शुभ भविष्य यह कहता हूँ कि, अपनी मृत्यु अपनीही आंखों में देखने का दुःखद प्रसंग आप पर कभी नहीं आयगा ! दूसरा मेरे लिये अुतनाही अशुभ किन्तु वितर्क भविष्य यह है कि, अिस मुकद्दमे के निर्णयमें मुझे निर्दोषी

कह कर आप कभी नहीं छोड़ेंगे । । छाती हो तो मेरा यह भविष्यकथन आप झूठा साबित करके दिखायें । ”

अस समयके अुस ढीठ आरोपीके झूठ-मूठके वीररस को और अुस छद्मी के अदर ही अदर हँसने को देखकर गाभीर्य को अेक ओर रख के खिलखिला कर हँसे बगैर न्यायालय के भीतर किसी से भी न रहा गया । चिंता और भय से थरथराने वाले आरोपी भी हँसे । हँसा नहीं तो अकेला वह किशन ।

हँसने का अुस मुकद्दमे में अुन आरोपियों के लिये वह आखीर का ही प्रसंग था । अब, हँसते हँसते किये गये भयकर पापों के भयकर फल भोगने का समय समीप आया हुआ था ।

न्यायाधीश न्यायनिर्णयका अुस दिन का काम समाप्त करके अुठे और मुकद्दमे (खटले) की बची खुची विधि को निपटाकर ‘ चौथे दिन निर्णय सुनाया जायगा ’ अैसा अुद्घोषा गया ।

‘ रेशन !....बत्ती बाहेर लाव ! ’ : : : ७

शुभमस्त पृथ्वीतलपर जो खालिडियन, ग्रीक, पारसी, यहूदी, क्रिश्चियन, मुसलमानी अित्यादि धर्मक्षेत्र हैं, अुनमें सब से ज्यादाह प्राचीन होने पर भी अत्यंत आधुनिक कालतक अपने महत्त्व और आकर्षण को अवाधित रखनवाले और जैसे द्वापर में वैसेही आज भी कोटि कोटि हिंदुओं के ज्ञानतीर्थ बने हुअे श्री काशी क्षेत्रके समन्तवर्ती अेक अुपवन में से अेकात रूपसे बहती जानेवाली गंगा के किनारे अेक पुराना घाट था । सन्निध लोगो की वस्ती नहीं थी । अेक छोटा सा महादेव का जनशून्य देवालय और अुससे लग कर खड हुअे-कुछ विल के तथा सादे चम्पक के पुराने दरख्त बस, यही अुस स्थल का अलंकरण था ।

जैसे कोभी महारानी राज-सभा के अदर सामत नृपतियों के, सेनापतियों के, प्रधान मंडल के मान-सन्मानों को राजकीय ठाठवाट से दिनभर स्वीकार-ते स्वीकारते थक जानेपर साझको अपने अंत पुरमे आती है, बाल खुले छोड़ देती है, अलकार वेष वगैरा अतार कर विलकुल सादी घरेलू साडी चोली पहनकर अंकात अद्यान में अन्मुक्त चित्त से पुष्पकुजों में से होकर टहलने की अिच्छा हुअी तो टहलने लगती है, कोचपर थोड़ी देर पड़ रहने की अिच्छा हुअी तो पड़ रहती है, अुसी तरह भागीरथी काशी नगरी के सार्वजनिक घाटोपर लाखों भक्तगणों के, राजा-महाराजाओं के, सैनिक, पुरोहित, पंडों के पूजा पुरस्कारों को बड़ी ही अदा के साथ स्वीकारती हुअी आने के बाद अब अिस साझ के समय अुस अंकात स्थल में अन्मुक्त भाव से लहरे अुठाती हुअी वह रही थी । सामने आसमानमें सध्या कालके सूर्य ने लाल गुलाबी रंगों से लवालबभरे हुअे पश्चिम क्षितिज के होज में से रंग छिड़कते, पिवकारी मारते और खेलते हुअे पश्चिम दिशाकी विलकुल रंगपचमी ही कर डाली थी । अुस अंकात स्थलमें, अुस पुराने घाटपर, अुस भागीरथी के सलिल-शात पाट में, अेक ब्राह्मण तरुण स्नानविधि के मन्त्रों का अुच्चारण करता हुआ अुस सध्या समयमें अपना सायस्नान कर रहाथा । स्नान के पूर्वही अपने वस्त्र धोकर अुसने अुस शिवालयके चतुर्दिक् विद्यमान चम्पक पुष्पके वृक्षपर सुखाने के लिय फैला दिये थे । स्नान समाप्त होते ही शरीरके भीगेवस्त्रों के समेतही अुसने सूर्यनारायण को अर्घ्य दिया । तत्पश्चात् अघूरे सूखे हुअे वे सुघोत वस्त्र धारण कर के अुसने थोड़े से विल्वदल और चपक के चार फूल तोड़ें, महादेव के देवालयमें गया और शिवलिंग पर अुन्हे सद्भाव से चढ़ाकर हाथ जोड़कर मनही मन वह प्रार्थने लगा—

“देव, मेरी मूर्खता के कारण मेरे अूपर आया हुआ समस्त लाछन दूर करके अुम राक्षस योगानंद के पजेसे मुझे छुड़ा दिया । अुन पापियों के ससर्ग दोष से मेरे अूपर डाकेजनी और मनुष्यवध के भयकर आरोपों में से न्यायाधीशने सर्वथा निर्दोष समझकर मुझे जो छोड़ दिया, वह सब तेरी ही दया का फल है । अुन दुष्टों द्वारा आनीत गडातर में मे मुक्त निरपराध का यह पुनर्जन्म हुआ है । तेरी न्यायप्रियता की कीर्ति-रक्षा करनेवाली यह तेरी ही दया है ।

“पर देव, न्याययुक्त दया पक्षपात विरहित ही होनी चाहिये, नहीं क्या ? ” वह अदरही अदर घुटने लगा “तब-तब मुझमें भी अधिक निरपराध और अनागर अुस कुमारीपर दया आपको अभी कैसे आभी नहीं ? न्यायाधीशने मुझे जिस भयानक खटले में से निर्दोष समझ मुक्त कर दिया तथापि मेरा मन मुझे एक दोषके विषयमें सर्वदा अगात बनाये रखता है । अपने हाथ में अनजाने क्यों न हो, पर मैंने मालती को अुसके अपने घर न पहुँचाकर किसी दूसरेही पते पर-वह पता अुसके घर का नहीं है यह जान कर भी-लेजा कर छोड़ दिया । वह ‘अदर मेरे-साथ चल’ ऐसा कह भी रही थी तो भी भ्रात धारणा के वशवर्ती हो-अुसके साथ अुस हमरे के घर में गया नहीं और किन्हीं अगो में तो अुस नरपशु के-अुस गुलाम हुसेन के-हाथ में अुस असहाय कुमारी को सौंप देनेके दोष का मैं हिस्सेदार बना । जान बूझकर नहीं हुआ, पर जो मुझे मालूम पड़ना चाहिये था, जिसका मालूम करना अुस समय मुझ द्वारा अगीकृत कार्यभाग में मेरा कर्तव्य था, वह करने में मैं चूक गया, यह मेरी वेखवरदारी भी एक दडनीय अपराध है । नैर्वधिक अपराध (कानूनन् गुनाह) न भी हो तो भी नैतिक अपराध तो हभी है ।

“मेरे अस्तित्व-हीन-अपराधों के आरोपों में से मेरी पहली मनौती को मान कर मेरा छुटकारा करनेवाले देव ! मुझे स्वयं जो घटित सा प्रतीत होता है अैसे जिस अपराध के दोष में से भी मेरा छुटकारा करोगे क्या ? जिस मेरी दूसरी भी मनौती को मानोगे क्या ? पहले तो अुस बेचारी मालती का अुस हिंस्र नरपशु के हाथ से छुटकारा कराने का अवसर तथा सामर्थ्य आप मुझे दें ! पर वह लगभग दुर्घट ही है ! मालती कहाँ है, यह भी किसी को मालूम नहीं ! तिसपर मैं कितना दुर्बल—कितना अपदार्थ ! अुन सबे हुअे पापियों के सशस्त्र कपटाचार से सर्वथैव अपरिचित ! तब वह अवसर और वह सामर्थ्य मिलना मेरे लिये दुर्घट ही होतो कम-से-कम देव, तू अपनी न्यायप्रिय दया का सुदर्शन तो अुसके पीछे पीछे भेजकर अुन दुष्टों का सहार कर, मालती को तू ही छुड़ा ! ” देव, तू सर्व समर्थ है ! मज्जनों के सकटों को तू निवारता है अतएव तुझे दयासागर भी कहते हैं । ”

भक्ति गद्गद वाणी में वह तरुण देवकी जिस तरह प्रार्थना करही रहा था कि अुसका हृदय जिस अंतिम वाक्य से भर आया—“तू सर्व समर्थ

है ! तू मज्जन सरक्खक और परम दयालु भी है ! ” तन्मय हो कर सर्वथा अकेले-अकेले शब्द का अनुच्चारण करता हुआ वह हाथ जोड़ कर ज्यों ही खड़ा रहा त्यों ही वषणभर अम का मन पूर्णतया निस्तब्ध हो गया ! पर अमके बाह्य मन की उस शून्यता में—असके आभ्यन्तरिक मनके अंदर अमके लिये भी अविज्ञान स्वरूप की—कैसी चर्चा हुई कौन जाने—पर अमकी वह तल्लीन शून्यता समाप्त हो जानेपर अके स्पष्ट शब्द असके चित्त में आयी और अम टोककर पूछने लगी—

“देव यदि सुजनों के सकटों को दूर कर सके अतना परम दयालु और सर्व समर्थ भी है, तो वह अतुन निरपराध सुजनों को प्रथमतः सकटों के गर्त में धकेलता ही काहे को है ? दुर्जनों को प्रबल करता ही क्यों है अतुन सुजनों पर अतन्वित अत्याचार कर सके—अतना ? सुजनों की कमौटी देखने के लिये ? पर तब देव का सर्वज्ञत्व ही कहाँ बच रहा ? भक्त सच्चा है या झूठा, यह दुष्टों के हाथ से उस भक्त की अत्यन्त दुर्गति किये बिना देव को विदित नहीं होता ऐसा कहना देवकी सर्वज्ञता के लिये ही नहीं अपितु उसकी परम दयालुता के लिये भी परम लाछनास्पद नहीं क्या ? गावकी डाकुओं के आक्रमण से सुरक्षा करने का सामर्थ्य रहते हुअे भी, गावपर डाका पडनेवाला है, यह मालूम होते हुअे भी जो अधिकारी पहले डाकुओं को ग्रामवासी निरपराधी लोगों को यथेच्छ लूटने देता है, मारकाट, अग्निकांड मचाने देता है, और तब अुनकी दर्द भरी पुकारों पर, अुनकी मनोतियों पर प्रसन्न हो, अुनके रक्ताक्त घावों पर विनामूल्य औषध लगाने की व्यवस्था करवाता है, उस अधिकारी की वह दयालुता क्या स्तुति-पात्र कहला सकती है ? क्यों ”

शोक के पश्चात् अके अफनाते हुअे आनेवाली अिन शकाओं की अकस्मात् भीषण बाढ़ में उस तरुण का दम घुटने ला लगा । और असने बड़े प्रयत्न से उस प्रवाह को बलपूर्वक वही का वही रोक कर उस में डूबते हुअे अपने चित्त को बचालिया ।

“पाखड ! पाखड ! ! ” अपने आप में ही जोर जोर से बोलने हुअे वह जल्दी जल्दी अिघर में अुधर और अुधर से अिधर चक्कर मारने लगा । चित्त थोडामा शांत हुआ तब असने मानो अुन शकाओं और विचारों से मलिनी-भूत चित्त का अक्षरशः प्रबोधालन करने के हेतु से ही गंगा के उस पवित्र और

शीतल जल का आचमन किया और विचारो के प्रवाह को दूसरी दिशा की ओर मोड़ने के लिये, पश्चिमदिग्वर्ती सूर्य के रगपचमी के खेल के धूल-झूलन की शोभा देखता रहा ।

अस लाल गुलाबी स्वर्णशलाकाभ किरणों का ज्योति पुज भागीरथी के प्रवाह में नीचे गहराभी तक प्रतिफलित हो रहा था । लहर-लहर पर वे रग नाच रहे थे । जब वे लहरे अ०परकी ओर अठकर फूट जातीं तब उनके सहस्रावधि तुषार अ०डते-छोटे-छोटे अिद्रघनुष्यो की बौछार की बौछार नदी-पात्रवर्ती पानी पर पडकर तरंगित होती ।

शनै शनै पश्चिम के क्षितिज पर की वह लाल, गुलाबी, शातकुभ किरणाभ छटा, धुधली, हलकी, फीकी अब विरल होने लगी । तेजस्वी बूर्वह युगपुरुषके नष्टप्राय हो जाने पर राष्ट्र का जीवन जैसे म्लान हो जाता है, वैसे ही अ०न स्वर्णिम रश्मियो के समूह को नि शेष रूपमें समेट कर अस्ताचलके पीछे सूर्य के विलुप्तप्राय होते ही गंगा का प्रवाह भी रगहीन, निस्तेज और मलिन दीखने लगा । किसी सुदरी के शरीरमें से चेतना निकल जाय तो जैसे अ०सके अ०पर तत्क्षण प्रेतकला आ जाती है अ०सी प्रकार पश्चिम के मुख पर भी तत्क्षण काली छाया फैल गयी । जो प्रफुल्ल मेघ-खड गुलाब की पखडी की तरह सुहाते थे वे अब शीघ्रही सडे वुसे शुष्क पर्णों के आर्द्र ढेर की तरह दीखने लगे ।

अधकार की पकड में आकर पश्चिम दिशा के अिस तरह काले पडते ही अ०सकी प्राग्वर्ती आभामय सुपमा से रगमग्न हुअे हुअे अिस तरणकी आनदपूर्ण स्मृतियाँ भी अस्तगत होगयी और अ०सके चित्त में भी दुखद स्मृतियों का अधकार प्रसृत होने लगा । “अेक, दो, तीन, चार ! हा, चार दिन पहले ही अिस समय में कारागृहातर्गत भयानक तनहाजी के अधकार में तथा आगे की दुश्चिन्ता में पडा हुआ था । मेरे पैरों की वे वेडियाँ टूट गयीं—निर्दोष छूट आया—आज मैं यहाँ अ०न्मुक्त वृत्ति से अिस ताजी और मुक्त वायु को श्वासोच्छ्वास रहा हूँ ।—पर मालती ? हाय ! हाय ! यह गुलाबी पाँचछम जिस तरह अ०स अंधेरे की पकड में आते ही काली पड गयी, अ०सी तरह वह सुंदर किशोरी अ०स हिम राक्षस के पजे में फँसकर आज प्रभाहीन होगयी । अस्तव्यस्त विखरे हुअे केश, भौतिके कारण मृतिगत हास्य, और मुँहपर फैली हुअी चिन्ता की प्रेतकला—अिन रूपमें वह कही पर पडी

होगी? तर्क भी करना कठिन है कि, मुसको कहाँ पर भगा कर लेगये होंगे। ”

वह अठकर घाट पर मिघर से मुधर चक्कर मारने लगा—असे पहले तो अनेक दिनो की आदत के कारण प्रतीत हुआ कि, पैरो मे वेडियाँ है अभी—चलते समय मुनको सँवारने के अद्देश्य से मुसका हाथ कमर के नीचे चचल-सा हुआ । तत्पश्चात् वह छूट गया है, वेडियाँ टूट गयी है, कैद की कोठडी मे अब वह नही—मिस बात की याद हो आते ही वह मन ही मन हँसा । दूर पर कही देखते हुअे मालती कहाँ होगी मिस वारे में बेलगाम तर्क वितर्क करते हुअे, मुसके वारे मे अनेक काल्पनिक प्रकरणो की योजना करते हुअे, कुछ घूमते हुअे—और कुछ ठहरते हुअे वह वहाँ रहा ।

वह किशन था । योगानन्द अर्थात् रफिअुद्दीन अहमद के डाकेजनी के खटले में पडने से पहले न्याय वेदात्त शास्त्रोका अध्ययन करने के लिये जब वह काशी ही में रहा करता था तब मिसी महादेव के देवालय में वह अेकात् म्यान की मिच्छा से आकर बैठा करता था । मुस देवता को ही वह आराध्य देवता मानता था । आगे चल कर मुस योगानन्द के ढोंग धतूरे के फदे में पड कर जब वह मुसके साथ पकडा गया, तब कैदखाने में मुसने मिसही देवताके नामपर निर्दोष छूटने के लिये मनीती न्यौती थी । मुस खटले का निकाल (निर्णय) अिलाहाबाद के न्यायालयमे चारपाँच दिन पहले ही लगा (प्रकट हुआ) था । रफिअुद्दीन अहमद को आजन्म काले पानी की सजा तथा मुमके साथियो में से बहुतसो को सात से दस बरस तक की कालेपानी की सख्त मजा सुनायी गयी थी । दोको छोड दिया गया—अेक हसनभायी को—वह क्पमा का मरकारी सावपीदार हुआ मिसकारण से, और मिस किशन को, पूर्ण निर्दोष होने के कारण ।

वहाँ से छूटते ही वह सीधा काशी चला आया और अपने प्रिय अेकात् देवालय में अुतरा । मुसका घरवार तथा कुटुब कुछ भी अवशिष्ट नही था । वह विलकुल निर्धन था—अत असे कोयी अधिक पूछता ताछता भी नही था वह कुछ कुरूप था, अत अूस पर कोयी आसक्त भी नही हुआ था । मथरा में रहते समय, मालती को लगने और मिजवाने के लिये, वह पक्का जेवकतरा रफिअुद्दीन जब योगानन्दके वेष म व्यवहार करता था, अुन दिनो मुसने मिस

किशन को ही मालती के साथ भेजने के लिये जो चार पाँच मर्तवा चुना था, वह किशन के किसी सदगुण के कारण नहीं बल्कि अुसकी अिस योडीसी कुरूपता के अवगुण के ही कारण। अुतने अर्थ में, अुसकी कुरूपता अुसके लिये अुपकारकारक ही साबित हुअी। क्यो कि अुस-कुरूपता के कारण ही अुसका मालती के साथ परिचय हुआ और अुम परिचय के कारण-अुसके साथ दया युक्त प्रेमकी भावना से बोलने वाली तथा अुसको अच्छा कहने वाली पहली व्यक्ति अुसको मिली। मालतीने तथा मालती की माँ ने किशन के सुशील स्वभाव की कितनी ही दफा प्रशंसा की थी। अुन दो तीन बार के सहवासों में किशन को लगता था कि, सचमुच अुन दोनों का अुस पर बहुत ही दयाभाव अेव स्नेहभाव है। अुसके अुस समय तक के जीवन में किसी ने भी अुसके हाल-हवाल नहीं पूछे थे। अत अेव मालती और अुसकी मा के वे दो चार मीठे शब्द भी अुसको विशेष ममता-द्योतक प्रतीत हुअे होंगे। अुसके मन में अुन दोनों के प्रति सच्ची स्नेहभावना थी। और समस्त आयुष्यमें पहली बार के अुस स्नेह से अिस प्रकार जब अुमे दूर होना पडा और अुमी की गलती से अुसके अुपर दया-स्नेह प्रदर्शित करने वाली व्यक्ति पर अिस प्रकार का मकट अुपस्थित हुआ अेव अुसका सत्यानाश हो गया, तब यह शल्य अुस के मन में निरंतर पीडा अुत्पन्न करने लगा। अत्यंत सहज भाव से मालती अुमको जितनी मीठी आवाज में पुकारती थी, अुतनी मीठी पुकार अुसको जन्मभर में सुनाअी नहीं दी थी।

“मालती ! फिर अेक बार वैसी मीठी आवाज में पुकार ना मुझे ! — किगअन ! ” अुसने मालती जैसी पुकार अपने ही आप मार कर देअी। फिर थोडे से विमगत विचारों के प्रवाह में देवालय में आया, वहाँ भी चक्कर मारने लगा और अत में अपने ही आप से अूची आवाज में बोला—

“हेह ! बडे बडे पुलिस वालों को अुस नीच गुलाम हुसेन का पता नहीं चल पाया—मुझे भला कैसे चल जायगा ? यदि चल भी जाय, तो मेरे जैसा अमहाय पामर अुस चाडाल चौकडी में से अुमे छडा कर कैसे ला सकता है ? अशक्य अशक्य ! वह यदि शक्य है, तो देव तुझ अकेलेही के लिये ! छडा न, मालती को मुलाकात करा न मुझसे ! तेरी अिच्छा मुझ पामर को कैसे समझ में आयगी ? मैं अुसे पूछता ही नहीं ! पर अपत्ती अिच्छा मुझे

अच्छी तरह समझमे आती है। वह बताये वगैरे मुझ से रहा नहीं जाता। मालती की मुझसे मुलाकात करा न ।।”

असने देवको साष्टांग नमस्कार किया। आँखों से विगलित अश्रु-विद्रुओं को असने पोछा। निष्फल विचार करते करते असका भगज विलकूल खाली-अब सुन्न सा होगया। अन्तर्वर्ती विचार ज्योही कुछ कुँठसे गये-वह विल्व वृक्ष के मूल का आधार लेकर, दूर आकाश में अडते हुअे-अपने घोसलों को पहुँचने की जल्दी करनेवाले दो-चार पछियो का तमाशा देखने लगा।

अितने में समीपस्थ अस घाट की पौडियो की ओर किसी के मुँहसे सीटी की आवाज भी सुनायी दी। धूम कर देखने पर कोभी पौडीपर से नीचे झुक कर पानी की ओर देखता हुआ सा दिखायी दिया। और थोड़ी ही देर में पानी में घडा डुबाने की आवाज भी आयी।

“कौन भला, घडा भरकर पानी ले जाने के लिये अितने विजन सध्या समय में, गंगा पर आया हुआ है? इस जगह लोगों का आना जाना बहुत कम रहता है, यह पानी ले जाने का घाट भी नहीं है। ऐसे वक्त पानी का घडा भर कर लेजाने वाला मनुष्य अवश्यही यही कही अतरा हुआ होगा। होगा बेचारा पाथस्थ कोभी भी।”

ऐसा मन में बोलता हुआ किशन अम घडा भर कर अठनेवाले मनुष्य की धँधली सी मुखाकृति की ओर सहजभाव से ही देखता रहा, पर घडा कंधे पर रखकर मुँहमें सीटी मारता हुआ वह मनुष्य परली तरफ के आये हुअे राम्ने में न जाकर देवालय के साथ लगे हुअे रास्ते से, जैसे जैसे नजदीक नजदीक आने लगा, वैसे वैसे किशन भी मनही मन अधिकाधिक चौकता चला गया। अच्छी तरह देखने लगा, विल्ववृक्ष की आटमें छिपता चला गया, और मनो-विनोदार्थ मुँह से सीटी मारता हुआ कंधेपर घडा रखे जानेवाला वह मनुष्य देवालय की समीपवर्ती पगडडी में चलता हुआ अपनी मौज में जब थोडासा आगे गया तो ही किशन सताप के, भय के और कुछ आनंद के आश्रयमें ओठ फडकाते हुअे मन ही मन बोलने लगा—

“यह ही। विलकुल निश्चित। यही है वह गुलाम हुसेन। खटले में हमनभाभी ने जो कहानी सुनायी थी, वह यदि सच है तो मालती को भगाने का काम अिसी ने किया है। पर अिमने असे बलूचिस्तान सरीखे

दूर के प्रदेशमें भेज दिया या बेच दिया ? या अपने ही पास रख लिया ? यह यहाँ कहा ? चोरकी तरह छिप कर रहता है जिस वीरान अलाके में चहुँघा ? पर यदि वह किसीके पास होतो ? दीखेगी क्या मुझे ? अकवार तो मालती दीखेगी क्या पुन ?—अरे, पर यह चला अँधेरे में ! ठहरता हूँ क्या मैं मूर्खों की तरह यहाँ ? क्या डरपोक है यह मन ? कहता है, अपने हाथ में तो कुछ भी नहीं और यह तो पक्का नृशस—सशस्त्र भी होगा ही ! अत्यंत विचारशीलता कभी कभी नामदर्पने का भी रूप धारण करती है अंसा ! जाना ही चाहिये जिसके पीछे ! किसे मालूम जिसने मालती को यही कहीं छिपा कर रक्खा हो ! क्या योग है ! जान लूँगा—अपनी दूँगा—पर उसे छुड़ाऊँगा ! ”

जिस आखिरी वाक्य में उसमें हाथी का बल और बाघ का साहस आगया ! “ किशन ! छुड़ा न मुझे ! ” ऐसी मालती की आँतें पुकार उसे सुनायी भी दी !

किशन पहले तो झप—झप चला । पर जब उस आदमी के अितना समीप आया कि, उसके पीठ पीछे से उसका रास्ता नजर आ सके तब जरा दुबककर चलने लगा । आगे चलने वाला यह मनुष्य गुलाम हुसेन ही है, जिसमें किशन को अब सदेह ही नहीं रह गया था । गुलाम हुसेन कुछ दूर जाने के पश्चात् पगडंडी छोड़ कर एक खडहर की ओर चला । आगे एक बड़े, पक्के, पत्थरो से बने चबूतरे की आड थी । वहाँ एक घुमाव लेकर वह एक पर एक रखे हुअे पत्थरो के बावके पास आया । बावपर घड़ा रखकर, बाव के ऊपर से अदर की तरफ फौद कर, घड़ा कंधेपर ले एक बड़े बटवृक्ष के मूलकी आडमें बने हुअे एक खपरैल का छोटा सा घर था उसके दरवाजे पर आया । उसके पीछे पीछे सुरक्षित अतरो पर से रास्ता निकालते हुअे आने वाला किशन उस बाघ के पास आया—उस घर में से कोअी व्यक्ति दरवाजा खोल कर गुलाम हुसेन के सामने आती है या नहीं यह आँखें फैला फैला कर देखने लगा । घर के अदर का प्रकाश हिलता सा नजर आया, उसे देखते ही उसके दिमाग में आया कि अदर कोअी आदमी है—वह मालती ही तो नहीं न है ? अतुसुकता में उसकी छाती धड धड करने लगी । पर गुलाम हुसेन घड़ा नीचे रख कर, कमर के नजदीक कुछ खोलकर उस बंद दरवाजे के ऊपर की चौखट के

समीप ज्योही अपना हाथ लेगया त्योही किशन के ध्यानमें आया कि, दरवाजे को तो बाहर से ताला लगा रक्खा है ! अुसपरसे अदर कोभी भी नहीं है यह जान लेतेही अेकदम अुसका आशा-भग होगया । जिस तरह मालती हाथ में आभी अुसी तरह वह विल्प्त भी होगभी ! अुसका जी तिलमिलाने लगा । अितने में गुलाम हुसेन ने ताला खोलकर दरवाजा खोला और थोडा सा डौटते हुअे वह कहने लगा—

“रोशन ! रोशन ! वत्ती बाहर लाव ! क्या ? नहीं आती ? घसेटके ले आवू ? ”

वे शब्द सुनतेही किशन का शरीर काप अुठा । अदर कोभी औरत है ! अुसे कडी निगरानी में रक्खा गया होगा ! बाहर जाना हो तो यह राक्षस अुसको ताले में बंद कर के ही बाहर जाता है ! वह अिसका कहना मनसे नहीं मानती ! यह मौका पडने पर अुसे घसीटने से भी नहीं चूकता ! अितनी लबी चौडी वाते अुसको अुस अेक चार शब्द वाले वाक्य में ही मालूम पड गभी ! अुसकी अुम्मीदके लिये वह अितनी अनुरूप सावित हुअी कि, वह ओठो ही में बोलने लग गया—

“हो न हो मालती ही अदर है ! रोशन—का मतलब ही मालती ! आयेगी क्या वह वत्ती लेकर बाहर ?—अुसे खीचकर ही लाता हूँ ! ”

सचिन्त अुत्सुकता से अुसकी छाती घडकने लगी ! गुम्से से अुसके ओठ फडकने लगे ! वत्ती दरवाजे के पाम आभी । वह पत्थर के बाँधके पीछे छिपकर देखने लगा घुआँ अुगलने वाली आगको कुरेदने से जिस तरह वह थोडी सी जल अुठ्ठी है, और थोडीसी लपट अुपर को अुठने लगती है, तद्वत् गुलाम हुसेनके ‘आती कि नहीं ! अिधर ! और आगे !’ अैसे धमकी भरे शब्दो के साथ साथ अपने हठीले पैर आगे रखती हुअी, फिर हठीले स्वभाव से ठहरती हुअी, वत्ती हाथमें लेकर मुसलमानी वेश में अेक तरुण स्त्री अतमें बाहर आभी ! वह वत्ती गुलाम हुसेन द्वारा निर्दिष्ट काटेपर टाग दी । और पुन वह घर में जाने लगी । त्योही गुलाम हुसेन ने अुसे पकड लिया । पास ही अेक बडा वृक्ष का लट्ठा पडा हुआ था । अुस पर वह कुर्सी की तरह पैर लटका कर बैठ गया और अुसे अपनी जाघो पर बलपूर्वक घसीटने हुअे बोला,

“आव, तू हस या रो पड पर मैं अभी तेरे साथ प्रेम की मजा लूँगा ही। देखने दे तो तेरा वह मुदर मूह। नहि अठाँती मूह अपर? तो ऐसा मैं जवरन असे अपर अठावूँगा और मेरे आखे भर भर करके तेरी खुबसूरती की शराब पी लूँगा।”

अस प्रकार लाड में आकर बोलते हुअे असने अस रमणी का बदन मडल बलपूर्वक अपर अठाकर दोनों हाथों से अस दीप के प्रकाश में पकड़ लिया। आँखें भर भर कर अस्की मुदरता का मद्य वह पीने लगा। झूलने लगा और अस मुँहके मटामट चुवन लेने लगा। कहने लगा—

“वाह वाह! अस अघेरे रात में नया चाद! मैं रोशन, क्या बालती थी तुझे तेरी मा?—मालती? मैं मालती! मेरी जान!”

अस अघेरी रात में कोभी नवीन चद्रमा अगे अमी तरह वह मालती का मुखमडल गुलाम हुसेनको सुदर भासित हुआ। वह देखते ही वह अघेरी रात किशन को और भी अधिक काली भासने लगी। अस दीये के प्रकाशमें अठाकर पकड़े हुअे असके मुखमडल के स्पष्टरूपमें देखते ही वह मालती ही है यह किशन को नि शक रूपसे मालूम पड गया। और जिस मालती को अेक मोने की थाली में गूथकर रक्खी हुयी पूजाकी शुभ्र और पवित्र पुष्प-माला की तरह असने मयुरामें देखा था, अमी को अस अमगल, दुर्दण्ड नीच की जाघोपर गँदले कीचडमें पड़े हुअे निर्माल्य के सदृश तादृश जुगुप्सित दुदशा में देखते ही अस्की आँखों के सामने अेकदम अँधेरा आ गया।

“मालती! तुझे मेरी बाली समझती नहीं? अच्छा! मैं तेरे टूटे फूटे मरेटी में बोलता, मुन! तू अंसी दुख में का? तुझी मा तुला आठवते? जिस लिये तू अवतक दाडगाभी करते, असी रहते, मला झिडकारते? रोज तो मेरे विछोनेमें तेरे को लेताहि है? फेर बल में हम तुझ्यापासून जे छिनावून घेतोच है ते सुख तू हमने हँमते हँसते क्यों देन नाही मुझे? तुझी आओ भी तुझ्यापास आणून ठेवू? बोल! तुझ्या आओला भी पळवून आणतो देख, फेर तो मुक्कमें हँसत सोयेंगी क्या माझ्या विछोन्यावर? तुझ्या आओ—”

“मेरी माका नाम तो फिर मत निकाल अस अपने नीच मुख से। आग लगे तेरे मुँहको।” असके हाथों द्वारा अपर अठाये गये और अब गुस्मेकी चजह से रोदिप्यमाण अपने मुँहको अेक झटका मार कर हटाते

हुअे मालती जो अपना सिर फिराने गयी—असके सिरका अेक जोर का तडाखा गुलाम हुमेन की ठुड्डीपर बैठते ही असकी दातो की पक्तियाँ अेक दूसरे से अैसी कचका गयी कि, असके माथे से झनझना कर दर्दही पैदा हो गयी ! असने गुस्सेमें आकर मालती के गाल पर ताड़ करके अेक चपत जमा दी और जो ढकेल दिया, वह घडाम से जमीन पर जा पड़ी ।

“राक्षस ! अभी तेरे नरडे की घूट लेता हूँ । ” अैसा फुसफुसाते हुअे दया की और त्वेषकी लहर में किशन अेकदम बाँधपर चढ़ने लगा ।

“तेरी जान लूंगा या अपनी दूंगा ” अस खुमारीके साथ असने ज्यो ही बाधके अूपर अपना पैर रक्खा त्योही नीचे का पत्थर खिसककर असका पैर अेक गहरे छेदमें जाकर अटक गया । असके साथही असके जोश की गुमारी अुतर गयी । वह पैर छुडाने लगा—तबतक अेक दूसरा ही विचार असके दिमाग में आया—असका मन अुमसे कहने लगा—“तेरी प्रतिज्ञामे मे ‘यातो गुलाम हुमेन की जान ले लूंगा’ अस विकल्पकी अपेक्षा ‘या फिर अपनी जानही दे दूंगा’ यह विकल्प ही अस मुकाबिले में फलीभूत होगा अैसी सभावना अधिक है । यह अधम हुमेन मगम्व्र तो होगा ही । मैं नि गस्त्र । असि गुत्यमगत्ये स मेरे अूपर का गुम्सा मालती पर निकाल कर यह मालती को जान से मार नहीं डालेगा, असका क्या सबूत ? फिर अस घरमें असका अेक और भी साथी होगा ही । अंसे निर्लज्ज आदमियों का गृगार अनेक बार सशुक्त रूपमें भी होना है, यह अिन्ही के साथी हमनभाअीने मुकदमे (गटले) के समय शपथपूर्वक कहा था—। हैह् ! अभी अस प्रकार का साहम करना मालती को सकट में से निकालने के लिये प्राप्न मुवर्ण सधिको गँवा बैठने जैसा होगा । ” अूपरके पैरकी पत्थरों की पकड़ में से छुडाने समय किशत को अँपेरे में छिप जाने की गडबडी लगी हुअी थी । वह बाध की आड में छिपकर अेक ओर आगे क्या होना है यह देख रहा था दूसरी ओर अब आगे मुझे क्या करना चाहिये अस विषय पर विचारों पर विचार आते जा रहे थे ।

मालती घडाम में जो जमीन पर गिरी, वह वैसेही वहाँ पर सिग्हाने अपना हाथ रख के सिसकियों भरती हुअी पड़ी रही । गुलाम हुमेन तनकर खड़ा हुआ, कुछ वपणोतक वह असको अुभी अवम्प्याम पड़ी हुअी देखता रहा । अँधे गंर कर देखने के बाद और भी अधिक आतुर होकर हम पड़ा ।

“आह रे खुवसूरती ! छोकरी, यह चित्रके सदृश ठीक ठीक रेखाकिन् तैरी शरीर यष्टि कैसी प्यारी लगती है ! खन्ही होने के भी अपेक्षा यह हरिणा जैसे तेरे गौर सुंदर पैर करवटपर जोड़कर सीधा लवे तान कर जब तू पड़ी रहती है न, तब तेरी तनुलता अक नवीन ही शोभासे मनको मोह लेती है ! और शंभर (= सौ) औरता खिलखिलाकर हँसने से जितना आनंद नहीं आता अतना तुझे बिसतरह सिसकियाँ भरते और रोते हुअे करवट ले शरीर पूरी तरह फैलाकर सोती हुअी को देखकर मुझे होता है ! तेरी छाती स्फुटन म कैसी अुचावते, बिखरे कुरल कैसे पछियो के समूहकी तरह तेरे भालके मडप पर खिळत अूडते हैं ! अब समझती है ना माझी मरेठी बोली तुला ? अूठ छोड दे नखरा तू झिडकारतेस मला असलिये क्या मी छोड देगा तुला ? प्यारी ! अँक (सुन) ! गाय रहतो है ना खूष दूधवाली ? वह जब हट से बैठजाती बिघडून लाथा मारू लागती, तब वहाला घालून (डालकर) अुसकी तगड्या बाधून अुसे बलपूर्वक अुठवाकर गवळी दूध काढतोच काढतो ! गाय लाथाडते असलिये जो गवळी अुसकी हड्डी के सदृश भरी हुअी कास (अूधस्) का दोहने का सोडतो, अुस मुर्दाडाने गाय बाळगावी कशाला (क्यो) ? अूठ, प्यारी अूठ, तेरे जवानी की खुवसूरत गाय में दोहूगाहि दोहूगा ! ”

गुलाम हुसेन ने स्वत नीचे बैठकर फिर जबरदस्ती से अुसे अुठाया अुसे पास लिया तथा अुसपर अपने हाथ फेरने लगा ।

“प्यारे मालती ! ताले में दिनभर बंद करके रखता हू असलिये तू घुस्सा करती पर पुलिसवालो को तेरा पता न लगे, तुझे पकडकर ले गये तो तुमकोहि वे पोलिस हाण मार करेगे ! दूसरे किसी दुष्ट के पीजरे म यह पाखरू (पछी) जा पड़ेगा ! तेरे ये नखरे के पख अुखाड कर फेंक देंगे मोहक मने ! वे चाडाल ! ये लाड, नखरे में हूँ असलिये चलने देता हूँ तेरी कोअी लाडगा (भेडिया) दुर्दशा न करे असलिये तुझे अिस मेंढवाडे में अिस तरह ताले में बंद करना पडता है माझ्या लाडक्या कोकरा ! (—मेमने !) पर अब दो चार दिनो हीमें मे तुझे अेकदम अितनी दूर और अैसे अेक रम्यवन मे लेजाअूगा कि वहाँ अिघर के पुलिस वालो के बापको भी अपना पता नहीं लग सकेगा ! वह हरामी रफिअुद्दीन तो पड ही गया अुस काले पानी के नरकमे जनमभरके लिये ! अुम्र कैद ! अुस सारे मुकद्दमे का

फैमला मुना दिया गया ! अब पुलिसवाले हम को योभी भूल जायेंगे । और अब मुझे उस वन में ऐसी जगह हाथ लगे हैं कि जहाँ तू भी अच्छानुरूप आनंद से अपनी जिंदगी बसर कर सकेगी । ये डाके में कमाये गये रत्नों के दो हार यह सोना और यह तू मेरी मोनी ! वम्म् भोगच भोग ! विलासच विलास ! जन्म भर भी मैं तुम सबको भोगता जाऊँ तो भी तुम सब बाकी बच जाओगे ! आज तक कमाओ और अब रमाओ ! प्राप्ति का भोग ! प्यारी हस ना, हम, हम, !” वह उसे गुदगुदा करने लगा ।

वह गुदगुदी मालती को रीछ की प्राणहारक गुदगुदी की तरह लगी । मन मसोस कर वह हँसी !—पर उस गुदगुदी में किशनको मज्बी गुदगुदी हुयी और वह हँसा अत्यंत मनोष से । गुलाम हुसेन के मुँह से पुलिस का नाम निकलते ही उसे अकदम मानो गुरमंत्र ही मिल गया । अँधेरे में किसीको अचानक हाथचमक (हैंड-चैटरी) मिल जाय वैसी उसकी दशा हुयी और उसके चित्त का बटन दबते ही उसे आगे के अपाय का रास्ता अकदम दिखायी दिया ।

बस अलग से और पौने बारह ! अभी का अभी यह समाचार पुलिस की चौकी पर जाकर गुप्त रूपसे कह देना चाहिये । अठारह बरस से कम धुम्र की लडकियों को बुडाना यह गुलाम हुसेन का एक नैर्बधिक (कानूनी) घोर अपराध है ! मालती का नहीं ! तिसपर गुलाम हुसेन के ऊपर डाकेजनी के बारट भी होंगे ही ! खटले का वह एक फरारी है ! अब वह फाँसी के रस्मेपर झूले लेगा—और मालती पुन उस मथुरा के आनंद के पालने पर ! उसी प्रकार अन मधुर मधुर पदों की लहरे लेती हुयी मुल्लाम के आकाशमें किसी सुंदर पक्षी की तरह उड़नेकी अच्छा से पुन झूले लेगी ! अहो आनंद ! अनकी वह प्यारी “कियऽन !” ऐसी लाड भरी पुकार उसे पुन सुनायी दी ।

आनंद के आवेशमें यह समाचार पुलिसवालों को देने के लिये किशन लुकते छिपते अपनी आहट न लगने देते हुये बाघ की आड आड में चलते हुये रास्तेकी तरफ जाने के लिये मूडा । अभी बीच किशन ने अकस्मान् एक भयकर चीख मारी ! “अय्यायाया !” कहकर विलम्ब मुठा ।

‘भो ! भो ! गुर्रं गुर्रं !’ करते हुअे किशन की पिंङली का मास-गाल दाँतो से पकड़कर अेक विकराल कुत्ता पिंङली को बुरी तरह खींच खींच कर तोड़ने लगा ।

वह अुस घर के समीप पाला हुआ गुलाम हुसेन का कुत्ता था ।

बाघ के पास अदरकी ओर कहीं वह फिर रहा था । आहट सुन पड़ते ही वह बाघ पर अघेरे में चढ़ा । किशन के हिलते ही अुसकी दृष्टि अुसपर पड़ी और चोरकी तरह दुबकी चाल से जानेवाले किशन पर वह विकराल कुत्ता दूट पड़ा अेव पहली ही झपट में अुसने किशन की पिंङली को बुरी तरह चबा लिया । अघेरे में अप्रत्याशित रूपसे ली गयी अुस असह्य चबायी के साथ ही कारण न होते हुअे भी किशन अितनी अूची आवाज में चिल्लाया पर कुत्ता अूमकी पिंङली छोड़ता ही नहीं था । अुलटे और भी अधिक त्वेषसे अुस को वह कचाकच तोड़ता चला जा रहा था—गुर्रं गुर्राता तथा जूझता चला जा रहा था ।

बाघ के नजदीक किसीकी अितनी जोर की चिल्लाहट सुनकर वह कामातुर गुलाम हुसेन भी चौंका । हो न हो अिस अपने कटखने कुत्ते ने ही किसी राहगीर को अँघेरे में दाँतो से लिटा दिया है । यह ध्यान में आते ही अुसे भय लगा कि अुसकी अिस चोरवस्ती के पास लोगो का शोर गरावा होकर अुनका ध्यान कहीं अुस ओर आकर्षित न हो । अुसे यह सकट अनभीष्ट था, अतः सामोपचार में अुस प्रकरण को वही मिटा देने के विचार से हाथ में लालटेन लेकर और मालती से “घर के अदर जा” कहकर गुलाम हुसेन दौड़ते दौड़ते बाघ के पास आया तबतक किशन ने बाघ में से अेक पत्थर निकाल कर अुस विकराल कुत्ते के मिरपर दे मारा था, अतः वह पिंङली छोड़ कर दूर हट तो गया था पर फिर थोड़ा झपट्टा मारकर मौँकते हुअे तथा गुर्रं गुर्रं करते हुअे किशनकी दूसरी चबायी लेने के लिये जूझ रहा था ।

किशन की फाड़ी हुयी पिंङली में से लोहूकी धार वह रही थी और असह्य वेदना हो रही थी । हिलने की सुविधा ही नहीं थी । गुलाम हुसेन के नजदीक आते ही किशन ने बहाना किया—

“मैं अघेरे में वह दीया देख अेक रात भरको आसरा मागने के लिये आया था सो तुम्हारे अिस कटखने ने मेरी जान ले ली । अम्मायी ! हाय अम्मा !”

“विह्वल न हो, चिल्लाता काहे को है भिसतरह !” गुलाम हुसेन प्रकरण को समाप्त करने की वृद्धि से उसे समझाते हुअे बोला, “वह कटखना मेरा पालतू कुत्ता न भी हो तो भी मैं तेरी पट्टी बाँधे देता हूँ। यही सो रह भिस घर के पास रातभर और तडके ही अपनी राह पर लग-या हस्पताल में जा।” गुलाम हुसेन को यह प्रकरण विशेष हल्ला गुल्ला न करते हुअे मिटाना था अतः उसे यही अक युक्ति सूझी—सो अच्छी लगी।

बड़े प्रयास से गुलाम हुसेन ने किशन को अुठा कर अुस बाँध को लाघा और अुस लालटेन के हल्के से प्रकाश से युक्त आगन में लाकर रख दिया। पानी से अुसका घाव धो-पोछकर अपनी हमेशाकी रामबाण दवा किशन के घावमें भरकर रक्तस्राव को थाम दिया। पट्टी बाँधी। किशनको अुस लक्कड़ पर पीठ टिकवा कर लिटा दिया और लालटेन अुपर काँटेपर टाँग दी। जबतक लालटेन नीचे थी तबतक दवादारू की गडबडीमें गुलाम हुसेन को किसी भी कपट की शका न आभी। अुसका लक्ष अुस पाथस्थ के पैरपर ही लगा रहा था। पुन, पीछे अेकदफा अुसने मथुरामें किशन को जो देखा था सो योगानदी सप्रदाय के गोस्वामियों के भेसमें—आज किशन का वेश अेक दरिद्र भटकने वाले का सा था। अतः गुलाम हुसेन के लिये किशन को पहचान लेना कठिन हो गया था।

लालटेन अुपर टांगने के बाद, लक्कड़ पर टेका दिये हुअे, थककर चुप बैठे हुअे किशन के मुँह पर स्वच्छ प्रकाश पडा।

अितनी देर तक घर में रहने पर भी खिडकी में से अुस पाथस्थ की सारी हरकतों को देखने में लगी हुअी मालती के मन में वह पाथस्थ कौन है भिस चारेमें दस दफा अेक शका आकर गभी ही थी। अुस लालटेन के प्रकाशमें किशन के मुखको ठीक ढग से देखने के बाद मालती की अुस शका ने पक्के निश्चय का रूप धारण किया —“किशन”। मालती के ओठोही ओठों में अेक पुकार भी थरथराकर चली गभी। अुसे मथुरा में देखने के बाद से अुसका क्या हुअा होगा भिसवारे में मालती को कुछ भी मालूम नहीं था। अपनी मा की अगली जानकारी भिमे मालूम ही होगी—अैसा अुसके मन में अुसे पहचान लेने के अेक वयण बाद ही आया। किंतु पर-पुरुष के साथ अुसमें भी योगानद, गुलाम हुसेन प्रभृति जिस चाडाल चौकड़ीने अुसे भगाया था अुनके

अस अधम अपराध की जानकारी जिन लोगो को होने की सभावना है ऐसे अस मालती के घनिष्ठ परिचय के पुरुष से खुले रूपमें बातचीत करते ही—असकी वजह से केवल मालती का ही नहीं बल्कि अस किशन का भी घातपात करने से यह हिंस्र गुलाम हुसेन हिचकेगा नहीं ऐसी भीति भी मालती को तत्काल लगी। वह घबरा गयी—घबरा गयी। पर तत्काल अतुल्यता के कारण खुल्लमखुल्ला न भी हो तो भी अकेल में अस राक्षस गुलाम हुसेन के सो जाने पर असकी भेंट लेकर ही रहूंगी चाहे कुछ भी क्यों न हो—यह दृढ़ निश्चय मालतीने मन ही मन किया। वह आँखों से बूँदें गिराती हुयी किशन की ओर टकमक देखती रही। अतने ही में गुस्से से अकड़े हुये गुलाम हुसेन की आँख अस खिडकी की तरफ पडते ही मालती झट से पीछे की ओर सरकी और अपने ही से पूछने लगी—

“अरी-मैया ! यह राक्षस ऐसा गुस्से में क्यों आगया अकस्मात् ? कुछ शका आगयी क्या मुझे को ? ”

घर के भीतर खिडकी के पास से पीछे हटकर वह दरवाजे की दरार में से बाहर नजर डालने के लिये ज्यों ही दरवाजे के समीप गयी त्यों ही गुलाम हुसेनकी किसी पर गुस्सा करने और अस कटखने कुत्ते से भी अधिक भीषणता के साथ गुराने की आवाज असे सुनायी दी।

क्यों कि अस लालटेन का प्रकाश थकावट से आँखें मूंदकर लकड़े पर टेका लिये हुये अस किशन के निश्चल मुखपर पडते ही मालती को जो शका आयी थी वही गुलाम हुसेन को भी आयी। तिसपर खिडकी में से अत्यंत लोभपूर्ण दृष्टि से किशन की ओर टकमक देखने वाली मालती को असने ज्यों ही देखा त्यों ही असकी शका सौगुनी बढ़ गयी। पक्का निश्चय करने की युक्ति भी असे साथ ही साथ सूझ पडी। असावधान, नीदमें पडे हुये अस घायल को गुलाम हुसेन ने हेतुन अस सशयित नाम से पुकारा—

“किशन ! किशन ! ! ”

किशन दचक कर (घबराकर) जाग गया और अपने नाम का परिचय देना ठीक नहीं यह बात ध्यानमें आने में पहले ही उत्तर दे बैठा—

“ओ ! ओ ! ”

“अरे हरामखोर, पकड़ा कि नहीं तुझे ? छद्मी वेष से नाम छिपाकर हों पता चलाने के लिये आया था क्या ? किशन ! बोल ! ” मुट्ठी तान कर क्रोधसे कपित घघराती हुमी आवाज में गुलाम हुसेन फनफनाया, “बोल, तू मालती का पीछा करते हुबे यहाँ आया है या नहीं ? तू और पाजी हसनभाभी तुम्हीं विश्वासघातकी सरकारी साक्षीदार हो न कोर्ट में के ? मेरे गले में ज़ात देना चाहते हो क्या ? काफ़र ! बेअमीमान ? ”

“तेरा बाप बेअमीमान ! तुझसे अमीमान ? ” किशन त्वेष में आ तत्काल झुठकर खड़ा होगया ।

“छुरा भोक्कर तेरा पेट फाड़ ही दिया मैंने समझ ! मेरा छुरा !—छुरा ! ” लकड़े पर गुलाम हुसेन ने देखा ! छुरा नहीं था वहाँ । वह घर के अंदर सिरहाने हैअसा असे याद आया ।

अंदर दरवाजेपर खड़ी हुमी मालती को भी वही तत्काल याद आया । अुसने झटपट खाटपर का छुरा निकाल कर अपने कपड़ों के अंदर कमर में छिपा लिया और वह अेक कोने में जाकर खड़ी हो गयी । अिसी छूरे में मालती के समवष गुलाम हुसेन ने अपने अेक विगड़े हुबे साक्षीदार को मथुरा में भागकर आते समय अेक जंगल में अँख झँपकते न झँपकते भोक कर ठंडा कर डाला था, ठीक अुसी तरह अब किशन भी ठंडा हो जायगा—अत वह भय से यरथर काप रही थी गुस्से के मारे बेसुध हुमी जा रही थी ।

अुतने ही में छुरा लेने के लिये गुलाम हुसेन दरवाजे को तड से खोलकर अंदर घुसा । अुसी के पीछे-पीछे किशन भी त्वेषके साथ अंदर प्रविष्ट हो । गुलाम हुसेन को कमर से पकड़ अुलझता सुलझता अुसके साथ ही खटिया पर जा पड़ा । सिरकटा कवच भी रण-त्वेष के कारण कुछ देर तक तो रणमें जूझता ही चला जाता है, किशन को अपने घायल पैर का भान तक नहीं रह गया था ।

मालती को भी अुस प्राणमकट के कालमें विचार किंवा सुधबुध रह ही नहीं गयी थी । जो लहर आये वही ! किशन के तरडें (गले) को गुलाम और गुलाम के तरडें को किशन पकड़ते और छुड़वाने—दोनों के दोनों खाट पर जा पड़े और पड़ते ही—

अस अघम अपराध की जानकारी जिन लोगो को होने की सभावना है ऐसे अस मालती के घनिष्ठ परिचय के पुरुष से खुले रूपमें बातचीत करते ही—असकी वजह से केवल मालती का ही नहीं बल्कि अस किशन का भी घातपात करने से यह हिंस्र गुलाम हुसेन हिचकेगा नहीं ऐसी भीति भी मालती को तत्काल लगी ! वह घबरा गयी—बबरा गयी ! पर तत्काल अतुल्यता के कारण खुल्लमखुल्ला न भी हो तो भी अंकात में जिस राक्षस गुलाम हुसेन के सो जाने पर असकी भेंट लेकर ही रहूंगी चाहे कुछ भी क्यों न हो—यह दृढ़ निश्चय मालतीने मन ही मन किया । वह आँखों से बूँदें गिराती हुई किशन की ओर टकमक देखती रही । अतने ही में गुस्से से अकड़े हुअे गुलाम हुसेन की आँख अस खिडकी की तरफ पडते ही मालती झट से पीछे की ओर सरकी और अपने ही से पूछने लगी—

“अरी-मैया ! यह राक्षस ऐसा गुस्से में क्यों आगया अकस्मात् ? कुछ शका आगयी क्या मुअे को ? ”

घर के भीतर खिडकी के पास से पीछे हटकर वह दरवाजे की दरार में से बाहर नजर डालने के लिये ज्यो ही दरवाजे के समीप गयी त्योही गुलाम हुसेनकी किसी पर गुस्सा करने और अस कटखने कुत्ते से भी अधिक भीषणता के साथ गुराने की आवाज असे सुनायी दी ।

क्यों कि अस लालटेन का प्रकाश थकावट से आँखें मूदकर लकड़े पर टेका लिये हुअे अस किशन के निश्चल मुखपर पडते ही मालती को जो शका आयी थी वही गुलाम हुसेन को भी आयी ! तिसपर खिडकी में से अत्यंत लोभपूर्ण दृष्टि में किशन की ओर टकमक देखने वाली मालती को असने ज्यो ही देखा त्यो ही अमकी शका सौगुनी बढ गयी ! पक्का निश्चय करने की युक्ति भी असे साथ ही साथ सूझ पडी । असावधान, नीदमें पडे हुअे अम घायल को गुलाम हुसेन ने हेतुत अस सशयित नाम में पुकारा—

“किशन ! किशन ! ! ”

किशन दचक कर (घबराकर) जाग गया और अपने नाम का परिचय देना ठीक नहीं यह बात ध्यानमें आने से पहले ही अत्तर दे बैठा—

“ओ ! ओ ! ”

“अरे हरामखोर, पकड़ा कि नहीं तुझे ? छद्मी वेष से नाम छिपाकर यहाँ पता चलाने के लिये आया था क्या ? किशन ! बोल ! ” मुट्ठी तान कर क्रोधसे कपित घर्घराती हुयी आवाज में गुलाम हुसेन फनफनाया, “बोल, तू मालती का पीछा करते हुये यहाँ आया है या नहीं ? तू और पाजी हसनभायी तुम्हीं विश्वासघातकी सरकारी साक्षीदार हो न कोर्ट में के ? मेरे गले में चात देना चाहते हो क्या ? काफर ! बेभीमान ? ”

“तेरा बाप बेभीमान ! तुझमें भीमान ? ” किशन त्वेष में आ तत्काल झुठकर खड़ा होगया ।

“छुरा भोककर तेरा पेट फाड़ ही दिया मैंने समझ ! मेरा छुरा ! —छुरा ! ” लकड़े पर गुलाम हुसेन ने देखा ! छुरा नहीं था वहाँ । वह घर के अंदर सिरहाने हैअमा असे याद आया ।

अंदर दरवाजेपर खड़ी हुयी मालती को भी वही तत्काल याद आया । अुसने झटपट खाटपर का छुरा निकाल कर अपने कपड़ो के अंदर कमर में छिपा लिया और वह अेक कोने में जाकर खड़ी हो गयी । अिसी छूरे में मालती के समक्ष गुलाम हुसेन ने अपने अेक विंगडे हुये साक्षीदार को मथुरा में भागकर आते समय अेक जंगल में अँख झँपकते न झँपकते भोक कर ठंडा कर डाला था, ठीक अुसी तरह अब किशन भी ठंडा हो जायगा—अत वह भय में थरथर काप रही थी गुस्से के मारे बेसुध हुयी जा रही थी ।

अुतने ही में छुरा लेने के लिये गुलाम हुसेन दरवाजे को तड से खोलकर अंदर घुसा । अुसी के पीछे-पीछे किशन भी त्वेषके साथ अंदर प्रविष्ट हो गुलाम हुसेन को कमर से पकड़ अुलझता सुलझता अुसके साथ ही खटिया पर जा पड़ा । मिरकटा कवध भी रण-त्वेष के कारण कुछ देर तक तो रणमें अुलझता ही चला जाता है, किशन को अपने घायल पैर का भान तक नहीं रह गया था ।

मालती को भी अुस प्राणसंकट के कालमें विचार किंवा सुधबुध रह ही नहीं गयी थी । जो लहर आये वही ! किशन के नरडे (गले) को गुलाम और गुलाम के नरडे को किशन पकड़ते और छुड़वाते—दोनो के दोनो खाट पर जा पड़े और पड़ते ही—

“ला ला ।।” गुलाम हुसेन चिल्लाया । “मालती, वह छुरा ला ।” उसी के साथ मालती छुरा लेकर दौड़ी भी । पर कितने से छुरे से वह विशाल काय मनुष्य मरेगा तो कैसे, जिस प्रकार की अंक वलवती शका उस बेभान अवस्था में भी उसके मन में आयी और वह ठिठक गयी ।

“कैसे का क्या मतलब ? डरपोक लडकी । तेरे ही सामने उस साथीदार के पेटकी पोटली ज़िमी छुरे से गुलाम हुसेन ने अंकही प्रहार में बाहर नहीं निकाल डाली थी क्या ? ” उस के मनने उसे फटकारा ।

“ला । छुरा ला । ” गुलाम हुसेन अंक हाथ को उस हाथापाओं से छुड़ाते हुअे और अँचा अँठाते हुअे मालती पर फिर से चिल्लाया ।

“ले यह ले छुरा । ” जिस तरह दाँत पीसती और ओठ चबाकर चीखती हुअी वह बबरायी हुअी मालती छुरा खीचकर दौड़ी और उसने, किशन को दबाकर पकड़े हुअे, पर किशन की पकड़ में खटिया के अंक कोने पर अतान होकर पड़े हुअे गुलाम हुसेन के ढीले ढाले पेटमें वह लबा तेज छुरा पूरी ताकत के साथ घुसेड दिया ।

कितनी आसानी से वह अदर घुम गया । उस बेभान त्वेप में भी मालती को हँसी आगयी ।

“व्यर्थ ही मैंने कितना जोर लगा कर घुमेडा वह छुरा बावले की तरह । वह तो आवी ताकत से भी आरपार चला जाता । ”

“ओ । —ओ । ” अँसी दो तीन भयकर भयकर डुरकियाँ (मूर की तरह) फोडते हुअे गुलाम हुसेन का धिप्पाड (विशाल) शरीर धप्प से नीचे गिर पडा । —वह फिर कुछ अुठा नहीं । अपने ही अूर्ध्वपाती अुत्पूत रक्त के निपान में उसका प्राण डूब गया ।

“मर गया । निजीव मरगया । ” किशनने ताली बजायी ।

“किशन ।। —पर अब आगे क्या होगा ? ” किशनकी आँखों की ओर टक बाँधती हुअी मालती थर थर काँपते स्वर में बोली ।

“आगे ? मालती, आगे—”

बेभान, रक्तपात जन्य नशेमें चूर, कुठित विचारोवाले, वे दोनों क्णभर अंक दूसरे की तरफ आँखों से आँखें भिडायें देखते खड़े रह गये । चारों ओर रात्रि की कारिख ही कारिख घनीभूत थी ।

फूल नहीं—कांटा ! : : :

४४ अङ्गुली ने क्या होगा ? ” मालती के इस प्रश्न का कुछ भी उत्तर क्षण-भर न सूझने के कारण किंवा वैसे देखनेपर पाँच-पचास उत्तर अकेदम सूझ कर अनेक अलड़े सुलटे और अनेक दूसरे को विहस्त करनेवाले झमेले में अन्तिम अथ निश्चित मत अनेक भी चित्तमें आकर ठिक नहीं रहा था, अतः किशन भी सिर्फ “ आगे SS—आगे SS ” ऐसा ओंठो ही ओंठो में पुडपुडाता हुआ-मालतीकी मुद्राकी ओर शून्य दृष्टि से देखता हुआ खड़ा था । वह विकराल प्रेत अनेक पैरों में पड़ा हुआ था । अनेक घावों में से रक्त का अत्लाव ठहर ठहर कर अनेक दम फूट पड़ता था । जैसे दसपाच क्षण बते भी न पाये थे कि वह कुत्ता जोर से पुकार मचाते हुअे रो रहा है, तथा पीछे जोर जोर से भोक-भोक कर विप्लव मचा रहा है, ऐसा किशन को सुनायी पड़ा ।

वास्तव में उनकी वह प्राण लेने-देने की जूझ जब चल रही थी तभी से वह कुत्ता पास जाने से डरता हुआ भी भाग खड़ा नहीं हुआ और वही बाघ पर बिघर से मुघर दौड़ते ठहरते हुए निरंतर चीत्कार करता रहा । और बीच ही में बलपूर्वक भौंक अठता था । किसी की भी सहायता आसपास से प्राप्त करने तथा लोगों को जमा करने के लिये ' दौड़ो रे दौड़ो ' कह कर मानो वह आर्त पुकार मचा रहा था । पर अतनी देर तक जिस प्राणों पर वीतनेवाले प्रसंग में उसका वह शोर किशन-मालती को सुनायी नहीं दिया । मुन्हे उस समय तक अपनेसिवाय बाहर की दुनियाँ का स्मरण तक नहीं हुआ था । पर अब ज्यों ही कुत्ते के शोरकी तरफ किशन का ध्यान गया, त्योही अमने दचक कर उस तरफ मुड़कर देखा और उसे लगने लगा बाहरकी मारी दुनियाँ अून दोनों की ओर—अून दोनों के रक्त से भीगे हुअे हाथों पैरों और कपड़ों की ओर, अून दोनों के मध्यमें निर्जीव मर कर पड़े हुअे गुलाम हूसेन के विकराल णव में से बीचबीचमें अुडनेवाली खूनकी पिचकारियों की ओर गौर से देख रही हैं ' येही है वे हत्यारे, धरो ! पकड़ो ! ! ' जिस तरह अुंगलियाँ दिया दिखा कर शोर मचा रही है ।—अैसा अचानक भाम हुआ—अुमके मनकी वधिरता अेकदम दूर हो गयी । अब यहाँ वे अेक क्षण भी

वने रहे तो अुस दुष्ट की छूरी से बचे हुअे प्राण फाँसी के फंदे में जा अटकेगे । और यह मालती भी । फाँसीपर । । कल्पना भी भयकर । ।

अुस धक्के के साथ ही अुसने अेक भारी पत्थर अुठा कर प्रथम अुम कुत्तेपर दे मारा । अुतने ही मे अुसको अुस तरफ के अेक टीले पर से पडौस के खेतो में दोतीन लोग लालटेन लेकर अपनी ही तरफ देखते हुअे, बातचीत करते दिखायी दिये ।

अुस कुत्ते के काँचने और निरंतर भौकने से वे अपने खेतो की मेडो पर कभी के घबराये हुअे से खडे थे । तत्पश्चात् अुस झोपडी के पास गुलाम हुसेनकी और किशन की हुअी हुअी गुत्यमगुत्थी, गालीगलौज, चीखोपुकार और आखीर में गुलाम हुसेन पेटमें छुरा खाकर जब नीचे गिर पडा अुस वक्त अुसकेद्वारा फोडी गयी डुरकी, अिन सबके अस्पष्ट दृश्यो अेव शोरगुल के अूपर से वहाँ कोअी न कोअी भयकर प्रकार हो रहा है, यह अुन खेतिहरोने पहले ही ताड लिया था । पर भय के कारण अुनकी जिज्ञासा दब गयी थी । वे लोग वहाँ गये तो वे स्वयम् किसी व्यर्थ की परेशानी मे फँस जायेंगे अैसा पक्का विचार अुन्होने किया था तथा वही से जो कुछ सुनायी दे या दीखे अुमीकी चर्चा करते हुअे और बीचबीच मे दिखायी देनेवाली अुस औरत के बारेमें ही कुछ सुदोपसुदी चल रही होगी अैसा तर्क बावते हुअे वे लोग वही अुसी तरह न जाने कब मे खडे थे ।

अुनको देखतेही 'हमारी हत्यारेपनकी वान पट्कर्णपतित हो गयी' अैसी घबराहट किशन की छातीमे बैठ गयी । अुसके कहने से पूर्व ही, अुससे वगैर पूछेताछे अुसके हाथ ने लालटेन को अेकदम वृझा दिया । अँधेरे मे मालती का हाथ पकड लिया, और बोला,

"पहले हम यहाँ से निकल भागे चल । हमें पकडने के लिये लोग जमा हो रहे हैं । वे देख । चारो ओर मे घेरा डाला जा रहा है । चल । "

"अरे, पर कहाँ ? "

"राम्ना मिलेगा-अुधर । जहाँ मर्जी वहाँ-पर अिम स्थल से दूर दूर दूर-यथा शक्ति दूर । चल जल्दी । "

"पर तुझसे कैसे चलने वनेगा ? तेरा पैर तो लँगडाता है । "

“अंक पैर होगा लगडाता—पर दूसरा तो ठीक है न ? अुसीके आधार से जैसे चलते बनेगा वैसे चलूंगा चल पहले ।”

“और यह प्रेत ?—”

“मरने दे, पडने दे, सडने दे अुस दुष्टको । नही तो अुसके कुत्ते को ही फाडकर खाने दे । निकल, चल पहले यहाँ से । पर ठहर, छुरा दे अधर । अुसकी पहचान तक किसी को न हो ऐसा करना चाहिये ।”

ऐसा कह कर अुस प्रेत के मुँह पर अघेरेमें ही कचाकच वार कर के किशनने अुसे विद्रुप बना डाला । “ह, अब ला, ताला कहाँ है ?”

मालतीने अँधेरे में ही ताला टटोल कर खोज निकाला, बाहर निकलते हुअे अुसका पैर डव् से अुस खूनके डवके (= चहवच्चे) में जा पडा । अुसकी छाती में भी घबराहट भर गयी । अुसने वह छुरा अपने पेटके नीचे छिपाकर रख लिया । अुसी हालत में वह आगे जाकर अुस टूटे फूटे दरवाजे को ताला लगाने लगी हाथ कापने लगा । पर अेकवारगी ताला लग गया । और मनुष्यकी जैसी स्वाभाविक आदत होती है—अुसके अनुसार ताला लगाने के बाद अुसने ताले की चावी अपनी कमर में खोसली । अुसने रक्तस्नात वह छुरा अपनी कमर में छिपा रखा था—वह ठीक से है या नही यह अेकवार पुन हाथ लगा कर देखा—यह जान कर कि अपने पास छुरा है, अुस में पुन साहस और शक्ति का पूर्ण रूप से सचार हो गया ।—“ह, चल काप मत किशन । अिस मेरे हाथपर अपना भार डाल, हा, अिस तरह, और चल अुमके आधार पर तुझसे जितना चलना हो सके अुतना । यह रास्ता मेरे पैरो के लिये पूर्णत परिचित हो चुका है । ठहर दो चार पत्थर लेने दे हाथ में अुस कुत्ते को देखता रह, चवा (काट) लेगा वह मृआ छिपा-छिपा पीछे से आकर ।”

अँधेरे में अुस पत्थरो के बाध को नाघकर अुम चवूतरे का फेरा मार के दोनों जैसे तैसे अुस राहपर आ लगे ।

“अब किवर मुडनेवाली है ? शहर की तरफ ?”

“हेह, पगले, अिस वक्त हम सब रक्ताक्त हैं, पहले गंगापर जाकर धो नहा कर स्वच्छ और सभ्य बने, चल पहले ।”

“सच ? वहाँ के देवालय में पहले चल, रात आज वही विनाअे, मेरा सामान वगैरे सब वही है । वही में तो मैं यहीं आया हूँ । पहले वहाँ थोडा

सोजायें इस रात । सवेरे होगा सब नहाना धोना और जो कुछ अपने दैवमें होगा वह । 'मैयारी, पैर की दर्द अब वरदास्त नहीं होती । पहले देवालयमें ही चले, चल । "

देवालयमें आतेही अकेले किशन ने ही नहीं बल्कि अितनी देर की मुत्तेजना से मन और तन दोनों को दृष्टि से अत्यंत दुर्बलाभी हुआ मालती ने भी जमीनही पर पूरी तरह से अपना शरीर डाल दिया । उसे दूर से ही किशनने पड़े पड़े आश्वासन दिया—“तू आराम से सो, वह छुरा अधर दे, मैं पहरा देता हूँ । अब दुःख सारा भुला दे ह, कुछ देर । ”

“दुःख ? ओह मुझे, बताओ क्या, इस वक्त क्या प्रतीत हो रहा है ? आनंद ! मुत्साह ! कैसे कहूँ ? मेरे घरमें अकवार अक नाग निकला । दरवाजे के बड़ के पास वह कही रहा करता था । हमारी मा देवभक्त—असके लिये कटोरी में दूध रक्खा करती थी । उसे पीते हुअे हम अनेकवार असको दूर से देखा करते थे । मा कहती थी —साप होने पर भी वह जीव ही है न ?—वह क्रिया जानता है ! वह दूध देनेवाले को कभी डसता नहीं है ! पर असका क्या बिगडा किसे मालूम ? वह अस दिन अकामेक हमारे घर में निकल आया और मेरे साथ खेलनेवाली मेरी अक मौसेरी छोटी बहन को डस कर मुझे डसने के लिये दौडा । हम सब लडके लडकियाँ जान लेकर भाग खडी हुअी “साप साप ” अैसी अकही पुकारकी । उसे सुनकर हमारे घर के नौकरने आकर अक ही मार में असकी तालू सेक दी ! वह अभी हिलडुल ही रहा था, पर मुँह खोलकर पडा हुआ है, अैसा देखकर अक बडी काठी मैंने दूर पर ही से असके अूपर अैसे जोर से मारी कि असका बीच का हिस्साही चिय कर निकल आया और मेरा गुस्सा अस रूप में मुतर जाने पर मुझे बदले का जो आनंद होता है, वह पहली मर्तवा, कितना मीठा होता है, यह नमझ में आया । वैसा अुन्मत्त आनंद मुझे इस वक्त चढा हुआ है ! मेरा यह सारा साहस है अुसी बदले के आनंद का ! —अिस बदले के छुरे का ! वह जबतक मेरे पाम है तबतक मेरी जान में जान है ! अिस वक्त तो मिरहाने ही रहने दे उसे मेरे ! मुझे नीद—किशन ! अरे, पर मेरी मा ! —मुझे पहले यह बता मेरी मा किधर है ! कुछ मालूम है क्या तुझे ? मैं अुठकर बैठती हूँ अ, बता ! ” वह जैसे तैसे ग्लानि प्राप्त होते हुअे शरीरको सँभाल कर

भूठ बैठी, पर उसका वह बोलना, आँखों में भूष भरे हुए मनुष्य की तरह टूटा फूटा था ।

किशनने मालती को गुलाम हुमेन के यहाँ कैद हो जाने के बाद नायडू बाबी को और उसकी मा को उस छद्मी योगानन्दने किस तरह भुल्लू बनाया और उसपर विश्वास कर के वे दोनों किस तरह मालती को खोजने के लिये नागपुर की ओर चली गयी और उसके बाद किस तरह उनका पता उसे भी नहीं था यह सब सक्पेपमें कह सुनाया । पर उसके ममाप्त होते न होते मालती के सजायुक्त मनके सारे व्यापार बंद पड़नेके करीब आये । वह सुनते न सुनते कब नीचे लटक गयी और सो गयी जिसका मालतीको भी पता नहीं था । किशन भी जमीन पर ही पड़ गया । उसके मनमें उन कृत्यों के भयकर परिणामों के विचार कोलाहल मचा रहे थे । बीचमें भूष, बीचमें वह कोलाहल बीचमें वह पैर की दर्द—वह उसी तरह तड़फड़ाता पड़ा रहा । दोवार उसे बूटों की टापें सुनायी दी और वह डरके मारे भूठ बैठा । बाहर जाने पर जब उसे मादूम पड़ा कि कोई भी नहीं है तब वह फिर अंदर आकर पड़ा रहा । पुलिसवालों के चेहरे उसकी आँखें बंद होते ही उसके सामने आकर खड़े हो जाते—उसे वे पकड़ रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता था । तब वह फिर आँखें खोलता, धीरे धीरे धारण करता, और सवेरे निकल भागने के लिये क्या किया जाय, जिस समय में निश्चय भूषही भूषमें करने लग जाता ।

मालती का सजायुक्त मन यद्यपि चाबी बंद पड़ी हुयी घड़ी की तरह साफ बंद पड़ा हुआ था, तथापि उस ग्लानिजन्य गाढ़ निद्रा में भी उसके असक्त मन के स्तरोंमें किशन के चित्त के अतर्वर्ती कोलाहल के सदृशही धृतिभीति-माया-ममता-त्वेष्ट-द्वेष अित्यादि की नाना स्मृतियों और नाना कल्पितियों का अकेलमेव कोलाहल मचा हुआ होना चाहिये । वह बीचही में दचकती हुयी, हँसती हुयी-खुर्राटे भर रही थी । स्वप्न पड़ते पड़ते उसे नींदमें ऐसा भासित हुआ कि, वह मा के साथ उस मथुराके झूलने पर प्रेमभरी पद्यपक्तियाँ गाते हुये रस्सीसे अँचे अँचे झोटे ले रही है । अतने ही में उसके नीचे से झूलना ऊपर होकर अकदम निकल गया और उस रस्सीकी लपेट में उसकी गरदन घुरी तरह लिपट कर लटक गयी । दम घुट गया—गले में फंदा पड़ गया और उसकी जीभ बाहर निकल आयी । —और ऐसी भीषण स्थिति में अपने

आपको वह ही देख रही है ! ! अम धक्के के साथ ही 'मर गयी ! मर गयी ! दौड ! मा, गले में फंदा पड गया मेरे ! ' ऐसा स्पष्ट रूपसे चीख मारकर मालती अकदम अठ खडी हुयी ! थर् थर थर कापने लगी ! जोर जोर से हाँफती हुयी नीद मे बदला हुआ श्वास जोर जोर से लेने और छोडने लगी— ।

किशन भी तत्काल अठ ! अँधेरेमें जहाँ मालती घबरा कर सटी हुयी थी वहाँ हाथ टटोलते हुअे अुसके कंधेपर अेक हाथ रखकर दूसरे हाथ से अुसकी पीठ थपथपाता हुआ मालती को धीरज देने लगा । अुतने ही मे मालती ने थरथराते हुअे हाथों से अुसके गले मे गलवाँह डाल दी । " किशन, मुझसे खडा नही रहा जाता, मेरी छाती मे न जाने कैसी घडकी घुसगयी है—मुझे अपने पेटके साथ मजबूती से चिपटाकर मेरे साथ ही सो । लजा मत । मैं अपनी बिच्छा से जिसे अपने साथ सोने के लिये ले रही हूँ, अैसा पहला पुरुष तूही है । "

बिलकुल नजदीक लेकर किशन के सोतेही अुमे अेकदम अैसी गाढी नीद लग गयी मानो वह बीच मे अुठीही न हो ! नीदमें चलने बोलने का जो अेक रोग होता है, अुसका मानो अेक झटका ही आया था अुसे ।

बिल्ववृक्षस्थ कोकिल की पहली कूक जब प्रभात बेला मे सुनायी पडी तब बडे कष्ट से किशनने मालती को हिला कर पूरी तरह जगा दिया ।

" मालती, मैंने आगे के निश्चय की सारी योजना पक्की कर ली है । धीरज मात्र धारण करना होगा । धीरज नही न खो बैठगी तू ? "

" पगले, मैं अब सपने मे थोडकी हू ? स्वप्न के फाँसीके रस्से से जो लोग डरते है, अुनमे से कितने ही, वास्तविक फाँसी के रस्सेसे बिलकुल भी खोफ नहीं खाते । "

" पर फाँसी का नाम मुँह से निकालती ही काहे को है ? मक्केपमे सुन ! तू अब गंगा में जाकर अपना यह मुँिलम वेप और खून के दागोवाले कपडे गंगामे डुवा दे, नहा और मेरी बिस गठडी मे मे यह धोती लेकर अेक भिकारिणी की तरह पहन कर यह कटोरा हाथ मे ले बिस टेढे रास्ते मे निकल जा और गावों में से होती हुयी घर पर मा से जाकर मिल ! और—"

“छट् ! ठहर । मेरी मा का नाम अब पूरी तरह भुला दे । अरे, वह मुझे देखतेही मेरे मुंहपर हाथ फेरने के लिये यदि फिर दौड़ेगी तो उसके भी हाथ मेरे मुंह परके खूनी दागों से खून भरे होजायेंगे । उसके शरीर पर मेरे हाथ के कर्मों के छीटे अडकर उस साध्वी की निर्मलता भी कलकित हो जायगी । मैं अपनी माता के आगन का एक निर्मल फूल थी—तब मुझे मालती कहा करते थे । पर अब मैं वह फूल नहीं रह गयी हूँ—अब मैं हो गयी हूँ समाज के मार्ग में एक काटा । कहीं भी धूलमें मैं पड़ी रहूंगी, पर फिर माके आगन में पडकर उसके पैर में गड़ूगी नहीं । अब अपना नाम भी मैं बदल डालूंगी । फूल—नहीं काटा । मालती नहीं—कटकी । । अब फिर, स्मरण रख अ, मालती नहीं कहना—कटकी कहना मुझे । ”

“ठीक है । पर अब तू मुझे अकेला छोड़ जा । मुझसे चलना नहीं वनेगा । मैं भी पीछेसे जैसे-तैसे निकलूंगा ही यदि पकड़ा ही गया तो अकेलाही इस हत्याका सारा मामला अपने ऊपर ले लूंगा । बच निकला तो तुझ से मिलूंगा । मुझे भी अपना नाम बदलना लाजमी है । ध्यानमें रख मेरा नाम कटक । ऐसा करने में पिछले खटलो के तागे-डोरे मेरे तेरे, तेरी माता के चारों ओर फिर सहसा अलझेंगे नहीं । जिस अधम का मिर कुचल कर सजा दी है उसका नाम भी नहीं कहना ‘मालूम नहीं’ कह देना । अब अकेल फिरने में दोनों के दोनों फँस जायेंगे अतः तू तो अब चली जा । मालती ! तेरे पास से दूर होते समय पानी में बाहर फेंकी हुयी मछलीके समान मेरे प्राण छटपटाते हैं—पर तेरे केशाग्र को भी धक्का नहीं लगा तो फिर से तालाबमें पड़ी हुयी मछली की तरह वे मृत्युष्ट होंगे । अ—ह—मारी चर्चा बंद ! देख पी फटने लगी । ”

वे अितना बोलते ही थे कि अतने ही में दूरसे थोरगुल मुताबी दिया । अगले रातको बूटों की टापों का भास हुआ था—वह जैसे खोटा सावित हुआ था, वैसेही यह भी भास ही सावित होगा, जिस आशा से किशनने बाहर मिर निकाला । पर क्या गजब ! मचमुचही कुछ लोग शोर शराबा करने हुअे देवालयकी दिशामें आते आते रास्ते में ही ठिठके हुअे में अस्पष्ट अस्पष्ट दिशाबी दिये ।

गौर से निहारने पर अंक नजदीक के चबूतरेपर दो लोग खड़े दिखायी दीये—और वे शकाही नहीं—सवेष पोलीस ! !

प्रत्यागित हो, तो भी भयकर सकट निश्चित रूप से टूट पड़ते ही मनको बैठनेवाला वलोत्कट धक्का बैठे बगैर रहता नहीं। किशन को तो सकट टल भी जायगा ऐसी थोड़ी बहुत आशा थी। तब, वह भयकर सकट पूरी तरह टलने की देहरीपर आया ही था कि फिर पक्की तरह गले से आकर भिड़ा हुआ नजर आतेही अुसकी छाती में अंकदम घडकी का घुस जाना स्वाभाविक ही था। पर अुसने शीघ्रही अपना समस्त धैर्य अंकत्र किया—सट् से अदर की ओर मुड़ा और मालती से दबी आवाज में बोला—“वे आ पहुँचे। सुन। अब मैं जो अुन्हे आगे होकर कहूँ—वही और विलकुल वही तू भी कहियो। अंक शब्द भी कम और अधिक किसी भी अवस्था में मत बोलियो। सैंकड़ो पक्के डाकुओ चोरो और हत्यारो की टोलियो में कारागृहके अदर रहकर मैं अब अिस किस्मके कानूनो के छक्के पजे पूरी तरह सीख चुका हूँ। ऐसे अवसर पर सब कुछ नकारना सर्व प्रकार से अशक्य होता है। अुन खेतिहरोंनेही रातौरात यह खबर पुलिसवालो को दी होगी, खून के पैरो के चिन्ह, कपड़े और हाथ खून से लथपथ।”

अुतने में ही—

“कौन है अदर ? चलो बाहेर आव ।। ” कुछ अतर ही से पुलिस-वालो की डाँट मरी आज्ञा छूटी।

किशन सट् से बाहर आया, आगे हो गया। अुसके साथही “पकड़ो पकड़ो।” ऐसा पुकारते हुअे दो तीन सिपाही दौड कर आये और अुन्होंने वही किशन के हाथ में कडियाँ ठोक दी।

“हथकड़ी काहे को ? अितनी मजबूतीसे कसकर काहेको पकड़ते हो मुझे ? तुम लोग न भी आते तो भी मैं स्वय पुलिसवालो को खबर करने के लिये अुधर आनेवाला हो था।”

“अिस तरह सरल व्यवहार रक्खोगे तो अुसमें तुम्हारी ही व्यर्थ की तकलीफ बचेगी” पुलिस का अधिकारी समझौवलकी बात कहने की शात भाषा में बोला। “वताओ अुस परली ओरकी झोपडी में रहनेवाले मनुष्यकी

नादृश भयकर हत्या तुमने क्यों की ? तुम्हारा नाम ? हा यही वह औरत ! पकड़ो उस औरत को भी ! ”

“ ठहरो, उस आदमी की हत्या मैंने की है—उस स्त्रीने नहीं ! और वह जिस लिये कि, वह आदमी ही नहीं था, वह था एक नृशंस राक्षस ! मेरा नाम कटक, यह मेरी वहिन कटकी ! हम जब छोटे थे तब अज्जयिनी की ओर एक मेले में भीख मागते फिरनेवाली हमारी मा भीड़ भड़के की चपेट में आकर मर गयी । उस से पहले की अपनी राम कहानी हमें बिल्कुल मालूम नहीं । आगे की हमारी कहानी यो है—हम दोनों भीख मागते हुये और एक मेले से दूसरे मेले में जाते हुये आज तक उसी तरह भटकते चले आ रहे हैं ! कुछ दिन पहले मेरी यह वहिन भीख मागती फिर रही थी—उसे अकेले में पाकर उस मुसलमान गुडेने जबरदस्ती खींचकर अपने घर में डाल लिया—बद करके रखा । पता चलाते चलाते उसके घरके आगे जाकर पहुँचते ही और उसे ‘मेरी वहिन को छोड़ दे’ अमी डाँट बताते ही वह छुरा लेकर मझपर टूट पड़ा । हाथापायी में वही छुरा छीन कर मैंने उसका मुरदा गिरा दिया—और अपनी वहिन को छुड़ा लिया । अत्यंत थकावट के कारण यही रात बिताकर अभी अठे हैं और पुलिस को हम स्वयं यह मारा समाचार देनेवाले थे कि अतनेमें तुम्हीं चले आये ! ”

मालती से पूछने पर उसने भी वही वयान दिया जो किशन के वयानके साथ पूरी तरह जूझता था । उस मुसलमान गुडे का नाम-ग्राम, पूर्ववृत्त अित्यादि मुझे कुछभी नहीं मालूम असा, पुलिसवालों के खोदखोदकर किये गये सवालों का उसने निश्चल अब निर्भीक वृत्ति से जवाब दिया ।

छान चीन कर्ने पर मालती के रक्ताक्त कपड़े हाथ, मुंह, कमरमें खोसी हुयी उस टूटे घर की चाबी और वह रक्त-स्नात छुरा मालती के शरीर पर मिला । उसे नोट करके उन दोनों को पकड़ कर ले चले । साथ ही वे खेतिहर भी लौटे । अपने पर कोअी जुर्म न आ पडे असा सोच कर अम टूटे फूटे घरके अंदर चलनेवाले किसी भयकर प्रकार की सूचना अन्होंनेही रातो-रात पुलिसतक पहुँचादी थी । उसके सारे सबूत और पहचानते वगैरे पुलिसवालों के लिख चुकने के बाद अन्हे अपने अपने घर भेज दिया गया ।

“अपराध मेरा ! मेरी वहिन को भी छोड़ दो और लौटा दो ” अमी विनति

किशनने की। उसे फटकारा गया—“दर्शनी सबूत तुम दोनों के विरुद्ध है। अतः तुम दोनों को गिरफ्तार करना हमारेवास्ते लाजमी है। अपराध किसका है, यह आखीर में न्यायाधीश ठहराते हैं, न हम, न तू।”

किशन और मालती—दोनों ही पग खटला भरा गया। अपराधी भी अकेल हाथ लग गये। उस हत्याके लिये सबूत पूरे थे। अपराध के तागे डोरे कहीं अलझे हुये नहीं थे। उस निर्जीव मारित व्यक्ति का पूर्ववृत्त सर्वथा अविज्ञात। छुरे के घावों से छिन्नविच्छिन्न हुयी उसकी मुद्रा के कारण उसकी पहचानत भी मुश्किल थी। और उस धवे में पडने का उस मुकद्दमे भरके लिये कोभी भी प्रकार वाचक नहीं बना। इस सारी परिस्थिति के कारण किसी भी गहराबी में न जाते हुये उस हत्या भर के लिये आरोप लगा कर खटला चला कर पुलिसवाले मुक्त होगये। उनके वयानों के बाद आरोपियों की ओर से बचाव भी नहीं था।

आखिरी दिन न्यायाधीशने फैसला सुना दिया—

“किस आरोपीने प्राणघातक हमला किया है, यह अच्छी तरह सिद्ध न हो सका, किंतु अतना अवश्य सिद्ध हो गया है कि अिन दोनों ने जान-बूझकर इस हत्यामें भाग लिया है। अतः हम कटक और कटकी दोनों भाजी वहनों को सजा देने हैं—आजन्म कैद काला पानी।”

ये शब्द सुनतेही किशन की आँखों में टप् टप् बूंदें टपकी तथापि फामी की सजा टलगमी अतः उसे थोड़ा सा हलका पन भी मालूम पडा। पर उसे शब्दमें कुछ न कुछ भयकर अर्थ भरा हुआ है ऐसा धुंधले तीर से प्रतीत होनेपर भी, उसकी भीषणता का विलकुल स्पष्ट चित्र मनमें अवतीर्ण न होने के कारण ही मालती आजन्म कैद काला पानी’ ये भयकर शब्द सुनते समय भी सुन्न होकर अमी तरह देखती रही। पर न्यायाधीश के अुठने लगते वक्त मात्र वह अकेल भावावेशमें आकर विनति करने लगी—

“अेक क्षणभर। थमिये न। कृपालु महाराज, मुझे अितना बता-भिये कि, काले पानी पर जाने पर मेरा यह भाजी—अह—कटक मेरे साथ ही रहेगा न? अपने जेल को अितनी आज्ञा दे कर रखेंगे क्या, कि काले पानी में भी हम दोनों को अेकत्र ही रक्खा जावे? दया हो।”

“अनजान लडकी ! वह क्या न्यायाधीश के हाथ में रहता है ? काले पानी में पुरुषों के और स्त्रियों के बदीखाने त्रिलकुल निराले-निराले रहते हैं ! अम में भी अके ही खटले के सारे अपराधियों को तो पुरुषों पुरुषों और स्त्रियों स्त्रियों को भी सहमा अकेत्र नहीं रहने देते । ”

न्यायाधीशने ये शब्द सहानुभूति के स्वरमें भले ही अुच्चारें हो फिर भी पहले के सजा सुनाते वक्त के भावनाशून्य शब्दों की अपेक्षा भी मालती को वे अधिक दारुण लगे । “आजन्म कैद काटा पानी ” जिन शब्दों की भीषणता की अपेक्षा भी किशन के नित्य के लिये दूर चले जाने की कल्पना में रहने-वाली भीषणता अुस के मन को अत्यन्त (असह्य) स्पष्ट रूपसे अेकाअेक समझमें आने के कारण अुसके अुच्चारण के साथ ही वह अकस्मात् विलख अुठी, सिसक सिसक कर “अैसा मत कीजिये—मत कीजिये । ” अिस प्रकार का अधूरा वाक्य ही बार-बार दुहराती हुअी वह प्रार्थने लगी ।

न्यायाधीश के मनको पहले ही से अुसके अपराध की निरपराध वाजू रिझा रही थी, पर कानून कानून ही है ! वह अनुल्लध्य ! अत अेव वह खटला जब तक चलता रहा वे ममता के वाक्य कुठ भी नहीं बोल पाये थे । पर समन्त खटले में धैर्यपूर्वक निश्चल रही हुअी तथा आजन्म काले पानी की कैद की भयकर सजा सुनते वक्त भी जो भावावेशमें आअी नहीं वह लडकी अपनं भाअी में बिछुडने की बात सुन कर चिहुँक चिहुँक कर रो रही है यह देखकर न्यायाधीश का अत करण द्रवित हो अुठा और थोडाबहुत आश्वासन दे कर वे अुसे समाधानने के लिये बोल गये—

“रोओ मत बच्ची, काले पानी में यदि तुम्हारी चालचलन ठीक रही तो दस पाँच बरस बाद तुम्हे जादी की अनुज्ञा भिलने की सुविधा है ! तब अुस टापू ही में क्यों न हो तुम मुग्य में अेकत्र रह सकोगी । ”

वे शब्द सुनतेही जैसे काले पानी की सजा रद्द होकर वह छूट ही गअी हो, अैसा अुस गकट के तूफान में डिडमूट हुअी हुअी मालती को मनही मन आनन्द हुआ । “महाराज, आपके मुँह में मिट्टरी, जिममें मर्जी अुसके साथ शरीर में बर सतूगी न ? बदी खाने का नियन्त्रण में पूर्ण रूपेण पालन करूगी । ”

असके स्त्रीय निसर्गातिर्वर्तिनी सारी यौवनसुलभ भावनाओं अस कल्पना के साथ ही तृप्त-प्राय हो गयीं । किशन के साथ असकी शादी हो गयी असा असे लगा । पर पगली मालती । कल्पना का अर्थ वस्तुस्थिति नहीं है । अितने कठोर, निर्दय, निर्घृण अनुभव के अनंतर भी यह तुझे अभी तक समझम नहीं आया न, कि मनुष्य अपने ही नियंत्रण के, पाप पुण्यके, कर्मकर्म के फल ही सिर्फ नहीं भोगता बल्कि, अस प्रत्यक्ष जगत्में तो समाज के पाप पुण्य के और कर्मकर्म के भी फल अच्छा न रहते हुओं भी भोगता रहता है, असे दूसरो के दुष्कृत्यों के भी फल-प्लेग की जनपद विध्वंसकारी अवस्था में केवल वातावरणीय ससर्ग में निरोगी व्यक्तिको भी प्लेग हो जाता है तद्वत्-भोगने पडते हैं ।

तेरे दैव में तो वही लिखा हुआ है, असा अवतक तुझे विदित नहीं हो पाया क्या ? अन्यथा, यह तेरे देह की, मन की, भावनाओंकी असह्य अेव भयप्रद विडवना आजतक अस कोमल वयस्में अस तरह निरंतर होती चली जाय-असा तूने स्वतः कौन सा पाप किया था, कौनसा अपराध किया था ? किसका क्या बुरा किया था ? अपनी माता की ममता के आगन में विकसित हुयी-हुयी मालती, तू अेक मालती के कोमल निर्मल पुष्पकी अर्धोन्मीलित कलिका । —जैसे शरत्कालिक चंद्ररेखा । —अस अवस्था में हमने प्रथम जब तुझे देखा था तब कम्बस्त नसीबके जन्म भरके मारे को भी तेरी-तेरे अपराधोंके बिना यह दुर्दशा होगी-असी कल्पना नहीं हो सकती थी-दुष्ट से दुष्ट पिशाच के द्वारा भी तुझे अेतादृश आप निष्कारण न दिया गया होता ।

और वह असह्य दुर्दशा अितनी लज्जाकर कि महानुभूति के समक्ष भी असे खोल कर न कहा जा सके । अस दुराधर्प, अमंगल और अभद्र नर पशु की अधोरो वामना जबजब तेरी लज्जा की बलि लेती थी तब अस कोमल अग की आग और तेरी कोमल भावनाओं की राख जो हुयी, वह, हे अनागस कुमारिके, तूने स्वतः किसी नीतिनियम, विनय या अनुशासन का भग किया था अिस लिये हुयी थी ? तेरी अस अधोरो दुर्दशा में से तुझे तथा तादृश अन्य अनेकों को छुडाने के लिये यह कियान सामने आया था, अिसने नीति नियमों की, परोपकारकी अेव विनयकी पर्वा की और तुम लोगो ने अस राक्षस

के खून की नहर बहाकर अुसके अत्याचारकी वह आग बुझा दी, मिसीलिये अत्याचारी साबित हुअे तुम लोग ? समाज में लाछित होगये तुम ? काले पानी भेजना होगा अब तुमको ? समाजपीडक अत्याचार को अुच्छिन्न करने वाला ही कभी कभी समाजपीडक अत्याचारी समझा जाकर दडित होता है । नीति-नियमो के असली अनुशासन का पालन करना यही अपराध साबित होकर अुसीके लिये अनुशासनभग का फल भोगना पडता है ।

यह दोष किसका ? अैसा होता क्यो है ? अथवा अैसा न होने के लिये किन अुपायोकी योजना की जाय ? यह प्रश्न यहाँ अस्थानप्रयुक्त अेव सर्वथा अप्रासगिक है । हा, अैसा होता अवश्य है, और मिसीलिये मालती, तूने अनुशासन का पालन किया है, अुसका पारितोषिक तुझे मिलना ही चाहिये, स्वप्न सत्य होना ही चाहिये, अैसा निश्चित मत समझ ।

परतु सुख-स्वप्न सत्यसिद्ध ही नहीं होते सो भी बात नहीं है । अत सुखस्वप्नो को देखकर हसती है, तल्लीन होती है, तो क्षणभर मजे से हँस, तल्लीन हो । पर अुसे अेक स्वप्न समझकर ही अुसमें रत हो । जाग जानेपर वह स्वप्न सत्य ही सिद्ध होगा अैसा आग्रह मात्र मत रख-वस ।



समुंदर में डुबायेंगे क्या हमें ? : : : ९

कुल्कते के बदरगाह पर स्थित प्लेटफार्म का अेक पटागण पूर्ण-तया खाली करने के लिये पुलिसवालो की दौड धूप शुरू हुअी । सब मनुष्य निकालकर बाहर कर दिये गये । वे हटाये गये लोग दूरपर जाकर जहाँ जगह मिली वही भीडके रूपमें जमा होकर, आगे क्या होनवाला है, मिस अुत्सुकता के वशीभूत होकर अेक दूसरे के कधोपर टेका ले कर पजो के बलपर खडे होने लगे ।

अितने में जिघर-तिघर लोगो में शोर होने लगा “आया ! चलान आया ! चलान आया ! ”

‘चलान’ का अर्थ उस झुंड से है, जिसे बदमान भेजे जानेका दंड दिया गया है, और जो भिन्न भिन्न जेलों से लाया जाकर अकेल करके बदरगाहके प्लेटफार्म पर अके ही झुंडके रूपमें अवस्थित हुआ हुआ है।

सब अपराधों में जो अत्यंत घातक और नृशंस अपराध है, वह जिनके हाथ की मेल बना हुआ है, ऐसे हत्यारे, आग लगानेवाले, जहर देनेवाले, डाकेजनी करनेवाले पक्के पापियों को बहुधा काले पानी की मजा देने में आती है। उसमें भी जो लोग अतिवृद्ध, अल्पवयस्क, अत्रत्य वदीशालाओं में सद्वर्तन-द्वारा सुधारणीय कल्पित हुए-हुए हैं, मुन्हे छोड़ कर बाकी वचे हुए जो आत्यंतिक घोर अपराधी होते हैं प्रायशः मुन्ही को काले पानी भेजने में आता है। राजकीय प्रकरण को अके ओर रखें तो किसी भी सुव्यवस्थित समाज के लिये जिनका अस्तित्व महामारी सदृश जनपदविध्वसी बीमारियों की भांति भयप्रद प्रतीत हुअे बिना नहीं रहता, ऐसे अग्र, हिंसक, अचूखल, खल लोग ही अिम कालेपानी की तरफ भेजे जाने वाले ‘चलान’ में भरती किये जाते हैं। अपवादों को छोड़ दिया जाय तो सामान्य नियम अिस प्रकार का है।

परंतु उस पटागण (खुली मैदान सरीखी जगह) में वह ‘चलान’ आते वक्त जिसको उसकी विलकुल भी माहियत नहीं है ऐसे किसी नये आदमी को किंवा भोले भाले मतको उसे देखकर क्या अनुभव होगा? निश्चय ही उसको उस ‘चलान’ के विषय में करोड़ों न जाकर अलट्टे दया ही आयगी। क्यों कि वे विचारे कितने अनृशामन में, बहुतसों की गर्दने झुकी हुअी, बहुतेरों की आँखों में वूदें—कम से कम मन में घडकी, चेहरे अुतरे हुअे, पाम के आदमी में अेक अकपर भी न बोलते हुअे या अगर कोअी बोला भी तो किसी लडकी की तरह लजाते हुअे, केवल ओठ फरकाते हुअे, चार चार की कतार में, विलकुल सादा भिक्पुको सरीखा बाना पहने हुअे, नाप नाप कर कदम रखते हुअे, सिपाही ने ‘ठहरो’ कहा तो ठहर गये, “बैठ” कहा तो बैठ गये, ‘अुठो’ कहा तो अुठ गये अैसे नौ—सवा सौ लोग होने पर भी विलकुल गडबड न करते हुअे उस पटागण में चल रहे थे। अितने शांत दात, मयत जीवियों का वह झुंड। सौ सवा सौ वकरियों-भेड़ों का झुंड कम्पाअीखाने की तरफ ले जाया जाता आ भी अिन लोगों की अपेक्षा अधिक गडबड करता हुआ जाता, कम दयनीय

दिखाभी देता ! ऐसे अुन बेचारे दीनदुर्बलो को अुनके मातापिताओ से, वालवच्चो से, औरतो से जन्म भर के लिय बिछुडा कर कालेपानी की ओर तत्रत्य अनन्वित जुल्म अेव कष्टकी वलिवेदी का बकरा बनाने के लिये ले जाया जा रहा है न ? राजकीय कानून की कैसी यह निष्ठुरता ? सजा की बरूरता !

अुन लोगो को सिर्फ अुस दुर्दशामे ही देखनेवालो को किंवा, पीडा वृष्टिगोचर होते ही वह रोगापहारक शल्यक्रिया की है या मारक शस्त्राघात की है, जिसका विवेक न करते हुअे केवल रोते बैठनेवाली मिचलाती दया को अुन अुस वक्त गोगल गाय की तरह दयनीय प्रतीत होनेवाले चलान के अदर के सजायापता लोगो को देख कर अत करणपूर्वक करुणा ही आती होती, अुनके विषय मे हार्दिक सहानुभूति ही प्रतीत हुअी होती, और गुस्सा अगर किसी बात का आया होता तो अुन पुलिसवालो की निर्दय डडेवाजी का । वदुको मे सगीने चढाये हुअे पुलिस की टुकडियाँ कुछ आगे पीछे, कुछ डडे मे भाले हुअे आजूबाजू को—बीचबीचमे कभी कुपित मुखमुद्रा से अेव कठोर स्वर से चिल्लाते हुअे अुन बेचारे वदियो के झुडको—कसाभी पशुओ के झुडको ले जाते है तट्ट ठोकते पीटते आगे की ओर हकाले लिये जा रही थी । कोअी थोडा जोर से बोला या रेगा कि, दिया अेक डडे का ठोचा अुसे । जरा किसी ने 'अरे तुरे' किया कि पोलिस के तीनचार डडे बैठे ही समझो अुसके खोपडे पर । वहाँ न छान बीन, न साक्पी न सबूत—अेकदम डडा । सारे न्याय-कानून अुसमे समाये हुअे । अुपरकी निगाह से देखनेवालो को असली निर्दय और जालिम प्रतीत हुअे होते वे पोलिसवाले और असली दीनदुर्बल जँचा होता वह 'चलान' ।

पर यदि अुन धार वद समीनोवाली वदूको और डडो का गराडा (घेरा) अेक घडी भर के लिये हटाकर अुस चलान के अदरके अुन नीची गर्दनोवाले और वूदें वहानवाले 'बेचारो' को खुला छोड दिया गया होता तो ? आँखो मे करुणा की अेक कणिका भी न प्रवाहित करते हुअे अुस चलान मे के अुन बहुतेरे बेचारो ने आधा कलकत्ता जलाकर खाक कर डाला होता, और वचे हुअे आधे कलकत्ते की गर्दने मरोडकर हाहाकार मचवा दिया होता । सरकस के रीगन मे भाले और कँटीले चावुक फटकारते रहनेवाले नियामक लोग

जबतक सामने और आजूबाजू में बने रहते हैं, तबतक सिंहव्याघ्रभी जैसे सुसभ्य नागरिकों की भांति रीगन में अनुशासन के साथ चलते हैं वैसे वह 'चलान' अनुशासन में चल रहा था, वे सगीने और वे डंडे उसे घेर कर खड़े थे मिसलिये ! अपवाद को अकेले ओर रख छोड़ें तो, उस चलान में के बहुतेसों की वह सभ्यता, वह विनय, वह दीनता, वे बूढ़े, नीति की नहीं थीं, थीं तो केवल निरुपाय भीति की ! ! ऐसे मुच्छृंखल खलों को भी समाजस्वास्थ्य-पोषक अनुशासन में लाया जा सकता है, पर गीता के पारायण से नहीं, सगीनों की फौलादी नोकों से ! !

विलकुल गोगलगाय की तरह बेचारे दिखाई देनेवाले जिस चलान के दसपाच व्यक्तियों का थोड़ासा परिचय यदि आप लोगों को करा दें तो मिचलाती दयाभावना को सिर्फ अूनकी जिस दुर्दशा की ओर देख कर जो कण्ठा फूट अुठती है वही नफरत के रूपमें बदल जायगी ! और ऐसे हिंस्र मानवी श्वापदों में भी मनुष्यता जो थोड़ीसी रहती है, अुसी को जीवित रक्ख कर अुस हिंस्रता के रोगाणुओं का प्रतिरोध करने के लिये अूपर से अत्याचारी प्रतीत होनेवाली अिन धारवाद सगीनों की चुमने (मिजेक्शन) क्यों जरूरी है, यह ध्यान में आजायगा ! यह आ ही गया देखिये, वह 'चलान' !

पुलिम की सगीनों और डंडों के चौफेर पींजरे में बंद वे सौ-सवा सौ श्वापद चार चार की कतारों में अुस पटागण में अेक अुडमें आये वह अजस्त्र समस्त पींजरे का पींजरा ही मानो आगे ढकेल ते हुअे पटागण में लाकर खड़ा कर दिया ! अूनमें से प्रत्येक काले पानी की सजा पाये हुअे शस्त्र के पैरों में पड़ी हुअी और कमर में चमड़े की गांठों से बंधी हुअी दो-दो लोहे की बेडियाँ खनखना रही थीं ! प्रत्येक की छातीपर अेक जस्ती विल्ला, अुसपर सजा के वरस और नाम खुदा हुआ, प्रत्येककी काखमें अुसके विस्तरों की गठड़ी,—अेक हाथमें अपना अपना जस्तका बना तसला, अुस ब्रीक्ष के नीचे, जो अूनलोगों में कच्चा ढीलाढाला, वह-वह कैदी झुकता-कन्हाता, जो अम्यस्त और हट्टाकट्टा वह-वह अकडके साथ, किंतु तो भी डंडे से दुवकता और दांत पीसता हुआ अपनी कतारमें खड़ा था ! अूनमें से जिस पहली कतार में विद्यमान काले पानी के अुद्भूयमान नागरिकों का ही, सिर्फ बानगीके लिये, परिचय आभिये, प्राप्त करे !

यह पहला बेचारा ! रामदयाल नाम उसकी छाती परके विल्ले में खुदा हुआ है और सजा १४ वरस काला पानी । जिसने अपने सगेभाभी की मौत के बाद उसके अिकलौते छोटे बच्चे को विष देकर मार डालने का खड्यत्र किया था । और उस वजह से लडका मर गया । वजह ? उस सगे भतीजे का काटा राह में से निकल गया तो उसका बश नष्ट हो जायगा और सम्मिलित कुटुंब की सारी मालमत्ता उसे हडपने को मिल जायगी ।

यह जो दूसरा दंडित, वह अेक अर्थ में सुधारणीय अपराधी कहा जा सकता है । अुम्र सतरह-अठारह वरस की—नाम गोपाल, मृद्रा गवारू । उसके घर के पिता, चाचा वगैरे बडे आदमियो ने अपने खेतों को नीलाम पर चढा देने के गुस्से की वजह से, उस गांव के साहूकार से बदला लेने के लिये उसके घर डाका डाला । बडे आदमियो के साथ यह लडका भी गया । साहूकार को नीचे गेरकर वे लोग उसकी मरम्मत करही रहे थे कि जिसने चक्की का अेक पाट अुठाकर उस बेचारे साहूकार के सिरपर दे मारा—उस का मगज ही बाहर आ गिरा । साहूकार का अपराध यह कि, जिस परिवार ने उसका कर्जा चुकाना तो दूर रहा, अुलटे उसकी अनाजकी ढेरी, खलिहान और जानवरों तक को जला डाला था—मारडाला था, अत उसने जिनपर खटला किया और यथा रीति नीलाम करके जिन लोगों के खेत बेच डाले उसके पिता को फांसी की सजा हुअी—यह लडका दूसरे नवरका, अत उसे आजन्म काले पानी की सजा सुनायी गयी ।

पर जिस तीसरे बेचारे को देखा आपने ? कितने नियंत्रण में सख्ता है, कितना व्यवस्थित, निर्बंधशील (Law-abiding) दिखायी देता है वह जिस धारबद सगीन की चमक-दमक में । पर जबतक वह चमक उसकी राह पर पडी नहीं थी और उस राह पर वह अपने स्वभाव के अव-प्रकाश में ही निहारता-निहारता स्वतंत्र रीति में चला जा रहा था, तब यह नागरिक किस तरह चल रहा था मालूम है ? यह बात आप उसकी सजा के जिन नोटों में पढ़िये । यह बलूची । तत्रस्थ अुद्द टोलियों में का अेक मनुष्य । नाम अल्लाबख्श । सिध प्रातवासी जिन गिने हिंदुओंकी वस्तियों पर जिस टोली के जो बार बार डाके पडते थे अुनमें भाग लेता लेता यह अितना बरूर बन गया कि इसको हिंदू लडको लडकियोंके मास के लचके तोड तोड

कर खाने की राक्पसी आदत पड़ गयी। आखीरकार, अँकदफा पेशावर की तरफ जानेवाली अँक रेलगाडी के स्त्रियो के डिब्बे में अँक हिंदू स्त्री अपने नन्हे दुधमुंहे को लेकर अकेली बैठी है, यह पता चला कर वह अँस डिब्बे में घुस गया, छुरी तान कर अँस स्त्रीकी लज्जा की बलि ली और अँस आसुरी आवेश में अँसने अँसके दोनों गालों के मांस के लचको को दाँतो से तोड़कर अँन्हे चबाचबा खा डाला। वह और अँसका बच्चा जोर जोर से विलखने लगे, अतः वह गुस्से में और भी अधिक बवरा गया। और अँसने छुरे से अँस निरागस, असहाय स्त्रीके बच्चे के पेटकी पोटली फाड़ डाली और अँस स्त्रीके मुँहपर छुरे के घाव डालने लगा—अँनने अचेतन क्रोध से कि रेल गाडी थम गयी है, अँसवात का भी खयाल अँसे नहीं रहगया। गाडी रूकते ही वह नीचे कूद पड़ा—मार घाड़ करना हुआ भागा—पकड़ा गया तो पकड़नेवाले पुलिस की अँगलियो को कच् से तोड़ डाला और अँन्हे कचाकच चवाने लगा। कोर्ट में अँसने पागल का स्वाग बनाया। पर नरमासभक्षण की अँघोरी अँच्छा के अँतिरिक्त अँसमें पागलपन का कोभी चिन्ह नजर नहीं आया। अँलटे, वह हिंदुओं के ही कोमल लडके-लटकियो के मांस के लचके तोड़ कर खाया करता है और खून मटक मटक कर पीता है, अँमके अँस राक्पसीपन को भी अँक गैतानी घर्मवधन है, अँसके पैशाचिकपने में भी अँक व्यवस्थित पद्धति है, अँसा मिद्ध हुआ।। अँसे आजन्म काले पानीकी मजा देकर पागलों के स्रणालय में कुछ दिन बंद किया। वहाँ भी बाहियातपना करने के कारण जब दो दफा पचास-साठ कोटे खाने को मिले तब से अँसने अपने पागलपन का स्वाग भरना छोड़ दिया, अँनुगामन के साथ रहने लगा, और अब अँमे कालेपानी भेजा जा रहा है। कोड की अँक फटकार ने ही अँसके पागलपन को झाड़कर रखदिया। सगीनों की धार पर राक्पसवृत्ति को तराशते ही राक्पसों को भी कभी कभी मनुष्यका आकार प्राप्त होता है सो अँस तरह।। अँक मात्र अँनुमान पर आवारित मन्त्रों के पानी में जो पालतू नहीं बनते अँमे हिंस्र श्वापद भी तनी हुयी सगीनों के पानी में पालतू बनाये जा सकते हैं—कम अँज कम निरुपद्रव तो बनाया जा सकता है सो अँस तरह।

मिचलाती हुयी दया भावना को जो व्यक्ति 'देचारे' नजर आये वे अँम चलान के आदमी अँस समय अँस प्रकार 'देचारे' क्या नजर आये अँमे समझने

के लिये, अूनमें से तीनका परिचय बानगी के तौरपर अूपर हमने दिया है । अूनकी जो विशेष बातें हमने अूपर दी हैं, वे सब बातें अुपन्यास की रोमहर्षक अद्भुतता को बढ़ाने की बुद्धि से कल्पित की हुअी नहीं हैं । केवल रोमाच की थरथराहट का अनुभव करने के लिये मनुष्य जाति की मनुष्यताकी विटवना करना, अुपन्यास लेखक की मनुष्यता के लिये अयोग्य अेव सर्वथा लाछना-स्पद है ।

परतु यहाँ हमने जो बातें अुल्लिखित की हैं—वे औपन्यासिक कल्पना प्रसूत नहीं हैं, परत्युत वे सृष्टि का ठोस सत्य है । काले पानी के सजायाफ्ता लोगो का अितिवृत्त अूनकी History sheet, यदि आप पढ़ें तो आपको अुस अघोरी नगरी के पचहत्तर प्रतिगत नागरिको के सबध की टिप्पणियाँ अूपर बतलाये अुझे दो-तीन आदमियो के बारे की टिप्पणियो के समान ही पायी जायेंगी । अपवाद पच्चीस प्रतिगत । और यह सब होते हुअे भी हमारे धार्मिक मेलो में जितनी हुल्लड मचती है, अुतनी भी अुस राक्षस राष्ट्रमें सहमा नहीं मच पाती । वहाँ के हत्या और डाकेजनी के आकडे अमेरिकाके आकडो से भी कम बैठते हैं । कारण ? पमीजनेवाली, सहिष्णु दया भावना नहीं । सगीनदड । वह दुर्घर्ष दडही राक्षसो की मनुष्य बनाता है ।

शरीर में व्याधियो की भाति मनुष्यता में राक्षसवृत्ति भी निसर्गनिर्मित होती है । राक्षसवृत्ति के सुधार का अुपाय दड । तो मनुष्यता को सुधारने का अुपाय—दया ।

अिस प्रकार वह 'चलान' खुले मैदान में अपने पैरो की वेडियाँ खन-खनखनाते हुअे, मैनिक दल की भाति अनुशासन के साथ चार चारकी कतार में ज्योही आया त्योही 'ठैरो' अेमी आज्ञा हुअी । तत्काल वे सारे दडित अेक साथ खड़े होगये । 'वैटो' कहतेही वेडियो की अेकदम खनखनाहट के साथ वे तत्काल अुकडू बैठ गये । सामने जिस समुद्रपर अुन्हे अब चढना था, वह समुद्र बडी बडी लहरो को अूँचे फेकता हुआ, तत्पश्चात् अुस प्लेटफार्म पर अुन लहरो को घडघडाहट के साथ पटकता हुआ, झाग देता हुआ अत्यत गुस्से से दाँत चवाताहुआ मा खल् खल् कर रहा था । अुन दडितो में से बहुनो का समुद्रदर्शन का वही पहला अवसर था । अुस अगाव जलरागिको अुस तरह गुस्से में अुबलते हुअे देख कर, केवल अुस भीषणदृश्य की घसक से ही अूनकी

छातियाँ धडकने लग गयीं । दडितों को आपसमें बातचीत करनेकी सन्त मनाही होती है । तो भी अस बसक की वजह से किसी न किसी के साथ कुछ न कुछ बोले बिना अनुसे रहानही गया । अतः हरकोभी अपने अपने पास वाले दडित के साथ काना फूँसी करने लगा, “यही है वह काले पानी का समुद्र।” “वापरे, अनि अँची लहरो को अछलते देख कर ही मेरी तो आवी जान निकली जा रही है।” “अरे, जिन्हे काले पानी भेजा जाता है, अन्हे अिस अयाह समुद्र के परे किसी टापू में भेजा जाता है, यह सच है क्या रे।” “मैन ता सुना है यह विलकुल गप्प है, अँसी गप्प हाक कर हम लोगो को जहाज पर चढा कर मध्य समुद्रमें लेजायेगे और साफ अुममें डुवा देगे।” नये दडिता को थरथर कँपाने वाली शकाओ के पके हुअे खुराँट दडितोद्वारा दिये गये प्रत्युत्तरो की कानाफूँसी बढ़ते बढ़ते दवेहुअे कोलाहल का स्वरूप धारण करने लगी । तब पुलिसवालो की सहनशीलता समाप्त हुअी और अन्होने टौटा— “चूप ! नहीं तो दडुके से पीटे जावोगे।”

अेकदम सब के सब चुप होगये । पुराने घुटे हुअे अेव कारागार में वार-वार दरम किये हुअे वदी लोग रखवालदारो की नजर चुकाकर नियन्त्रणभग करने की विद्या में पूर्ण प्रवीण होते है । पर नये वदी अनुका अनुसरण करके अनुशासन भग करने जाते है, तो पट् से पकडे जाते है । दूसरी बात यह है कि अनुशासनभग करनेवाले परिपक्व दडम कैदियो के रास्ते पर न जाते हुअे रखवालदार भी नये और नरम मिजाज के कैदियो पर ही अनुशासन भग-जन्य गुस्सा निकाला करते है, क्यो कि वह आसान होना है । अतः फिर कोभी हल्लागुल्ला करता है क्या यह देखनेवाले अेक गुस्मेवाज रखवालदार ने अपने परली ओर बैठे हुअे दो तीन पहले ही से कानाफूँसी करनेवाले किंतु परिपक्व अेव दडम न दिखाओ देनेवाले दडितोपर खुल्लमखुल्ला अुसकी नजर अुघर नहीं है, अँसा दिखाते हुअेभी चुराकर अपनी नजर रक्खी । थोडी ही देर में फिर जिवर-तिवर धीमेधीमे कानाफूँसी बढ़ती जा रही है और पचती भी जा रही है, यह देखकर अनु-दोनो में से जो कमअुम्र, नया कैदी—समुद्रमें लेजाकर कैदियो को डुवा दिया जाता है, अिस कल्पना में पहले ही में घबराया हुआ सा हो गया था, वह अपने पासवाले अेक शिक्पिनवत् दष्टिगोचर होनवाले दडित में अत्यंत गिडगिडाता हुआ पुनः पुनः पूछने लगा,

“बाबूजी, कहो ना ! किसी समुद्र में डुबायेंगे क्या हम सबको ?”

“बच्चा, नहीं नहीं” एक परिपक्व दडित बीचही में, पुलिस अुसकी ओर पीठ किये खड़ा है, यह देखकर झटसे बोला, “अे बात झूट है ! काले पानी से भागकर आये हुअे अेक अुस्ताद पट्ठे को मैंने खुद कैदखाने में देखा है—अदमान कहते है अुस टापूको । अुसपर लेजाकर छोडनेवाले है, हम सबको ।”

“आँ ? क्या बोले ?” वह लडका जानमें जान आये हुअे की तरह बोला, “काले पानी पर से कोअी भाग कर वापिस भी आ सकता है ? बाबूजी, तुम कहो तो हम सच मानेंगे अिस बात को ।”

“दस हजार में से अेक आध ही कोअी । अैसा अेक नराधम अपराधी काले पानीपर से भागकर आया हुआ, मैंने भी देखा है ।”

यह वाक्य वह बाबूजी (साक्षर कैदी को किंवा क्लार्क को या बडी भारी योग्यताके दडित को वदिवानो में ‘बाबूजी’ कह कर संबोधित किया जाता है ।) यथाशक्ति सावधानीके साथ अत में बोलही रहा था कि, अुसी क्षण पीठ फेरकर अुनपर नजर रखनेवाले अुस पोलिस रखवालदारने झट से भागकर दौटकर बाबूजी को पकड लिया। क्यौंकि पकड में न आते हुअे अनु-शासन भंग करने की विदद्या में, सपूर्ण जन्ममें पहलीही बार कैद की सजा प्राप्त होने के कारण, अेव सरल, सत्य वस्तुको जोरसे कहने की सभ्यजगत् की आदत जा कर कैदखाने के लिये आवश्यक लुच्चेपने की आदन न पडने के कारण बाबूजी के वे शब्द अिच्छा न होते हुअे भी मुंह से जरा जोर से ही निकल गये थे ।

रखवालदारने बाबूजीपर टूटकर अुनके कूडते की गर्दन पकड कर अुन्हे खड़ा कर दिया और अपने जमादार की तरफ खींचते हुअे लेजाकर कहने लगा, “बार बार चुप बैठने के लिये कहने पर भी यह कैदी लगातार शोरगुल मचा रहा है, यही नहीं, अन्य कैदियो को अकसा रहा है कि, हम लोग काले पानी का जेलखाना तोड कर भाग निकले ।”

“क्या ?” गुस्से से लाल हो कर जमादार चिल्लाया, “काले पानी से भाग आने का खडयत्र ! नाम क्या है अिस पाजी का ?”

रखवालदारने अुन बाबूजी की छाती पर का विल्ला देखकर जमादार को नाम बताया “कटक ।”

जमादारने वह नाम और अुसके विल्ले पर से वदी-करमाक अपने जेवकी नोटबुक में नोट कर लिया और डपटकर बोला—

“कटक ! तेरा यह अपराध यदि मैं अूपर कह दू तो तेरे गले में फंदा पड़ जायगा ! काले पानी से भागनेवाले को भागते हुअे गोली से अुड़ा देते हैं, पकड़ मे आया तो फाँसीपर लटका देते हैं, मालूम है ? काले पानी में यह अपराध सब से बड़ा माना जाता है । ”

“पर जमादारजी, मैंने तो कालेपानी से भाग आने के खड्यत्रके बारे में अेक अक्पर भी कह कर किमी को अुकसाया नहीं है । मुझे—”

“चुप ! बदमाश, तूने अुसी तरह अुकसाया है ” रखवालदार झल्लाया ।

“मेरे पासवाले कैदियों से पूछ लीजिये, मैं कहता हूँ तो सच है कि झूठ है । ”

जमादारने अुसे लडके को और अुस पके खुराँट कैदी को अुठाकर पूछा,
“क्या रे, यह कटक तुम्हें क्या सिखा रहा था ? ”

लडका सिर्फ धरथर काँपता खड़ा रहा । पर कटक के अूपर के मिस आरोप के विषय में पुलिसवालों के साथ चलनेवाली अुस सारी बातचीत को शुरूसे सुनते हुअे बैठनेवाले अुम सत्रे हुअे कैदी ने पट् में जवाब दिया—

“जमादारजी, यह बाबू हमसे कह रहा था कि, काले पानी से भाग खड़े होने की तरकीब अुसे मालूम है, अुसतरह भागकर आयाहुआ अेक शरस अुनका मुखिया है और हम सब यदि अुसके खड्यत्रमें शामिल हो जायें और गुप्त निश्चय किमी पर भी प्रकट न होने देने की शपथ ले तो अेक बरस के अंदर सब लोग जेल को तोड़कर कालेपानी से निकल कर घर वापिस आ सकते हैं । मैंने मिससे कहा, ‘हम नहीं आते बाबा, अैसे भयकर खड्यत्रमें और नाहीं लेते शपथ-विषय । ’ ”

अुस पक्के बदमाश कैदी की यह साक़्सी सुनते समय वह कटक केवल दिटमूढ़ होकर मुँह बाये खड़ा रहा और पीछे से अेकदम बोल अुठा,
“अरे, कैसा यह मिथ्याभाषी ! अनन अुलटे कलेजे का मनुष्य भी हो सकता है अ ! अेक अक्पर भी मिसके वक्ताव्य का सच्चा नहीं है ! जमादारजी सौगंध है देवकी ! मैं—”

दनदनाता अेक डडा कटक की जाघ पर विठा कर जमादार ने गर्जना की, "चूप ! " वस, अुस सारे साक्षी, सबूत, आरोप, वचाव का न्यायनिर्णय अुम अेक डडेके भीतर ही समारोपित हो गया ।

अुतने ही में घनघनघन करके अेक घटा घनघनाने लगी । अुन तीनों को फोड कर निराली निराली कतारों में विठाने की आज्ञा पोलिस रखवालदार को देकर जमादार दौडते हुअे ही जिघर घटा वजी थी अुधर निकल गया । अुस चलान को अदमान की तरफ जानेवाली अग्निनौका पर चढाने तक ही सारी जवाबदारी जमादार पर रहती है, वह घटा अग्निनौका आने की ही थी अत कटक के अुस प्रकरण का जमादार को वही विस्मरण होगया । अेक दफा अपने हाथ से अुस चलान की विपत्ति अग्निनौका पर पहुँचा दी गयी कि हो गयी मुक्तता अपनी । फिर चाहे वे वहाँ से भाग जायँ या जल मरे । अुसकी झलट वह जमादार अुपर के अधिकारियों को अुस घटना की खबर देकर काहे को मोल ले ?

जमादार निकल गया । वह प्रकरण वही विस्मृत होगया । पर जमादारने डडे की जो मार अुम की जाघ पर विठायी थी अुसे भला, कटक कैसे भूलता । जाघ में दर्द पैदा हुयी और वह बिलबिलाता हुआ बैठाली गयी कतार में जाकर बैठ गया । अुस अन्याय, अपमान और विशेषत अुसका प्रतिकार करने की पूर्ण अवपमता के कारण कटक को जीवित रहने की भी गरम महसूस होने लगी । काले पानी में जीवित रहने के लिये जितनी तितिक्षा आवश्यक है, अुतना अस सद्गुण में वह अभी तक प्रवीण नहीं हो पाया था ।

पर कारागृह और कालेपानी का जीवन जिन लोगों के अस्तित्व पर आश्रित अेव समर्थित हो सकता है, अैसे सधे हुअे निर्लज्जों में से वह साक्षी देनेवाला दडित बैठेवैठे अुस कटक की ओर देख कर दाँत निपोर कर हँस रहा था अुलटे । पास के डडेतों को अपनी अेक बडायी समझकर कटक के बारे में कही गयी अपनी झूठी साक्षी की बात कहने लगा, "भय्या, आयी थी मेरी ही जान पर वारी, पर मैंने अुस भोले बाबू के ही मत्ये मढवा दी । कटककी टांग पर अैसा अेक डडा विठवाया कि वम ।—"

कटक की जाघमें दर्द भुठ रही थी, अतः भुस से भुकडू नहीं बैठा जा रहा था। सिपाही तो चिल्लाता ही रहा, “हा, भुकडू बैठ, सीधा बैठ।” कटक-पर अनुशासनभग की दूसरी अन्याय्य विपत्ति टूटने ही वाली थी—

पर अितने ही में जहाँ तहाँ अनुसगीनवाले रखवालदागे का शोर मचा—
“भूठो ! महाराज आया ! ”

कटक चमक कर भुठा और जिज्ञासा से देखने लगा, ऐसे कौन से महाराज बिघर आ रहे हैं ?

सघे हुअे अनुभवी कैदी समुद्र की तरफ भुगली दिखा कर कानाफूसी करने लगे, “महाराजा आये देखो, वे।”

कटकने देखा, बेक बड़ी भारी आगवोट भो S S ऐसा वव भौकती हुअी अनु खलवली मचानेवाली लहरो के जगल में से राह निकालती हुअी प्लेटफार्म की ओर धीरे धीरे आरही है, भुस पर ‘महाराजा’ ऐसा मोटे मोटे अक्षरों में नाम लटक रहा है।

“महाराज आया” का मतलब भिस जलयान, भिस जहाजके आने में है ! यही क्या अब भुझे भुस काले पानी पर ले जायगा ? भुस जलयान को देखते ही कटक के पेट में बडकी घुसे बगैर न रही।

आजतक सहस्रावधि भलेबरे स्त्री-पुरुष अपराधियों को भिस ‘महाराज’ जलयान ने भिम प्लेटफार्म से भूठाकर काले पानी पर ले जाकर छोडा होगा-पर भुन में से हजारमें अेक को भी फिर से भिम प्लेटफार्म पर वापस लाकर छोडा नहीं ! जो कोअी काले पानी के दडित के रूप में भिस जहाज पर चढगया-काले पानी में चला गया—वह चलाही गया ! भिस दुनिया की लातिर वह मर गया और भुसकी लातिर यह दुनियाँ मर गअी ! मरघटकी ओर लेजाये जानेवाले प्रेत को यदि कुछ अनुभव होना मभव हो तो, भुसे जो महसूस होता होगा, वही कालेपानी की तरफ ले जाये जानेवाले भिन दडितों को ‘महाराज’ पर चढाते समय महसूस हुआ करता है ! कम अज कम भुमके न ‘महसूस होने’ की मनृप्यता जिनमें अवशिष्ट होगी, भुन लोगों को तो यही प्रतीत होगा कि यह ‘महाराजा’ जहाज नहीं है, बल्कि अेक कन्वर है ! भिसमें जो गाडदिया गया, वह फिर यदि भुससे बाहर पडेगा ही तो भुस काले समुद्रके भरली ओर की यमपुरीमें ! यमलोक में ! भिस लोकमें नहीं ! ! कटक की

समझमें आरहाथा, और इसी लिये इस 'महाराजा' को देखने ही उसकी छाती में घडकी बैठ गयी। तबतक वह अपने मनसे पूछ रहा था—इस समुद्रको 'कालापानी' क्यों कहते हैं ? यो देखा जाय तो समुद्रका लाघना ही जाति पाँति और धर्म का नष्ट होना है, हिंदू समाज की दृष्टि से अेक प्रकार की सामाजिक मृत्युही है, अैसी जब सिंधु-प्रतिवध की प्रथा हिंदुओं में प्रबल हुयी तब से सारा समुद्र ही हिंदू समाज के लिये कालापानी प्रतीत होने लगा। काल का मृत्युका समुद्र भासने लगा। पर उसमें भी इस अदमान टापूकी ओर जन्मभर की सजा के रूपमें जानेवाले लोगों को ही कालेपानी की ओर जानेवाले अैसा भीषण नाम क्यों दिया गया ? उस समुद्र के पानी की ओर कटक बहुत देरसे विशेष ध्यानपूर्वक देख रहा था, परंतु वह काला क्यों, इसकी कोभी वजह उसे नजर नहीं आती थी। पर उस महाराजा जलयान को देखतेही और 'अब वह मुझे इस सगे सवधियों के जातिगोत्र के जग मे ही नहीं प्रत्युत जीवन ही से छिनाकर अत्यंत दुर्दशावाले किसी मृत खड में लेजाकर अवश्य गाढ डालेगा। इस बातके प्रत्यक्ष होजाने पर, उस के हृदयमें जो घडकी घुसकर बैठ गयी उसकी वजह से वह सारा समुद्र सचमुचही काला-काला भैसे का सा दिखायी देने लगा। उसे काला पानी नाम क्यों दिया गया सो समझमें आया, अितना ही नहीं, कालेपानी नाम से भिन्न कोभी अन्य यथार्थ नाम उसे दिया जाता तो वह किस प्रकार बदतोव्याघात सिद्ध हुआ होता, यह भी पूरी तरह उसके ध्यान में आ गया।

यह कटक ही वाचकवृद्ध। आपके परिचय का वह किशन। उसको और मालती को जब से काले पानी की सजा हुयी और वे अेक दोनो से जो विछुडगये सो विछुड ही गये। मालती को किस कैदखाने मे भेज दिया गया, यह उसे अनेक प्रयत्नों के पश्चात् भी मालूम न पडा। इसको भिन्न भिन्न कैदखानो मे भींचते भींचते प्रत्येक चार-पाँच महीने के पश्चात् काले पानी के दडितो को अेकत्र करके काले पानी भेजने के कायदे के मुताबिक, जब इस टोली को काले पानी भेजने के लिये कलकत्ता लाया गया, तब उस प्राणसकट मे भी अेक स्निग्ध भीषण जिज्ञासा उसको वेचैन किये रखती थी। किसे मालूम, मालती को भी इसी 'चलान' मे आजन्म काले पानी की सजा के लिये न ले आवे ? और तो तादृश दुर्दशा मे देखना-धकेलना-कितना असह्य

कितना कटु ! पर अुस निमित्त से भी क्यों न हो, कम-अज-कम मालती को देखना-सकट ही भोगने हो तो अेकत्र भोगते हुअे अेक दूसरे को वाँटकर भोगना यह कल्पना कितनी मधुर ! चुपचाप अुमने खोजने की बहुत कोशिश की पर दडित स्त्रियाँ अुम चलान में भेजी जानेवाली नहीं थी और होती भी ता अुन को यथाशक्ति पुरुषचलान की नजर तक से दूर रख कर भेजने की स्वत व्यवस्था रहती है—वही योग्य है । अेतादृश अुच्छृखल कलि पुरुषों के अेव वरूर पशुओं के झुड में अुन वरूर तथा दडित स्त्रियों की भी देखते ही देखते मट्टी पलीद हुअे बिना थोडे ही रह सकती है !

मालती अुस चलान में नहीं है, यह मालूम पडने की वजह से किशन को अेक दृष्टि में अच्छा महसूस होने पर भी जैसे बुरा महसूस हुआ, मालती को सिर्फ देखने का भी अवसर प्राप्त नहीं होता, अत जैसे अुसके प्राणों की तिलमिलाहट होने लगी थी, ठीक अुसमें अुलटा और अेक व्यक्ति अस चलान में दृष्टिगत न होने के कारण अुसके सिरपर में अेक बला टलने जैसा सतोष हुआ । वह व्यक्ति या रफिअुद्दीन ! अुसे भी आजन्म काले पानी की सजा हुअी थी—किशन को सजा होने में कुछ ही दिनो पूर्व ! वह भी इसी चलान में अुसके साथ तो नहीं आता ! अुसका नाम अब बदल गया है, किशन की जगह कटक रखा हुआ है । पर शकल तो वही है ! रफिअुद्दीनने कही अुसको पहचान लिया तो ! वह वरूर नरायण अपना बदला लेने के लिये पुन अत्याचार का मार्ग पकडे बिना नहीं रहेगा । अुमके अुपर भी प्रत्याघात किये बिना नहीं रहेगा । पहले ही से अुपस्थित विकट प्रसंग में अेक और भीषण यातनाओं का पत्थर गलेमें बाँध जायगा । जो होना हो, होने दो ! जो अनभीष्ट वस्तु होनी थी, सो तो हो ही गयी है—काले पानी की सजा, यह सजा क्या और मौत क्या—अुडद में काले गोरे की परख काहे को ? इस प्रकार में विचार करते हुअे किशन मन ही मन अुस विपत्ति का मुकाबिला करने की तय्यारी कर रहा था, तथापि वह विपत्ति टल जाय तो अच्छा, अैसा ही अुसे लगता था ! अत अेव अुस चलान में वह रफिअुद्दीन तथा अुमके साथियों में कोअी भी नजर नहीं आ रहा है, यह देख, अेक नयी बला तो टली, इस बात का अुमको सतोष था । फासी पर चढाते समय भी यदि आँखों पर पट्टी बाँधकर चढाया जाय तो वह भी भला ही महसूस होता है—थोड़ी देर के लिये । ।

वह सारा का सारा चलान, वेडियाँ खनखनाता हुआ, काँख में विस्तर, हाथमें तसला लिये, चार की जगह अेक अेक की कतार बनाकर, सँकरी सी सीढीपर से, समुद्र की तरंगों की वजह से हिलने डुलनेवाले अुस ' महाराजा ' जलयान पर जैसे तैसे अनिच्छा के कारण सकुचाते हिचकिचाते अेक बारगी चढ ही गया । वह ' महाराजा ' जलयान केवल काले पानी ही की ओर अ ने जाने के लिये रखा गया था । गत तीसचालीस वरसों से अिस प्रकार के सँकडों चलानों को वह काले पानी पहुँचा आया होगा । अुस पर पैर रखतेही लहरो की आदत से शून्य, हृदयमें अुदास, निराशाजन्य घुकवुकी की हिल-कोरियों से पहले ही चकराये हुअे फिशन को अेकदम मूर्च्छा सी आगभी । यह अग्निनौका आजन्म काले पानी ही क्यो साक्षात् मृत्यु की ही ओर लेकर जा रही है, अैसा अुसे भासित हुआ । अेक खभेका सहारा लेकर अपनी मूर्च्छा को वह सभाल ही रहा था कि, सिपाही ने 'आग बढो' कहकर डड से अुसे ठोचा । अुस के साथ ही फिर पक्ति म ठीक ढगसे खडा होकर सब कदियों के साथ वह अग्निनौका के विलकुल नीचे के, पानी के अंदर डूबे हुअे कठिन तले पर अुतर आया । देखता है तो क्या, सीखचोका पिंजरा का पिंजरा ही सामने खडा है । अुस जलयान में काले पानी के कैदियों ही के वास्ते की हुभी यह सहूलियत थी । वह पिंजरा ही अुन सम्माननीय अदमानी प्रवासियों का सुरक्षित कक्क—Reserved Cabin ।।

पचास अेक आदमियों के सो सकने लायक अुस पीजरे में सो सवासो दडितों को झटपट ठूसकर भर दिया गया । जिसको जहाँ जगह मिली अुसने वही अपना बिछौना डाल दिया । कोअी पजाबी ब्राह्मण, कोअी बंगाली चमार, कोअी बलूची मुसलमान, कोअी मद्रासी अय्या, कोअी भील, कोअी मच्छीमार, कोअी वराडी, कोअी कारकून, कोअी भिखारी, कोअी सेठ, कोअी भूमिदार, कोअी बहेलिया, कोअी छोटा, कोअी बडा, कोअी निरोगी, कोअी कषयी, कोअी ज्वरी, कोअी अतिसारी, कोअी आमाशी—सब को अेक जगह धकेल वकेल कर समता से अेकत्र ठूस दिया था । आपत्ति में क्यो न हो, पर समानता अैसी अच्छी, कि अुसकी अपेक्षा वर्गभेद, जातिभेद, धर्मभेद, स्थितिभेद,

अधिक दृढ़ता के साथ अिनकार करने के लिये रशिया के बोल्शेविकों की भी छाती न हो सके ।

किशन भी अूस भीड़ में जैसे जैसे अपना विछौना डाल अेकदम नीचे बैठ गया । अूसका जो पहले ही से मिचला रहा था । डोगियों में से वोटपर आते समय जैसे अनेक कैदियों को भडाभड अुलटियाँ हो रही थी वैसेही असे भी होने लगी । अुलटी करने के लिये अलग-से जगह कहाँ वहाँ ? जो जहाँ बैठा, वही ओकने (अुलटी करने) लगा । अुनमें भी निर्लज्ज डराअूपने में जो जितना अधिक आततायी, अूसकी अुतनी ही अधिक सुविधा । जबदस्ती धक्के मार कर जितने पैर वे पसार सके अुतने वे पसारते थे । सिपाहियों ने गालियाँ दी या अेक दो डडे कसे, तो अूसकी अुन्हे शरमही नहीं । आदत पड जाने के कारण अुन्हे अुतना डर भी नहीं था । किंतु जिन लोगों को वह डर था, और दूसरों की गर्दन मरोडने में थोड़ी ही क्यों न हो गरम महसूस होती थी, अैसे डरपोक किंवा मनुष्यता को जो घोल कर नहीं पी गये हैं, अैसा कोही वह दुर्दशा, वे पुलिसवालों और नीच दडितों की गालियाँ और अमगल गिलाजत अधिक तकलीफ पहुँचाती थी—अधिक खटकती थी । किशन को भी अूसकी अेक वाजू में विद्यमान अेक अुग्राकृति दडित अेकसरीखा ढकेलता और खिसकाता जा रहा था । किशन को वही अुलटी होगयी-असके छीटे अपने विछौनेपर अुडे देख कर वह किशन को अमद्र-अमद्र गालियाँ दे रहा था । और दूसरी ओर अेक दमा पीडित निरंतर खासता जा रहा था—खखार थूक रहा था, परवशता के कारण और भीड़में अुपायातर न होने के कारण अूसकी थूक किशन के विछौने पर तथा पैरे परै भी पडती थी । ययाशक्ति अपने अवयवों को सिकोड कर, घुटनों को पेटसे चिपटाकर, अपने विछौने के हाथभर भाग को ही फैला कर और जगहकी तंगी के कारण बाकी को अुर्मी तरह लिपटा हुआ छोड कर, अुसीपर टेका लेकर पड गया । अूस बडे जलयान की—छूटने से पूर्व की कर्कश घर्घर् बीच बीचमें होने लगी । ववा बीच बीच में ववराये हुअे राक्पमी कुत्तों की टोली की तरह भो ऽ ऽ करते हुअे चिघाडने लगा ।

अूस किमाकार अग्निनीका को वह घर्घर् प्रत्यक् मृत्यु की घर्घराहट के सदृश किशन को आसदायक प्रतीत होने लगी । ववे की वह भो ऽ ऽ, यमके

किसी काले-कलूटे और रक्तपिपासु प्रचंड कुत्ते की भौंक के सदृश भीषण भासन लगी। पेट में अंक सरीखी मिचली, हृदय में निरंतर भावनाओं का भुतार चढ़ाव, सिरमें चक्कर, 'मैं कालेपानी में आजन्म निवास के लिये चला हूँ, जीवित भी रहा तो इस गिलाजत की, गाली गलौज की, लातों और मुक्कों की असह्य दुर्दशामें मृतवत् जीवन व्यतीत करना होगा, और यह दुर्दशा कभी समाप्त होगी इसकी लेशभर भी आशा नहीं'—यह जानकारी मनमें ।। किशन मदग्रस्त सा विछोने के तकिये पर अुमी तरह पड़ा रहा—अितने ही में अुसके अून अस्तव्यस्त विचारों में अंक विचार—जैसे कोभी जोर से पुकारते हुअे अुठता है, अुसी तरह पुकार मचाता हुआ ही अुठा—

“क्यों ? इस दुर्दशा का अंत क्यों न होगा ? काला पानी—आजन्म कैद ! पर छुटकारा करनेवाले न रहेगा भी अपने आप छुटकारा पा लेना संभवही नहीं—यह किस आधार पर ? वह रफीअुद्दीन नहीं क्या कालेपानी पर से ही भागकर आया था ? मेरे लिये वैसा करना संभव नहीं, यह किस बिना पर ? ”

अस विचारतट्रा के अस्तव्यस्त किंतु बलौत्कट विचारों के साथही अुस की घुटकर मरजाने वाली आशा अेकदम अंक अुछाल मारती सी चमककर अुठ खड़ी हुअी ! मरणासन्न मनुष्य अकम्मात् प्रबल-तया हाथ पैर झाड़ता है, तद्वत् अुसकी आशा भी सहसा ही झडझडा कर प्रबल हो अुठी ! अुसने तर्कशास्त्र का अभ्यास किया था ।। और कुतर्क, यह भी अंक तर्क ही है ! शक्याशक्यता, साध्यसाधन अित्यादि की कोभी रुकावट आशा के और बात के झटके को रोक नहीं सकती । डूबता जो तिनके का आधार लेता है, वह जिस प्रकार लिये वगैर अुससे रहा नहीं जाता, अस लिये लेता है, अुसी तरह अुसके अुस काले पानी के अथाह समुद्र में डूबनेवाली आशाने अून विचारों को पट् से छाती से लगा लिया और अुसकी अुस अचेतन तट्रा की सारी चेतना वही अंक वाक्य अिकट्ठा करके अुद्धोषने लगी “काले पानी परसे भाग निकलना है ! वस्, भागना ही है ! ”

“खल् खल् सल् सल् करते हुअे अग्निको के चक्र, पक्पयत्र, समुद्रके अुदर में गतिमान् होने लगे । “निकलेगी ! छूटेगी ! बोट काले पानी की

ओर छूटेगी । ” पोलिस, कैदी, मल्लाह, अधिकारी नौकर, सभी के मुहों से यह आवाज अठने लगी ।

अतने ही में खड् खड् बूट अडाते हुअे दो गोरे सार्जेंट बेडी-हथकडी ठोके हुअे अेक कैदी को सलत पहरे में नीचे अतरवाते हुअे अुस पिंजरे के दरवाजे के पास आकर पहुँच गये, धड् से वह दरवाजा खुला, और अुस पीजरे में, अुस विशेष वदोवस्त के साथ लाये हुअे दुर्दड दडित के साथ वे सार्जेंट अदर प्रविष्ट हुअे ।

अुस खडखडाहट के होते ही चमक कर अितने सार्जेंट किस को लेकर आ रहे हैं, यह देखने के लिये किशन पडे पडेही आँखें खोलते हुअे अुस तरफ देखने लगा । त्योही ! —कौन ? यह तो —?

अरे ! यह तो रफिअुद्दीन अहमद है ! सिर्फ चार हाथ की दूरी पर अकड के साथ खडा हुआ ।

मुट्ठी तानते हुअे, आघ से ज्यादा खड् से अुठते हुअे, गुस्से से, घसक से, अचरज से कापते हुअे ओठों में ही किशनने गुनगुनाया—

“ रफिअुद्दीन ! वही है यह रफिअुद्दीन अहमद । । ”

पुराना वैर किशन के हृदय में अेकदम अुवल कर आगया । स्थल काल परिस्थिति का विस्मरण होया । मानो रफिअुद्दीन अपने को देखते ही वाघ की मानिद अपने अुपर टूट ही पडेगा, अैसी लहर किशन के खून में अुछल आओ-और अुसके टूट पडते हो प्रतिकारार्थ स्वयमपि टूट पडने की पक्की तय्यारी के साथ वह दुबक कर अपने विछौने की आड में बैठा रहा ।

त्यो ही रफिअुद्दीनकी दृष्टि भी अुसकी दृष्टि से भिड गयी । ।

कंटक बाबू क्या कहें! : : : १०

रफिअुद्दीन की दृष्टि के किशन की दृष्टि से भिड़ते ही यह अभी मेरे
 ऊपर टूट पड़ेगा जिस कल्पना से किशन की मुट्ठी मारामारी के आवेश से
 अपने आपही तन गयी, पर एक क्षण में रफिअुद्दीन ने जिस तरह अुसकी तरफ
 देखा था, अुसी तरह अन्य कैदियों की तरफ भी वह देखने लग गया है, वह
 किसी भी प्रकार से विचलित नहीं हुआ है, अुसका सारा ध्यान, विस्तरा
 कहाँ डालना ठीक होगा इसी एक विचार में अुलझा हुआ है, ऐसा किशन
 को दिखायी दिया । अुस अवकाश में, अुसे थोड़ी देर तक सोचने विचारने
 के लिये समय मिल गया । जिसने यदि मुझे पूरी तौर से पहचाना न हो तो?
 तो मुझे भी अपनी पहिचानत नहीं होने देनी चाहिये । मैं कंटक नामका
 कोई दूसरा ही कैदी हूँ, जहाँ तक हो सके अुसकी समझ अभी ही कर देनी
 चाहिये । जहाँ तक हो सके जिससे परिचय ही न हो ऐसा प्रयत्न किया जाय ।
 ऐसा अुस अवकाश में किशनने निश्चय किया और वह फिर अपने विछौनेपर
 सिर टेककर, मुद्रितवत् भासमान किंतु वास्तव में अवॉन्मुद्र नेत्रों से, रफि-
 अुद्दीनकी गति विधि को देखने लगा ।

रफिअुद्दीनने अपना विस्तर पीजरे के एक असे कोने में डाला, जहाँसे,
 लोहेकी छड़ों के पास पहरा देनेवाले सिपाहियों के साथ आसानी के साथ
 बातचीत की जा सके । गोरे सार्जेंट अुसे अितने विशेष बदोबस्त के साथ
 पीजरे में छोड़ कर, पीजरा बद करके चले गये हैं, यह देखते ही, अुन सारे
 कैदियों पर अुसका आतक पहले ही बैठ गया था । दडितों में, जिसको अेतादृश
 भयकर दडित समझ कर भारी से भारी हथकड़ी-बेडियाँ पहनाते हैं, अुस
 को दडित लोग अत्यंत तिरस्कारास्पद पापिष्ठ मनुष्य न समझ कर, यह कोई
 एक अत्यंत कर्तृत्ववान मनुष्य है, ऐसा समझने लग जाते हैं । अुसका वजन
 अुन अपराधियों में बढ़ जाता है और भयान्वित आदरबुद्धि के कारण वे स्वयमेव
 अुसके अधीन होकर व्यवहरने लगते हैं । दडितों की जिस प्रवृत्ति के कारण
 ही तादृश जनसम्पर्क में भी रफिअुद्दीन को, कोने के दडितों ने वगैर किसी

ननुनच के, स्वतः अंक दूसरे से सटकर भी, खुली जगह करके दे दी। हरकोभी उसके बारे में जिज्ञासा व्यक्त कर रहा था। कुछको मालूम था कि वह काले पानी से भागा हुआ एक प्रसिद्ध कैदी है। थोड़ी ही देर में यह बात सबको मालूम पड़ गयी। रफिअुद्दीन यह समझता था कि सारे कैदी उसे आतंक युक्त आदरभाव से देख रहे हैं। वह मानो एक सम्राट् ही हो ऐसी अदा से, खासता था खखारता था, तथा पुलिसवालों की आख बचाकर, जितना बोलना संभव था उतना बोलता था। उसके सम्राट् पद के जो विशिष्ट राजचिह्न—पैरो में पड़ी सब से भारी वेडियाँ, अन्हे वह पुन पुन खनखनाता हुआ, अपना ग्रेष्ठत्व प्रकट करता था।

अब सूचीभेद्य अवकार फैल चुका था। वह जलयान कलकत्ते का बंदर छोड़कर कालेपानी के रास्ते पर, समुद्रमें पूर्ण वेग से चल रहा था। कलकत्ते से अदमान जाने के लिये ४-५ दिन लगते हैं। उस बीच कैदियों को सिर्फ परमल और भूने चने ही खाने के लिये दिये जाते हैं। क्योंकि अन्न दड़ितों में से बहुत से घबराये हुअे—पली दफा समुद्रप्रवास के कारण अलटियाँ करते हुअे—भोजनकी अिच्छा से शून्य होते हैं। दूसरी बात यह कि, अितने सैकड़ों कैदियों के रसोअी—परोसे की सुविधा और व्यय करनेकी गर्मी अधि-कारियों में बहुत कुछ नहीं रहती। अतः शामको पीजरा बंद करते समय कैदियों को जो चने परमल वगैरे बाँटे गये थे वे—अलटियाँ करनेवाले कैदियों में बहुतोनें उसी तरह रख छोड़े थे। पर रफिअुद्दीन के लिये तो काले पानी का समुद्र पुराना दोस्त था। न तो वह घबराया हुआ था और नाही उसका जी मिचलाता था। उसे खासी भूख लगी हुअी थी। उसकी छाप तो मारे दड़ितों पर पहले ही पड़ चुकी थी। सम्राट् ही था वह अन्नका। अतः जिस तरह राजा अपनी प्रजा से कर वसूल करता है, उसी तरह अन्नने भी आस-पास के दड़ितों से बचा हुआ चना-चुरमुरा साफ साफ माग लिया, दो अंक ने आना कानी की तो अन्हे किसी दूसरे निमित्त से झगडा खडा कर गालियाँ दी तथा डाँट बता कर अन्नका खाद्य ले लिया। चने-चुरमुरे का वह सारा ढेर अुदरस्थ करके रफिअुद्दीन अब पीजरे की सलाखों के नजदीक किसी के आने की राह देखते हुअे थोड़ी देर खडा रहता तथा थोड़ी देर बैठ जाता। उस से कोअी बदीपाल कुछ पूछता तो कहता—

“ थोड़ा ठहरिये, पीछे बोलेगें । ”

त्यो ही अुसका प्रतीक्षित अवसर अुसे प्राप्त होगया । रात के नौ बजते ही पीजरे पर का पहरा बदला । अुस ‘चलान’ को काले पानी तक ले जाने के लिये काले पानी के भी कुछ सिपाही कलकत्ते तक भेजे जाते हैं । अुनमें से दो का यह दूसरा पहरा था । वे काले पानी के पोलिस रफिअुद्दीनके अच्छे परिचय के निकले । वह अुन्ही के पहरे की बाट जोह रहा था । अुनके आते ही सलाखो से हाथ थोड़ा बाहर निकाल कर अुसने अुन पहरेवालो के साथ परिचय का हस्तादोलन किया । पर पहरेवालो के हाथो में कुछ न कुछ हलदी कहिये या मिश्री कहिये—अर्थात् सोने की मुद्रा किंवा चादी की मुद्रा पडी अवश्य । पहरेवाला तत्काल दूसरी छोर तक फेरी मारता हुआ गया । फिर थोड़ा सा नि गब्द वातावरण होते ही रफिअुद्दीन के कोने की सलाखो में से बीडियो का पुडा और दिया सलाखी टप् से गिरी । अुस पीजरे की रियासत में अुसका प्रभाव अेक, सर्वाधिकारी की तरह अुस समय से अच्छा पड गया । अुस सर्वाधिकार का अुपयोग भी किन्ही प्रकरणो में वह अच्छी तरह करने लगा ।

जैसे पेढारी लोगो के कुछ नेताओ की आगे चल कर रियासते कायम हो गयी, अुसी तरह कुछ साहसी डाकू जब कभी राज्यों की स्थापना करके राजा बन जाते हैं, तब राजा बनते ही राजाओ की भाँति आचरण भी करने लगे जाते हैं । अपने आप अन्याय कितना भी क्यों न किया हो, पर अितरो के न्यायान्याय का निर्णय बहुत ही अच्छी तरह करते हैं । अपने आप कितना भी क्यों न लूटा हो पर दूसरो को आपस में लूटने नहीं देते हैं । स्वयं कितने भी अुपद्रव क्यों न मचाये हो, पर वे अन्य प्रसंगो में दूसरो के आपस के अुपद्रवो को कम करने के लिये दयालु वृत्तिकी अुदारता भी दिखाते हैं ।

रफिअुद्दीन अेक कूर मनुष्य था । अुसकी कूरता को जागरित करने के लिये अुसके मनोयत्र के वटन को जबनक कोअी दवाता नहीं था, तबतक वह भी पूर्ण मनुष्यता के साथ ही व्यवहार करता था । वह काले पानी के नामसे घबराये हुआ में से कितनो ही को ढाढस बँधाता था—“ घबराव मत । दस हजार लोग वहाँ अच्छी तरह पच्चीस-तीस-चालीस बरस तक जीवित रहते हैं, कितने ही बीबी-बच्चोवाले होकर अपना प्रपच निर्माण करते हैं । खेती है, गायबैल है, घरदार है सबकुछ है वहाँ । अरे ! मैं तेरी ही तरह पहले

घवराया था—पर वहाँ जाने पर खासे हजार रुपये गाठमें बाँधकर बैठा था ! घवराव मत्, पट्टे घवराव मत । ” कितनेही लोग दस्तों और मुलटियों से पीड़ित हो रहे थे । तब अूसने सिपाहियों से और समय पर डॉक्टर के साथ भी झगड़ कर, अुन्ही को कैदियों के साथ व्यवहार करने के नियमों का अुल्लंघन करने के अपराध में बुरी तरह फटकार सुनाकर, कप्तान साहब को अितिला करने की धमकी देकर, अुन बीमारों को दवाभी देने लगाता था । अुसके लिये अभिलषित चने-चुरमुरों की मट्ठी जो लोग अपने हिस्से में से दिया करते थे, अुन्हें वह अपने लिये अनावश्यक बीडियों के टुकड़े चुराचुराकर पीने के लिये भी दिया करता था । अपनेही चरित्र की कुछ खरी खोटी घटनाओं वह अुन्हे अिस अवाच्य पद्धति से कह कर सुनाता था, अैसे पद, भजन, गायन करता था कि, अुन कैदियों को अपनी बीमारी और दुर्गतियों काभी कुछ वपणों के लिये विस्मरण हो जाता था—मन रमता था । अुनमें से प्रत्येक कैदी के सामने पीछे—अुपर नीचे पिशाच की तरह अेक ही प्रश्न अुस दुर्घर प्रसंग में खड़ा रहता था, “ काला पानी कैसा होगा ? कैसी कैसी भयकर यातनाओं वहाँ भोगनी पड़ेगी, वहाँ से सभव हो तो छुटकारा पाने का क्या अुपाय किया जा सकता है ? ” प्रत्येक मनुष्य को येमपुरी कैसी होगी, अिस बातकी जैसी असह्य जिज्ञासा रहती है, अुसी तरह ‘महाराजा’ के अुपर के आजन्म कैदी के सिर पर भी ‘काला पानी कैसा होगा ?’ अिसी अेक प्रश्न का पागलपना सवार रहता है । जिससे जो मिले अमसे वही पूछने की अिच्छा प्रतीत होती है । अैसी मन स्थिति में प्रत्यक्ष काले पानी की सजा भोग कर आया हुआ वह रफिअुद्दीन अुन लोगों के लिये येमपुरी का भूगोल रेखाकित करनेवाला मूर्तिमान् गरुडपुराण ही प्रतीत हुआ । किशन के मनमें भी अुससे वह जानकारी पता चलाने की और विशेषत वह काले पानी पर से कैसे भागा यह रोमहर्षक क्या सुनने की तीव्र अुत्कठा पैदा होती थी । पर भेद खुलजाने के डर से ‘भीख न सही पर कुत्ते को रोक’ की नीति का अवलंबन कर के किशन ने पहले अेक दो दिन तक तो रफिअुद्दीन की तरफ खुल्लमखुल्ला देखने के मौकों तक को टालने की कोशिश की ।

पर रफिअुद्दीन थोड़ी थोड़ी चूँच बैठनेवाला था ? अुसका पहला कार्यक्रम दृष्टिगत प्रत्येक विशेष कैदी के खटले की ओर चरित्र की मालूमात हासिल

करने का था । आजन्म काले पानी की सजा भुगतने के लिये जानेवाले प्रत्येक कैदी की कथा का अभिप्राय एक अद्भुत अपन्यास का कथानक । असाधारण दुष्टता, सुष्ठुता, विविष्यता, सकट, मक्ति, रक्तपात, हत्या, अपद्रव, बदला, सुखदुःख, दुर्दशा—अन सब का एक कोलाहल । वह पीजरा क्या है—दुनिया के किसी भी ग्रन्थालय में न मिलनेवाले, भावनाओं को अुभाड और अुखाड डालनेवाले अपन्यासों की एक अलमारी । नहीं, खलनायकों का सजीव प्राणिसंग्रहालय । पहले दर्जेका मुसाफिर किसी आगबोट पर जैसे रोमहर्षक अपन्यासों की किताबें पढ़ता हुआ कैबिन में तल्लीन होकर पड़ा रहता है, उसी तरह रफिअुद्दीन अुस पीजरे में अुन दडितों में से प्रत्येक का रोमहर्षक चरित्र वाँचने में रग गया था । किशन चुपचाप था । समुद्र लगने की वजह से विछौने पर चुपचाप सुस्तसा ढीला ढाला सा पड़ा हुआ था । तथापि रफिअुद्दीन का दो तीन मर्तवा ध्यान अुसकी ओर गये वगैर न रहा । अपने खटले के अुस अल्लू 'किशन' से मिसका चेहरा बहुत अधिक मिलता है—मिस बातका अचभा भी रफिअुद्दीन को एक दो दफा हुआ । पर किशन सरीखा एक 'मुर्दार अुल्लू' एकदफा अुस जैसे भयकर खटले में से निर्दोष छूटजाने के अनंतर पुन अैसी झझट में पड़ेगा मिसकी कल्पना तक असंभव प्रतीत होने के कारण, वह विचार मन में स्पर्श करजाने पर भी वही चिपक कर नहीं रह सका । तो भी, अुन सजीव रहस्यकथाओं को पढ़ते-पढ़ते मिस पुस्तक के बारे में भी अुत्सुकता पैदा होने के कारण रफिअुद्दीन ने दोतीन आदमियों से आखिरकार पूछ ही लिया—“यह प्राणी कौन है बाबा, न हिलता है, न हँसता है, न बोलता है न चालता है । बिल्कुल सुस्त ! भुट्टा चोर दीखता है कोअी । ”

अुसपर अुससे एक दो ने कहा—“अह, हमारे चलान में वह आज दस बारह रोज से है । 'बाबू' है वह । अग्रेजी, ससकीरत—न जाने क्या क्या सीखा है, सुनते है । सजा मिलने पर जेल में लिखा पढी का ही काम दिया गया था अुसे । मन्सान भी क्या मन्सान है जी, वह बाबू ! ”

रफिअुद्दीन की अुत्सुकता बढ़ी, “नाम क्या है अुसका ? ”

“कटकबाबू अुन्हें कहो करते थे साहब लोग भी ! ”

“अुसका अपराध क्या था ? ”

“ हत्या । खून । ”

यह मालूमात दोतीन मर्तवा सुनते ही रफिअुद्दीन को मानो वही मिल गया जिसकी अुसे मुराद थी । अुसे बड़ा आनद हुआ । कटकवावू को साहब लोग भी मर्यादा की दृष्टि से देखते थे, जेल में अुसे कैदीक्लार्क का काम पहलेही से मिला हुआ था और अुसे सिर्फ हत्या के ही जुर्म में काले पानी की सजा हुअी है, यह सुनतेही कालेपानी के नियमों के पहले ही से जानकार रफिअुद्दीन के तत्काल ध्यान में आया कि, अिस कैदी को काले पानी पहुँचते ही आज नहीं तो कल अवश्य ही ‘ वावू ’ का महत्त्वपूर्ण काम मिलनेवाला है । मनुष्य हत्या का अपराध तात्कालिक आवेशमें घटित होना यह सब अपराधों में अेक सौम्य अपराध समझा जावे यह, रफिअुद्दीन सरीखे अुलटे कलेजे के सघे हुअे नृशंस पापी ही जिस काले पानी पर यत्र तत्र फैले हुअ हैं, अुस यमपुरी में सर्वथा न्यायानुकूल ही था । अत वहाँ पहुँचे हुअे दडितों में से जो अंमे तात्कालिक आवेश में घटित हुअी हुअी हत्याके समान अपराध का कैदी होता है, अुसे सुधारणीय कैदियों के वर्ग में लिख लिया जाता है, और अुस के साथ बहुत ही सौम्य रीति से—काले पानी की कूरता की तुलना में जो सौम्य रीति संभव है, अुससे—व्यवहार किया जाता है । अुस पर भी अुस ‘सुधारणीय’ वर्गांतर्वर्ती कैदियों में से अगर किसी को लिखना पढना आता हो तो अुसे काले पानी में कैदी क्लार्क की जगह दी जाती है । अुसके हाथ में साहबके सान्निध्य की चावी पडने के कारण अितर सघे हुअे डाकू वगैरे कैदियों के भवितव्य का बहुत कुछ दारोमदार अुस क्लार्क-कैदी के प्रवृत्तात पर रहता है । किसी को वॉर्डर बनाना, वॉर्डरों को लाभ और सुविधा के काम बाँट देना—कारा-द्वार पर आगत निर्गत को नोट करना सिपाहियों की अुपस्थिति लेना, बड़े बड़े कारखानों के आय-व्यय का गणन रखना—अत्यादि काम अिस क्लार्क कैदी के हाथों में धीरे धीरे सुपुर्द किये जाते हैं, तस्मात् सघे हुअे कैदी-वॉर्डर प्रभृति दडितों ही पर नहीं प्रत्युत, स्वतंत्र सिपाही और शर्मजीवियों पर भी अिस क्लार्क वर्ग की बड़ी भारी छाप पडी रहती है । अुन लोगों की सारी घूसखोरी के अड़ो पिल्लों को बाहर ले आना किंवा गरमी देना अधिकांश अिन्ही लोगों के हाथमें रहता है । अिन्ही कैदी क्लार्कों को ‘ वावू ’ कहते हैं, आजन्म दडितों की परिभाषामें ।

रफीअुद्दीन काले पानी पर से भाग कर जाने के घोर अपराध के लिये पुनः काले पानी की सजा होने के कारण वहाँ, उसे पहले पहल तो कठोर स्थिति में मसक्कत करनी पड़ेगी यह भली प्रकार जानता था। ऐसी स्थिति में उसी चलान में एक शम्स यदि इस तरह बाबू होनेवाला हो तो उससे घनिष्ठ परिचय अपने लिये बहुत ही उपयोगी साबित होगा यह उसके तभी लक्ष में आया और अतः अब उस 'कटकबाबू' को प्रसादित करने की उसे अितनी अधिक लालसा अनुभूत हुई। उसने तत्काल कटकबाबू के पास जाकर परित्रिति प्राप्त कर ली। उसका नाम कटक, अपराध सादी हत्या का, तस्मात् उसकी मुद्रा किशन से मिलती जुलती प्रतीत होने पर भी अितर बातों में किसी से भी मेल न होने के कारण रफीअुद्दीन बहुत कुछ सदेहशून्य वृत्तिसे कटकबाबू के साथ घनिष्ठता स्थापित करने लगा। कटकबाबू की भरसक मदद करके पुचकारने लगा। उसकी परिचिति अब ऋणानुबध के सिपाहियों का पहरा आया कि कटकके ही पास आकर उसने आखीर की दो रातों में अपनी गप्प-वाजीका अड्डा जमाया। कटक को भी उसके पास से बहुतसी जानकारी प्राप्त व्यथी, अितना ही क्यों, उसके साथ यदि जम सके तो काले पानी से भाग कर जाने का एक आध रास्ता उसे भी मिल नहीं जायगा किस पर से ? ऐसी आखीर की साहसी आशा भी कटक को मोहने लगी। सँपेरा जैसे साँपसे तथैव कटक भी रफीअुद्दीन से—अुसके विपैले दण की परिसीमा से यथाशक्ति बाहर रहकर, जैसा खेल खेला जा सकता था, वैसा खेलने लगा। उसकी अपने को कुछ भी जानकारी नहीं है, यह रफीअुद्दीन के मन पर पूर्ण रूप में विवित करने के अुद्देश्य से रात को गपगप लडाने के वक्त किशन बोला,

"पर मियाजी, आप के सदृश साहसी और चतुर आदमी काले पानी से भाग जाने सरीखे दुष्कर अब लुकाछिपीके साहस में अुघर सफलता प्राप्त करता है, और अिघर देश में सुरविषत पहुँचने के अनतर भारतीय पुलिसवालों के जाल में पुनः न फँसने की जो बिलकुल सादी चतुराई अुसमें गलती खाकर अुनके फंदे में अितनी पक्की तरह से फिर फँस जाता है—यह हुआ तो कैसे ? चोरियाँ, डाकेजनी अित्यादि दुष्कृत्यों के पैरो पड कर एकदफा भयकर ठोकर खाने के बावजूद भी आप हिंदुस्तान में भाग कर आने के अनतर पुनः अुस सकटमय अुपद्रव्याप (क्षमेले) में न पडते तो अच्छा नहीं था क्या ? आपको

काले पानी से भाग आनेपर जिन प्राणातिक सकटों को भोगना पड़ा होगा वह सब इस गलती के कारण निष्फल होगया और पुनः दुर्दशा के चक्कर में पड़ने की नौबत आगमी इस बात का मुझे अत्यंत खेद होता है, अतः पूछ बगैर रहा जाता नहीं । ”

“कटकवावू, क्या कहूँ । मैंने सचमुच बड़े प्रामाणिकपने से अपना जीवन चलाने का निश्चय किया था । काले पानी पर से भागकर हिंदुस्तान पहुँचते ही मैंने पकीरी ले ली । हिंदू साधू पर भी मेरी भक्ति बैठ गयी अतः मैं योग का अभ्यास करने लगा । कटकवावू, तुम सब लोग सच मानो या न मानो पर देवकी सौगंध लेकर कहता हूँ कि, पहले डाकेजनी, चोरियाँ, अपद्रव आदि जो पाप मैंने किये-वे किये, पर काले पानी से आने के बाद मैंने यदि किसी बात का लोभ रक्खा तो वह भक्ति का, योग का । भोग के बारे में अब आस्था ही नहीं रह गयी । और सचमुच मुझपर इसवार जो यह सकट आपटा है, वह मेरे किसी नवीन दुष्कृत्य के कारण नहीं, बल्कि वर्मन्याय में आचरण करने का निश्चय करने के पश्चात् जो एक सत्कृत्य मेरे हाथ से करालेने की इच्छा देव के मन में आयी उस सत्कृत्य ही के कारण । ” वह गभीर विचारों में गड़ा हुआ सा चूप होगया ।

वह सुनने वाले अनेक कैदियों के मुँह से एक ही साथ प्रश्न बाहर निकला, “असैसा ? वो लो ना मिय्याजी, कहा क्या बात हुयी ? वह कौनसा सत्कृत्य ? ”

अपना पूर्ववृत्तांत जाननेवाला यहाँ एक भी कैदी नहीं है, असै अच्ची तरह निश्चिति हो जाने के बाद रफिअुद्दीन किसी वर्मवीर के आविर्भाव में कहने लगा, “क्या कहूँ वावूजी ? अच्छा, आपने गवालियार का नगर देखा है ? ”

कटकवावू बोले—“नहीं । ”

तस्मात्, अब गवालियार के बारे में जो मुँह में आये सो हाक देने में कोभी आपत्ति नहीं है, यह जानकर रफिअुद्दीन आगे हिंदी में कहने लगा, “गवालियार के एक बड़े सरदार की एक अत्यंत सुस्वरूप लडकी थी । उसका नाम था, मालती । वह जितनी गोरी-सौंदर्य में निर्मल, उतनी ही दरदालू देवभक्त थी । मैं योग का अभ्यास करने के लिये हिंदू साधू के पास भगवा पहन कर देवालय

मैं बैठा रहा करता था। वही वह पूजा के लिये आया करती थी। मुझे देखते देखते उसकी मेरे साधुत्व पर कहिये या रूप पर कहिये, बहुत अविक भक्ति जड़ गयी। वह फूल भी मुझपर चढ़ाती थी, नैवेद्य भी मुझे दिखाती थी। भजन के लिये रात होने तक बैठी रहती थी। एकवार उसे किसी तरह रात होगयी। तब 'अकेली घर जाने में डर लगता है, आप घर तक मुझे पहुँचा आधिये।' ऐसा उसने आग्रह किया। अपने गुरुजी की आज्ञा ले, नि सकोच होकर मैं भी उसे पहुँचाने के लिये चला। देवालय गाव के पास से दूर था, बीचमें एक आमरायी थी, जनशून्य। वहाँ आतेही एकदम धवराये की तरह करके मालती मेरे शरीर से लिपट गयी। स्त्री स्पर्श मेरे लिये तो वर्ज्य। पर क्या करता? वह गले से लिपट ही गयी। कापती हुयी वह बोली, 'मेरे ऊपर एक मनुष्य पापी दृष्टि रखकर आज कितने ही दिनों से मुझे सता रहा है। मैं आप को देव के सदृश समझकर भजती हूँ, तुम्हारे पास आती जाती हूँ, यह सहन न होने के कारण कल उसने मुझे यही पर रोका था, और जान से मार डालने की धमकी दी थी, इसी लिये मैंने आज तुम्हें अपने साथ ले लिया है। मुझे अभी अभी उसकी आहट सी लगी हुयी मालूम देती है।' मैंने पूछा, 'वह कौन है? उसका नाम क्या है?' वह बोली, 'किशन। उस नीच का नाम है किशन।'

"वह नाम सुनते ही मेरे शरीरपर काटा खड़ा होगया! क्यों कि उस शस्त्र को मैं अच्छी तरह पहचानता था। पहली बार काले पानी जाने से पूर्व हम लोग जो डाके डाला करते थे, उस समय की हमारी टोली में ही यह बुलटे कलेजे का डाकू, किशन भी शामिल था। भाग कर आने के पश्चात् वह मुझे ग्वालियर ही में गुप्त रूप से आकर मिला था, और फिरसे उस के उस पापी दुष्कृत्य में हिस्सा रखने के लिये उपन मुझसे कहा था। पर मैंने उससे कहा, 'मेरे हाथ ही नहीं बल्कि मेरा मन भी सब प्रकार के पापों से शून्य हो गया है, उसे मैंने देवता के चरणों में अर्पित कर दिया है। तू भी अब वैसा ही कर। मेरा यह उपदेश सुनकर वह शांत होने के बजाय और भी अधिक खौल उठा। मेरी तीव्र निर्भर्त्सना करके मुझसे बदला लेने की धमकी देने लगा। अतः सब बातों से मैं किशन को अच्छी तरह पहचानता था। किशन एक अधम था, किशन एक निर्दय गुंडा था। किशन भयकर दुराचारी था, कृतिस दुष्ट

होते हुअे भी बुद्धि से वह विलकुल गढ़ा था । कटक बाबूजी ! आप जो कपमा करेगे तो केवल हसी की अेक बात बतलावूंगा, बनावू ? हँसी आती है । मुझे अूस बात की ! पर मैं अिम पीजरे में बद किये जाने के बाद पहले पहल जब आप को देखता भया, तब अूस किशनकी मुखाकृति जैसी ही मुझे आपकी मुखाकृति भी नजर आती थी । ”

रफिअुद्दीन हसने लगा, कैदी भी हसे, तत्काल किशन की छाती में बस्सू मा हुआ ! यह बदमाश अिस तरह ताने कसकर निर्भर्त्सना कर रहा है, मैं ही किशन हू यह पता चलाने का अिसका हेतु तो नहीं नहै ? अैसी शका भी ‘कटक’ को आभी और वही यदि अूसका हेतु हो तो अुसे निष्फल करने के लिये रफिअुद्दीनद्वारा किशन को दी गयी गालियों की गुप्त चिट्ठ, मालती के नाम का अूसके मुंहसे होनेवाला अुद्धार सुन कर प्रतीत होनेवाला सोनहास तिरस्कार और वह शका अिन सब विचारों की ग्वलबली अदर ही अदर दबाकर कटक रफिअुद्दीन की और कैदियों की हँसीमें अपनी भी हँसी मिलाता हुआ बोला, “ठीक, मिय्याजी, ठीक ! वह किशन अेक पक्का गदहा था अैसा कहते हो और मेरा चेहरा अूस जैसा ही नजर आया, अैसा कहते हो, तो मेरा चेहरा गदहे जैसा है, अैसा है क्या तुम्हारा कहना ? ”

हसते-हसते पर हाथ जोड कर रफिअुद्दीन कपमा मागने लगा, “थह क्या बाबूजी, किशन की अकल गदहे जैसी थी, पर चेहरा अच्छा ही था, यह मैं आपके चेहरे में तुलना करके सूचित करनेवाला था ! कहा सदाचारी कटक बाबू और कहाँ वह गुडा दुराचारी किशन । । ”

“अच्छा ! आगे क्या हुवा ? ” कहानी में मग्न हुआ हुआ अेक कैदी जल्दबाजी करने लगा ।

“आगे क्या कहू भाभी, मैं मालती को धीरज दे ही रहा था कि अेक झाडी में से पत्थर पर पत्थर आने लगे । अूस अवला का रक्पण ही अपना धर्म समझ कर मैं अेक हाथसे अुसे अपने साथ लिपटा कर दूसरे हाथ से अुलट्टे पत्थर फेंकने लगा और यथाशीघ्र गाव में जा पहुँचा । अूसका मकान आतेही वह भावाविष्ट होकर बोलने लगी, मेरे कमरे की तालियों का गुच्छा मेरे पास है, और मेरा कमरा म्रतत्र रूप में मेरेही अधिकार में है, आप जरा अूपर चले और जबतक मेरे हृदयकी भीति युक्त घडघड दूर न हो तब तक

मेरे ही साथ रहे ! और पीछे से जाधियेगा ! मेरे लिये अुसके कथन का अिनकार करना अेक अवला के साथ कठोर व्यवहार करने का पाप ही था ! मैं अुसके साथ अुपर अुसके कमरे में गया । अदर पैर रखा ही था कि अुसने दरवाजे को अदर से बंद करके ताला लगा दिया ! देखता हू तो जिघर-तिघर साजसजावट, सरदारी सौंदर्य, सुगंध ही सुगंध, आअीने, चित्र, पलग, पुष्पपात्र केवल अिद्रभुवन ! और मध्य में वह गोरीपान मालती—रूपकी केवल अप्सरा ! मेरे गले में अुसने पुन मजबूत गलबही डाल दी ! कामोन्मत्त पुरुषोने स्त्रियो पर बलात्कार किया है, यह तुमने बहुतबार सुना होगा, पर अुस काम-लपट स्त्रीने, मालतीने, मेरे जैसे अेक साधु पुरुष पर बलात्कार किया । अैसी कहानी कभी सुनी है क्या ? ”

“वो सब जाना देव परतु—” अेक लुच्चा कैदी छद्मीपने से हमा “सच बोलो मिय्याजी, वह बलात्कार क्यों न हो, पर तुम्हे वह चाहिये-चाहियेसा प्रतीत हुआ कि नहीं ? अुसके अुस गोरीपान मृदु-मृदु देहकी मजबूत पकड़ बैठतेही तुम्हे क्या मालती पर गुस्सा आया ? शपथ देवकी ! सच बोलो ! ”

जोर से हँसते हुअे मानो जो चाहता था वही प्रश्न हुआ, अैसा प्रतीत होकर रफिअुद्दीन मटक मटक कर कहने लगा—‘ मित्र, शपथ देवकी ! मालती पर गुस्सा अुस स्थितिमें, वहाँ यदि शुकदेव रहता तो भी न आता । मालती ! हाय ! मेरी गोरीपान ममूँममूँ (मृदुमृदु) मालती ! अुसपर गुस्सा ? अरे मित्र, वह मेरी जान है जान ! —”

सारे कैदी कहकहा मार कर हँस पडे ।

भरी सभा में, अभिनयमंचपर किसी काले कलूटे नटके मुंहपर मली गभी रंग की पुडिया बीच में ही कही पुंछ जाय तो काला रंग अुतनेही स्थानपर तारकोल के चट्टे की तरह जैसे दीखने लग जाता है, अुसी तरह अुस ढोगी मनुष्य के मन का असली कालापन अुस साधुत्व की पुडिया के अुस तरह पटसे पुंछ जातेही बाहर आगया । पर नट जैसे लोग तो के हँसते ही सावधान हो कर अुस काले चट्टे को रुमाल से ढाँपकर पहले का अभिनय आगे जैसे तैसे पूरा कर डालता है, अुसी प्रकार के गडबडझाले में रफिअुद्दीन ने अपने को संभाल लिया ।

“परतु हाय हाय ! जोहड़ से निकला सो कूअें में जा गिरा ! क्या कि राजमार्ग पर गिर कर अुठा और ज्यो ही अपने को सँभाल कर दौड़ने की सोच ही रहा था कि अुतने में मुझे कमर से मजबूती के साथ पकड़ कर कोअी जोर जोर से चिल्लाकर शोर मचाने लगा ! वह किशन था ! वह नीच किशन ! वह गुडा किशन ! मेरे अूपर आँख रखकर, गुप्त रूपसे पीछा करते हुअे अुस आमराअी से आकर यहाँ छिपा हुआ था ! मैंने गुस्से के मारे बेहोश सा होकर हाथ में का धारवद चिमटा अुसके पेटमें घुसेड दिया ! वह पापी वही का वही ढेर होगया ! पर अितने में आदमियों के झुडके झुड अुस चीखने चिल्लाने के कारण आन की आनमें वहाँ जमा होगये और मुझे पुलिसके हाथ में देदिया ! और अतमें मालती का नाम लाछित करने की अपेक्षा मैंने स्वयमेव हत्याका दायित्व अपने अूपर ले लिया, तत्फलरूप पुन मुझे अिस काले पानी की मजा होगअी ! अेक अवला के रक्षण के लिये मैं जिस जजालमें आफँसा ! धरम के लिये मैंने यह वलिदान किया ।। ”

“और वह राजकुमारी ? अुस मालती का आगे क्या हुआ ? ”
अेक कैदी दु खोच्छ्वास निकाल कर पूछने लगा ।

“क्या—पुछते हो, माअी ! वह प्यारी मालती ! मेरे बिछोह में पगली-होगअी ! हाथ में अेक माला, अुसके साथ ‘हाय रफिअुद्दीन, हाय रफिअुद्दीन !’ अैसा जप करते हुअे मयुरा के रास्तो पर जो मिले अुसी के सामने यह सुरीला पद गाती हुअी पूछती भटक रही है—‘वतादे सखी कौन गली गये—श्याम !’

रफिअुद्दीन वह पद गाकर दिखाने की तय्यारी ही में था ! पर अपने अुपमर्द की अुस कथा का पल्लव—प्रसव (शृण्क-विस्तार) कटक को सर्वथा असह्य होगया था, अत अुस विषय को पूर्णतया बदल डालने का अुचित अवसर पाकर कटकने कहा—

“पर मिथ्याजी, मत्रविद्या से समुद्रपर पैरा-पैरो चलने की अलौकिक शक्ति यदि आप में है तो आप अभी छलाग मार कर वापस देश को क्यों नहीं चले जाते ? ”

“कितने भोले हो कटकवावूजी आप ! पुलिसवालों के ममक्ष्य छलाग मारने से भूमिपर पैर रखने पर वे फिर पकड़ लेंगे ! और दूसरी

चान ऐसी है कि वह विद्या स्त्री-स्पर्श होते ही अनुपयोगी हो जाती है । मालती स्पर्श से पूर्व स्त्री-स्पर्श मैंने कभी नहीं किया था । अब कम-अज-कम तीन चरसतक अखंड ब्रह्मचर्य पालन किये बगैर देह अतना हलका नहीं हो सकता कि वह पानी पर असस्पृष्ट रूप में पैर सके । वीर्य सचय हो जानेसे अुसका तेजो-मय ओज मस्तक में से होकर अूपर जाने का प्रयत्न करता है । तन्मूलत देह आप ही आप अूपर अुठने लगे जाता है । इसी को योग विद्या में लघिमा-सिद्धि कहते हैं । अुसे साधते ही जलस्तमन मत्र फलीभूत होता है । तब काले पानी का समुद्र बगले में बिछाओ गयी सतरजी (दरी) के समान हो जाता है । अुमपर सिर्फ मन में आते ही चलने लगे ।। ”

“ पर मिथ्याजी, इस आजन्म कैद की जगह को भी काला पानी क्यों कहते हैं ? ” अेक कैदी ने प्रश्न किया ।

“ गवार लोग कहते हैं वैसा । अुसका असली नाम काला पानी न होकर अडेमान है अडेमान । ”

“ पर अुसका अडेमान नाम भी काहे को पडा ? वहाँ मुर्गी के अडो की पैदावार कसरत से होती है या कुछ और बात है ? ” कैदियों ने जिज्ञासा की !

अुन के अज्ञान पर दया आये जैसा हँसता हुआ किसी ऐतिहासिक तत्त्व-न्वेपक की अदा के साथ रफिअुद्दीन कहने लगा—“ अडेमान नाम कैसे पड गया वह बड़े बड़े अग्रेजो तक को मालूम नहीं पडता । हिंदू लोगो में से कुछ गवार लोग कहते हैं कि, हनुमानजीने अपने नाम की यादगार के तौर पर अुस टामू को ‘ हनुमान ’ कहा जाय ऐसा लका से वापिस रवाना होते समय सीताजी से विनति की थी । पर वह झूठ है । सच बात तो मेरे गुरुने कही वो ही है । सुनो ! सृष्टि से पहले जब जिधर-तिधर पानी ही पानी था, तब मक्का शरीफ में अेक ओश्वर का प्यारा अवलिया रहता था । ओश्वरने अुससे कहा, ‘ अेक नौका ले और गूरब की तरफ रवाना हो । सर्वथा, सूर्य अुगता है वहाँ तक । जहाँ तुझे चाहिये वहाँ, तेरे अभीष्ट आकार की भूमि अुसी आकार का पदार्थ तेरे समुद्र में डालते ही निर्माण हो जायगी । मनुष्यो के वास्ते अब समुद्र में मे अधिक स्थल मैं निर्माण करना चाहता हूँ । ’ ओश्वर की आज्ञा होते ही अवलिया अुसी हालत में नौका में बैठ समुद्रमें रवाना हुआ ।

मक्का छोड़कर कितनेही महीने गुजर गये तो भी मतपसद जगह का निर्माण कहाँ किया जाय, यह अुसके ध्यान में नहीं आ रहा था । अितने में आकाशवाणी हुई, 'तू जहाँ नाव खे रहा है, वही स्थल निर्माण कर ।' तत्काल अवलियाने अपनी बेलबूटो से सजी हुई दरी समुद्रपर बिछा दी ।—और कौन अचरज ! अुस सतरजी (दरी) के साथ ही साथ नानाविध लता-पुष्प-पर्णों से मडित अेक विस्तीर्ण, अूर्वर, समतल भूमि होगयी । वही यह हिंद ।—यह हिंदुस्तान । अुस पर अेक मेमने की अीश्वर के नाम से बलि चढा कर अवलिया वहाँ से नाव खेता हुआ लका का फेरा मार कर आगे चला । अितने में अेक जोर का तूफान बरपा हुआ । अुसकी नाव अुलट गयी । सारी चीजें डूबने-डाबने लगी । अवलिया भी पानी में नीचे अूपर डूबने अुतराने लगा । वह डूब ही गया होता । पर कुरान शरीफ अुसके हाथ में था, अुसको बादल (तूफान) का बाप भी न डुबा सकेगा । अुस कुरान शरीफ को अूँचा करतेही वह तर गया, अुसने नाव को फिर सुलटी कर दी—त्यो ही आकाशवाणी हुई, 'अिस समुद्र में अैसे तूफान हमेशा बरपा होते रहते हैं । तब, अत्रत्य समुद्र के जलप्रवास को सुरक्षितता प्राप्त हो, अिसके लिये तू यहाँ अेक स्थल का निर्माण कर ।' यह आकाशवाणी सुनते ही वहाँ कोअी वस्तु फेंकी जाय यह अवलिया देखने लगा तो क्या, अुसके पास कोअी भी वस्तु नहीं । अेक हाथ में कुरान शरीफ और दूसरे हाथ में खाने के लिये अत्यंत यत्नपूर्वक पकडा हुआ मुर्गी का अडा बस यही था । तब अवलिया ने समुद्रपर वह अडा फेंक दिया और कहा, 'हो जाव भूमि !' बस्म्, तुरत ही अडे से बेट (टापू) बना । अिस लिये अुसका नाम पडा 'अडेमान । अडे का बेट ।' "

"या खुदा ! क्या तेरी करामत ।" अेक मुसलमान फकीर दडिती में था वह वर्माभिमान से परिम्फुरित हो अपने सव्यापसव्यवर्ती सब हिंदू बड़ियों को हीन ठहराते हुअे बोला—"देखो, हमारे अिम्लाम धर्मकी बडेजावी ! कैसे कैसे अवलिया ! कुराण शरीफमें अिमान रखने से आदमी कैसे करामती बनते हैं ! क्यों कटकबाबू, अिस किस्से को सच मानते हैं या नहीं ? "

सारे हिंदू कैदी कटक बाबूके मुंह की तरफ, 'अिस फकीरने अपने हिंदू धर्म के अदर जो न्यूनता प्रदर्शित की है, अुसका व्याज सहित मूलबन चुकाव

रहिये' मिस लालसा से भरी निगाहों से देखा—कटक बाबू हँसा। “यदि मय्याजी द्वारा कथित यह अवलिया की अजब कथा सही है तो हमारे पुराणों में की अगस्ति ऋषि की कथा भी सही होनी ही चाहिये। और मिस अवलिया भर के लिये देखना हो तो हिंदू अवलिया अगस्ति ही मिस मुस्लिम अवलिया से अधिक करामाती था यह स्पष्ट है या नहीं यह तुम्हीं बताओ—क्योंकि जिस समुद्रका पानी नाक मुहमे भरकर यह मुस्लिम अवलिया डुबकियाँ खा रहा था, वह समुद्रही मूलतः उस अगस्ति ऋषिकी थी—केवल लघुशका ।।”

सारे हिंदू कैदी विजयानंद में कहकहे मारकर हँसे। हर कोभी कहने लगा—“अच्छी पिघलादी।”

पर मिस आकस्मिक गुलगपाड़े से क्रुद्ध हो पीजरे का पहरेदार चिल्लाया, “ओ बदमाश लोग! तुम्हें चुपचाप बोलने की सहूलियत दी, उसका यह परिणाम करते हो क्या? काले पानी के पीजरे में हो, या अपने बाप के बगले में? अठो, जाओ, अपने अपने बिछौने पर जाकर सो जाओ। जाव जाव।”

सारे लोग उस सख्त हुक्म के छूटते ही पटापट अपने अपने बिछौने पर जा कर पड़ गये। तो भी पहरेदारने रफिमुद्दीन की आधी हलदी से पीला हुआ हुआ होने की वजह से रफिमुद्दीनकी तरफ हुक्मका रुख प्रत्यक्षतया नहीं दिखलाया था। तस्मात्, रफिमुद्दीन उसी हालत में अकेला कटकबाबूके बिछौने के पास धरना दिये बैठा रहा। थोड़ी देर वह चुप रहा। वातावरण शांत हुआ देखकर, अकात साधकर, कटकबाबू के बिलकुल कानों में बोलने लगा—

“कटकबाबू, आज की यह मिस पीजरे में अितने अधिक मुक्त रूप से बोलने की आखीर की रात है। कल यह आगबोट काले पानी पर लग जायगी। हम सब लोग उस भयंकर जेल की कोठरियों में से तनहायियों के भीतर बंद कर दिये जायेंगे। मुझे पहले पहल अत्यंत सख्त पहरे में रखा जायगा, अत्यंत कठिन दुःसाध्य मसक्कत करने को दी जायगी। जुल्म किया जायगा। पर तुम शीघ्र ही ‘बाबू’ हो जाओगे। तुम्हारे सबध ऑफिस के क्लार्क वगैरह से आयेंगे तब हम जैसे सख्त पहरे के कैदियोंपर उपकार करने के हजारों मौके आयेंगे। यदि तुम मुझे मिस पहले बरस में, जब भी तुम्हें मौका हाथ आयगा तब, जरा महलियतें दिला सको तो बाबूजी, मैं भी तुम्हारी कल्पना से बाहर

तुम्हारे लिये उपयोगी सिद्ध होऊगा । यह देखिये, पहला अंक वरम ही में वास्ते मुश्किलता से भरा है । वह गुजर गया कि मुझे वहाँ रीति के अनुमान और मेरे परिचय पैसा-वसीले की वजह से जेलसे बाहर छोड़ देगे । भीर ही में कैदियों का जमादार बनाया जाऊगा यह आप लिख लीजिये । और तब पहले उपकारों का बदला मैं सौगुना अधिक उपयोगी साबित होकर चुकाऊंगा । और—और कह क्या ? यदि तुम्हें मेरे शब्दों पर यकीन होता हो और मुझसे भाभीचारे का नाता मन-पूर्वक कायम करना चाहो तो—तो जब फिर एक दफा काले पानी के अधिकारियों की आँखों में घूल झोककर अस पीजरे में से एक पक्की बाहर निकलेगा तब बाबूजी, तुम्हें भी तुम्हारी यह आजन्म कैदकी असह्य वेड़ी तुम्हारे पैरों में से अचानक टूटकर गिर गयी है, ऐसा दिखायी देगा—अर्थात् वह टूट जाय ऐसी तुम्हारी मनीषा हो तो । ”

“ मनीषा ? भिय्याजी, मेरा तो सकल्प है—केवल बिच्छा ही नहीं । पर मार्ग क्या है ? साधन क्या है ? तुम्हारा यह कहना अितमीनान-वस्त्र है, यह मैं कैसे समझू ? तुम काले पानी में पहले कैसे भाग कर आये थे इसकी सही सही माहिगत यदि तुम तसल्ली-वस्त्र स्वरूपमें मुझे कह सुनाओ तो मैं तुम-पर विश्वास कर सकता हूँ । ”

“ अच्छा कटकवावू, तुमको वह सब बात मैं सधि मिलते ही सच सब कहूंगा । देखो, भाभी भाभी का नाता जितना आपने घरमें प्यारा लगाता है अतना ही जो नाता तो काले पानी में प्यारा समजा जाता है, वह ‘चलानी’ यह है । अकही चलान में जो आते हैं वे सारे दडित अक दूसरे के ‘चलानी’ इस नाते से बबु-बबु हो जाते हैं । यह अक नवीन गोत्र ही बन जाना है वहाँ । अपना भी वही नाता जुड़ गया है । तुम मेरे चलानी हो,—मेरे भाभी हा । कटकवावू, तुम मुझपर यकीन करो या न करो, पर मैंने तुम्हें अपना वचन दे दिया । तुम मेरे भाभी हो—चलानी हो । मैं तुम्हारे प्राणों के लिये प्राण दे दूंगा । करूंगा तो तुम्हारा भला करूंगा । विश्वासघात तो कभी भी नहीं करूंगा ।

डाकू तो हम हैं यह सही है पर हमारे में अक खामियत है, वह यह कि, हम जितने दुष्ट हो सकते हैं, मन में आया तो अतने ही मुष्ट भी हो सकते हैं । तुम मेरे साथ निष्कपट वधुत्व का नाता जोड़ कर तो देखो ।

अपकार किया तो, अस्मादृश हिस्सा पशु भी कभी कभी अपकारकर्ता को विसारते नहीं, अपद्रवते नहीं, परत्युपकारे बिना नहीं रहते।—जैसे उस अंडोक्लीज को वह सिंह। ”

“रफिअुद्दीन” पहरेदार जल्दी जल्दी में चिल्लाया, ‘भूठ जावो ! पहरा बदलने के लिये जमादार आता है ! जा अपनी जगह ! हमारे पहरे की वारी समाप्त हुई ! ”

रफिअुद्दीन तत्काल उठा। “कैदियों को आपस में बातचीत की सख्त ममानियत है ! अपने परिचय का पहरेदार होने के कारण यह जम सका ! अब कल सवेरे काले पानी को यह अगिननाव लगेगी ! अब यही सलाम !—भुलना नहीं जो कुछ बात अभी हुई उस को ! आज से कटक, तुम मेरे भाभी हो ! आप चाहे मुझे कुछ भी समजो ! ”

अतना कटक से गडबडी में बोल कर रफिअुद्दीन अपनी जगह वापिस लौट गया।

सवेरे ही जिघर तिघर गडबड अड़ी “आया ! कालापानी आया ! ”

असके साथ ही कठोर, वरूर, अलटे कलेजे के आजन्म दडितो के हृदय में भी धस्स होगया ! धडकी घुस गयी ! “आया ! काला पानी आया ! ! ”

अन दडितो के हृदयो की भाति ही, मानो असके भी हृदय को धक्के बैठ रहे हो, उस प्रकार की वह किमाकार अगिनवोट भी धक्केपर धक्के खाती हुयी धडधड, धडपड करती बदर गाहमे प्रविष्ट हुयी और उसका बवा भोकार फैला कर भोऽ ऽ भो ऽऽ भूकने लगा !

—आया ! काला पानी आया ! !

जंग में आज भी कुछ भूभाग ऐसे हैं कि, जिन का भूगोल तो अपलव्य है, पर इतिहास नहीं। काला पानी जिसे आज कहते हैं, उस अदमान के द्वीपपुंज का भी अन्ही भूभागों में अंतर्भाव करना चाहिये।

जिस काल में हिंदूराष्ट्र ने अपने स्वतंत्र के पैरों में सिंधु-वध की बेड़ी स्वयमेव नहीं ठोक ली थी, विधर्मियों के साथ ही नहीं, स्ववर्मीय हिंदुओं के अंदर भी विजातीय के साथ खाने या पीने में जात ही जाती है, धर्म ही डूबना है, ऐसे वाष्कल धर्म-भोलेपन की वजह से हिंदुस्तान के बाहर जाने से विधर्मी, विदेशी, विजातीयों के साथ अन्नोदक व्यवहार होकर अपनी जात नष्ट होगी ही, यह भ्रामक भीति हिंदूराष्ट्र के पेट में उत्पन्न हुयी नहीं थी, और उसके योग से तीनों वाजुओं के समुद्रपर ही नहीं बल्कि चौथी वाजू की भौमिक सीमा पर भी 'अटक' की धार्मिक चौकियाँ बैठ गयी और कोयी भी हिंदू देश में बाहर जिस काल से जानेही न लगा, उस साधारणतः ओसवी सन की नौवीं दसवीं सदी के काल से पूर्व हिंदूराष्ट्र के त्रिविक्रमशील चरण, जिस सिंधु-वध की बेड़ी में जकड़े हुये न होने के कारण पूर्व पश्चिम दक्षिण समुद्रों और महासागरों को लाघकर, राजकीय, धार्मिक, सामाजिक, दिग्विजय करते हुये अन्तःकाल के ज्ञात जग में अपने हिंदुओं के महासाम्राज्य निनादित करते चल रहे थे। परदेशगमन उस काल में विलकुल भी निषिद्ध नहीं होने की वजहसे, परदेश-गमन-निषेध की अवस्था उस कालमें किसी को भी स्मृत न हो जाने की वजह से, हिंदू रणतरियों (War ships) के परचडनौ-साधन दिग्दिगत में अप्रतिहतरूप से मचार किया करते थे। जिस को परकीयोंद्वारा लिये और पढाये गये आज के हमारे भारत के भ्रष्ट भूगोल में 'अरब सागर' ऐसे मानहानिकारक नामसे पुकारा जाता है, उस हमारे पुरातन 'पश्चिम समुद्र' में से होकर अंक वाजू को और जिसे हमारे आज के कूप मडूको ने 'काला पानी' अर्थात् समुद्रगमनभीरुता घोनक नाम दिया है, उस, अन्तः अदमान द्वीपोंवाले पूर्वसमुद्र में से हो कर कनिष्ठ पक्ष में, चंद्रगुप्त मौर्य के

अर्थात् बीसवी सन से तीनचार सौ बरस पहले के विलकुल ऐतिहासिक काल से लेकर हिंदू राष्ट्र की शतावधि वणिग्नौका और रणनौका दूर दूरके विदेशों को अव्याहत रूपसे जाया आया करती थी। हिंदू राष्ट्र के लिये यह सागर एक सड़क बनी हुयी थी।

अस पूर्व समुद्र में से मगध, आधर, पाड्य, चेर, चौल प्रभृति हिंदू राज्यों ने बड़ेबड़े दिग्जयिष्णु नौ साधन (बड़े) भेजकर सयाम, जावा, बोर्नियो से फिलिपाबिन्सपर्यंत हिंदू उपनिवेश, राज्य, धर्म और संस्कृति स्थापी। हिंदुचीन (अंडोचायना) और फिलिपाबिन्स में हिंदुराज्य स्थापित थे, ऐतद्विषयक निर्विवाद ताम्रपट शिलालेखादि प्रमाण परकीय अनुसन्धाताओं ने आज प्रकाश में लाये हैं। बौद्ध हिंदुओं के ही नहीं बल्कि वैदिक हिंदुओं के ये वषत्रियवर्गीय राज्य, भारतीय प्रांत नगरों के वहाँ स्थापित हुअे उपनिवेशों के व नगरों को दिये हुअे नाम, शिव, विष्णु, बुद्ध प्रभृति देवताओं के देवालय वेद, मनुस्मृति प्रभृति शतावधि संस्कृत ग्रंथों के ग्रंथालय, हिंदु वाणिज्य, कला, संस्कृति अित्यादिक, सयाम, जावा, ब्रह्मदेश, हिंदुचीन, बाली से फिलिपाबिन्स तक तो सदियों तक पूर्ण विकसित अवस्था में थे—यह निर्मल इतिहास है।

पर, अस इतिहास में अदमान द्वीपपुंज सदृश छोटे मोटे द्वीपों के नामनिर्देश भी आजतक हाथ न लगे, इसवात पर अस कालके प्राचीनत्व के कारण अेव इतिहास विरलता के कारण बहुत ज्यादा अचरज करने की जरूरत नहीं है।

तोभी, अडमान से अपने भारतीयों के विद्यमान स ध का निर्देश करनेवाला प्रथम चिन्ह है असका नाम। जावा यह नाम जैसे अस देश के आकारपर से यवद्वीप अैसा रखा गया, तद्वत् 'अडमान' यह नाम भी अस की अडाकृति पर ही से भारतीयों न रखा होगा, 'अैसा जबतक असका खडन करनेवाला प्रमाण आगे चलकर मिल न जाये तब तक समझने में कोअी आपत्ति नहीं है। अससे आगे के द्वीपों पर भारतीयों के प्रत्यक्ष जाने और उन टापुओं को जीतने का निर्विवाद ऐतिहासिक प्रमाण अर्थात् पाड्य राजाओं की शिलालेखीय प्रशस्ति उपलब्ध है। अस एक प्रशस्ति पर से यह सिद्ध होता है कि, पाड्यों का एक प्रवल सेनापति बीसवी सन की दसवी सदी के आसपास अस समुद्रपर दिग्विजय करने के लिये बड़ी बड़ी रणतरियों का एक प्रवल

नौसावन (बेडा) लेकर निकला था। परतीरवर्ती आज के पेगू पर अुसवे जल सैन्यने चढाबी करके अुस देश को जीत लिया। वापिस आते समय अुम भारतीय हिंदू सैन्य ने अडमानादिक टापुओ पर स्वामित्व स्थापकर अुन्हे पाड्य साम्राज्य मे मिला लिया। अिस स्पष्ट अुल्लेख पर से अिन द्वीप-पुजो के अितिहास की सिर्फ पहली पक्ति ही लिखी जा सकती है।

पर वह पक्ति भी लिखते लिखते अपूर्ण ही रह जाती है। भारतीय सैन्य वहाँ गया था, यह भले ही निश्चित हो जाय, तथापि वह हिंदू सैन्य अथवा अुस हिंदू राजा का कोई अधिकारी अथवा नागरिक वहाँ रहा या नहीं, अिस का पता अभी तक लगा नहीं है। हम जब अडमान मे थे तब अेक दफा अेक विध्वसनीय अग्रेज अधिकारी ने हमें बताया था कि अडमान मे खुदाबी करते समय किसी अेक जगह राजप्रासादके अवशेष मिलते हैं। पर आगे चलकर अुसका क्या हुआ, यह आज तक भी हमें कुछ समझ नहीं पडा। तादृश अेक आध अुत्खननीय खोज का पता लगे या न लगे तथापि यह बात निश्चित है कि अडमान मे बाहर के लोगो का अपनिवेश गत तीन हजार बरसो के अति-हामिक काल में तो टिककर नहीं रहा।

पाड्य राजा की अपरिनिदिष्ट प्राचीन प्रशस्ति को अेक ओर रख दें तो अडमान का अस्फुटसा अुल्लेख अर्वाचीन काल के मार्कोपोलो, निकोलो, यूरोपियन तथा कुछ अरबी प्रवासियो के प्रवासवृत्तो में मिलता है। पर वह अिस टापूपर आकर वास्तव्य करने का नहीं बल्कि अिस के बारे में सुनी गयी बातो का है, अुमके अस्तित्व का, केवल भौगोलिक।

बाहर के लोगो के सबबमे अुन बाहर के लोगो के अितिहास में अडमान का अितिहास जैसे मिलता नहीं, अुनी तरह अुनके खुदके लोगो में भी अितिहास अेक अक्पर मे भी नहीं मिलता यह कहना अनावश्यक है। क्यो कि अडमान मे अुन के अपने लोग है तथापि अक्परज्ञान अुन्हे बिलकुल भी नहीं है।

और परपरागत दतकथात्मक अितिहास के विषय में पूछेंगे तो, अुम अडमान के मूलनिवासियो के दात यद्यपि अत्यंत बलौत्कट और तीव्र है, तथापि अुन्हे कथा किस चिडियाका नाम है, पता नहीं। कथा की कल्पना तक अुनलोगों में नहीं है। क्योकि जहाँ स्मृति रहती है, वहाँ कथा की समा-वना होती है। पर अडमान के मूलनिवासियो की स्मृति शक्ति अद्यापि अिनती

अपक्व अवस्थामें है कि अुन्हे २-४ वरस पहले की बातें भी याद नहीं रहती । जिसे हम याद कहते हैं, वह अुन्हे रहती ही नहीं । परिचय भी वे बहुत जल्दी भूल जाते हैं । तब जातीय सुसगत साधक स्मृति और परंपरा की प्राचीन कथाओं अुन्हे कहाँ रहेगी ? प्राणियों के झुंडों को किंवा वानरों के समूह को जितनी परंपरा और सामाजिक स्मृति होती है, अुससे कुछ ही अंशों में अधिक अुनकी सामाजिक स्मृति विकसित दिखायी देती है । तन्मूलतः दंतकथात्मक भी इतिहास अडमान के निवासियों का नहीं है ।

मिल कर क्या ? जग के अन्य राष्ट्रों के वाङ्मय में अेक अपर्युल्लिखित पांड्य राजाओं की प्रशस्ति को छोड़कर अडमान के विषय में ऐतिहासिक अुल्लेख नहीं है । यूरोपियन और अरबी प्रवासियों का मध्यकालीन अुल्लेख केवल भूगोलविषयक, अडमान सबधी इतिहास कहनेवाला नहीं है । और अडमानी जाति विलकुल जंगली, आदिम, अविकसित मानव । अुनकी स्वतः की लिखी हुयी कथाओं तो रहे, जातीय पूर्व वृत्तों की दंत कथाओं तक नहीं है । जिसको भूगोल है, इतिहास नहीं, ऐसा अडमान अेक अजस्र भूभाग है । अुसका सारा इतिहास कहे तो अेक पंक्ति ! — पांड्य राजा की प्रशस्ति में की ।

अडमान का इतिहास न भी हो तो भी मनुष्यसमाज मात्र है । इतना ही नहीं, अुसका जो मूल का मनुष्यसमाज आज अडमान में है, वह ऐतिहासिक गणना की भाषा में तो सर्वथा अव्यक्त अनादि है । क्यों कि वहाँ आज जो मूल की जंगली, आदिम मनुष्यों की जातियाँ निवास करती हैं, अुनके अस्तित्व का आरंभ ही नहीं मिलता । अत्यंत प्राचीनतम काल से लेकर, क्वचित् मर्कट का मनुष्य होता आया तब से लेकर वे जैसी की तैसी आज भी लगभग जहाँ थी वही, बहुतांश में जैसी थी अुसी अवस्थामें निवास करती हैं ।

मर्कट से मनुष्य का निर्माण होने लगा तब प्रथम पूछें झड़ने लग कर सिर्फ मर्कटास्थि ही बची रहने लगी । मर्कटास्थि यह नाम यद्यपि हम लोग भी अपनी अुस जगह की मेरुदंड की अेक अस्थि को देते हैं, तथापि वह अस्थि अब मूल की अपेक्षा सर्वथा सपाट हो गयी है । पर अुधर विलकुल अडमान में नहो तोभी अुस द्वीप-पुंज के आजू बाजू के भू-भागों में आज भी अैसे मनुष्य कभी कभी दीख पड़ते हैं, जिन की मर्कटास्थि,

डेढ दो मिंच ऊँची और आगे आयी हुयी रहती है । हम लोग जब अडमान में थे, तब ऐसा एक जंगली आदमी वहाँ के डॉक्टरने हमें औषधालय में आया हुआ दिखाया था । उसकी मर्कटास्थि-पूछ की वह हड्डी किसी तरह आगे आयी हुओ, जिसकी वजह से कुर्सी के पृष्ठभाग को टेककर सीधा बैठा न जा सके, बिस तरह लवायी हुयी थी । उसके पास ही पूछ के वालो के गुच्छे का स्नायु खुतना लटकता हुआ नही था । वह लुप्त हो चुका था । उसकी ठोडी और गाल भी मर्कट (वदर) से बहुतसी बातों में मिलते जुलते थे । उस की चालीस पचास शब्दों की क्यों न हो, एक भाषा थी । यह भाषा जातिगत मर्कट मनुष्यों की 'ओराग ओटाग' 'गुरिल्ला' की रहती है । बिन ओरागओटाग, वानर मर्कटों की भी एक भाषा है, उसके बहुत से शब्द कुछ परवासी प्राणि-शास्त्रज्ञों ने गिनने का यत्न किया है । पर हमने बिस जिस पुच्छास्थियुक्त मनुष्य को देखा था, उसे मानव भाषाओं में अतर्भूत होने वाली भाषा आनी मनुष्यवाणी थी । यह मुख्य फरक दिखायी दिया ।

यह अपवादात्मक प्राणी हमने बतलाया है, पर अडमान में बिलबुल तज्जन्य अनादि काल से निवास करनी हुयी आने वाली एक 'जावरा' नाम की जात है, जो लागूलास्थिविहीन है । उस जाति के आदमी साधारणतः चार माडेचार फूट ऊँचाई के, वर्ण कालाकलूटा, बाल सडे और कडे, छोटे और गुच्छों में झुलझे हुए बलयाकृति होते हैं दाढी मूछे तो पुरुषों की भी नदारद । वे सारे सर्वथा भुल्लिग । मनुष्यप्राणी 'सुधारते सुधारते' अपने यहाँ, आज के यात्रिक युग में जिस अवस्थातक पहुँच गया है, वह अपनी सुधारणा और वह अपना यत्र युग ही अपने लोगों के जिस एक संप्रदाय को मनुष्यजाति के लिये एक दुर्वर घाप मालूम पडता है, सादे रहने सहन के यत्रयुगविद्वेषी पथ के मुँहसे भी लगर वहने लग जाय, अतिना सादा रहन सहन बिस 'जावरा' जाति में अनादि काल से लेकर आजतक चलता चला आया है । कपडे पहनने का मोह अन्हें कभी होता ही नहीं । नगापन यदि माधुत्व की निशानी है तो, जावरा लोग अपने यहाँ के साधुओं की अपेक्षा भी बडेचढे साधु हैं । अपने यहाँ के साधुओंको कमर में एक पचा लपेटन का कमअजकम लगीटी तो पहनने का मोह होता ही है । पर बिस जावरा जाति में पुरुष तो क्या-स्त्रियाँ तक कमर में एक अगुस्तभर कपडे का चीथडा नहीं

वावती । और हम अल्लिग रहकर कोभी शतकृत्य कर रहे हैं, ऐसी भावना भी उन लोगो में नहीं है । क्यों कि वस्त्रो की कल्पना का स्पर्श तक उन को नहीं हुआ है । उनकी 'सादगी' अितनी है कि, बड़ी बड़ी मिलो का 'शाप' तो क्या 'चर्खा' और 'तकली' तक का शाप भी अुन्हे नहीं लगा है । शान शौकत के व्यसन की वजह से मनुष्य अधोगति को प्राप्त हो रहा है, अिस विवचना के कारण जिन्हे अन्न भी मीठा नहीं लगता है, अून अपने यहाँ के 'सादगी' के अभिमानियो को यह सुनकर आनद ही होगा कि, ये 'जावरा' लोग शानशौकत से सर्वथा अलिप्त है । अुनकी औरतो मे यदि कोभी तरुणी बहुत ही विलासलोलुप निकली तो किसी पेड के कुछ पत्ते लेकर अपनी कमर के सामने लटका लेगी । और कोभी पुरुष बहुत ही बनने ठननेवाला निकला तो अुसकी सारी शानशौकत रगदार लाल-लाल मिट्टी के पट्टे शरीरपर खींचने मे ही समाजी हुअी और सतुष्टी हुअी रहती है । यत्रयुग को अधोगति मानने वालो की भाषा में ही बोले तो ये जावरा लोग बहुत ही प्रगतिशील है । यत्र-युग के प्रलोभन से वे सर्वथा अलिप्त है । अुन लोगो को मोटर और रेलगाडी की तो बात दूर, बैलगाडी और गाडी तक का ज्ञान नहीं है । अुन्हे कुर्सी नहीं मालूम, दिया सलाजी नहीं मालूम, जूता नहीं मालूम, बगला नहीं मालूम, खेती नहीं मालूम, जिलेवी नहीं मालूम, अगूर नहीं मालूम, मक्खन नहीं मालूम, बाजरा नहीं मालूम, तब 'भिशी वाटर' की तो बातही दूर है । मनुष्यजाति पर मनुष्य के असमाधान का, कलह का, कृत्रिम जीवन का सकट जिस अेक ही कारण से टूट पडा है, अैसा 'सादगी' के अपने यहाँ के अध्वर्यु समझते है, अुस 'सुधारणा' के नाम ही से नहीं, बल्कि अिच्छा से भी ये जावरा अलिप्त और अकलकित हैं ।

पर अतअेव 'सादगीसे', 'यत्रयुग के शापसे मुक्त होने से', निर्गर्ग की ओर वापिस फिरने से, मनुष्यो मे निरपवाद समाधान विराजन लगगा, अैसा समझकर जो 'Back to Nature' वादी लोग कहते है, अुसके अनुसार अिन जावरा लोगो के जीवन मे वह समाधान विद्यमान है क्या ? बिलकुल नहीं । खेती नहीं हल नहीं, बैको मे नोट नहीं, बगला नहीं, पर जो किसी अेक सषन अरण्यातर्वर्ती गर्तमे की जगह किंवा मास का टुकडा तात्कालिक अग्राधिकार से अेक जावरा का होगा,

असपर दूसरेकी नजर जाते ही, या नजर न पड़े बिसबुद्धि से, अुनको जो चिंता करनी पडती है, निपटारा करना पडता है और प्रमग पडने पर जूझ देनी पडती है, वह अुतनी ही अुन्कट और भयकर होती है, जितनी कि किसी कैसर की, जार की अथवा लेनिन की। तुम्हे हमें खेतीके जितने कष्ट अेव चिंता होती है अुससे भी अधिक चिंता, वन्यफल अथवा मृगया सपादन में, और वह मिलेगी या नही अिस विवचना में, प्रत्यह प्रात काल के समय, जावराकोभी करनी पडती है। सूअरो के पीछे तीर लेकर फिरते समय किंवा मछलियाँ पकडते समय कष्ट सहन करने पडते हैं। डरके मारे जान लेकर भागना पडता है, बीमारीमें कराहना पडता है, विपैली जगली मच्छरमक्खियो के डसते ही विलखना पडता है, मत्सर से जलना भुनना पडता है, आपस में गाली गलौज मारपीट, टोलियो की लडाओ, यह मारा हुआ मच्छ मेरा है या तेरा,—अिस पृजी वादी प्रश्न पर, यह मोने की खान मेरी है या तेरी, यह राज्य मेरा है या तेरा—अिन बातों के लिये जिस तरह हम लोग मरते दम तक लडते हैं, अुमी तरह जावराओ को भी अेक दूसरे के साथ मरते दम तक जूझना पडता है। केवल सादगी से, 'यत्रयुग का गाप' छूट जाने पर ही यदि शांति अेव समाधान विराज मकता होता तो ये जावरा लोग जीवन्मुक्त ही समझे गये होते। क्यो कि वे लगभग बदरों जितने ही 'सादगी' के अुपासक हैं, 'निसर्ग' के अनुकूल जीवन विताते हैं, पर असतोष, असमाधान, जीवन कलह अित्यादि का स्तर अेव प्रकार भले ही भिन्न हो, किंतु अुनकी तीव्रता और अपरिहार्यता अुन जावराओ के 'नैर्मागिक' युगम भी हम लोगो के यत्रयुग से कुछ भी कम नही दिखाओ देती। अुलटे, अुनके जीवन का विकास बदर के जीवन से जो बहुत ज्यादा हुआ हुआ नही है, अुमका कारण यह सादा बदरों का रहन सहन ही है, यह भी स्पष्ट ही है।

अडमान में अुपर्युल्लिखित जावरा जाति यह अेक अुस में भी विलुल आदिम, जगली, मुघरे हुअे आज के हमारे प्रकार के परकीय लोगो से भय में और द्वेष में दूर रहने की अिच्छा करने वाली है, तो भी अडमानवासी मूल लोगो की अन्य अनेक जातियाँ अुन जावराओ में रीतिनीति, रहनसहन, शरीररचना अित्यादि बारे में भिन्न प्रकार की है। और अपनी अपनी जगह कुछ मुघरी हुओ भी हैं। अुनके पार्यक्य और साम्य का गहन अध्ययन किये

हुये अके अंग्रेज समाजशास्त्रज्ञने अुनके विषयमे जो जानकारी दी है, अुसकी साधारण रूपरेखा अपन अिस कथानक के साथ सुसगत मात्रा मे नीचे दे रहे है—

अडमान मे जो दस बारह तत्रस्थ मूल लोगो की जातियाँ है, अुनके कुछ नाम—‘ कारि, कोरा, टबो, बी, बलवा, जावरा, जुवमी, कोल ’ अित्यादि प्रकार के है । अतिम ‘कोल’ यह नाम ध्यान देने योग्य है । क्यो कि अपने यहाँ के वन्य अथवा पहाडी ‘कोळी’ लोगो से वह नाम और अुन कोलो का जगली चरित्र तुलनाहँ प्रतीत होता है । अिस जाति के सघ, कोमी सघन जगल मे, कोमी अँचे पहाडो मे तथा कोमी समुद्रतट वर्ती प्रदेश में रहते चले आये है, तस्मात् अुनकी चालचलन, भाव-भावना, रगरूप वगैरह भी अुपरिनिर्दिष्ट परिस्थिति भेद से और क्वचित् वश भेद से भिन्न-भिन्न है । तन्मूलत अुनके अेक साथ वर्णन मे जो कुछ विसगति नजर आयेगी अुसका स्पष्टीकरण वाचको को कर लेना सम्भव हो जायगा ।

जावरा प्रभृति जातियाँ अत्यन्त क्रूर होती है । पहले, तूफानो की वजह से कितने ही परकीय जलयान अिस टापू से टकरा कर टूट फूट जाते या फस जाते थे । अुनपर के नि सहाय लोगो पर टूट पडकर अुनको ये जावरा प्रभृति अडमानी लोग अत्यन्त क्रूरता से कत्ल किया करते थे । आज भी अुनके परिचय के तत्रस्थ जाति से बाहर की किसी भी परकीय किंवा अडमानीय जाति के आदमी नजर आतेही ये जगली लोग अुनके अूपर तीक्ष्ण बाणो का प्रहार करना शुरू कर देते है । किंवा अकेले दुकेले को पकड कर जान से मार डालते है । कभी कभी किसी को जीवदान मिला तो अुसका भाग्य अद्भुत है, अैसा ही समझना चाहिये । जावराओ द्वारा जान से मारे गये व्यक्तियो के शवो पर पत्थरो के ढेर रक्खे जाते है । अुनके द्वारा जगल मे मारे गये प्राणियो की खबर पक्षी अुनके पक्षवालो को जा कर दे आते है अैसी अेक धारणा अुन लोगो मे प्रचलित है । क्योकि वे पशुपक्षियो को मनुष्यो से बहुत अधिक भिन्न नहीं समझते है ।

अिन लोगो मे स्त्री-पुरुषो के सवध में रीति-नीति विभिन्न प्रकारकी रहती है । स्त्री पुरुषो के काम बहुधा बँटे रहते है । स्त्रीका स्थान पुरुष की अपेक्षा अधोवर्ती समझा जाता है । बूढी औरतो के साथ सम्मान से व्यवहर्ते

है । शादी से पहले स्त्रियाँ पुरुषों के साथ बहुत ही अधिक आत्मीयता प्रदर्शित करती हैं । अविवाहित स्त्रियों के लिये लैंगिक निर्वन्ध बहुत कुछ नहीं रहते । किन्हीं जातियों में वे अपना वर अपने आप चुन लेती हैं । किन्हीं में माँवाप ने शादी पक्की की कि वह पक्की होगी ऐसा मानते हैं । यहाँ बहुपत्नीत्व भी अधिक नहीं है और बहुपतीत्व भी नहीं है । कुछ जातियों में पुरुष अपनी अपेक्षा तरुण दूसरों की विवाहित स्त्रियों के साथ बहुत करके नहीं बोलते । उसी तरह अपनी पत्नी की बहिन को वे छूते भी नहीं हैं । लड़को लड़कियों के नाम भी भिन्न प्रकार के हो ऐसा रिवाज बहुतांश जातियों में नहीं है । माँही नाम रखती हैं । गर्भिणी होने के चिन्ह नजर आते ही गर्भका नाम रख दिया जाता है । पर किन्हीं जातियों में लड़कियों के अमरमें आनेपर अने लोगों के लिये निश्चित किये गये फूलों में से जो फूल उनके अमर में आने के समय फूल रहे हो अन्ही में किसी एक फूलका नाम रखा जाता है । यह अने जगहों लोगों की ललितप्रवृत्ति हमारे नागर लोगों की लड़कियों का नाम दगड़ी, घोड़ी, भिमी वगैरे रखने की अरसिक प्रवृत्ति से अधिक सुभग नहीं क्या ? पुरुषों की शादियाँ २५ वरम की अमर के बाद तथा लड़कियों की अठारह के बाद बहुधा होती हैं ।

अन्हे लड़के बहुत पसंद हैं । पर कुछ जातियों में लड़के सात आठ वरम के हुअे कि अपने माँवापके साथ अकेले नहीं रहते वे अपना अलग आयुक्रम बनाते हैं । आयुक्रम सब का अकेही और मपा हुआ होता है । भवष्यके लिये दिनभर शिकार करना और रात को नींद आनेतक नाचना । नाचने के समारम्भ में स्त्री-पुरुष अल्लिग, अकेले ।

अने लोगों में पुरुष कुछ अच्छे मालूम पड़ते हैं । स्त्रियाँ तो अक्कदम बध्यड । स्त्रियों का कटि पृष्ठनिम्न भाग तो अत्यंत ही बेडोल और ढगैर के मानसे बहुत ही स्थूल रहता है । अन्के सौंदर्य में और वृद्धि करन की ही वृद्धि में कदाचित् अने स्त्रियों के बाल निकाल कर अन्की खोपडियाँ त्रिलकुल चिकनी चुपड़ी बनायी हुयी होती हैं । असे अडमानीय सौंदर्यसृष्टि के लिये तरुणस्त्री अविव केशहीन चिकनी चुपड़ी खोपडियों में ही अधिक सुरेख शोभित होती है, ऐसा लगता सा प्रतीत होता है । अपने कवियों को मुदरी के ओठ त्रिफल के सदृश हैं, अनी अपमा जैसे भाती है, वैसे ही अने लोगों में यदि कोई

कवि हो तो असे वहाँ की सुदरियो की खोपडियाँ छीले हुअे नारियल की तरह लोभनीय प्रतीत होती हैं ऐसी अपमा सहज ही सूझती और रुचती होगी । क्यों कि, छिला हुआ नारियल, नारियल के वृक्षों के सुभिक्षवाले असे अडमानीय अरण्य के असे नैसर्गिक नागरिकों का अत्यंत प्रिय पदार्थ है ।

असे लोगो की अक्ल छुटपन में तेज होती है । पर असे की वृद्धि शीघ्र ही कुठित हो जाती है । स्मरणशक्ति तो और भी कम अर्थात् बौद्धिक दूर दृष्टि असेमें कतभी नहीं, ऐसा कहना मौजू होगा । आगे और पीछे देखकर व्यवहार करनेवाला ही मनुष्य है, ऐसी अेक मनुष्यत्व की व्याख्या है । असेके ये अदमानी अपवाद हैं । असे चालू क्षण में काम, क्रोध, लोभ प्रभृति विकारों की अूर्मि आयेगी—असेके अनुसार ही वे व्यवहार करेंगे । पिछले दस बरसों का गेप या अगले दस बरसों की योजना अित्यादि अिन लोगो में नहीं है । कषुधा, तृष्णा, राग, द्वेष अित्यादि की असी वक्त तृप्ति होगयी, तो वह प्रश्न वही का वही मिट जाता है । शत्रु का तथा अपराधी का बदला भी वे असी अूर्मि में हो सका तो लेंगे । कुछ काल बीत जाने के पश्चात् वह विपक्षीय मनुष्य यदि फिर असेमें आया तो असेके बारे का गुस्सा, असेका अपराध तथा बदले का निश्चय अित्यादि सब वाते वे लोग बहुधा भूल जाते हैं, वह मनुष्य असेमें फिर मिल जाता है । अर्थात् स्मृति ऐसी टटपूजी होती है, ऐसा जो असे के बारे में कहते हैं वह अपनी स्मृतिशक्ति के और बौद्धिक दूर दृष्टि के प्रदीर्घ कालीन टिकाअूपने से तुलना करके ही कहा जा सकता है । क्यों कि, असे जातियों को भी कुछ स्मृति और दूरदृष्टि होनी ही चाहिये । जातित, जन्मजात और व्यक्तिश अर्जित स्मृति और दूरदृष्टि बदरों के झुड में भी रहती है । तब ये लोग तो भले ही आदिम हो—मनुष्य ठहरे ।

असेकी भाषा विलकुल गिनेचुने शब्दों की, जो कि प्रत्यह विलकुल शारीरिक और प्राथमिक भावनाओं, आवश्यकताओं को व्यक्त करनेवाले होते हैं, होती है । असेमें भी वे अपूर्णही होते हैं । क्यों कि, असेकी भाषा में अेक मुख्य शब्द बोल दिया कि असेका वाक्य बनाने का काम असेके हावभाव ही पूरा कर देते हैं । हाथ के सकेत, गर्दन, आँखें, अिनके अभिनय से वे शब्दों की अपेक्षा अधिक आपस में बातचीत करते हैं । कोअी अतिथि किसीसे,

मिला, तो वे पहले अेक दूसरे की ओर टक लगाकर देखते रहना—अिस पहला शिष्टाचार समझते हैं । अर्थात्, अेक दूसरे को पहचानने में जो खतरा होता है, अुनकी हीन स्मृति के कारण और परकीयो के कपट के कारण अुन्हें महन करना पडता है, अुस जातीय अनुभव के कारण ही ठीक ढंग से परम्व लेने में पहले किसी से भी न बोलने की यह प्रथा पडी होगी । और तब खास का खखारकर आगत व्यक्ति से बोलना शुरू करना यह दूसरा शिष्टाचार । प्रत्येक जाति की अेक स्वतंत्र अुपभाषा होती है । साधारणत बीस मीलके पश्चात् यह अुपभाषा बदल जाती है ।

कोअी मर जाये तो अुसके मवधी मृत कठ से रोते हैं । छोटा बच्चा मर जाय तो मा-बाप के झोपडे ही में गाड देते हैं । अन्य कोअी, विशेषत बडा आदमी मर जाय तो अुसकी गठडी बाधकर पहले पेडकी खोखल में व्यवस्थित रूपसे रखदी जाती है, अुस जगह के अतराफ बेंत के पत्तों की माला अे बाधी जाती है । अुस जगह की ओर तीनअेक महीनेतक कोअी नहीं जाता । अिस स्मगान की जगह को अलग रखा जाता है । जबतक यह सूतक चालू रहता है, तब तक वे लोग अपना नाच बढ रखते हैं तथा सिर में भूरी मिट्टी मलते हैं । कुछ महीनों के बाद मृत व्यक्ति की हड्डियाँ ढोकर अुनके दुबडे कर ढालते हैं । और अुसके बाद अुनके नाना प्रकार के आभूषण बनाये जात हैं और अुन्हे मृत व्यक्ति की यादगार के तौर पर पहना जाता है । रोग हो जाय तो अिन हड्डियों के आभूषणों के स्पर्श में वह ठीक हो जाता है, अैसी भी धारणा अिन लोगों में प्रचलित है । पर अिन सब हड्डियों में मृत व्यक्ति की खोपडी का मान विशेष रहता है । अुस खोपडी की अन्य हड्डियों के माप गूथी हुआ माला बनाकर अुसे गर्दन के अूपर में पीठ पर लटकाये रखते हैं । और अुम खोपडी के अुपयोग का अधिकार, विधवा, विधूर, किंवा नजदीकी रिश्तेदार ही को रहता है ।

मरने के बाद भूत हो जाना है, अैसा कुछ जानियों का विश्वास है, कुछ की समझ है कि अडमान में अुनके परिचय के जो भी प्राणी फिरते नजर आते हैं, वे सब अुन्हीं के पूर्वज वैसा रूप धारण कर के फिरते हैं । अपने भूत की कल्पना, अपनी छाया की अपेक्षा भी समुद्र में पडनेवाली अपनी परछाअी के अूपर में ही पहले पहल आअी होगी । क्या कि परछाअी को वे लोग भूत

समझते हैं। और वे मरजाने के बाद दूसरी जगह रहने के लिये चले जाते हैं, ऐसा वे मानते हैं।

बिन लोगो में धार्मिक दृष्टि का कर्मकांड विलकुल नहीं है, कहे तो कोभी बुरा न होगा। शादी, मौत, वगैरह के मौकोपर निर्धारित रीतिया, व्यावहारिक प्रथाएं होती हैं। पर धार्मिक स्वरूप में, किसी देवदेवता की प्रार्थना अथवा पूजा, अथवा मंत्रतंत्र-किवहुना, धार्मिक पुरोहित तक बिन लोगो में नहीं होता। परंतु उनमें से कितनो ही में ब्रह्मज्ञान विलकुल नहीं है, ऐसा कह कर कोभी उन्हें हीन दृष्टिमें न देखे, क्योंकि हमारी विलकुल श्रीस्वरदत्त पुस्तको में बतायी गयी धार्मिक बातों तथा ब्रह्मज्ञान की बातों से हार न माननेवाला थोडासा ब्रह्मज्ञान और कुरान-पुराण उन लोगो में भी है। अुदाहरणार्थ, पुलगा नामक देवतने इस जगत् का निर्माण किया, मरने के बाद जिस जग में भूत निवासार्थ जाते हैं, उस अद्भुत जग को एक जगद्व्याल नारियल के वृक्षने संभाल कर रखा हुआ है, जैसे शेषके मस्तक पर पृथ्वी। पुलगा आजकल अभी अद्भुत और अँचे जगत्में रहता है। पर पहले वह अडमान के सब से अँचे पर्वत 'सैंडलपीक' के णिखरपर रहा करता था। कैलासपर यदि हमारे महादेव शकर रहते हैं, मूसा पैगबर का महादेव अल्लाह यदि 'सीनाय' पर्वत पर आया करता था, आय् सी अेस् के महादेव गवर्नर जनरल यदि शिमला पर जाते हैं, तो अडमान का महादेव पुलगा भी 'सैंडलपीक' पर क्यों न रहे? मृत्युके बाद अडमानीय जीव एक वायुरूपी पुलके ऊपर से पातालमें जाता है, जैसे क्रिश्चियन-मुस्लिम जीव कब्र में जग के अंतिम न्यायनिर्णय के दिन तक गह देखता रहता है। यह अडमानी महादेव पुलगा मुमलमानी महादेव की तरह विलकुल अकेला नहीं है। उसकी हमारे हिंदु महादेव की तरह एक पत्नी है और क्रिश्चियन महादेव का जैसे जीजस पुत्र है तथैव एक पुत्र भी है। अतना ही नहीं, अपने अिघर के किमी भी महादेव के भाग्य में जो सुख नहीं है वह खुद की अनेक कन्याओं के भी कुटुंब में रहने का भाग्य उसके हिस्से में आया हुआ है।

इस पुलगा से व्यनिरिक्त अदृश्य शक्तियों में समुद्र का भूत 'जुरुवीन' और अरण्य का भूत 'अेरम चांग' बहुत घूर्त हैं। पुलगा को भी वे नहीं मानते, जैसे शैतान अल्लाह की भी सहसा पर्वाह नहीं करता। पर उनमें भी अितनी

बात अच्छी है कि, यह जगल का धूर्त भूत 'अेरम चौग' आग से डरता है। मिस धारणा के कारण ये अडमानी जगली जाति के लोग आग को सदा अपने साथ रखते हैं, बुझने नहीं देते, जैसे पारसी और हम हिंदू अखड अग्नि-होत्र का पालन करते हैं ।।

भुत्तर छव के सदृश, बिलकुल हिम-मय अेव शरीर जमा डालनेवाले ठंडे प्रदेश में मनुष्य जब रहा करता था, तब उसे अूष्णता के लिये अग्नि का अखड सान्निध्य अत्यंत आवश्यक और अतअेव प्रिय रहेगा ही। पर भुत्त काल में दिया सलाबी सदृश आग सुलगाने का आसान साधन मनुष्य का अूपलब्ध न होने के कारण और लकड़ीपर लकड़ी से किंवा पत्थर पर पत्थर से रगड पैदा करके अत्यंत प्रयत्न से अग्नि पैदा करनी पडती थी अत अेक बार आग के पैदा होने के बाद उसे सहसा बुझने न देकर निरंतर जागरित अवस्थामें बनाये रखना भुत्तके लिये अपरिहार्य था। अुसी वजह से भुत्तर छववर्ती आयों में अग्नि का मूल्य बहुत बढा होगा, अुसी को पहले सदाचारका और पश्चात् धार्मिक कर्तव्य का रूप प्राप्त होकर हमारी अग्निहोत्रसंस्था बनी। हमने अग्निहोत्र संस्था के बारे में जो अूपपत्ति लगायी है, उसे अडमानवर्ती वन्य अनाय जाति के मिस अुपरिनिर्दिष्ट अग्निपूजा से बहुत अधिका पुष्टि प्राप्त होती है। क्यो कि, अूस घनदाट (सघन) जगल में बडे बडे विपैले मच्छरो के और मक्खियों के समूह, सर्प, जोक वगैरह की बहुमस्या, यत्र तत्र दलदल, बहुधा अवकार, अैसे जगल के ये भूत डरेगे तो आग ही से डरेगे।

आग अुपजगह अत्यंत अुपयुक्त। पर जगली लोगो में आजभी आग सुलगाना दियासलाबी के अभाव में अत्यंत प्रयामपूर्ण है, पत्थर रगड कर चिनगारी पैदा करना पडती है, अत अेकवार सुलगी हुअी आग को, आग सुलगाने के लिये, जहाँ तक हो सके सुलगी हुअी ही रखना आवश्यक हो जाता है। अत जगल के भूत 'अेरम चौगा' को सर्वदा डरा कर दूर रखने के लिये सदोदित प्रदीप्त अग्निहोत्र आवश्यक होगया।

पर तयापि भुत्तकी दैवीकरण की कल्पनाशक्ति अूस अग्नि के सदृश जाज्वल्य न होने के कारण आग का अग्निदेव नहीं हुआ। अग्निधानिका का अग्निहोत्र नहीं हुआ। हमारी आग देनेवाली लकड़ियों की भी अरणी देवता बन जाती है और जैसे मत्सपूर्वक अूस देवता का आह्वान किया जाता है, अूस

तरह अुनके पत्थरो से “चिनगारी दे, प्रसन्न हो ” कह कर प्रार्थना नहीं करनी पडती । अुनका अग्नि मनौती नहीं मागता, सिर्फ सुलगता है । गुस्से में नहीं आता, सिर्फ बुझजाता है । वह अग्नि जगल के भूतो को भगानेवाला होनेपर भी अेक पदार्थ, सिर्फ अेक वस्तु है,— देव बना हुआ नहीं है ।

और कुलजमा अुनकी जातियो मे से बहुत सी जातियो में किसी भी देव की प्रार्थना, अथवा मत्तरतत्तर अथवा परलोक में अुपयोगी हो अिस बुद्धि से की जानेवाली पूजा का सर्वथा अभाव है । स्वर्ग—नरक की कल्पना अपने कुरानपुराणबाअिबिलीय ठाठ की विलकुल भी नहीं । पुलगा की भी सकट-निवारक पूजाप्रार्थना नहीं है ।

अैसे ये अडमानीय जगली नागरिक अिस अेक दो जिलो के बराबर के टापूमें कुल मिलाकर तीन चार हजार भी होंगे या नहीं कहा नहीं जा सकता । वे भी बिखरे हुअे । बाकी सब घनदाट जगल ही जगल ! अितना घनाऔर औपनिवेशिक मनुष्य के चरण स्पर्श से हीन कि, अुसकी निश्चित देखभाल भी गन तीस अेक बरसपर्यंत नहीं हुअी थी ! बडे बडे वृक्ष ! अुनके अुपर तथा भीतर सघन, कटकाकीर्ण, अुलझी हुअी लताअें, अुपर से बारहो महीने—कमसे कम नौ महीने तो—निरतर पडने वाली बरसात ! कभी मूसलाधार तो कभी—रिम क्षिम ! अत वृक्षो के तले सदा अिकट्ठा हुआ पानी ही पानी, अुसमें वृष लतावल्लरियो के अुस अयाह सघन अरण्य के पत्र-पर्णों का वर्षानुवर्ष निरतर ढेर का ढेर जमा हुआ हुआ । वर्षानुवर्ष अुसी तरह गलता सडता हुआ । यत्तर तत्तर अुस दलदल मे भिनभिनाने वाली लक्षावधी मक्खियाँ, बडे बडे दश, जोके, भयकर सर्प, जहरीले जीवजतु वगैरह का बाजार गरम ! वृक्षो से वृष, बेल से बेल, काटे से काटा, झाडियो से झाडियाँ जमा होकर अुलझकर अैसी अेक जगली छत मीलो तक फैली हुअी कि, अुपर सूर्य कितना भी प्रचड प्रकाश फैला क्यो न रहा हो, पर अुसकी किरणो का स्पर्श अुस छत से नीचे तलपर, अुस दल दल को सुखा सके अितना युगानुयुग न हो सके ! प्रकाश भी पूरी तरह युगानुयुग पड न सके ! जगलो का फैलाव सिर्फ मैदान ही पर नहीं बल्कि, बीच बीचमें जो पहाड मौजूद हैं, अुनपर भी वह जगल अुसी तरह घडकर बैठा हुआ ! अुसकी वजह से ये टापू दूर से भले ही हरे भरे और मोहक नजर आवे, किंतु मनुष्यो के निवास के लिये पूर्वकाल ही से सर्वथा प्रतिकूल साबित हुअे । जो

कुछ अग्रेज साहसी उपनिवेश स्थापना का प्रयत्न करते रहे अन्हे भी बिलकुल अठारहवीं सदी के साधनों से भी वहाँ पर अपना पैर जमाये रखना असंभव होगया। दो बार स्थापित किये हुअे अन्के उपनिवेशों को तत्रस्थ लक्ष्पावधि विषैले जीव जंतुओंने और दलदल के रोगाणुओं ने कल्ल कर डाला। अेक अेक आदमी रोगों ने खा डाला, उपनिवेश अुठ गये।

अिस अडमान बेट (टापू) में जो परकीय लोग, अपघात के कारण जलयानों के तूफानों में फँस जाने की वजह से या उपनिवेश स्थापित करने की भावनासे आते थे, अुनके अूपर जावरा प्रभृति तत्रवर्ती आरण्यक मनुष्य विषैले तीरों की मार करके, पकड कर फाड डालते थे, यह तो सत्य ही है, पर तादृश तत्रत्य मानवीय प्रतिकार में अिस टापूका 'स्वातन्त्र्य' अनादि काल से अीसा की सतरहवीं सदी तक जो अवाधित रहा, वह कदापि न रहा होता। अिस टापूका स्वातन्त्र्य जो अिस तरह अवाधित रहा, वह तत्रस्थ अुन मय, जोक और अुस दलदल की अमन्य जहरीली मक्खियों, मच्छरों और रोगाणुओं सदृश कट्टर देशभक्तों की, लक्ष्पावधि मूढ मैनिकोंकी 'स्वातन्त्र्य भक्ति' ही से। परकीयों की चढावियों के अिन्हीं रोगाणुओं ने परखचे अुडादिये।

तत्रस्थ अीदृश सघन जंगलों में जावराओं की अपेक्षा जोकों की सेनाओं का पराक्रमही बढाचढा है। आज भी जंगलों को काटने के लिये जब कैदियों की टोली वहाँ जाती है, तब अुन्हे ये जोके रक्तववाळ (खूनमें लथपथ), करके पीछे हटा देती हैं। वृक्षों पर अुन जोकों की तहे चिपटी होती हैं नीचे जमा हुअी पत्र-पणों की तहों पर तहे, मचित दलदल में अुन जोकों के लक्ष्पावधि देशभक्त सैनिक छिपकर बैठे होते हैं। मनुष्य अदर घुसे अुनकी वू आभी कि, वृक्षों पर से वे जोके पटापट अुनके शरीर पर सिरपर कूदन लगती हैं, पैर के नीचे से भरभर जाँघोंक चढ जाती हैं। हाथों से पकड कर अुन्हे निकाल फेंके तो भी अुनपर वम नहीं चल्ता। दश ही दश। अुन्हीं में जहरीले मच्छर, कंटिली झाडियाँ, और भयानक साप-सुर्गलियाँ। अेक अेक फूट लंबी! सौ सौ पैरोंवाली घनी तहों की तहे। अुन्हे 'वान खजूरे' कहते हैं, अुधर के कंटो —। दश अिनता विषैला कि शरीर भयकर सूजता है आग मनस्वी (बहुत ज्यादाह), कभी कभी तो वह अग लूला ही पड जाता है, अवचित् प्राणघात भी होता है। अुस प्रमाण में साप वहाँ थोडे होते हैं—

पर अेक अैसी जाति के साप वहाँ होते हैं, जिनके डसते ही आदमी खत्म । विच्छू पहले नही थे अैसा कहते हैं, पर आजकल वे भी नजर आने लगे हैं । अैसे अुन जगलो में कैदियों में के कटको के कटक और वरूर से क्रूर कैदी भी, जब टोलियों की टोलियाँ बलपूर्वक धकेलते हुअे, जगल काटने के लिये ले जायी जाती हैं, तब चल् चल् काप अुठते हैं । मारते हुअे पीटते हुअे ले जाये गये अैसे सौ आदमी दिन भर अुस भयकर अरण्य में वह सख्त मशक्कत करके शामको जब लौटते हैं, तब किन्ही किन्ही के शरीरपर चिपटी हुअी जोको के सूक्ष्म दशो में से बारीक धाराअे बहती रहती हैं, पैरो में काटे, शरीरपर मच्छरो के दशो की सूज, दलदली कीचड से लथपथ, अुन कैदियों की टोलियाँ बिलकुल रुअैसे को आयी हुअी होती हैं, अिसमें अचरज की कौन बात ? तिसपर अुस जगल में मधुमक्खियों और भूडो का राज्य आजतक अबाधित । अुसमें यदि कोअी मनुष्य अिस तरह अुपद्रव पैदा करे तो वे मधुमक्खियाँ और वे भूड अुन परकीय शत्रुओ पर टूटकर अपने अिस स्वदेशके और स्वराज्य के सरक्षणार्थ अुन देशभक्त जोको, कानखजूरो और रोगाणुओ द्वारा चलाये गये 'स्वातथ्ययुद्ध'में भाग लिये वगैर छोडते नही । ।

अैसी भी परिस्थितियों में टक्कर देकर, अिन जावराओ, जोको और रोगाणुओ के प्रतिकार का मुकाबिला करके, मलेरिया प्रभृति रोगो ने दो मर्तवा अुपनिवेशो के अुपनिवेश खत्म कर डाले तो भी प्रयत्न करके आज अग्रेजोने अुस अदमान बेट में अतन्त अेक चिरस्थायी और बढता जानेवाला अुपनिवेश स्थापित करने में यशस्विता प्राप्त की है । अुभी को ' काला पानी ' कहते हैं ।

आजन्म कैदियों की वह 'महाराजा' नामकी अग्निवोट अुसी अदमान पर आकर लगते ही जिसके तिसके हृदय में घडकी बैठने लगती है,

" आया ! काला पानी आया ! "



‘ मैयारी मरा ! मरा !! ’ : : : १२

काला पानी आतेही अगिननौकामे मे कैदियों को पैरो में ठाकी हुई वेडियों के साथ जो अतारते हैं, वह सीधा बस वेट (टापू) पर समुद्र के अतार के नजदीक ही बांधे गये टोलेवाज (बड़े), विस्तीर्ण, और मुख्य कारागृह की तरफ सशस्त्र पुलिस वालों के पहरे में ले जाते हैं ।

अिसी कारागृह का कक्ष-कारागार (Cellular Jail) ऐसा नाम है । बस ‘सेल्युलरजेल’ नामका, कैदियों की बोली में ‘मिल्वर जेल ।’ (रुपहरा कैदखाना) ऐसा मोहक रूपांतर हुआ है । अवशिक्षित कैदी, जो अिन जन्म कैदियों में रहते हैं, अुन्हे “ मिल्वर जेलमें ले जाओ ” ये पुलिसवालों के मुह से निकले हुअे शब्द सुनते ही बड़ा अचरज होता है । रुपहरे कैदखाने में जाना है ? कुछ देवालियों के खम्भों और कलशों पर रुपहरे-पत्रे जैसे मढे हुअे होते हैं, अुसी तरह चादों से जिमका कममें कम दर्शनी भाग तो मढा हुआ है, अैसे अेकाच विलक्षण अेव भव्य कारागृह का दृश्य अुनकी आखों के सामने वह “ मिल्वर जेल ” नाम सुनते ही अकम्मात् खड़ा हो जात है । काले पानी में सभी कुछ विचित्र । कौन कहे कि जिस तरह पानी काला नहीं अुसी तरह तत्रस्थ कारागृह भी रुपहरा नहीं । ।

कम अज कम ‘ मिल्वर जेल । ’ यह नाम कैदियों और पुलिसवालों के मुँहमें बार बार सुन कर कटक को तो आकर्षक प्रतीत हुआ । असल में, भयकर और अटल पापियों को अुनके भीषण पापों का कठोर दंड देने के लिये जिस वेट में ले जाकर छोडते हैं, अुसका नाम जिस तरह शरीरपर काटा खड़ा करने योग्य ‘ कालापानी ’ अैसा रखाहुआ है, अुसी तरह कारागार का नाम भी ‘ नरक भूगृह ’ किंवा ‘ जुलम घर ’ जिसे सुनकर दिल दहल जाय, होना चाहिये था, पर वह नाम तो कम अज कम किनना मोहक । ‘ मिल्वर जेल । ’ रुपहरा कैदखाना । ।

सिर्फ नाम ही मोहक नहीं—वह देखो, यहीं से वह भव्य बदीगृह दीप्त रहा है, वह देखो । वही वह मिल्वर जेल । आ ? वह ? विलकुल मिल्वर

(रुपहरा) नही तो भी कितना आकर्षक है वह भवन ? रेखाओद्वारा ठीकठीक अंकित, साफ सुथरा, कोरा, नया ताजा, लबा, प्रशस्त, समानांतर, सुरेख खिडकियाँही खिडकियाँ, अेक मजिल पर प्रमाणबद्ध तीन मजिले, ठीक मध्य में अँचा, बाँधा हुआ अेक टॉवर । कटक को वषणभर को लगा, मेरा मजाक तो ये पुलिसवाले नही कर रहे ? मुझे काले पानी पर का मुख्य बदी भवन कह कर कोभी आरोग्य भवन तो दिखा नही रहे है न श्रीमान् लोगो के लिये बाधा हुआ ? यह सिल्वर जेल है या सैनिटोरियम ?

अदर पैर डालने पर भी बदीगृह कहते ही सादे भारतीय कैदखाने का भी जो अेक अुदास, भयानक, अँधेरा, आतक प्रतीत हुआ करता है, वह यहाँ प्रतीत नही होता । प्रकाश और वायु भरपूर, रेखाओदार, और सुंदर, अेक जैसे कमरोवाली, तीन मजिले, पाँच छह पक्ष, मध्यस्थित टॉवर के अतराफ दूरतक व्यवस्थित रूप से फैली हुयी भिमारते, बडे बडे आगन बीचमें, वर्तुलाकार, चारो ओर सघन नारियल का जगल । अुस अदमान के घने जगलो में कभी कभी मुलायम मुलायम तीस तीस फूट लवे प्रचंड अजगर जैसे कुडली मारे सोये हुअे नजर आते है, अुसी तरह वह कारागार भी अेक अजगर ही हो मानो । अजगर ही की तरह कितना मोहक दीखने को ।

अुसमें प्रत्येक कैदी के लिये स्वतंत्र तनहायी, लोहे के सीखचो के दरवाजे बंद हैं जिस में, अैसी रखी रहती है । अिस किस्म की वे सातसौ साढे सात सौ तनहाभियाँ ही हैं । कोठरियाँ अुसमें हैं, अिसी लिये अुसका Cellular Jail कक्ष कारागार यह यथार्थ नाम रक्खा हुआ था ।

अुन हर अेक कोठरियो में बाहर से देखनेवाले की आखो को भरपूर प्रकाश दिखायी देता था । पर अुस प्रकाश की खासियत यह थी कि, अुस कोठरो में पैर डालने के बाद सीखचो के दरवाजो को अेकवार बाहर से ताला ठोककर बंद कर दिया कि बस, आँखा को कितना भी चुँधियाने वाला प्रकाश वयो न नजर आये, पर हृदयमें अेकदम अँधेरा फैल जाता है । दम घुटने लगता है । अुम प्रशस्त कोठरी की काल कोठरी बनजाती है ।

वैसी अेक अेक कोठरीमें, काले पानी के कैदियो के अुस चलान कोभी अेक अेक कैदी को अलग करके, बंद कर दिया गया । तीन चार दिन अुन अलग अलग कोठरियो में अकेले अकेले कैदी को बंद रखके, अुनकी सजाके

विवरण पत्रों पर से सारी जानकारी का निरीक्षण किया जाकर अपराधों के पूर्ववृत्त के अनुरोध से उनकी अलग अलग श्रेणियाँ बनायी गयीं। जो लोग तात्कालिक उत्प्रेषण में आकर अपराध कर बैठे और पहली ही मर्तवा दंडित हुये हैं, उन लोगों की सुधारणीय नाम की एक श्रेणी बनायी गयी। जो सचे हुये अपराधी थे, उनकी—दुस्सुधारणीयों की 'भयकर' नाम की दूसरी श्रेणी। जिस तरह अपराध शास्त्र (Criminology) के अनुसार दो श्रेणियाँ बनायी गयीं! कटक पहली श्रेणी में गया। अंग्रेजी-हिंदी शिक्षित होने की वजह से महीने दो महीने में ही लेख्यालय में बंदी लेखकों की जो श्रेणी होती है, उसमें थोड़ा बहुत लिखने का काम मिलकर कैदियों में वह 'बाबू' के नाम से प्रसिद्ध होगा यह स्पष्ट होगया। परंतु रफिअुद्दीन की सजा का वृत्तांत 'भयकर' श्रेणी के अंतर्भूत था। उसपर पांच बरसों तक उस कारागार में रखने का और मन्त पहरों में, जब तक व्यवहार ठीक नजर न आये तब तक, कड़ी मशकत करने का प्रतिवच डाला गया।

अदमान में आजकल भयकर और सचे हुये (Habitual) कैदी भेजे नहीं जाते हैं। तम्मान् तत्रस्थ कैदियों को बहुत सी सहूलियत आजकल मिलने लग गयी है। पर, तीस पैंतीस बरस पहले, भयकर और सचे हुये, अटल दंडिता को ही वहाँ भेजा जाता था, जिस कारण उनमें मशकत करवाने के लिये वैसे ही कड़े नियम, और उनकी दुष्टता को जीर्ण करने के लिये वैसे ही कड़ी मशकत व्यवहार में लायी जाती थी। उसके बगैर किसी भी ढीली टाली व्यवस्था से तादृश राक्षसी दंडितों को सीढ़ी राहपर लाना, और समाज के अर्थ हितकारक काम उनमें कराना, कम अज कम समाज को उनके स्वैर अस्तित्व में पहुँचनेवाली बाधा का निवारण करना, लगभग असाध्य ही ठहरता।

रफिअुद्दीन के सदृश अलटे कलेज के दंडित (Convicts) तादृश कड़ी व्यवस्था को भी बूल चटाकर कालेपानी पर से भी भाग जाते थे, देश को वापिस पहुँच जाते थे और समाज के ऊपर अघोरी अन्याचार करने में अपना नजर आने की वजह से रफिअुद्दीन के भाग जाने के पश्चात् के मध्यवर्ती काल में यह व्यवस्था और भी कटोर बनायी गयी थी। अने दुर्दमनीय वृत्तियों को भी मान देनेवाले, उनके साथ अवसर पड़नेपर उनकी अपेक्षा भी अधिक

कठोरता में व्यवहार करनेवाले, चतुर अधिकारी अुस कक्ष-कारागारमें अिस बीच निशुक्त किये गये थे । रफिअुद्दीन को अबके जब पुन कालेपानी भेजागया, तब अुसका सात्रिका अैसेही अेक सवाअी दहम जेलर के साथ पडनेवाला था ।

अपने पूर्व परिचय की व्यवस्था अेव अधिकारी बदले हुअे है, यह रफिअुद्दीन के ध्यान में तभी आगया । और अिन नये अधिकारियों की आख में भी ब्रूल झोकने के लिये जहाँ, जो कुछ अनुकूल बैठे वहा वह सब, अर्थात् चुगलियाँ, मनोवल, पैर पडना, बाहियात बकझक, गाली गलौज, गुडापन अक्खड पना, हास्ययुक्त मुखपूजन, अित्यादि प्रकार के व्यवहारके साधनों का अवलवन अुसने आरभ कर दिया ।

वह नया जेलर, भयकर और अधम अधम जितने भी नये कैदी आते, अुनके पूर्व वृत्तातो के सरकारी विवरणों पर में अुनके साथ किसप्रकार की नीति बरती जावे, यह सब मनमें स्थिर कर लिया करता था । और तब अुनकी प्रस्तुत कालिक मनोवृत्ति को जाचने के लिये अुनलोगों में अेक दो मर्तबा समवप मुलाकान लेता रहता था । जहाँ जरूरी हो वहाँ पहले अत्यंत मुक्त भाव से बोलने का अभिनय करता था, सौम्यपना दिखलाता था, और पश्चात् स्क्रू को जितना चाहिये अुतना मजबूत कसता चला जाता था । अुस प्रकार, अुस नये चलान के कैदियोंको भी अुसने जाच कर देखना धीरे धीरे शुरू किया । पाँच-छै दिनतक अुन्हे अकेली कोठरी में सडाते हुअे रखने के बाद अेक बदीगृहके मुख्य जमादार को साथ में लेकर वह जेलर रफिअुद्दीनकी कोठरीमें भी अचानक आ पहुँचा ।

जेलर साहब स्वत जिसकी तनहाअी (Solitary cell) के सामने बगैर बुलाये जाते है, अुस कैदी का महत्त्व अितर दुर्लक्षित कैदियों में अेकदम बढ जाता है । अुन नगण्य सामान्यों में वह अेक गण्य व्यक्ति है, अैसी अुस कैदी को भी अहकार की मात्रा का स्पर्श हो अुठताहै । वही अवस्था अुसकालमें रफिअुद्दीनकी भी हुअी । वह अितने सख्त पहरे में, तनहाअी में निरंतर सडता हुआ पडा था कि, यदि अेक चिडिया भी अुस से बात करने के लिये आअी होती तो वह अपना भाग्य समझता-तब, अब तो खुद 'साव' अुसके पास स्वेच्छा में आया हुआ था और आतेही पूछने लगा था,

“क्यों रफिबुद्दीन ! ठीक है न, तेरा ! कोभी शिकायत विकायत ?”

“सरकार ! आपही मा-चाप है अब हमारे !” रफिबुद्दीन विलकुल नम्रता का बुरका डालकर गिडगिडाने लगा । “मुझे आपकी मर्जी होतो फांसी पर चढ़ा दीजिये, पर जिस तनहाबी में जिस तरह अकेले को वद करके मत रखिये । एक शब्द तक बोलने की चोरी ! मैं किसी तरह अकेला जिस भयकर अकात में और कुछदिन रहा तो पागल हो जाबूगा पागल !”

“अकेला रहने से तू भूबगया है ?” जेलर हसा, “अितनाही है न, तेरे जिस तिलमिलाने का कारण ? अच्छा, जमादार, जिसे एक बीबी ला दो माय रहने के लिये ! हमारे भुम म्त्रियो के कैदखाने में जितनी चाहिये अतनी बीबियाँ हैं !”

जेलर मजाकिया है, यह देखतेही रफिबुद्दीन अकदम पिघल भुठा, भुसमें भी बीबी की बात ! उसका चेहरा तत्काल रगीन हो भुठा और वह बोला,

“साव, उसे स्त्रियो का बदीखाना क्यों कहते हैं आप ? बहुतेरे कैदी तो उसे बीबीघर कहते हैं, और हमारे में जो सच्चे रसिक हैं, वे तो उसे कहते हैं “चिडिया खाना” ! पर साव, उस चिडियाखाने की चिडियाको आप हम जैमों के हिम्से में भला कहा से आने देने लगे ? वह मामने बैठा है न, रस्सी कूटता हुआ, वह काला कुम्प कोयला ! वैसे पहाड़ी कौओ का ही आप देंगे वे चिडियाँ ! साव, सचमुच यह कैसा है भला, पयपयात सरकार का ? वह पहाड़ी कौआ—वह कटक—मेराही चलानी है, वह भी गलेकाटू, दडित, आजन्म काले पानी का अपराधी ! मैं भी वैसाही हूँ ! पर मुझे पाच वरसतक जिस कैदखाने में—जिस अकेली कोठड़ी में सड़ते हुअे पड़े रहने की सजा, और उसे तत्काल कोठड़ी से बाहर निकाल कर रस्सी कूटनेका हलवा काम दे दिया और कह दिया कि तुझे शीघ्रही बदिलेखक के कामपर नियुक्त करेगे ! भुमे लिखना-पढ़ना आता है तो मुझे भी तो कुछ आता है न साव ? जिस बाबूको लिखना आता है तो हमें भी लड़ना आता है ! पण्टन में या में सरकार ! मद हू मैं साव ! —पर हमें ‘भयकर’ कहकर जिस काले पानी में तनहाबी में सड़ने के लिये डाल देते हैं, और बाबूओ को, जिन पहाड़ी कौओ को, जिन मेपपाओ को “मुवारणीय” कहकर चुनकर अन्हें शादी की

अनुमति दे देते हैं । और उस चिड़िया घर की किसी भी चिड़िया को पालने के लिये ले जाकर दे देते हैं । यह बिल्कुल अन्याय का नियम नहीं है क्या । साव । हम सिपाही लोग, दरवाजेपर के शिकारी कुत्ते । प्राण-सकट में भी जो पोसेगा उसके लिये जान देने में न हिचकनेवाले । उसी को कोठड़ी में सड़ा कर मारनेकी अपेक्षा सरकार मुझे किसीभी लडाभी पर भेज दे, शत्रुओं की तोपों के मुखपर बाध देवे । सरकार के काम में मैं अपना सिर देने के लिये कभी हिचकिचाऊंगा नहीं देखलीजिये । ”

“ अरे वाह ! बिल्कुल ठीक मौके पर बतलाया तूने देख, यह । सरकार को अंक सिर चाहिये ही था इस वक्त । वे जरूरेंवाले हैं न ? मिस-कालेपानी के घने जंगल में रहनेवाले राक्षस ? आदमियों के सिर के अदर की खोपड़ी को निकालकर वे उसे तराशकर, घिसकर, उसमें रंगीत सीपियों को बिठाकर ऐसा अंक सुरेख शराबका प्याला तय्यार करके देते हैं, सुनाहैं कि यव् । वैसा अंक प्याला लडन के प्रदर्शन में रखना है सरकार को । अतः जरूरें वालों की ओर देता हूँ भेज तुझे । तेरा सिर अच्छा है, अतः लोगों को जैसी चाहिये वैसी खोपड़ी मुहय्या करने के लिये । ” साव जोर से हँसे ।

“ मेरा सिर ? अह ! उस सामने के पहाड़ी कौम का—अस कटक का सिर ही उस कामके लिये जगदह उपयोगी साबित होगा । सिरके काम में बाबू लोगही अधिक उपयुक्त होते हैं ।—लचकीला सिर होता है वह, तराशने और घिसने के लिये, वैसे जडाभू काम के लिये । ”

“ पर वह अस कटक का सिर ब्राह्मण का है—है न जमादार ! ब्राह्मण की खोपड़ी सुनते हैं, भरी हुयी होती है, मगज भरा होता है उसमें । हमें खोखली खोपड़ी चाहिये तेरी जैसी । हमें पुलिसवालों ने बतलाया है कि, अस कटक का खानदान बड़ा है । कुलशीलयुक्त और बुद्धिमान् समझा जाता है और उसका बाप सुनते हैं बड़ा भारी शास्त्री था । ”

“ हा ना, केवल शास्त्री ही नहीं, अस कटक का बाप बड़ा दानी और परोपकारी भी था साव । उसके बापने अपने पास की अपरपार सम्पत्ति अतमें अंक अनाथालय को धर्मार्थ दे डाली थी । ”

“ ह ? अमी कितनी संपत्ति थी उसके पास ? ” आश्चर्य से जमादार बीचमें ही पूछ बैठा ।

“तीन मरे मुर्दे लडके और अंक लडकी ।।” रफीअुद्दीन हसा । भोले जमादार की फजीहत होगयी बेचारे की । रफीअुद्दीन आगे कहने लगा—“बे मारे लडके असने अनायालय को दे डाले । अून भुक्खड लडको का बडा भायी यह कटक है—यहा बाबू बनना चाहता है । और वह वहिन कलकत्ते के मछली बाजार की बीबी बनके पान-पट्टीकी दुकान चलाती है साव । मैंने खुद असको देखी है, पान भी चवाया है असके दुकान का । किधर का कुल और किधर का शील । पोलिस को भिमने जो गपोड बाते बतायी वे अन्होने भी लिख मारी और क्या, अैसे भुक्खड आदमी को आप बाबू बनाते और हमारे सरीखे सरकारके विश्वास पलटनवाले मर्द गिपाहीओ को कुत्ते के मोतमे मरवाते है भिम कोठडीओ मे ।”

“परतु तुम काले पानी मे पीछे भागा हुआ बदीवान है । यह भूलो मत ।”

“सरकार ! मेरा अवषम्य अपराध है वह । पर पश्चात्ताप मे मेरा मन राख होगया है पहले ही । अस दुष्कृत्य मे मैंने क्या कमाया ? पहले मे भी मो गुनी अधिक यातनाओ मे मात्र आ गिरा पुन भिमी कोठडीमे ब्रेडियो से जकडे हुअे हाथो पैरोवाले बदियो मे आकर । अब अगर आपन मुझे बकेल भी दिया तो भी कालेपानी पर से वापिस जाभूंगा नही मै । जो काम दंगे मो करुंगा । जब आप कहेंगे तब यही अपना घर दार बनाभूंगा । पर यादी मात्र आप मेरी करवादे अ । यही अब मेरी मिट्टी पड़ेगी । तथापि अस अकेली कोठडी मे मुझे आप बाहर निकाले यही मर्ग आप मे विनति है ।”

“अच्छा, जमादार, कलमे भिम को तेल के कोल्हू का काम दा । अगर तू ठीक ढंग से पूरा पूरा काम करता रहा, तो छह महीनो के बाद तुझे हलका काम दूंगा । परदेख, अपनी यह बाहियान बकवास करने की ब्रतमी—जो अब तुझे छोड देनी होगी । किसी के साथ अवजाका अेक चकार गल्ल भी नहीं दोलना । और ध्यान मे रख, अगर फिर कैदखाने का नियम तन तोडा, मन्नी की, तो अेक अेक हड्डी तोडकर निवालूंगा । भाग कर जाने की कोशिश करनेवाले दंडित को अेकदम गोली मे अूडा डालने का नया अधिार

हमें अब दिया गया है । पहले की सरकारी दिलाबी के भरोसे पर पहले के फदे में पडने की कोशिश न करना । तेरा साबिका अब मुझसे है । तेरे पहले के भयकर अपराधों को अब मैं भूलता हूँ, पर समाज को आगे से अपद्रव न पहुँचाते हुअे कष्ट करके पेट भरेगा तो । जमादार, अिसे अिस अकेली कोठडी में से निकाल कर भेजो कोल्हपर और वहाँ कैदियों में हिलने मिलने देते जाओ दिनभर । रात को बंद करते जाओ यही । ”

अुम कक्क-कारागृह में प्रत्येक चाल (बैरक) के आगनमें अेक छपरी बाधी हुअी थी । अुसी में वह पैरकोल्ह का काम चला करता था । अेक बडे लकडी के कोल्ह से अेक जूअे जैसा बडा लकडी का डडा जोडकर प्रत्येक जूअे में दो आदमियों को जोता करते थे । कोल्ह में सरसो डालकर अुसमें से हरेक को शामतक ३० पौंड तेल निकालना पडता था । बैलों की जगह जोते गये वे आदमी अुस कोल्ह के अतराफ गरगर फिरते थे । अुनमें से अगर किसी ने कमी वेशी की तो अुन्हे बैलों की तरह हाँकने के लिये वॉर्डर नियुक्त किये रहते थे । अुस छपरी में अैमें कोल्हुओं की कताङ्की कतार मौजूद थी और अुन सब पर निगरानी रखने के लिये अेक ताडेल-दडितो में से ही चढाया हुआ अेक दुय्यम जमादार-नियुक्त किया हुआ था । अिस कामके कष्ट अितने अधिक रहते थे, कि पक्के दडितमी अुस छपरीमें पैर रखतेही रुआँसे को आजाते थे । अुनम से कुछ अकडवाज बदमाश बहुत ही टालमटोल करने लगे तो शामको तेल पूरा निकालने तक अुन्हे अुसी तरह जोत कर रखा जाता था और वह भी कभी कभी तो रातके सात आठ बजे तक । साझका खाना भी रात को तेल पूरा करनेतक दिया नहीं जाता था । अैसी मस्ती थी, अिमी लिये वे पक्के डाकू, हत्यारे, गुडे वगैरे मधे हुअे दडित थोडे बहुत नियन्त्रणमें रहते थे, अुनके हाथों में कुछ काम करवा लेना सम्भव हो पाता था । जो लोग दुर्वल अथवा बदीगृहमें तो जो सद्वर्तनपूर्वक रहने लगते थे अुन्हे अुस कष्टके काम में सहसा जोनने नहीं थे । कमअजकम जोता न जाय अैसा पग्घात (प्रथा) तो था ही ।

अिस कोल्ह के काम का रफिअुद्दीन को पहले ही से परिचय था और अिमलिये, वह काम न करके भी किमतगृह पूरा किया जा सकता है, ये अतस्थ खूबियाँ अुमें मालूम थी । निमपर वह कोल्ह ही नहीं, बल्कि अिस वक्त

असपर देखरेख करने के लिये नियुक्त वह दंडितों में से ही अंक दुय्यम अधिकारी (Convict petty officer), वह ताडेल, वहभी रफिअुद्दीन के पहले के कालेपानी के वास्तव्यकाल का परिचित निकल आया । तम्मात्, जेलर ने जो कडी मे कडी मशक्कत ममझकर अमको दी थी, वही वह कोल्हू अमको सुगम से सुगम काम लगा । पहलेही दिन ताडेल के हाथमे अंक ' हरिद्रा-खड ' रफिअुद्दीन ने हाथ हिलाते समय चुपचाप पकडा दिया । तत्काल अमकी पुरानी दोस्ती ताजी हो गयी और रफीअुद्दीन दिन भर पालथी मारकर गप गप लडाते हुअे पडा रहने लगा । अमकी जगह ताडेल ने अंक थप्पडवाअू दंडितको चोरीसे कामपर लगाया । शाम होने के अदर अदर रफिअुद्दीनके हिस्सेका तेल पूरी तरह से मापकर दिया जाने लगा । अिस तरह चार पाच दिन बीत गये ।

अिस दंडित ताडेल के हाथ के नीचे जो दंडित वॉर्डर थे, अमसे जोसेफ अमके बहुत अधिक भरोसे का हो गया था । क्योकि ताडेल को वह बडे बडे लोटे दही के भर भरकर चुराकर ला दिया करता था । कैदियों को अठवाडे (हफ्ते) मे दो दफा दही मिला करता था । वह बेट चुकनेके बाद अिस बैरक के कैदियों के आगे से सारा दही यह जोसेफ वॉर्डर डरा धमका कर निकाल कर लेजाया करता था और वह ताडेल को दे दिया करता था । और वह अम छपरी की आडमें बैठकर गटक जाया करता था । अिम जोसेफको जेवर और पैसे हजम करने के अिरादे से अपनी दोनो छोटी छोटी सालियो को भुलावे मँलाकर खाने के अिये घरपर लाकर अन्न में विष देकर मार डालने के घोर अपराध मे आजन्म काले पानी की सजा हुयी थी । दस बरस हो चुके थे । अिम किस्म की अम ताडेल की और अम जोसेफ वॉर्डरकी जोडी थी । अम बैरक के कोल्हूओ में जीते हुअे चालीस पचास कैदियों को ठोचते रहने का काम तथा जिमभी अुपायसे हो सके तेल पूरा पिमवा लेने की जवाबदारी इस जोडी पर थी । जो लोग पँने चटाते थे या अत्यंत दडम होकर भी ताडेल के दाम थे अुन्हे माफ तोर से बिठाये रखा जाता था और अम लोगो का काम-अमसे से जो सद्वर्तनी गो-स्वभाव, सहनशील होने थे अमकी ओर से मरने दस तक मशक्कत करा कर पूरा करवाया जाता था ।

ताडेल के सारे छधकर्मों में हस्तभार लगाने रहने की वजह से जोसेफ पर उसका विश्वास बैठ गया था, अतः वह जोसेफ से कुछभी छिपाकर रखता नहीं था और रखना आसानभी तो नहीं था। रफिअुद्दीनन जोसेफ को भी जरूरत के मुताबिक तमाखू और मौका पडने पर राखीके बराबर अफीमकी गोली भी देकर आत्मीय सा बना लिया था। परन्तु ताडेल को कितना भी प्रसन्न करे, वह अपने को बॉर्डर से ऊपर की पदवृद्धि प्रदान कर के अपना ताडेल-पद नहीं दे सकता—वह सिद्ध करने के लिये जेलर की ही कृपा प्राप्त करनी होगी यह जोसेफ भूला नहीं था। इस लिये जेलर की कृपा प्राप्त करने का यत्न जोसेफ निरंतर कर रहा था। और उसका साधन कैदखानों में बढ़ती का जो बहुधा अंक ही ‘तुरतदान महा कल्याण’ देनेवाला साधन हुआ करता है, वह—चुगली। इसके लिये, अपन छधी वर्तन का बहुत कुछ सबब जिसमें न आये, अपना नुकसान जिसमें बहुत कुछ न हो, ऐसी उसको कोल्हू की छपरी में के उस ताडेल के अनेक दुष्कृत्यों की चुगलियाँ यह जोसेफ किसी को भी पता न चले इस सफाई से मौका साधकर जेलर को चुपचाप कह आया करता था। ‘शठं शठय समाचरेत्’ के न्याय से शठों के राज्य में व्यवस्था रखना आवश्यक होने के कारण जेलर साहब भी ऐसे गुप्तचरों को हमेशा अपने हाथों में रखा करते थे। उनके द्वारा लानी गयी चुगलियों में से अनेक दुष्कृत्यों को अपरिहार्य समझकर हजम कर जाते थे। जो बिल्कुलही अवश्य्य अपराध होते थे, बुन्ही को वे स्वयं जाकर अचानक पकड़ते थे, पर इस सफाई के साथ कि जोसेफसरीखे चतुर गुप्तचरने ही वह चुगली की है, यह कैदियों के ध्यानमें सहसा न आवे, ये लोग गुप्तचर हैं, यह बाहर न फूटे। नहीं तो उन के समक्ष उनपर विश्वास करके कोभी भी किसी किस्मका दुष्कृत्य नहीं करेगा।

आठ दिनके बाद दो पहर को बारह बजे, लेख्यालयके सारे लेखक, गणक, घरे गये हुअे थे, उस समय जेलर असमयमें अकेलाही लेख्यालयमें आया। ‘सिपाही’ कहकर पुकारते ही एक पहरेपर का सिपाही अदरें आया। “जोसेफ बॉर्डर को बुलाव।” ऐसी जेलरकी आज्ञा होतेही सिपाही वदी-

गृहमें गया और जोसेफ को बूला कर जेलर के पास भिजवा दिया तथा स्वयं पहरेपर बाहर आकर खड़ा होगया।

“क्यो जोसेफ ? ” जेलर पूछने लगा, “कोल्हू का तेरी चाल की छपरी के अदर कैसा क्या चल रहा है काम ? वह नया दडित रफिअुद्दीन कोल्हूका अपने हिस्सेका तेल पूरापूरा पीस कर दे देता है क्या ? उसका किसीके साथ कुछ सूत-अूत जमता है क्या ? ”

“साव, उसका तेल वह पूरा पूरा माप कर देता है—”

“ह ? पहले दिन से पूरा काम करता है वैसा निठल्ला दडित भी ? सच बोल, हिचकिचा मत । ”

“साव ! तेल पूरा पूरा मापकर देता है वह, पर वह सब वह स्वतः नहीं पीसता । आपकी सवेरे के वक्तकी जेलमें फेरी लगाने के वक्ततक वह जैसे तैसे कोल्हू खींचता है, पर उसके बाद वह बैठा रहता है, और उसका काम कोओ दूसरा दिनभर कोल्हू चला कर पूरा कर देता है । तांडेल हो उसके बदले आदमी लगाता है । ”

“क्या ? ” जेलर सनप्ट हो उठा, “तूने यह बात मुझे अबतक न बताते हुअे दवाकर रखी थी ? तब मैंने तुझे यह सब देखने के लिये काहे, को रक्खा है ? ”

“माफ कीजिये साव ! पर भिमसे पहले, अन्य कुछ दडितों को विसी तरह बिठाये रखकर और बदले में आदमी लगाकर तांडेल काम करवा लेता है, भिस बात की सूचना गुप्तचुप तौरपर मैंने आपको दी थी, उस समय आपने उसे नजरअन्दाज कर दिया था, भिनी लिये भिस मर्तवा वही बात बताने के लिये मैं डर गया । ”

“किस बात को नजरअदाज करना है, और किस बात को नहीं वह सवाल मेरा है । वास्तवमें जो दुबल या सुधारणीय है, उन्हें अनुशासन में थोड़ी ढील दे भी दी तो भी कुछ बिगडता नहीं । काम पूरा होगया तो बस । पर यह रफिअुद्दीन अनेक अधमाधम अपराधों का अपराधी, तिसपर काले पानी से भागकर गया हुआ, उसके साथ किसी का भी सूत जमना ठीक नहीं । बता, तांडेल उसे क्यो बिठाकर रखता है ? वह क्या रफिअुद्दीन से बचता है ? ”

“सरकार, वह बात मुझे अभी पक्की तरह से मालूम नहीं है। नहीं तो वह गुप्त समाचार मैंने आपको पहले ही दे दिया होता। पर हो न हो रफिअुद्दीन ने तांडेल को पैसा चटाया होगा।”

“पैसा ? रफिअुद्दीन के पास ? उसकी तलाशी साझ-सवेरे कसकर स्वत जमादार लेता है न ? मेरा सम्म ह्वम है वैसा।”

“तलाशी कसकर लेता है जमादार। पर रफिअुद्दीन के पास पैसे हैं अवश्य, कही न कही छिपाये हुए। अन्यथा स्वत के पैसों से तांडेल उसके लिये तमाखू और अफीम चोरी छिपे काहे को मँगाता।”

“हा, उसीमें से कुछ तमाखू और अफीम तुझे भी वे लोग चटाने होंगे, तभी तूने उसको चुगली मेरे से नहीं की।”

“देव की शपथ साव ! मैंने छुआ नहीं तमाखूकी चुटकी को भी अनुकी। पर तांडेल को वह पैसा देता है, जिसका पक्का सबूत मिले वगैरे अगर मैं आपको सूचना देता तो आपही मुझे खोटा ठहराते—जिस लिये मैंने उस पर सिर्फ अपनी आख गड़ा रखी थी। तांडेल के पेट में घुसकर मैं उस बात का शीघ्र पूरा पता चलाअूंगा साव ! बहुधा कलही अनुका कुछ लेन देन होने वाला है फिर, ऐसी भाषा मैंने छपरी की आड में से सुनी है। साव, पर मुझे तांडेल का डर लगता है, मैं सिर्फ वार्डर हूँ। यदि मुझे आप, धनी-माहव, तांडेल कर देंगे न—”

“तो तू उस तांडेल से भी बढकर पैमेलाअू और दुर्जन निकलेगा। अच्छी बात है तू प्रमाणसहित रफिअुद्दीन से पैसे लेते हुए उस तांडेल को पकडवा दे, किंवा रफिअुद्दीन पैसे कहाँ रखता है, जिस बातही का पता चला दे, तब देखूंगा तेरी बढती की बात क्या है सो। जा, लग अपने काममें। पर ठहर, तुझे मैंने अबेले को बुला भेजा है, यह जान कर जिन कैदियों को तेरे चारे में शुबह पैदा हो जायगा, गुप्तचर है जिस बात का। अितनी बातके लिये मैं तुझे यह खुल्लम खुल्ला काम देता हूँ सो लेजा। तांडेल से कह कि, तीन चढाकर रवाना करने के अभी के अभी भरकर रखदे, मद्रास की नावपर चढाकर रवाना करने के हैं अेकदम। यह ले चिठ्ठी ! ह, जा ! अितनेही के वास्ते बुलाया था अैसा जाकर बोल।”

प्रायः कैदखानों में, दुपहरिया में वारह से दो बजे तक का समय सबसे ढ़ठकर ढ़िलाभी का रहता है। ऊपरके सारे अुत्तरदायी अधिकारी अपने-अपने घर गये होते हैं। अुस वजह से सिपाही क्या, और जेलके अधिकारी (Convict officer) क्या, अनुशासन की गाठ खोलकर पैर खुले छोड़ पसार कर बैठे रहते हैं। सर्वथा अपरिहार्य स्वरूप की व्यवस्था और कामही चलते रहते हैं।

अिस समय हमेशाकी तरह जेलर अपने अुस कक्प-कारागार के महा-द्वारपर विद्यमान बगले की खिडकी में खड़ा था। अुतने ही में जोसेफ वार्डर नीचे से अुसकी तरफ आता हुआ अुसे नजर आया। अुने जेलरने ऊपरही से बगलेपर चले आने की अनुज्ञा दी। जोसेफ को पहरेपर के सिपाहीने बगले में जाने दिया।

जाते ही जोसेफने बदगी करके कहा—“साव ! अभी के अभी अगर आप चले तो प्रमाण सहित ताडेल को पकड़ना सभव हो सकेगा। रफिअुद्दीन ने सोनेकी अेक गिनी ताडेल को दी है। वह अपने कुडते की नीचे की पट्टी में विद्यमान गुप्त जेबमें डाल कर ताडेल ने सीकर रखी है। रफिअुद्दीन के पास और दो गिनियां तो अुसके शरीरपर ही हैं। तमाखू और अफीम ताडेल ने अुसे लाकर दी है, वह भी सरमों के धैलेमें अिस वक्त के लिये ठूसकर रखकर वे दोनों छपरी के पीछे के हिस्से में आड लेकर निश्चित रूप से अुबते हुअे पड़े हैं। मैं कपड़े धोने के वहाने से बैरकमें से बाहर आया हूँ। जब देखा कि कहीं कोअी नहीं है, तो आपकी तरफ चला आया। पर मालिक ! मेरा नाम मात्र मत बताअियेगा। नहीं तो मेरा मिग ही फोड डालेंगे अुनमें से कुछ कैदी मुझे पकड़कर कहीं न कहीं। पर आप मात्र जन्दी जाअिये।”

“ठीक जा तू। ये सारे पकड़े गये तो तुझे बढती मिलेगी ! तू अपने काम पर अुस छपरी में जाकर बैठ जा चुपचाप।”

जोसेफ के जाने के बाद जेलर ने जमादार को अपने साथ ले लिया और हमेशा का नीचे का रास्ता छोड़कर ऊपर के टॉवर की तीसरे मजिल के घरे में आकर और सारी बैरकों के दरवाजे जो अुस टॉवर में गोल रूप में लगे

हुंम थे, अतमें से रफिअुद्दीन के रहने की बैरक का वह तीसरी मजिल का दरवाजा अंक के बाद दूसरा खोलता हुआ वह जेलर अचानक अुस छपरिया के आगन में नीचे जा अुतरा । किसी के देखने न देखने से पहलेही वह अुसके पीछे की आडमें चला आया, जोसेफ के कथनानुसार रफिअुद्दीन और ताडेल दोनों अूघते पडे हुंम हैं, और रफिअुद्दीन के कोलहूमें अंक दूसराही बेचारा फंदी—जिसे ताडेल ने डरा धमकाकर लगाया था वह— पैरका कोलहू अुसांसे को आया हुआ, पसीना पसीना होकर फिरा रहा है, अैसा दिखायी दिया ।

“ताडेल ! ” जेलर गरजा ।

तड् से दचक (धवरा) कर ताडेल अुठा, पैर लटपटा गये, मुह रोना सा हो गया, हाथ जोडकर खडा हुआ ।

“तेरे पास कोयी नियम विरुद्ध वस्तु है ?—नही ? अुस कुडते में क्या सी रक्खा है ?—कुछ नही ? जमादार, लो जिसकी तलाशी । अुस कुडते की वह नीचे की पट्टी फाडो । ”

जेलर अुस जमादार के साथ यह बोलही रहा था कि अुतने में रफिअुद्दीन अुलटे पैरो निकल कर अपने कोलहू की तरफ जाने लगा ।

“ठैरो ! अै बदीवान ! रफिअुद्दीन ! ठैरो ! पकडो अुसको । ”

दो तीन वार्डरो ने, जेलर की आवाज सुनी अन सुनी सी करके अुसी तरह निकल कर छपरी में जाने की कोशिश करनेवाले रफिअुद्दीन को रोका । वह खडा रहा, पर डरके मारे भीगी बिल्ली की तरह नही, बल्कि अंक आघ सरकस में के बिगडे हुंम बाघ की तरह—अुसकी सारी हिंस्रवृत्ति शरीर में धुफन आयी थी—आंखे दिखाते हुंम, अकडके साथ अुन रोकनेवाले वार्डरो के हाथो को बीच बीच में झटका देता हुआ ।

जमादार ने ताडेल का कुडता निकाल कर पट्टी फाड़ी, अंकदम खल्से अंक सोने की गिनी नीचे गिरपडी ।

“अिस रफिअुद्दीन की भी तलाशी लो ! ” जेलरने हुक्म दिया । जमादार सामने आया । जेलरकी आड में थोडासा जमादार आतेही, रफि-

अुद्दीनने अपनी पेटगोली में (कमर के पास के कमे हुअे कपडे की लपेट में) खोसी हुअी कोअी चीज कमर के पीछे हाथ लेजाकर चालाकी से निकाल ली। यह देखते ही जमादार चिल्लाया,

“साव ! साव ! अिसने पेटगोली के पैसे हाथमें लिये हैं, गिनियाँ है साव, अिस्के हाथमें ! अिस, अिम हाथमे ! पकड़िये, यह हाथ, यह ! ”

जमादार और वॉर्डर हाथ के साथ झगडही रहे थे कि, अुसी बीच, रफिअुद्दीन ने अेक गिरकी (चकफेरी) मारकर जेलर की तरफ पीठ होते ही हाथमे की वह चीज मुहमे डाल ली !

“मुहमे डाल ली गिनियाँ अिसने ! हा, हा, मालिक, विलकुल गिनियाँ ही ! मैंने देखी ! अब अिसके मुंहमे है ! ” जमादार और वॉर्डर प्रतिजा-पूर्वक चिल्लाये।

जेलर चिल्लाया, “मुंह खोल ! रफिअुद्दीन, खोल, मुंह खोल ! ”

अेक दो दफा जमादार के हाथ को झटका मारकर गर्दन नीचे अूपर करने के बाद रफिअुद्दीन स्पष्ट शब्दो मे ठमक कर बोला,

“क्या निष्कारण जुल्म यह साहब, हम बेचारो पर ढाये जा रहे हैं आप अिन झूठे नीच आदमियो की चुगलियाँ सुनकर ! यह देखिये, मुंह खोलता हूँ ! हैं क्या कुछ अदर ? बोलना भी मभव था क्या मेरे लिये यदि मुंहमें सोनेकी खान होती तो ! ”

मुंह खोलकर रफिअुद्दीन जमादार को पागल बनाने लगा, जेलर के सामने मुंह खोलकर दिखाने लगा। “जोअ अ्पर अृठा, पीछे मोड, यह जबडा ठीकमे खोल, वह खोल ! ” जेलरने जैसा कहा, वैसा रफिअुद्दीनने किया। पर मुंहमे कुछ न निकला !

“क्यौ, जमादार, किधर है अिसके मुंहमे गिनियाँ ? ” जेलरने पूछा।

शरमाया हुआसा जमादार थोडा हिचकिचाता हुआ, पर फिर वही कहने लगा,

“कुछ भी कहिये, साव ! अिमके मुह में कुछ न कुछ था जरूर ! ”

“कुछ न कुछ तो मेरे मुंहमें याही, हैभी—पर वह ‘कुछ’ था मेरे सोने की तीलियाँ जडे हुअे दात ! वे चमकने वक्त तुझ मरीखे भुक्खट को

सोने की तरह मालूम पड़े होंगे, और आज नहीं तो कल रे दुष्ट, तेरी नरडी (गलेकी नली) को वेही फोड़े बगैर नहीं रहेंगे । ”

रफिअुद्दीन निष्प्रतिरुद्ध अवस्थामें जमादार को गालियाँ देने लगा । यह दुर्जन बिगड़ मुठा है, ऐसा देखतेही जेलर गरजा,

“बेडियाँ ठोको अभी की अभी अिसके हाथों में ! और पकड़ कर रखो उसे यहाँ ! गर्दन की हिसड़फिसड़ कर रहा था; सभव है, निगल लिया हो उसने लोगो को समझने न देते हुअे कुछ । ”

रफिअुद्दीन के हाथ में बेडियाँ पहनाकर सिपाही उसे पकड़कर रखही रहे थे, अुतने में जेलर छपरी में गया और उस कोने के सरसो के थैले को खोलकर देखा, तो अदर अेक बड़ी पुलिया और अुसीमें अफीम की डिविया भी मिल गयी ।

जोसेफ का दिया हुआ गुप्त समाचार पूरी तौरपर सही था । दूर से जोसेफ यह सब अपरिचित की तरह देख रहा था । पर अितनी गडबडी में, मुख्य अपराधी रफिअुद्दीन को कैची में पकड़ने लायक कुछ भी मिल नहीं पाया था । तो भी हजारों में अेकाध कैदी अितना बेडर और कुकृत्यशील होता है कि पकड़े जाने की अपेक्षा चीज को निगल कर अविद्यमानवत् करने से बाज नहीं आता, अिसके दो तीन अनुभव जेलर को प्राप्त हो चुके थे । अुनका विचार करके उसने रफिअुद्दीन का पीछा करने की सोची । ताडेल को तत्कालार्थ पदच्युत करके उसपर उसने अभियोग लगाया और डॉक्टर को बुला कर रफिअुद्दीन को अुलटी की दवा पिलाने के लिये कहा ।

हथकडियाँ डालकर कोठी में लेजा कर, रफिअुद्दीन के सामने अुलटी की दवा रखते ही उसने वह प्याला दीवार पर पटारकर दे मारा । वह पूरी तरह से बवरा मुठा था । “जबर्दस्ती पिलाओ उसे ” जेलर गरजा । वॉर्डर, जमादार, सिपाही आगे बढ़े । खीचातानी करते हुअे, लात मुक्के खाते और मारते, रफिअुद्दीन अत में नीचे पड़ गया । उसके हाथ पैर कसकर दवाके मुँहमें नलकी घुसेड अूममें से अेकवार अुलटी की दवा उसके गले के नीचे अुतारही दी गयी । पहरा बिठा दिया गया । साझतक दो चार अुलटियाँ हुयी । पर अुनमें से बाहर कुछ भी नहीं पडा । जेलर भी थोडा सा सकुचाया । —

क्यों कि रफिजुद्दीन को पैसे निगलते हुअे उसने खुद नहीं देखा था। रफिजुद्दीन तो 'जमादार ने ही कुभाड किया है, ऐसा कहकर घडावड विल्कुल गलीज गलीज गालियाँ जमादार के नामपर दे रहा था। पर पहले बार की तलाशी लेनेवाले वॉडर भी 'उसने गिनियाँ निगली है निश्चित।' इस तरह शपथपूर्वक कहने लगे। डॉक्टर की समझ भी 'रेच दिया जाय, कोभी चिंता नहीं, अल्टे पेटमें गिनियाँ अटक गयीं तभी दडित के प्राणों को खतरा है' ऐसी पड़ी। ऐसी हालत में फिर रफिजुद्दीन को बलपूर्वक नीचे गिरा कर मुह खोलकर रेच (दस्त) की दवा पेट में रहने तक पिलादी। और उसकी कोठड़ी में हमेशा प्रत्येक कैदी की तनहायी में जितनी रखी जाती है, उस से बड़ी ओक कुडी रखकर पहरा बिठा कर, कोठरी को ताला ठोक दिया गया। डॉक्टर, जेलर प्रभृति सारे लोग रातकी पद्धति के अनुसार गिनती लेकर बैरको को ताले ठोककर अपने अपने घरकी ओर चले गये।

वह रात रफिजुद्दीनने अत्यंत असह्य और अस्वस्थ अवस्था में गुजारी। रेच होते समय पेट के दूखने की वजह से शरीर को जो अस्वस्थता प्रतीत होती है, वह तो थी ही, पर उसके ऊपर उस दिन जो जुल्म और अन्याय की झरमार की गयी थी उसकी याद आतेही उसके शरीर की सतापसे खिले खीने हो रही थी। उसने जग पर पहले या अब कोभी जुल्म किया था क्या? अथवा किसी दूसरे को कोभी अपद्रव दिया था क्या? ऐसा प्रश्न आजतक उसके सामने कभी उपस्थित तक नहीं हुआ था। जुल्म का मतलब सिर्फ उसे कष्ट पहुँचने लायक लोग जो काम करे वही। जुल्म की सिर्फ अितनी ही कल्पना उसके मास्तिष्क में थी। उसकी अच्छा के खिलाफ दूसरे लोग जो करे वह अन्याय! इससे अधिक दिन रातों का उसके कोशमें कोभी भय ही नहीं था। उस जमादार ने यदि उसे गिनियाँ छिपाते हुअे न देखा होता तो यह भय काहे को हुआ होता? देखकर भी यदि उस जमादार ने कहा न होता तो सारा निभ जाता। तिसपर भी, जेलरने अुवर तबज्जह न दी होती और उसे उसकी मर्जी के अनुमार बर्ताव करने देता, तो भी क्या बिगड़ने वाला था? अर्थात् वैसा न करके, वह जमादार देखे, कहे और जेलर उसे सतावे, उसकी तमाखू-अफीम तोड़े, उसकी गिनियाँ पकड़ने की गुडगिरी करे, यह किनना दुष्टपना उसका! कितने अन्यायी और जालिम हैं ये सारे!

‘ मुझ अकेले को गिरा दिया नीचे, पैरो से कुचला और दवा पिला डाली ’—
 धारदार यही विचार मुसके तप्त और बवराये हुअे मस्तिष्क में निरंतर
 चक्कर मारने लगे । वह पूरी तरह सतप्त हो अुठा । अुस जमादार और
 अुस जेलर का गला घोटें या खून पिये । पर क्या अुपाय ? तोभी बदला तो
 कुछ न कुछ लेनाही चाहिये । कोठडीमें वद करके जाते समय जमादार ने
 अुसके हाथ की हथकड़ियां निकाल डाली थी । पर केवल हाथ से क्या होगा ?
 पर हा रे हा, लाहोर के कैदखाने में अुस नूरमहमद ने पागल का स्वाग भरा
 था, तब अुसने ठीक अैसाही किया था नही ? वस, वस, अुसने पागल का
 स्वाग रखने के लिये जो कुछ किया था, वही मैं बदला लेने के लिये करूंगा ।
 यव् रे यव्, आने दो अब अुस जमादार को मेरा दरवाजा खोलने के लिये सवेरे ।
 जेलर और वह डॉक्टर भी अभी वक्त यहाँ आजायें तो कितना अच्छा हो,
 रेच देते हो क्यों सा . लोगो मुझे ! ह- ह- ह ! अैसी अुड़ेगी अेकेक की कि,
 यव् रे यव् ! ’

अैसा बदला लेने का अुसने जो निश्चय किया था और योजना
 बनायी थी, वह किरियामे परिणत होतेही अुसके अपमान की पूरी
 भरपायी हो जायगी और अुन छलवादी जमादारादिको की जो दुर्गति होगी,
 अुसका, जैसे वह अभी होगी हो, अैसा चित्र अुसे दीखने लगा ! वह पेट
 फकडकर खुशी के सारे अपने ही आपमें हँसने लग गया ।

कैदखाने में हजारो में से कोभी अेक दडित जब कभी अैसा कोभी अुलटा
 सुलटा पदार्थ निगल बैठता है और अुसे रेच की दवा जबरदस्ती देनेमें आती
 है, तब सवेरे अुसका कमरा अधिकारी लोग खुद आके खोलते हैं, और भगी
 की ओर से अुसकी कूडी की तलाशी लेने में आती है । वह पदार्थ बाहर पड़ा था
 नहीं यह निरीक्षण में आता है । अुसके अनुसार भगी को लेकर जमादार
 और दो वॉर्डर सवेरेही रफिअुद्दीन के कमरे के सामने आये । सीखचो के
 दरवाजे का ताला खोलकर जमादार ज्योही अदर पैर रखता है,
 त्योही—

रफिअुद्दीन ने अपना पानी पीने का टमरेल अुठाकर फडसे जमादार
 के मुँहपर दे मारा ! अुस टमरेल ही में अुसने रेच किया हुआ था । वह सारा

मैला जमादार के मुंहपर, आँखों में, मूँछों में, कपड़ोंपर फवारे की तरह पड़कर, निथरकर, जमादार के शरीर पर मैलाही मैला होगया, दमघुट गया, अलटी आभी ! जमादार अकेदम "शी शी शी ! " करके चिल्लाया ।

वह अघोरी रफिअुद्दीन "हा , हा , हा " कर के जोर से खिलखिलाने लगा ।

" मेरे पेटका सोना चाहिये था न तुझे ? रे पाजी, रे भगी, ले वह सोना ! खा, पी ! मूढ डाला देख, अुस सोने से मैंने तुझे ! हरामी "

गालियों के कीचड़ की वौछार करते हुअे रफिअुद्दीन अेक कोने का आश्रय लेकर, वह टमरेल हाथमें लेकर, आसन जमाकर बैठ गया !

लज्जा से, गुस्से से, मैला मैला हुआ हुआ, गड़बड़ाया हुआ जमादार चिल्लाया,

" देखते क्या हो ! वॉर्डर, घसीटो अुस सूअर को आगे ! "

वॉर्डर आगे दौड़े, पर अुसके शरीर पर जानने ही वाले थे कि, ठिठक गये ! अितने आदमी होकर भी अुसके शरीर पर कोअी हाथ नहीं लगाता था ।

क्यों कि, अुस निर्लज्ज पशुने कोअी छूने का साहस न करे अिस हेतुसे अेक विलक्षण गलीज युक्ति पहलेही ढूँढ निकाली थी !—अुसने अपना भी शरीर अपने ही मैले से लुबड़ा कर रखा था ! अुपासनी महाराजका ही मानो गुरु-मत्तर लिया हुआ था अुसने ! वे वॉर्डर अुस मैले से जुगुप्सायुक्त होकर मैले को न छूते की भावना से रफिअुद्दीन के शरीर के साथ लिपटने से कतराने लगे ! सताप के आवेश में अपना ही डडा रफिअुद्दीन के सिर पर दे मारने की बिच्छा से जमादार दौड़ा, पर जेलर की आज्ञा के वगैर कंदी का सिरबिर फूट गया तो वह ही सकट में पड़ जाय !, अिम स्याल से अुसने अपने गुस्से को फिर रोक लिया ! केवल हाथों से रफिअुद्दीन अुसके अकेले के वस में आजायना, अैसा अुसे लगता नहीं था, अिम लिये वह फिर ठिठक गया !

जेलर आही रहा था, अितने में अिस चीखने पुकारने को सुनकर वह सिपाहियों के साथ दौड़ता हुआ ही वहाँ आया । वह प्रकार देखते ही बरोब से लाल हो गया और सीमे की भरी मूँठ वाली अपनी फाठी अुसने रफिअुद्दीन के सिर में बिठा दी । रफिअुद्दीन ने भी टमरेल के भीतरका मैला जेलरके अुपर छिड़क दिया । अुसके साथ ही, जमादार, सिपाही वगैरे सभी टूट पड़े ! दन-दन

हड्डे पर हड्डे पड़ने लगे और रफिअुद्दीन नीचे गिर पड़ा, ब्रैल की तरह जोर जोर से झुरकियाँ मारने लगा—

“ मारो मत् ! साब, तुमको वदीवान् को मारने का हुक्म नहीं ! वदी गृह का नियम तोड़ते हो तुम ! अन्याय, अन्याय ! गले काटू ! कसाभी ! बरपोक हो तुम सारे ! ”

“ रे डुक्कर (सूअर) ! ” जेलर गरजा, “ वदीगृह के नियम तुझे अब याद आते हैं क्या ? लोगो की गर्दने कचाकच कुचलकर कतरनेवाले राक्पस, तेरी गर्दन मरोड़ी जातेही सूझने लगा अब न्याय और अन्याय तुझे भ ? ‘ गले काटू ’ यह गाली है मालूम पड़गया न तुझे ? ठोको और ! मर भी जाय तो चिंता नहीं ! पशु ! मैले के अदर का कीड़ा ! ”

रफिअुद्दीन अब असलियतमे नरम पड़गया ! वह हाफने लगा ।

भगीने रफिअुद्दीन की कूडीमें पड़ा हुआ रेच जेलर के सामने अँडेल कर देखा । उस मैलेमे रफिअुद्दीन के पेटमें से कोभी अदर निगला हुआ पदार्थ बाहर आया है क्या ? उसमें अन्हे कुछ मिलेगा, रफिअुद्दीन को बिसका डर ही नहीं था । क्यों कि, उसने गिनो विनी कुछ निगलीही नहीं थी असल में ! जेलर की फजीहत हुआ देखकर अलटा वह आनदित हुआ । वैसी घायल हालत में भी वह लापवाह सूअर गँदले विनोद से अपहँसा —

“ क्या ? सोना हो सोना पड़ा है न पेटमे से मेरे ? लो, लो वह घाँटकर तुम सभी, जितना मर्जी अतना ! ”

डॉक्टर भी परेगान होगया ।

“ हमने निष्कारण अिसे त्रास दिया । पर्यवेक्षक महाशय (सुपरिटेंडेंट) गुस्से में तो नहीं न आयेंगे ? अिसने कुछ निगला था ऐसा नजर नहीं आता ! ” डॉक्टर बाहर आकर जेलर से अंग्रेजीमें बोले ।

जेलर ने कहा, “ वह दायित्व मुझपर ! तुम्हे मनुष्यो के तवीयत की परख आती है, राक्पसो और सूअरो की नहीं ! जेलखाने का जग कैसा होता है, अिसका तुम्हारे सरीखे अिस विभाग में नवीन ही नौकरी करने के लिये आये हुअे डॉक्टरो को पूरीतरह से अनुभव आया हुआ नहीं है ! अिसे फिर अेकमर्तवा अुलटी की दवा देनीही चाहिये ! ”

“क्या ? अल्टी की ? उसका कोई उपयोग नहीं ! जिसके पेटमें ऐसे-वैसे नहीं होंगे । होते तो पहली ही मर्तवा बाहर आगये होते ! ”

“पेटमें नहीं ही है । पर-ठहरिये, पुन निश्चित रूपसे देखकर बताऊंगा । ” ऐसा कहकर जेलर जमादार से बोला, “ह, जिसको हथकड़ियाँ पहनादो, भगियों के हाथ से धोकर निकालो ”।

यह वाक्य जेलर मुँह से निकालही रहा था कि रफीमुद्दीन चिढ़ गया—

“क्या ? भगियों के हाथों से धुलायेगा मुझे ? मैं क्या पैखाने का फरश हूँ ? मेरी जात भ्रष्ट करेगा ? भगी को जान ले लूंगा । तू साहब नहीं है । किसी भगी के ही पेटका —”

यह अपशब्द सुनतेही फिर सबने उसे लातों और धूसों के नीचे ले कुचला और जेलरने स्वतः उसके गलेकी पसली के पास अितने बल से दबाकर घूटा कि रफीमुद्दीनने अेकदम अेक जोरकी चीख फोडी ! डॉक्टर घबरा गया, आगे आकर जेलर का हाथ पकड़ उसे अेक ओर लेगया और ममझाने लगा—

“यह क्या ? गुस्से के आवेश में सारही डाल रहे थे न, आप गला दबाकर उसे जानसे ! अल्टासुल्टा मामला हो जायगा समझें, अेक आघ चक्क ! ”

“अल्टा तो नहीं, मगर सुल्टा मामला तो जरूर हो गया है । ” जेलर हँसा । “डॉक्टर, जिस आदमी के गले में ‘खोवडी’ (खोखली जगह) है, और वह भरी हुअी है, जिस में शका नहीं । मैंने किसी लिये गला दबा कर देखने का मौका पानेकी कोशिश की थी समझें ? मैंने ज्योंही उस खोवडी को दबाया, उसके अंदरकी वस्तु अेकदम अुमे चुभी, किसी लिये वह चिल्ला कर पुन पुन उस वस्तु को निगलते हुअे दबाकर धरता था मुँह के म्मायुओं से ! अल्टी की दवा दो अेक जोरदार—वस खोवडी खुली ही समझो जिसकी !

“पर ‘खोवडी’ का मतलब क्या है ? ” डॉक्टर ने जिज्ञासा की ।

“उसका विवरण थोड़े में कम प्रकार है—पशु रोमंथ करने के लिये गलेकी जिस खोखल में चर्वण सगृहीत करके रखते हैं, वह खोखल मनुष्य भी अपनी अुसी जगह निर्माण कर सकता है । अत्यंत मधे हुअे अपराधी गुरुपरपरा से जिस विद्यामें परवीण होते हैं । मुँहमें अेरु सीसेकी गोली, अुसमें मांसदाहर्ष, अेक रासायनिक पदार्थ लगाकर ये लोग रख लेते हैं । वह गठेकी फानकी

बाज़ू में बैठकर काफी दिनोतक निरंतर बनी रहीं कि, भारी होनेसे मासमें भुतरते भुतरते उस खोखल में छेद बनाती हुयी अदर जाती है। बहुतो से यह काम पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता। मुनका छेद कम गहरा रह जाता है। दुअभी चवन्नी समाने लायक अितना जिनका छेद बन जाता है, वह बड़ा होता है। जादूगर अेक खेलमें मुंहमें से नाना प्रकार की वस्तुओं निकालकर दिसलाते हैं। वे वस्तुओं अिसी खोखलमें सगुहीत रहती हैं। केवल अुलटी से मुन वस्तुओं को बाहर न आने देकर परवीण दडित मुन्हे रोक सकते हैं। पर स्नायुओं के थकजाने पर थोड़े से दबाव से वे वस्तुओं बाहर आ सकती हैं। मुझे दोतीन अिस किस्म के अनुभव हुअे हैं। अिसका भी पीछा मैं अपनी शका का पूर्ण निरास होने तक करूंगा। अब अुलटियाँ हुयी तो सूखी ही होगी, उसकी दमन शक्ति भी कषीण हो ही गयी है ! दायित्व मुझपर ! मेरी आज्ञा समझकर दवा पिलाओ ! ”

डॉक्टरने अुलटी की दवा हा हां, ना ना, करते करते देना कबूल किया। पर वह लाने के लिये जाते समय मनमें कहताही था कि, ‘यह जेलर भी विविषप्त ! जिदपर पिला हुआ दीखता है ! व्यर्थ ही उस बेचारे दडित को सता रहा है ! क्या है, कहता है कि, गले में गिनियाँ रहती हैं ! कल मुझे यह यहभी समझाने लगेगा कि, दडितो की चिच्ची अुगली में प्याज के थैले भरे रहते हैं। अतमें फजीहत ही हाथ आयेगी अिसके ! ’

अुलटी की दवा के फिर लाये जातेही सब लोगोंने मिलकर वह रफी-अुद्दीन को बलपूर्वक पिला डाली। कुछ ही वक्त में उस दुर्जनको पुन, यही बड़ी सूखी अुलटियाँ आने लगी—अतडियाँ बुरी तरह तन अुठी—और उसके औसान फाम्ता हो गये। अितने में अुचकियोपर अुचकियाँ आरही हैं अैसी अुलटी देखकर जेलरने हाथमें कडियाँ पहनाकर नीचे गिराये हुअे रूफिअुद्दीन के गलेकी पसली की कानके नजदीक की दोनो खोखलो को बुरीतरह भीचकर पकड़े रक्खा और अुगलियों को अूपर सरकाते हुअे ले आया त्योही अेक अुचकी के साथही तीन, चार, पाच गिनियाँ खल्खल् खल् करती हुयी रूफिअुद्दीन के मुंहमें से ज़मीनपर गिरपड़ी ! और अेक छोटी सी अिविया—अुसमें अफीम !

“गिनियाँ, गिनियाँ, पडगभी अुन्मूलित होकर ! गिनियाँ !”
 चॉर्डर, सिपाही, डॉक्टर, भगी सारे लोग अेकदम हल्ला गुल्ला करके अुठे ।

सबसे आनंद से बेसुध हुआ वह जमादार ! पुत्रजन्म का आनंद हुआ अुसे अुन गिनियो की सुखप्रसूति होतेही ! अुसपर झूठ बोलने का जो दुष्ट आरोप आनेवाला था, वह टल गया । अुलटे अपराध को पकड़नेवाला परवीण जमादार वही साबित होनेवाला था अब !

आजतक रफिअुद्दीन 'खोवडी' में भरकर जो गिनियाँ ले जाता था, अुनके बलपर ही वह जिन जिन कैदखानों में गया वहाँ जिंदा बचा रहा-चैन करता रहा । पर अब वह पहली दफा कैद की जिंदगी में अिस तरह हताश हुआ था ! ऐसी पांच गिनियो का मतलब कैदखानेमें ५ लाख रुपये की संपत्ति समझी जाती है ! क्यो कि तमाखूकी अेक चुटकी का मतलब कैदी जीवनका अेक रुपया ! अेक रुपया देकर बाहरकी दुनियाँ में जो काम होता है वह यहाँ तमाखूकी अेक चुटकी से हो जाता है । और सौ रुपये देकर बाहर जो काम कराया जा सकता है, वह यहाँ अफीमकी अेक रात्रीभर की गोली में कराया जा सकता है ! अिस तरह 'अेक चुटकी अेक रुपया' के भाव से पाँच गिनियाँ अुसके पांच लाख रुपये थे । अुनके बलपर खुद कुछ भी काम न करते हुअे, पचास कैदियो को अपनी सेवा में रखकर पांच बरसतक अुस कक्ककाग-गहमे अपना सारा श्रीमती ससार बमानेवाला था ! — पर अब वह निष्काचन, भुक्खड होगया ! अब अुसे कोन पूछता है कैदियो में ! आज वह पूरी तरह हताश हो चुका था !

और अुसीमें, अुसपर चलाये गये अुस दिन के सारे आततायी दुर्वर्तन के बारे के अभियोग का निर्णय देते हुअे पर्यवेक्षक ने रफिअुद्दीनको तदीगृहीय नियमानुसार मजा दी-नीम कोडे ! ! !

कोडों का नाम सुनतेही रफिअुद्दीन मिरमें पेरतक काप अुठा ! हिंस्र श्वापदों की भांति हिंस्र स्वभाव मनुष्यभी यदि किसी दड से वास्तव में डरते हैं तो वह शारीरिक दडही से-मानसिक से नहीं ! मन नामकी वस्तु लगभग अिनके पास रहती ही नहीं ! हिंस्र श्वापदों को यदि पालतू बनाना हो तो चाबुक ही से बनाया जा सकता है ! हिंस्र स्वभाव मनुष्यों को कोडों से ! यह अुन मैकडों अघोरी दडितों को पालतू बनानेमें जीवन स्रर्च कर डालनेवाले

जेलरका तखमीना रफिअुद्दीन के प्रकरणमें भी सही ठहरता हुआ नजर आया ! जन्म कैदकी सजा को वह हँसते हुअे सुना करता था, कोडो की सजा का नाम सुनते ही आज पहली ही दफा वह थरथर कापा-सचमुच डरा !

कोडे मारेजाने से अेक दिन पहले की रात को रफिअुद्दीन को नींदही नही आयी । कोडो की सप् सप् आवाज अुसे सुनायी देती थी । अुसकी छाती थराने लगी । तथापि, अेक प्रकार का वैद्यकशास्त्र, जो अुस जैसे अघोरियो के संप्रदाय में प्रचलित है, वह भूला नही था, अुसपर से विश्वास भी अभी अुडा नही था । कोडो से अेक रात पहले यदि मनुष्य अपनाही पेशाब पीजाय, तो अुसका शरीर और मन बधिर हो जाता है, और कोडो की दर्द बहुत ज्यादा महसूस नही होती ।—यह धारणा अीदृश अघोरी आततायी दडितों में प्रचलित है, और अुसके अनुसार वे लोग अुस ‘अीकद’ या ‘दवा’ को लेते हैं, यह बात विलकुल सही है । रफिअुद्दीन तडकेही अुठ बैठा और पानी पीने के टमरेल में अपना मूत मिलाकर अुसका यथाविधि प्राशन किया । अुसने कुछ कुरान की आयतें—मत्र भी पढ़े और नमाज पढकर देवसे प्रार्थना की, “कोडो की मार को अुपर ही अुपर झेल ! आग मत होने दे खालकी ! मनुष्यों की तरह राक्पसो का भी अेक देव होता है ! अुसने नाखून से जमीन कुरेद कर अुस मत्रका पाठ करके चुटकी भर मिट्टी मरी और अुसका अगारा लगाया और अल्लाह के नामका अम्बड जाप करता हुआ वह अकेली कोठडी में सूर्योदय तक फेरे मारता रहा । अेक बडे धर्मयुद्ध के लियेही जानेवाला था न वह देव का नाम लेकर ।।।

पर आततायी और खुराँट दडित अैसे वक्त में अिसी तरह किया करते हैं, यह विलकुल सही है । दोतीन अुदाहरण तो हमने खुद अपनी आखों से देखे हैं । और यह भी सच है कि, यमपुरीही का दर्शन करने के लिये जाना हो तो मखमली गलीचों पर पैर रखकर जाना सभव नही वहाँ ! चप्पल सेड, और सिवल के काटो के जगलमें से ही राह बनाते हुअे जाना पडता है । मरघटही में जब अपने को रहने के लिये अुतरना है तो, धगधग करती चिताअें, अस्थियों के काटे, पैर भूननेवाली भूभल का ढिगार, तडतड करके फूटनेवाली खोपडियों के पटाखों की आवाज, भूतों की चीखें, यही साथ रहेगी । बीभत्स और भयानक विरसताही रस का काम देगी ।। मानवी मनका काला पानी कैसा

रहता है, यही यदि जाननेकी मिच्छा हो तो जैसी वस्तुस्थिति है, उसी रूपमें काला पानी दिखाना चाहिये न, उसे निरर्थक अपना शिष्टाचार समझ कर गुलाबपानी का रूप देने से क्या हासिल होगा ? यह तो उसकी वचना होगी ! गुलाबपानी यही काले पानी की विडवना है—शोभा नहीं !

“अल्लाह, तू रहीम है ! देव, तू दयालू है ! ” ऐसा नामघोष करते हुए उस अकातकक्षमें फेरियाँ लगाने वाले रफिअुद्दीन को उस मय तन्त्र से थोड़ी तसल्ली महसूस हुई । किसी वक्त सिपाही वहाँ आये और खडाखड् दरवाजा खोलने में आया । बदीगृह के बीचके चौकमें सारी बैरको-के बदीवानों को दीख सके असी जगह उसे खडा किया । तीन मजबूत लकड़ों का एक तिकोना रहता है, उसे 'टिकटी' कहते हैं, वह 'टिकटी' वहाँ लायी गयी ! उस टिकटी की सीढियोंपर चढ़ाकर टिकटी की तरफ मुँहकर के उसे उसके साथ बाध दिया गया । उसके दोनों पैरों को दोनों बाजुओं में मौजूद लोहे की कड़ियों में पक्की तौर पर अटका दिया गया, उसके दोनों हाथों को ऊपर मुठ्ठा कर दोनों लकड़ों के सिरेपर मौजूद दो लोहेकी कड़ियों में जकड़ दिया गया । गर्दन एक पट्टे में अटका दी गयी ।

एक घाली में कृमिनाशक औषध और कोड़े खत्म होतेही घावोंपर बांधने के लिये पट्टियाँ हाथमें लेकर औषधालय का मिश्रक (Comp. under संचूर्णक किंवा सपिडकार) और उसके पीछे पीछे डॉक्टर भी वहाँ आ पहुँचा । सिपाही लाभिन लगाकर खड़े हुए । शरीरपर एक लंगोटी छोड़कर रफिअुद्दीन को सिर से पैरतक नगा कर दिया गया । उसने कोअी गडबड या बडबड़ नहीं की । शून्यभाव से वह अपनी दुर्दशा अवतक बिसतरह देख रहा था मानो किसी दूसरे ही आदमी की देख रहा हो ! अब उसका धक्खड़पना सब जिर गया था । वह सारी व्यवस्था वही खड़े होकर करवानेवाले उस अपने शत्रुभूत जमादार से भी उसने चकार शब्द नहीं कहा । कहही नहीं सका ।

घनघन घन घटा बजी । तत्काल टाप टाप बूट अुड़ाता हुआ टॉवर में बैठा हुआ जेलर बाहर आया । और ठीक पीछे पीछे चड्डी (एक किम्पकी निकर किया घुट्टा) और जाकेट शरीरपर डाले हुए, बाल बिबरे हुए, भुजाओंकी बलोत्कट स्नायुअें फुलाये हुए कोड़े वाला आया । उसके हाथमें लुढ़ी और तीन अँगुलियों के बराबर मोटी सीवी बॅन थी ।

रफिअुद्दीन वैवा हुआ था—पीठ अिघर किये हुअे। अुसे वह दीग्वा नही। पर दोवन जैसाही भास हुआ। वह थर्रा अुठा।

“मारो !” जेलर गरजा। यह सुनकर मानो वेंतही अुमके चूतड पर आकर बैठी हो, रफिअुद्दीनने करुणा भरी अक हाक फोडी—“साव ! साव ! आहिस्ता, अलगत (=असस्पृष्टरूपसे) तो मारिय !”

हाथकी वेंतको आगे करके सिरके चारो ओर फिराकर कोडेवाले ने निशाना जमाया।

“अेक !” जेलर चिल्लाया। फाड् करके रफिअुद्दीन की चूतड पर वेंत जा बैठी।

“मेय्या मेय्या ! या !” रफिअुद्दीन ने चिघाड मारी।

“दो” फिर सिग्पर से फिरा, ताकत के साथ कोडेवाले ने दूसरी वेंत जमायी। रफिअुद्दीन जानवरकी तरह रँमाने लगा। आजूबाजूके कैदियों के शरीर भी लटलट् कापने लगे। कितनोही को दया आयी। अुन्ही में कटक भी था। पर अुसे दया आनी ही थी कि याद आगया—यही है वह रफिअुद्दीन। कुल्हाडी से आदमियों को तोडनवाला। जैसे लकडियाँ फोडते हैं अुस तरह। अक वरस में कम अज कम अक अक तरुणी की तो विलास समझकर जान लेनेवाला—नृशंस नर रावपस।

“तीन !” “चार !” “पाच !” “छे !”

अेक अेक वेंतके फटके के साथ रफिअुद्दीनकी दोनो चूतडो में से खूनके फव्वारे अुडने लग और मास का भूसा। और वह बीचही में रमाने लगा। बीचही में, “छोडो, वस, पैर पडना हू” अैसी प्रार्थना करने लगा। कभी बीचही में, जमादार और जेलर की मा—दहन का नाम लेकर वीभत्स गालियाँ गिनने लगा।

“मात ! आठ !” “नौ ! दस !” वेंतो पर वेंते सटकती चली मास में घुसती चली। रफिअुद्दीन आघा वेमुव होकर निश्चेष्ट पडगया। केवल कुचला हुआ साप जिस तरह काटी लगाते ही अुतने भरके लिये दन्द्दन्द् करता है, अुसी तरह वेंतके फटके के साथ अेक अेक नीख सिर्फ शारीरिक प्रतिक्रिया भर के लिये गुसके मुँहसे बाहर पडने लगी !

“अट्ठासीस ! अुनतीस ! तीस ! ! ”

वह तीसवा फटका मारतेही वेंत फेंककर पसीना-पसीना हुआ हुआ, हाँफते हुआ मट् से नीचे बैठगया वह कोड़े मारनेवाला ! वह भी मितना धक गया था !

डॉक्टर झट् से आगे आया । टिकटी पर से छुड़ाकर नीचे आँधा सुलाये गये रक्तववाल (खूनही खून हुआ हुआ) रफिअुद्दीनकी अुमने नाडी परख कर देखी, जिंदा है या नहीं वह मितनाही देखने भर के लिये ! घावो पर तात्कालिक मलहमपट्टी करके रफिअुद्दीनको कैदखाने के हस्पतालमें अेक तनहाअी में लेगये । कोठडी में ताला ठोक कर बंद करदिया !

अुस रात को घावो में दर्द पर दर्द अुठकर, आग आग होगयी और रफिअुद्दीन को जोर का दुखार चढ आया । ब्रखार में दिमाग की गरमी बहुत बढ़ जाय तो मज्जाकेद्रभी अुत्पुट्य हो जाते हैं । अुन मज्जाकेद्रो (B n C l s) में विचारो के घक्के मे जो कुछ आकस्मिक रूपसे हिल्लोलित हो अुठना है, अुसकी चित्रावलि (I l l a) तत्काल अितने अुत्कट रूपमें प्रकाशित होकर अुठती है कि, वह वह घटना जीवित अवस्थामें चालू हो अैसा, सुब भूलकर बैठहुअ जीवी को भ्रमित होता है । अितनी बीच अुत्त विचार के मवय में दूसरा मज्जापिट नचलित हुआ कि, वह अुसका सत्राक् चित्र चालू कर देता है । देशकाल के वरम की जानकारी ही म्यिर नहीं हो सकती, अुसके योग से स्मृत घटना भावभावनाओ का विविपन्न मिशरीभाव प्रारम्भ हो जाता है तथा अनक अमभाव्य दृश्य प्रत्यवपवत् भासन लगते हैं । रफिअुद्दीन को भी वही अवस्था हुअी ।

बुखार आनेके बाद जबतक वह साधारण सचेत अवस्था में था, तबतक अुसके घावो मे वेदनाओ की असह्य परपराके कारण वह विलख रहा था, अुसे, मने अपनी यह दुर्गति अपनेही दुष्कृत्यो के कारण व्यर्थ हो मे करवाली, अिसवातका बारबार तीव्र पश्चात्ताप हो रहा था । पश्चात्ताप नामकी वस्तु का सच्चा अनुभव अुमे अपने नमन्त जीवनमें अिसी वक्त पहली दफा हो रहा था ! पाप क्यो किया अिस वारे मे पश्चात्ताप हो रहा था सो वान नहीं, अुसे पश्चात्ताप हो रहा था अिस वान का कि पापजबतक पच जाता रहा तभी तक करके अुसे तत्काल छोड क्यों नहीं दिया ! अजोण होने तक, अपचन

होने तक वही भयकर आततायी मार्ग क्यों पकड़ा रहा, जिस बात का तो कम अज्र कम खेद असे होने लगा। काले पानी से भाग गया, देश में पहुँच गया, पुनः ढाकेजनी करके, अपार धन प्राप्त किया, अनन्वित मिद्रियभोग भोगे वहाँ तक मैंने जो किया, सो ठीक किया। पर आगे अपना हाथ आकुचित करके, किमी भी परंपरातमें जाकर व्यवस्थित जीवन व्यतीत किया होता तो जन्मभर पुनः सकट में आकर पड़ने की नौबत ही न आती। जिस प्रकार से अुसका विवेचन चल रहा था। अुसके अुस विविषप्त विवेचन से अुसको अपनी जो गलती महसूस हुयी वह अितनी ही कि, बहुतसा पैसा और रंगढग के अर्थ समाजपर भयकर अत्याचार करते करते जब वह अुस विहार की तरुणी को अुड़ाकर बागलाण में आकर छिप गया, तब अुसे अुन भयकर अपद्रवी दुष्कृत्यों को हमेशा के लिये अलविदा कहना चाहिये था। वह तरुण स्त्री और वह पैसा लेकर, सिधकी तरफ किसी अेक जगह सदृहस्थ बनकर, निर्बवशील अवस्था में जो चैन की जा सकती थी वह करके शांति से जिंदगी बसर करनी चाहिये थी। अगन कृत्यों को दुष्कृत्य का नाम देकर भी अपनी मनोभाषा में वह सवोद्यत कर गया। जैसे जैसे बुवारकी बसुवी और टिग्री बढ़ती चली गयी वैसे वैसे यह आखीरका विचार अुसके चित्तमें ताडव मचान लगा,

“अरेरे, अुस विहारी को—अुस विहार की सूवसूरत छोकरी को ही यथा रीति निकाह लगा कर औरत बनाकर मैंने सुख से जिंदगी बसर क्यों नहीं की? अरेरे, मैंने अुसे भरपूर महाप्रवाहमें खप्परकी तरह फेंक दिया न, रे! नीव!—अरेरे!—पानी में दम घुटकर क्या रे अुसके जीव की—सिर ठप् करके खडक पर!—टकराया!—फूटगया! अववव! मेयारी! कैसी य वेदनाओं!।”

बारबार कहते (कराहते), बडबडाते बेहोशी में कुछका कुछ देखते, समझते अुसके दिमाग में गुलाम हुसेन की स्मृति का केन्द्र कहीं से हिल्लोलित हुआ!

“हरामी अं दुष्ट! दे वह मेरी मालती वापिस! घरगृह के रूपमें रखता था मैंने अुसे तेरे नजदीक! मेरी, मेरी हूँ वह रखी है तेरे वापने! गुलाम! देता है कि नहीं—मागे—पीटो!—पैर खीचा! मय्या या! मरा! मरा!”

पुनः धोछा जागरित हुआ वह। नुस्खार का जोश बढ़ रहा था। बेहोशीमें गुलाम हुसेन के साथ हुयी हुयी मारपीट में पैर पटके अं अुसने त्वेष

में, और मुसके साथ ही साथ मुसके घाव पर धक्का लगने की वजह से बिलखता हुआ मूठा था वह। मुसे वही याद आने लगा।

“मालती को गुलाम हुसेन भगा कर ले गया नहीं? कहा होगी वह? अरेरे! चोरपर मोर होगया न वह! अपने पिजरेमें ही रखी होगी मुसने मेरी छत्रीली को।”

मथुरामें मालती को मुस रात रफिअुद्दीनने गुलाम हुसेन के घर जो छिपाया, मुसके बाद मुसका क्या हुआ, वह मुसे कुछ भी मालूम नहीं पडा था। और किशन मुसके साथही हुआ हुआ हत्या, डाकेजनी आदिके खड्गयंत्रके खटलेमें जो निर्दोष छूट गया था, मुस की भी वही आखीरकी जानकारी थी। वही विचार मुसके कपीणता स्वर मनमें अब अक सरीखा चक्कर मारने लगा। बेहोशी और बात के क्षटके बैठने लगे—

“मालतीका क्या हुआ होगा? गुलाम हुसेन के जनाने में? हां, जनाने मेंही! पर मालती—ती—आ? लाहोरमें! यहाँ बाजार में तू कैसे?..

वह फिर अकस्मात् बुलारकी अल्पुव्व बेहोशी में अमी विचार की अतरनी पर से नीचे अतरते हुआ कूअमें गिरपडा हो, अैसे ढग से वह नीचे नीचे गहरा गडता चला गया।

लाहोर के बाजार में खडी हुअी मालती को अचानक देखतेही मुसने मानो मुसे गलबहियामें चिपटा ही लिया, “प्यारी! —मालते! — ‘ओ! आव प्यारे रफिअुद्दीन, मेरे को छोडके किदर गये थे पीतम आजतक’।”

गलेमें गला डाल कर मालती जैसे अुमे अपने बगले में लेगअी, दरबाजा अदर से लगा दिया, मुसके सारे कपडे अतार डाले, और अितनेही में वहाँ पर मौजूद अक बडी मट्ठकची में से खाड्से किशन छुरा निकाल फर बाहर आया। —बापरे! घात घान! अिस दुष्ट औरतने घात किया! अिस जल्लाद के, अिस किशन के हाथमें मुझे मौप दिया क्या? चाटालनी, मालने! रावपनी! ‘चुप राअपमके बच्चे! किशन, बाघ असे अुग टिकटीपर! बाघ! मेरे त्वेप की यह देख मैंन अक बलोत्कट घुमावदार चैन तयार की है। तू किशन! जिमपर यह अब मेरे साथ बैठना चाहता था अुसी अिस पलग की टिकटी तयार कर।’

पलग की अकस्मात् टिकटी बन गयी, मालती के त्वेषकी भयकर घेत बनी, दोलते दोलते स्वतः मालती की अंक, बाल विखरायी हुयी, माथे भरमें सिंदूर मली हुयी, लाल लाल जीभ साप की सी निकालनेवाली, कोयी विकराल कृत्या बनगयी ! ! किशन ने अुद्दीन को टिकटीपर पक्की तीर से जकड डाला—और मालती के त्वेषकी अुस वेत को अुसने (मालतीने) अुठाया और खून का फव्वारा अुडानेवाला अेकही भयकर फटका मारा !

“अवबव, मैय्याय्यो ! — पैर पडता हूँ, मालती, छोड ! मैय्याय्या—हलके से ! मालती ! वषमा—वषमा—वषमा ! —”

. पर मालती गिनती ही और मारती ही चली वे रक्ताक्तकटकित फटके !

“तीन ! चार ! पाच ! पचास ! सौ ! ! ! ”

वात के झटके में रफिअुद्दीन खुदही चिल्लाकर अुठ बैठा,

“सौ ! ”

मिलगामी न, तुम्हारी मैत्रिणी ! : : : १३

हुकुंसे ! अे अुसे ! अरी, आज दोलती क्यो नही ? घरमें क्या कर रही है अुधर, आ आ ! ”

साठ वरससे ज्यादा अुम्र का पर अभी तक सपन्नसत्व स्वर अेव सुदृढ शरीरयष्टिवाला अेक पुरुष अपने अेक सादे, वैठे और खपरैल के घरके अग्रवर्ती, पहारे—छिडके आगन में खाट पर आकर वैठते वैठते अपनी अेक सात आठ घरसकी छोटीमी पोतीको विनयपूर्वक बुला रहा था । दो पहरको अुस आगन में दो—तीन बजे, छाह आयी कि वह अुम खाटपर आकर आजकल अिसी तरह धठा करता था । कामकाज खत्म करके, दिन ढलने के वक्त, गाय भैंस खेतों से, बच्चे स्कूलसे और अुसकी स्नुपा—अुन पोतो-पोतियोंकी मा—अपने नौकरी

के काम पर से घर पर आती थी नवतक, वह बूढ़ा अुस खाटपर जब जिस तरह बैठता था तब अुसके साथी के तौरपर अेक चची (पानतमाखूका बटुआ) और अुसकी अेक पोती अुषा तथा अुसका बडा भाभी वारह अेक बरसका मोहन ! अुन्हे कुछ सिखाते, कुछ कहानी सुनाते, बीचमें ही समकपवर्ती पुष्प-वृषो को पनियाते अथवा वीर आये हुअे आमो-कटहलके दिनो में आगत से लगकर मौजूद बाडीमें के अुन अुन झाडो की रखवाली करते हुअे वह वहापर विलकुल तल्लीन हुआ दिखायी दिया करता था ।

अुसके घरके आजूबाजू अेक तीस चालीस तादृश किंवा तदपेक्षयापि अधिक सीधे सादे झोपडो का मिलकर बना हुआ अेक खेडा बसा था । वह खेडा यद्यपि बसा था अडमान में तो भी दिखायी देता था विलकुल अेक आष कोकण के खेडे-गाव की शुद्ध प्रतिमूर्ति ! क्यो कि सब घातो में अडमान अपने आपही सर्वथा पूर्व समुद्रतीरवर्ती अेक प्रति-कोकण है । झाड ऋतु, पक्षी, पैदावार, सब बहुत कुछ कोकण का ही ठाठ है ! यदि पश्चिम समुद्र के कोकण नटको मोडकर पूर्व समुद्र पर अुठाकर रखदें वषणभरके लिये तो अुस पूर्व समुद्रमें कोकण का जो अम्पष्ट सा प्रतिविब पडेगा, तादृगही अडमान है ! कोकण के जंगल वगैरे तोडकर मनुष्योने आजतक जो बहुत सा काया-कल्प कर डाला है, वही थोडाबहुत फरक रहेगा ।

"अुपे ! 'ओ' तक री, क्यो देती नही तू ? मोहन, कहाँ है रे, अुषा ?" बूढेने पुन पूछा ।

"वह यहीं गुडिया के साथ खेलती बैठी है । वह कहती है कि मैं अप्पा पर रूटी हू आज ।" मोहन ने अदर से जवाब दिया ।

"क्यो बाबा, क्या गुनाह होगया मुझ से ? अच्छा, मोहन तूही आ अ, तो फिर अिघर । पके पके पानो का बीडा आज मैं अुषाको देने बाग था । पर रूठ गयी हो तो फिर तू ही ले ले, चल । "

अुस बूढे अप्पा का आमत्रण स्वीकार करके मोहन तत्काल दौडा । मोहन अब बीडा हथिया लेगा यह देखते ही गुडिया को अेक ओर फेंककर अुषा भी धीमे से अुठी, दरवाजे के नजदीक आयी, पर विलकुल ही धरण जाना प्राणो पर आ वीतने की वजह से दरवाजे में से अपना सुहावना मुखड़ा बाहर

निकाल कर और अपना वकील अपने आपही बनकर खूँटी हुमी आवाज में बोली,

“ मैं खूँटी हूँ तुमपर अ अप्पा ! ”

“ अरी पर क्यों, वह बतायगी कि नहीं ? यह पीला जर्द पान का बीड़ा नहीं चाहिये न तुझे ? ”

“ चाहिये, पर वही से भिजवा दीजिये, मेरे लिये मोहन के हाथ से ! मैं वहा नहीं आऊँगी तुम्हारे पास । तुम फिर मेरा पापा (चुवन) ले लोगे कलकी तरह । मुझ तुम्हारी मूँछे चुभती हैं यह मालूम ही नहीं तुम्हें ! तुम बलपूर्वक चुभाते हो अन्हे मेरी गालों पर । तुम्हें अच्छा हो तो बीड़ा बिघर ही भिजवा दो ! ” अूपाने समझौते की शर्त सुझाई ।

“ मेरा काम रका नहीं है अितना ! जिसको बीड़े की जरूरत होगी वह पापा दे देगा ! अच्छा, मूँछे न चुभाते हुअे लूँ तब तो देगी न पापा ? ” अूपाने समझौते की अुलटी शर्त जतलाई ।

अुस अुलटी शर्त को अुसने यद्यपि मुँहसे स्वीकार नहीं किया तथापि अेक अेक पैर जमीनपर घसीटते घभीटते अुषा धीरे धीरे अुस आजोवा (दादा-पितामह) के पास पास आने लगी—मानो वह खुद अपनी मर्जी से न आ रही हो पर अुसे आजोवा जबरदस्ती खींच कर लेजारहे थे अिसी लिये वह आगे बढ़ रही थी । अिस ढंगसे आते आते अक वारगी वह अपन आजोवाके हाथों की पकड़में आकर ठिठक गयी । त्योही आजोवाने अुसे पकड़ कर हँसते हँसते अपन पास लेलिया और यथाविधि अेक मीठ पापा का कर वसूल कर के अेक बीड़ा अुषा और अेक मोहन को दिया और अुन अपने लाडले नन्हें नन्हें पोतो को दोनों वाजूओं में लेकर अप्पा खुदके हाथपर अपने पान के साथ खाने की तमाख की चुकनी को मलने लगे ।

जैसे जैसे अुषा का बीड़ा मुँहमें घुल घुल कर अुसे मीठा लगता चला, त्यो त्यो अुसकी कली खुलने लगी । वह अपनी मर्जी से आजोवा की गोदमें फव आकर बैठ गयी और हँसते हुअे अुनके साथ मीठी मीठी वाते कब करने लगी वह अुसके ध्यान तक में नहीं आया । अुषा और मोहन ये दोनों बच्चे बहुतही मोहक, खिलाडी, वाचाल, और तरार थे ।

भितन में सामने के टीलेपर से अंक आदमी को अुतरता हुआ देखकर मोहनने ताली पीटी,

“अप्पा, अप्पा, कटकवावू आते हैं, कटकवावू ! वे ऽ देखो, वे ! ”

अुषाने भी अनुमोदन किया,

“हा रे हा , कटकवावूही है वे ! ”

अप्पाजी अुस समय पाममें पड़े हुअे कलकत्ते के अंक हिंदी समाचार पत्रको पढते थे । अुसे अंकतरफ हटाकर दृष्टि गढा गढाकर आगेकी ओर देखन लगे, पर अुनकी आखोको ठीक से नजर नही आया, अुन्हे मालूमपडा कि दूसराही आदमी आ रहा है

“कटक बटक वावू नही हैं वे, कुछ का वृच्छ चिल्लाते हो होगया ! ”

अुनके नकार को वरदास्त न करके अुषा बोली,

“कटकही है अप्पाजी । तुम्हे ठीक नजर न आता हो तो मेरी आखों से देखो । हा,—देखो न ! नही जाओ, मेरी आँखोंमें से होकर देखो ! ”

अुसने अपना नन्हा सा सिर अप्पाजी के मुंहके बिलकुल पास ले जाकर धर दिया, वह अुनकी आखो के सामने तक पहुँच सके मिस खियाल से अुनकी गोदमें वह चढ गयी, अपने मुलायम वालो से आच्छादित सिरका पिछला पासा अुनके मुहपर टिकाकर, अुनकी आँखो के ठीक आग अपनी आखे आसकें मिस तरीके से वह पिठमूही बैठ गयी, और वह नन्ही अुषा आग्रह करने लगी,

“अप्पाजी, देखियं न, मेरी आखो में से । दीखता है ? अैसे न, अब दीखता है ? ”

अुसके लिये वह अंक खेलही हो गया वषण भरके लिये ।

अुस अल्हड वच्चे की खल के विनोद में विरसता अुत्पन्न न हो मिस खयाल से आजोवानं भी अपनी अुस नन्ही सी पोती के कुतल—मृदुल मस्तक को अपनी आँखो के सामने अंक आध दूरबीनकी नाभी, अत्यत गभीरता से पकड कर अुसकी आखो में से होकर देखे जैसा किया और क्या क्या दीखता है सो बतलाने लगे,

“अगी सचमुच ! अुपे ! दीखता है री, दीखता है तेरी आँखो में से मुझे अब बिलकुल साफ साफ दीखता है ! देख, कटकवावू ही वे भिधर आ रहे हैं ! और वह देख, हमारी नन्ही अुषा अंकआध बही, सुन्न और,

समझदार लड़की की तरह अपनी स्लेट, पेन्सिल और पहली किताब लेकर
अनके पास किस तरह सीखने के लिये बैठनी है देखो ! वह हमारा मोहन
भी पाठ पढ़ने लगा अ ! देख, सारा कुछ मुझं तेरी आंखों में से कैसे साफ
नजर आ रहा है ! अब यह सब किसी तरह सही सही साबित होना चाहिये
अ ! नहीं तो तेरी आंखों में से सब खोटा खोटा नजर आता है, ऐसा कहूंगा
मैं ! तब टालमटोल न करते हुए बैठगी सीखने के लिये कटकवावू के आतेही ?

“ह ! सीखन के लिये बैठूगी—पर—” अुषा किंचित् अमनुष्ट मुद्रा
फरके बोलने लगी, “पर तुम्हारे पासही बैठूगी, कटकवावू के पास नहीं ।”

“क्योंनी ? वे कितनी अच्छीतरह पढ़ाते हैं तुम दोनों को ! गुरुजी
पर गुरुजी है वे—कैसे अच्छे ।”

“हिस ! कहा से है अच्छे वे ! अप्पाजी, सच कहती हू अुन्हे ठीक
से बोलना तक नहीं आता विलकुल ।”

“वह काहे पर से ? कटकवावू को कुछभी नहीं आता ? और वह
तुझे कैसे मालूम पडा ?”

“अजी, अुसमें रखाही क्या है समझने के लिये ? स्पष्ट दीखताही
है वह मुझे ! सच अप्पा ! कटकगुरुजी ही अुलटं हमारे मोहन से और
मुझ से सब कुछ पूछ लेते हैं । अुन्हें याद नहीं आया कि मोहन से पूछते हैं
फलकत्ता कहा है ? ववमी कहा है ? अंगरेजीमें अम्मा को क्या कहते हैं ?
विल्ली को क्या कहते हैं ? और मुझसे भी पूछते हैं दो पचे कितने ? तीन
बहाग कितने ? अिस तरह दिनभर हमी से पूछते रहते हैं सब कुछ । अुन्हें
पुदको आता होता तो हमसे जी, किस लिये पूछते बैठते वे ? पहाड़े तक
आते नहीं अुन्हें ।”

यह सुनते ही “वाहरी वाह , गवार री गवार ” अिस तरह अुसे खिजाते
हुअे मोहन अेक मरीखा हसनं लगा । आजोगा को भी ह्मी आभी ! अुषा
महन पूरी तौर से चिढ़ने की अवस्था में आगयी—

पर अुननेही में कटकवावू आगन में आये और हमेशा की तरह भेंट की
तौर पर अेक मिठाभी का पूटा अुनके हाथमें देखतेही चिढ़ की वजह से हाया-
पाभीपर जानेवाला परकारण वही मिट गया । अुषाका लवप अुस पूडे की
ओर गया और हसते हसते कटक वावूके सामने वह चली गयी ।

“क्या कटकगुरुजी ! ” अप्पा हसे, “परीक्षा में आपके विद्यार्थियों ने आप ही को नापास (फेल) कर दिया है, समझें ? ”

“सो कैसे बाबा ? ” कटकगुरुजीने जिज्ञासा की ।

“अजी, हमारी अुषा कहनी है कि, आपको पहाड़े तक नहीं आते आपही को कुछ भूलभाल गया तो आप अुससे हमेशा पूछते रहते है कि, दो पचे कितने ? तीन दहाम कितने ? और अुसने बतलाया तब कहीं वह आपकी समझमें आता है ! अुसे जितना आता है, अुतना भी आपको नहीं आता ! ”

“अैसा क्या ? ” कटक अुस आवपेप को मुनकर कौतुक से हसा “अच्छा तो, मैं अब जो हिसाब डालता हू वह यदि अुषाबहनजी ने छुड़ाया (हल किया) तो तभी मैं सही समझूंगा ! डालू अेक हिसाब तेरे लिये ? ”

“ह, डालिये । अभी छुड़ाये देती हू देखिये । पर मुझे आसके अैसाही हिसाब डालना चाहिये अ । ” अुषाने शर्त पर आह्वान स्वीकार किया ।

“अच्छा, बतला तो । अेक औरत आमो की अेक छवडी भर कर आभी । अ ? अेक छवडी भर कर ले आभी । अुसकी कीमत दो रुपये स्थिर हुभी । अब अुसने वे आम आधे आधे करके दो बराबर बराबर छोटी छवडियों में भरदिये । समझमें आया ? आधे आधे आम दो बराबर की छवडिया में भरदिये । तो अून दो छवडियो में से प्रत्येक छवडी के लिये क्या कीमत देगी तू ? तूभी बता हू मोहन । ”

मोहन ने चट्से अुत्तर दिया,

“प्रत्येक छवडी के लिये अेक अेक रुपया दूंगा मैं । ”

पर थोड़ी देर आकुचित नेत्र करके विचार करने के बाद अुषा हिनक कर बोली,

“मैं दमही भी नहीं दूंगी अून छवडियो के वास्ते । ”

“क्योरी । ” अप्पाने अुषा से पूछा ।

“बोले नो, सुरेख सम्पूर्ण आम बाजारमें जितने चाहिये अुठने मिलते हो तो अुस (औरत) के आधे आधे किये हुअे वे गदे आम कौन लेगा अला ? ”

“आम आघे आघे किये हुये ” जिस वाक्य पर अनजाने शब्दवरीडा करके अुषाने विलकुल अप्रत्याशित उत्तर दे दिया ।

अुस लडकी की अनजान किंतु स्वतंत्र विचारशक्ति की निदृष्टि देखकर, वह सर्वथा अनपेक्षित उत्तर सुनतेही आजोवा अुषाकी पीठपर हाथ फेरकर कटकवावू से बोले,

“क्या गुरुजी, हमारी अुषा को जितना आता है अतना भी आपको नहीं आता, यह बात विलकुल सही साबित हुयी या नहीं ? ”

“ विलकुल सही साबित हुयी, सच बाबा । और हमारी जिस नन्ही विद्यार्थिनीने गुरुजी को जो पाट पढाया है, अुसके वास्ते गुरुजीही जिस विद्यार्थिनी को यह फीस भी देंगे । ”

कटकने मिठामीका अेक पुडा अुषा को दिया और दूसरा मोहन को दिया ।

और खाटपर कटकवावू बैठने लगा । असे स्थान देने के लिये अप्पाजी जाघ सिकोडकर अेक ओर सरकने लगें । पर अतने ही में अुनके घुटने में अेक जवर्दस्त दर्द पैदा हुयी और वे ‘अम्मारी ’ । कहकर जोरसे कनहाने लगे ।

“अ? अेकदम अितनी जोर की दर्द अुठने लगी ? क्या हुआ पैर में ? ” कटक जल्दी जल्दी में पूछता हुआ अप्पाजी का पैर दवाने लगा ।

“यहाँ, यहाँ घुटने में । ” अप्पाजी घुटना धीरे धीरे आगेपीछे करते हुअे पैर पसारने का यत्न करते हुअे और कनहाते हुअे बोले,

“जिस घुटने में दो दिन से अिमी तरह की असह्य दर्द पैदा हो रही है । थोडा पैर फैलाकर रखने से कुछ देर बाद थम जायगी । अेक बहुत पुराना घाव है जो वहाँ स्थायी होगया है, अब अश्वत्पन के दिन आये है अत वह फिर बाधा देने लग गया है । ”

“पुराना घाव ? कैसा वह ? ” कटक ने जानना चाहा ।

“वह ? वह अेक अितिहास है । वह घाव सत्तावन के स्वातंत्र्य युद्ध में मुझे लगी हुयी अंग्रेजकी अेक गोली का है । हा, अंग्रेजकी गोली का । क्योंकि मैं विद्रोहियों की तरफसे लड़ रहा था । मैं अेक विद्रोही था । ” घोलते घोलते दूसरा पैर खाटपर टेककर, दूसरे पैरपर तन कर खड़ा होकर,

छाती फुलाते जानेवाला वह वृद्ध मानो जितना था सुतसे भी अधिक अँचा दिखायी देने लगा ।

“आप विद्रोहकारी थे। प्रत्यक्ष लड़े थे आप उस विद्रोहमें अंग्रेजों-से?” कटक यह प्रश्न खडित शब्दों में जमाकर, पूछ कर, उस वृद्ध पुरुष के गर्व से तनी हुई अपनी गर्दन स्वीकारार्थ में किंचित् हिलाते समय, उनकी तरफ विस्मयपूर्ण आदर से देखता रह गया। उस दृष्टि-से देखतेही वह आजनक का एक सादा वृद्ध गृहस्थ कटक को एक-कसा हुआ योद्धा, एक वदनीय वीर, एक पौराणिक महारथी भासित होने लगा।

क्षणभर उस वृद्धकी तरफ उसी तरह विस्मयपूर्व आदर भावसे देखते रहने के बाद कटकने पूछा,

“अप्पा, आजतक आपने यहवात कहा बताभी मुझसे? गत छह महीनो में आपके बिस प्रेमल कुटुब में मैं घुलमिल गया हूँ। तथापि मैंने अपने आप कभी आपसे आपका पूर्ववृत्त क्यों नहीं पूछा, बिसका कारण स्पष्ट है। जिन्हें आजन्म कैदकी सजा होती है, जो अपनी सख्त कैद के दस बारह बरस बिताते हैं, और उस अवधिमें अपना वर्तन ठीक रखने के कारण जिन्हे इसी टापूमें स्वतंत्र परिवार का निर्माण करके रहने की आपकी तरह अनुज्ञा मिलजाती है, उन बिस अदमान टापूके अदर के दाखले वाले (pass holder) आजन्म कैदीगृहस्थों को जिन घृणित अपराधों के लिये पहले सजा हुयी होती है, वह बतलाने में बहुधा सकोच प्रतीत होता है। अपना पूर्ववृत्त बिस आपकी धेणी के वे दाखलेवाले स्त्री पुरुष बहूबा छिपाने की कोशिश करते हैं। बिस कारण अनेक मतंवा जानने की बिच्छा होने हुअे भी मैंने आपसे आपका पूर्ववृत्त पूछना ठीक नहीं समझा, टालता रहा। पर आप खुदतो मत्तावन के उस स्वातन्त्र्ययुद्धमें लडना (राजकीय अपराध मलेही कोजी गिने पर) नैतिक नीचता नहीं है, अनाही माननेवाले है, यह स्पष्ट है। तब आपने बजाने बुद बचना उनना पूर्ववृत्त मुझे भला क्यों नहीं मुनाया? सत्तावनके विद्रोहकी कहानी सुनने का छुटपनही से मुझे बड़ा शोक रहा है। मेरे मनमें तबसे ही धीमे धीमे तानासाहेब पेशवा का ही एक आदिरत या, बस

छुटपन में मेरे पिता मुझसे कहा करते थे । सेनापति तात्या टोपेका नाम तो अُنके मुँहपर सदा चढा रहता था । ”

“ अुसी वीरवर तात्या टोपे की सेनामें का मैं भी अेक था । ”

“ क्या कहा, अहाहा ! सेनापति तात्या टोपे ! जिनका नाम छुटपनमें हमें अेक आघ पौराणिक वीरके सदृश अद्भुत प्रतीत हुआ करता था ! अुस सेनापति को प्रत्यक्ष देखा हुआ और अुन के स्वातन्त्र्य सैनिकों में से अेक सैनिक पुरुष प्रत्यक्ष रूपसे मेरे सामन अिसवक्त खडा है—यह कल्पना भी मेरे लिये अत्यत अद्भुत है ! यह देखिये, अप्पा, यदि आपको कोअी खतरे की बात न मालूम पड़े तो कमसे कम आपने जो बातें अपनी आखों से देखी हैं वे तो मुझे सुनाभिये—सुननेकी मेरी अुत्कट अिच्छा है । है क्या कोअी खतरा अुसमें ? ”

“ खतरा ? बावारे, पहले अेकदफा तात्या टोपे को मैं पहचानता हू यदि अितना भी कह दिया होता तो, जो झाड सामने नजर आता है, अुस पर मुझे टाग दिया गया होता !—मैं तात्या टोपे की ओर से होकर लडा हू यह कहने की तो बात ही दूर रही ! अुन दिनों अुन बातों को कहने के लिये जो अेक डर हमारे मनमें बैठ चुका था, और अुन स्मृतियों की हमने चिन्त के जिन गहरे मृमिगृहों में गाड दिया था, अुन्हे अब अुखाडनकी कोशिश करने पर भी अुखाडना बन नहीं पडता ! यो, अब वह काल बदल चुका है । वह स्वातन्त्र्ययुद्ध अब अितिहास बन गया है । प्रस्तुत परिस्थिति से अब अुसका सबवही बाकी रह नहीं गया ! होगा भी तो अितिहास का वर्तमान से जितना सबब रहता है, अुतनाही ! स्वयं अग्रेज लेखकोंने अुस समय की जानकारी के सैकड़ों ग्रन्थ लिखमारे हैं । खुद मुझीसे अेक दो अग्रेज गृहस्थ अत्यत अुन्मुक्त रूप से मेरी आखों देखी जानकारी पूछने के लिये यहाँ आये थे । पर वह पुरानी दहशत जो हमारे मन पर अेकवार बैठ गअी थी, अुसकी वजह से कुछ भी खुले दिलसे कहते नहीं बनता । अिसी लिये, मैं अपन आप तुम्हे आजतक वह वृत्त कहता नहीं था । अन्यथा आज अुसमें छिपाने की बात ही क्या रहगअी है ? फिर अुसके कारण जो सजा भोगनी होती है, अुसे भोगन के लिये ही तो हम यहाँ अदमान में आय हुअे हैं । और अब तो हम अुम जन्मकैद को पूरी करके भी बैठ गये हैं ! ”

“अर्थात्, सत्तावन के साल के विद्रोह में लड़ाई करने की वजह ही से आपको जन्मकैद की सजा हुई? अदमानमें तभी से क्या जन्म कैदके सजायाफ्ता लोगो को भेजने में आता रहा है ? ”

“सत्तावन से पाच पचास वरस पहले अेक दो दफा अदमान में अपु-निवेश वसाने का यत्न अंग्रेजो ने किया था । पर अस समय जो थोडे बहुत भारतीय मनुष्य यहा लाये गये थे वे अुन भयकर जगलो और दलदलो में अनादि काल से भिनभिनाते आनेवाले रोगजतुओ और जलवायु के भवप्यस्थान में पडगये । विशेषत ठडे बुखार से तो वे बेचारे पूरी तरह अुच्छिन्न हो गये, और ये टापू मनुष्य की वसति के लिये सर्वथा अयोग्य समझ कर फेंक दिये गये (अपेक्षित हुये) । पर सत्तावन के बड (= विद्रोह) के अनतर, क्वचित् भिन टापुओ का अुन्ही मदगुणो के कारण, अस बडमें अंग्रेजों के विरुद्ध लडते हुअे परास्त हुअे हुअे हम जैसे शतावधि बडवालो को अिन्ही टापुओं में जन्म कैद भोगने के लिये भेजा गया । और अचरजकी बात यह कि हम लोग अिस टापू से भी सारे के सारे आते ही मर नही गये अुन सघन अरण्यवनो को, अुन सडे गले दलदलो को, अुन भीषण रोगाणुओं को, अस मारक वातावरण को, अस असाध्य ठडे बुखार को हम पूरे पडकर भी बचगये । और अिस रीति से अिस आजके अपुनिवेश के हमही मूल सस्थापक, आद्यपूर्वज, कुलपुरुष स्थिर हुअे । अिस टापू में अपुनिविष्ट होने के लिये भेजे गये अुन पहले बडवाले के जनाव में का ही मैं भी अेक हूँ ।—अभी-तक जीवधारण करके अवशिष्ट अुन बडवाले चार पाच व्यक्तियो में वृद्धतम । पर अिस दीर्घ जीवन के आनद की अीक्षा जब मेरे सेनापति तात्या टोपे फासी पर चढे—”

“तात्या टोपे को फासीपर चढाया गया था, अस वस्तु आप वहीँ थे ? ”

“नहीं नहीं ! वही तो शत्य मन में चुभ रहा है । काले पानी पर भेजे जाने की अपेक्षा हम लोग अपने सेनापति के साथ फासी गये होने तो हमें अधिक आनद हुआ होता, यही तो मैं कहता था । अंग्रेज अुन वस्तु हमारा दुश्मन था, पर तो भी अंग्रेज यह जाति से वीर ! वीरता की मतसे अुसे खरी परख, यहवान हम जानते थे । देखो, तात्या टोपे मरने तक सशस्त्र युद्ध में अंग्रेजभी दातो तले अगली दवाले अनी दृढ़ता और शूरता के साथ लडे ।

मृत्युदंड के वक्त सीधे फासी पर चढते समय अन्होंने कहा कि, 'मैं महाराष्ट्र के राजा का, शरीमत नानासाहेब पेशवा का सेनापति, मैं अंग्रेजों का अकित, प्रजाजन नहीं हूँ। अपने राजा की आज्ञा से स्वातंत्र्य के अर्थ जूझा हूँ, अतः मैं बड़वाला अपराधी हो ही नहीं सकता।' जिस अूसके वीरो चित्त कथन का अंग्रेजों के दिलपर भी अितना अधिक आतक बैठा, अंग्रेजों के मनमें भी अितनी अधिक आदरबुद्धि जागरित हुअी कि, तात्या टोपे को फाँसीपर मरण आते ही, वह देखने के लिये जमा हुअे सैकड़ो गोरे लोगो ने अूस शूर पुरुष के प्रेत के अतराफ गराडा (घरा) डाला और अूसके स्मृतिचिन्ह समझकर कितनेही अंग्रेज फरेच स्त्री-पुरुष अूसके सिर के वालो की लट्टें कतर कर लेगये। फ्रांस के पत्रों में अुपके दुःखद मृत्युलेख आय। पर हम अूनके सैनिक होते हुअे भी अूनके साथ ही अुम स्वातंत्र्य युद्धमें मरनेका भाग्यलाभ न कर सके, अूनका अंतिम दर्शन तक न कर सके।" अुत वृद्ध वीरने दीर्घ अुच्छ्वास फेंका !

"आप पहले ही से तात्या टोपे की सेनामें थे क्या ? अूनकी मृत्युसे कितने दिन पहले घायल हुअे ? कैसे पडे अंग्रेजों के हाथों में ? "

"वह कहानी लंबी है। थोड़ेमें कहना हो तो, मेरी और पेशवाओं के किसी भी आदमी से प्रत्यक्ष पहचान पहले बिल्कुल भी नहीं थी। हम महाराष्ट्रीय ब्राह्मण हैं। मूल बुंदेलो के आश्रित होकर अूत्तर हिंदुस्तानमें रहने के लिये गये। आगे चल कर मेरे पिताकी पीढ़ीमें अरानगर की ओर हमारा कुटुंब स्थायिक होगया। सत्तावनसे अंक दो बरस पहले शरीमत नानासाहेब के दूत हमारे गांव में आय और शीघ्रही अंक बड़ा भारी विद्रोह होनेवाला है अैसा कहकर हमारे तरुणों में महाराष्ट्र की हिंदुपदपादशाही पुनः स्थापित करने की चेतना का संचार करने लग। मराठों का राजा स्वराज्यार्थ पुनः शस्त्र हाथमें लेनेवाला है, जिस कल्पना के आतेही मेरा तरुण रक्त जागरित हो अूठा। अुतनही में खबर आअी कि, कानपुरमें अक बड़ा भारी विद्रोह हो गया है, शरीमत नानासाहेब ने कानपुर जीत लिया है। तथा अब खुल्लम सुल्ला लडाअी छड दी है। हररोज खबरें आन लगी। दिल्ली, लखनऊ, जगदेशपुर-जिधर देखो अुधर राष्ट्रिय युद्ध की बनबन्धि प्रज्ज्वलित होकर राजें, महाराजें, सरदार, भूमिदार, सैनिक, नागरिक-सारा हिंदुस्थान विद्रोह

कर अठा है ! यह सुनते ही हमारी नगरी अरामें भी अंक सैनिक पथक (जत्था) बह कर अठा और हम सब तरुण अुसमें शरीक होगय । ”

“ फिर ? तत्रवर्ती अंग्रेज सेना न आप लोगो को अंकदम पकडा नही ? ”

“ अंग्रेजी सैन्य था कहाँ, तालुके तालुके में । भारतीय सैनिक थे— वेही मूलठे हुअं । अंग्रेज अधिकारी अकेलाही था वहा । वह बोले तो, कलेक्टर, मैजिस्ट्रेट आदि के सारे अधिकार चलाने वाला, अ ओ ह्यूम साहब । सारा अरानगर मुलटा हुआ देखकर ह्यूम साहब न अपनी जान मुठ्ठीमें लेकर भाग-जाने का निश्चय किया । पर भागें तो कहाँ ? तब अुन्हो न अपने थाने पर घेरा पडने के पहले ही अंक युक्ति की । हाथ, पैर और मुंहपर काला रंग मला, अपनी अंक भारतीय नौकरानी का बुरखा माग लिया, अुसे तगस्थ स्त्रियो की तरह शरीरपर लपेट कर स्त्रियो का भंस बना । रातही रात में ह्यूम साहब अरा से निकल भागें । अुन दिनो, जहा अंग्रेज दीखें वहा बडवाले मार डालते और अंग्रेजो को जहाँ कोभी बडवाला दीखता तो अुसे वे लोग मार डालते । पर तादृश भयकर स्थिति में भी अुनके साथ अुनके विश्वास से रहे हुअं दो-तीन भारतीय सैनिको की मदद से अनेक परसगो में अुनकी जान बची और अतमें वे ह्यूम साहब दूसरे थाने पर मौजूद अंग्रेजो की छावनी में सुर-क्षित रूप से पहुँच गये । ”

“ अ ओ ह्यूम साहब ? अर्थात् राष्ट्रीयसभा निकालने वाले ह्यूम साहब ? ”

“ हा । अुन्हीनं भागें चल कर वह सस्था निकाली । अितनाही नहीं, अिस विद्रोह में, अुन पर आयी हुअी भयकर अवस्थाओ के कारण ही भारतीय जनता में अुन तादृश भयकर असतोष न फैलने देनही में अंग्रेजी राज्य की सुदृढता है यहवात अुनके मस्तिष्क में पक्के तौरपर चिचित होगयी, यह अुनके परवर्ती कालके कुछ भाषण जो मुझे यहा अदमान में अंक साहब के पास से पढने को मिले, अुन में मेरी समक्षमें आया । ‘सत्तावन के विद्रोह में अंग्रेजी राज्य पर टूटपडे हुअं भयकर अरिष्ट में जिन लोगो को दिन निकालने पडे अैसे किमो भी अंग्रेज अधिकारी को यह मान्य होना हो चाहियें कि, हिंदु-स्तान में सचनवाले असतोष को अदर हो अदर कढने और वढने देना योग्य नही । जिस तरीके से असतोष के वाक्य को स्फोट भिलता रहे, अुसकी भाफ

संचित होने से पहले ही निकलती चली जाय अंसी कोभी न कोभी सुविधा दूढ निकालनी चाहिये। भाफ को वेखटके निकलने देने के लिये यदि कोभी खतरे मे शून्य छिद्र-सेफ्टी वाल्व-तुम रखोगे नहीं, तो वह अंजिन को फोडकर बाहर निकल आयेगी। वह खतरे से खाली छिद्रही मैं जो निकालने के लिये कहता हूँ वह अंकाध राष्ट्रसभा है। ' अंसे अुसके सयानेपन के भाषण आगे चलकर जो हुअे, वह सयानापन हचूम साहव अुस अरा के अरिष्ट ही मैं सीख सके। "

" अुसके बाद अरासे कहाँ गये आप लोग ? "

" जाने दे रे वह सारा। होगयी सो होगयी। अब अुससे क्या करना है ? अब तो नयी अीट नया राज्य है। जो है अुसी को निवाहना चाहिये। "

" वह तो हयी है ? पर अपने बारे में तो कुछ कहिये ना, कैसे पकड मैं आगये आप ? "

" अरा से हम सीधा कानपूर गये और सेनापति तात्या टोपे के सैन्य मे प्रविष्ट हो गया। बीस हजार अग्रेजी सैन्य के साथ चढकर आये हुअे जनरल विंघाम का कानपुर की जिस भीषण लडायी मे सेनापति तात्या टोपे ने पराजय किया था, अुस लडायी में बडवालो की ओर से मैं स्वत लडाया। और अुसी लडायी में अिस घुटने पर अग्रेजोकी गोली लगने से घायल होकर गिरपडा और अुन लोगो के हाथमे जा लगा। परंतु मैं अग्रेजो ही के भारतीय सिपाहियो मे से अंक हूँ, अंसा कहकर वह बेर किसी तरह मारले जाने की युक्ति मैंने दूढ निकाली। और अुस अघाघुदी के लडायी के मौकेपर अनेक असभव बाते घटित होती हैं तद्वत् यह भी घटित होकर मेरी युक्ति फलीभूत होगयी ! जनरल विंघाम तात्या टोपे के हाथ से परास्त होकर जब अव्यस्थित रूपसे पीछे की ओर लौटा, तब अपने सैकडो घायल सैनिक अुसने जल्दबाजी में अंक सुरक्षित अग्रेजो की छावनी मे भेज दिये। अुनमें मैं भी भेज दिया गया। वहा ठीक हो जानेपर पुन निकल भागनेही को था कि अंक भारतीय सिपाही नेही मैं बडवाला हूँ, अंसी चुगली की, पर अितर सैनिको मे से कितनोही ने वह चुगलखोरही बडवाला है, अंसा कहकर चुगली की थी।

“अस वक्त ऐसी अलुट मुलट चुगलियाँ बराबर चालू रहती थीं। जैसे गडबडी के अके अग्रेजों की जानपर आवीतने वाले विपत्ति के प्रसंग में वैयक्तिक पूछताछ और पताचलाई नामका पदार्थही नहीं था। अके साथ सजा-फासी तो फामी, जन्म कैद तो जन्मकैद। बड जल्दी समाप्त हो भिस बुद्धि से अकेसाथ वपमा। अस वादल (गडबडी) में और अस छुटकारे में, मैं जिनमें या अन कैदयो की सारीकी सारी टुकडी के नामपर आजन्म कैदका टिकट निकला। और हिंदुस्तान में विद्रोहियो की वशवृद्धि ही नहीं हो भिस शर्त के कारण से अनावधि विद्रोहियो की जन्मकैदी टोलियाँ तावों में भरभर कर, 'मनुष्य निवास के लिये अयोग्य अब मारक' के रूपमें अग्रेज अधिकागियो द्वारा अस कालमें निर्धारित किये गये भिस अदमान बेट में लाकर छोडदी गयी। अन्ही में मैं भी अके था। बिलकुल पच्चीसी के अदर। मनुष्यवस्ती के लिये मारक समझकर ही भिस बेट (टापू) में लाकर छोडे गये अन अस्मादृश अनावधि सत्तावन के बडवालो ने अपने असह्य कष्टों की, घोर यातनाओं की, जमे हुअे खून की, भग्न आशाओं की, कपीण हड्डियों की, और प्रेतों की राखकी खाद और पानी देकर उसी टापूको आज मनुष्य निवासके लिये, योग्य बना डाला है। वही यह अदमान अपने हिंदुओं का दिनोत्तर वृद्धिगम्यमान अके नवीन अपनिवेश हो बैठा है। अितनीही है हमारे जन्मकी किंवा जन्म कैद की मार्यकता।”

“पर अब अकेदफा हिंदुस्थान में जाकर आने की अनुज्ञा क्यों नहीं मागते आप? अब तो आप दाखलेवाले स्वतंत्र बग के हैं, ऐसे परीपास होन्डम को अनुज्ञा देते हैं न देस जानेकी? किन्ही प्रकरणों में हिंदुस्थान अब बहूत सुधर गया है। असे आपको अकेवार देखना चाहिये।”

“क्या देखना है अब वहाँ? जैसे यह कालेपानी का अपनिवेश दिनानुदिन नमृद्ध होता जा रहा है, ऐसा मैंने कहा, उसी तरह हिंदुस्तान सुधरता जा रहा है, ऐसा तुम कहते हो। पहले हम सत्तावन के दाखलेवालों को ही कोअी भेजता नहीं वापिस, वह नियम हमें लागू नहीं है, और गये भी तो जो हिंदुस्तान हमें देखना था, वह अब है कहा? अब जैसे यह जन्मकैदी अदमान वैसेही वह हिंदुस्थान।” अपने हृदय के भीतर दीर्घकाल ने गडे हुअे शत्रु के छोडे जाने की वजह में असे अके दीर्घ निश्वास छोडा।

मैंने व्यर्थ ही अिमको दु खित किया अैसा प्रतीत होकर अब कुछ दों चार सात्वना के शब्द बोलने चाहिये यह सोच कटक कहने लगा,

“चाहे कुछ भी हो, देव तो न्याय का पृष्ठरक्पक है । न्याय की ही जीत अतमे—”

“हत् ! न्याय और अन्याय का जय और पराजयके साथ कोअी सवध नहीं है, यह हम जितना जल्दी सीखे अुतना अच्छा । न्याय और अन्याय यह प्रकरण निराला है और जय अेव पराजय निराला । जयापजयका यदि किसी के साथ सवध है ही तो वह पराक्रम से है न्याय से नहीं । ध्यान में रख, पाठकर वह शब्द पराक्रम । जय का यह मन्त्र । वह शब्द सीख । ”

“अप्पा, अप्पा, अप्पाजी । ” अुसके चित्तको अुस उच्च वातावरण में से खम् करके नीचे लाती हुअी वह नन्ही भी अुपा हुसी, “ यह देखो, अप्पा, अप्पा, तुमभी कटक बाबू को नये शब्द सिखा रहे हो । मैंने कहा था, अुन्हे कुछभी नहीं आता, आखिर वही सही निकला । वही मही निकला । वही मही निकला । । ” अुस वच्ची को अुस विषय में से अुतनाही समझा । ।

अप्पा भी हँसे । “ कम्बस्त कही की । ” अैसा कहते हुअे कटकने अुमके गालपर अेक टिचकी मारी ।

अुतने ही में आगन के फाटक तक गया हुआ मोहन खिटा खिलाता हुआ आया,

“ आगअी ! मा आगअी ! मा आगअी ! ”

अुपाने भी सामने देखकर अुसी तरह ताली पीटी,

“ मा आगअी, मा आगअी ! ”

और कौन पहले जाकर मा में लिपटता है, अिस बात की स्पर्धा में दोनों बच्चे दौड़े । फाटक में मा के आते ही मोहन ने अुसे पहले पकडा । पञ्चादेव, अुषा अुसकी जाघो से लिपट गअी । मा भी अुन दोनों के मटामट चुम्मे लेते हुअे, अुनकी लिपटनों के पेच ही में जितना चला जा सके अुतना चलते हुअे, अुनके मृदुल कुतलो पर कर्मेण हाथ फेरते हुअे खाट के पास आअी । अुतने ही में कटक अुसको नजर आया ।

“ बापरे, गहही देखते बंटे थे न यहाँ ? मिलगअी न, अेक बारगी आपकी मैरिणी मुझें । बिल्कुल पेट भरकर बातचीत करके आअी हूँ, अुमसे । ”

अस महानुभूतिशील बृद्ध ने अपनी स्तुषा को अदर जाने के लिये अंक अूपरी चाय बनाने का निमित्त भी मुना दिया। अनसूयाने भी वह समयज्ञरूप से पहचान कर अदर जाते जाते कटक बाबू को बुलाया।

“आभिये न, कटकबाबू, अदरही। मैं चाय तय्यार करती हूँ, तबतक बातचीतही करे, आभिये। मीठी मीठी ख़्बरे कितनीही सुनानी हैं आपका आपकी अपहृत मैत्रिणी की। आभिये न।”

बोलते बोलते असने झुककर नन्ही अुपाके माथे की विंदी कुछ ठीक की, मोहन के कमीज की कॉलरकी तह को थोडासा व्यवस्थित किया। तत्पश्चात् दोनों वच्चों के हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर अदर चली। असने “आभिये न, अदरही आभिये।” असा अेकवार फिर घरके दरवाजे में घुसते समय आमत्रण दिया—असके साथही वापिस आयेहुअे मोहनने अपने नन्हे हाथों से कटककी चिच्ची अुगली पकड कर असे खीचना शुरू किया। कटक अुठा, और माना मोहन की ताकत ही से वह खिंचा चलाजा रहा हो अिस बातकी तसल्ली मोहन को देने के लिये पर वास्तव में, अूपर अूपर वहाना करने के लिये “अरे, मुन्ना, आया आया। तोड डाली न, मेरी चिच्ची अुगली।” अिस तरह हसता हुआ मोहन के साथ अदर गया। अण्णाजी भी वह देखते हुअे मनही मन थोडीसी नट खट हसी हसे। बादमें पासहीपडे हुअे “माप्ताहिक टाइम्स नामक अंग्रेजी पत्रका अक हाथ में लेकर पढते हुअे बैठ गये।

कटक के अदर आने के बाद अनसूया बाअीने असे जो जो जानकारी अभीष्ट थी सो यथाशक्ति रमाल रूपमें कह सुनायी। दूर गये हुअे, नहीं, नहीं, लापता हुअे हुअे प्रियजन का अैसे अप्रत्याशित रूपसे पता लगने के बाद प्रेमी हृदय के लिये असका नमाचार कितना पूछू और कितना न पूछू अना कम प्रकार हो जाता है और अैसे समय असके बीच बीचमें अुकता देनेवाला जिजामा का भी विरम न करते हुअे समाधान करना यह प्रेमी दूतका किन प्रकार आद्य कर्तव्य होता है, यह जान सकने की सहृदयता अनसूया में थी। अससे कटकने अेक महीना पहलेही विनयपूर्वक कहा था कि, “जिन म्त्री कागगारपर वह म्त्री जमादारनी का काम करती थी, अुसमें असकी अेक बहन आयी हुयी होनी चाहिये। असके माथ ही असको भी जन्मकंद की म्जा

हूँ थी । पर उसे हिंदुस्तान ही में अंक अलग कैदखाने में भेज दिया गया था, अन उसका आगे चलकर क्या हुआ, उसे भी उसकी तरह काले पानी भेज दिया गया है, या हिंदुस्तान ही के कैदखाने में रखा गया है, इस बातकी वृत्त खोज करने पर भी कुछ पता नहीं चलपाया था । तब उसका पता खोज निकालने का प्रयत्न जितना हो सके उतना अनसूया देवी करे । ” कटकने जवसे उससे यह विनति की थी, तब से अनसूया उस खोजमें थी । पर कटकद्वारा बतायी गयी ‘कटकी’ नामकी उसकी वृत्तसरीखी कोभी लड़की उस वक्त काले पानी के स्त्री कारागार में नहीं थी । पहले भी आने का पता नहीं लगता था । परंतु इस महीने जो ‘चलान’ आया उसमें कटकी नामकी एक तरुण लड़की, आजन्म कैदकी, कटकद्वारा निवेदित बीस के नीचे की अमरकी, रूपवती, जिसके सजा के विवरण पत्रमें दीगयी जानकारी कटकद्वारा दी गयी जानकारी से मिलती है, ऐसी एक आयी है, यह बात अनसूया जमादारनी के ध्यानमें आठ-दस दिन पहलेही आयी थी और उसने वह बात कटकको सात आठ दिन पहले ही बता दी थी । उसे प्रत्यक्ष भेटकर उसकी जानकारी, जितनी हो सके उतनी उसी के मुँहसे निकाल लेने का काम अनसूयाने तब अपने ऊपर लिया था । और उसके अनुसार मौका साध कर, ‘कटकी’ से मिलकर उसने उसके कैदखाने की गड़बड़ी में जितनी संभव थी उतनी जानकारी आज पता चला ली थी । उसीकी मार्ग-प्रतीक्षा अत्यंत उत्सुक व्याकुलता से करते हुए बैठा हुआ कटक उस वारे में निश्चय के अनुसार अनसूया की तरफ में कुछ न कुछ समाचार अवश्य मिलेगा, इसी अस्मीद से आज उनके घरग वटी हिमत में उस भाग के वरिष्ठ अधिकारियों की आँख बचाकर और नीचे के चौकीदारों की मुट्ठी दबाकर स्वत आया था ।

क्या कि कटक भलेही कैदियों का बाबू था, पर था एक कैदी ही, अन उन ‘दागलेवालों के’ स्वतंत्र ग्राममें इस प्रकार समय अमय आने जाने की अनुमति उसे नहीं थी । और इसी लिये साझकी नाकेवदी चौकी चौकी पर हाने से पहले ही उसे निकलकर वापिस जाने की जल्दवाजी थी ।

उसी जल्दवाजी में उसने घरमें जातेही अनसूया से अतने सवाल, बीच बीचमें, अतने अवराममें, कुछ व्यर्थही बारबार तो कुछ अवरेही पूछे

थे कि, अुनका सुसगत मथितार्थ अुसके ध्यानमें आसके और अुसके अनुसार अुसे अुसके अनुरोधसे जो कुछ निश्चित सदेश कहनेका है, अुसकी रूपरेखा स्थिर की जासके अिमके लिये भी मौका अथवा अवधान नहीं रह गया। चोर जानवर, चोरीके खेतमें घुसने के पश्चात् जिस तरह भराभर जो दीखे अुसी घासके, कडवीके हरी घास के ग्रास तोडकर मुहमें ठूस लेते हैं, वैसे ही अुस थोड़े से समयमें जितना कुछ पूछा और सुना जा सकता था, अुतना पूछ सुन ही रहा था कि, साढ़े पाचका घटा वजा। लौटने की वह विलंबित से विलंबित वेला थी। अतअं व अुमने अनुसूया को अितनाही सदेश आखीर में दिया कि—

“मेरी वहिन से कहियो कि,—घवराये न। मैं अेक अठवारे के भीतर आगे का निश्चय जतला दूंगा। तबतक धीरज धरे और आरोग्य की चिंता अुस खूनी वदीगृह की यातनाओं में भी जो अुपाय सभव हो अुनसे करे।”

अितना सदेश कटकी में कहने के लिये अनुसूया के पास रखकर और अप्पाजी को जल्दवाजी में नमस्करके कटक लुकता छिपता अुस घर में से बाहर निकला और वह झाडो और झखाडो में ढँकी हुअी पहाडियो से घुमावा-फिरावो से वापिस जाने लगा।

मुँहपर फडाफड जड दिये थे ! : : : १४

कंठक अप्पाको नमस्करके अुस पहाडी के झाडो झखाडो में से लुकते छिपते जल्दी जल्दी जो निकला, सो अुन दासलेवालो की बस्तीवाले टापूकी जो चौकी थी, वहा तक विलकुल मुरक्वित रूपमें जा पहुँचा। चौकीवाला अुमके हाथ के नीचेका ही था अत अुनने भी अुसकी ओर दुर्लक्ष करके सटपट आगे निकल जाने का अियारा किया। वह रक्वित मार्ग साँझके वक्त ठ होनेमें पूर्वही कटक आगे चला गया और कैदियों के लिये खुले हुअे राजमार्गपर अुसके अेक वारगी लगते ही अुसका जीव थोडामा नीचे पटा। (अुसे निश्चिन्ता का सुख अनुभव हुआ)

अदमान में काले पानी के कैदियों को लाये जाने के बाद अुस रूप कारागृह में प्रथमतः ठूस दिया जाता था, जिसकी तिसकी श्रेणी की वारी के मुताबिक प्रथम दंडित और न्यूनापराधियों को, बरतावा अच्छा रहा तो, चहुँदा छह महीनों के बाद कारागृह से बाहर छोड़ने में आता था । जो सघे हुअे-खुराँट, बहुवार दंडित होते, अुन्हे अुन की अपराध भीषणता और वहा के अुम कारागार के अदर का बरतावा लक्ष में रखकर, अेक से पाच बरस के बाद, साधारणतः कारागृह से बाहर भेजा जाता था । कटक जब काले पानी में गया, अुस वक्त कारागार बाहर छोडे हुअे कैदियों के रहने के वास्ते जो सरकारी बँरके बाधी गभी थीं, अुन्हीमें रखा जाता था । लकड़ी का काम, जगल कटाओ, ओटका काम, घर बाधने का काम, चाय के बागान, रबरके बागान परभूति नानाविध कामों के बडे बडे कारखाने अदमान के भिन्नभिन्न टापुओं में स्थापित रहते थे । अुनमें वे बदीगृह से बाहर छोडे गये कैदी टोली-टोली से भेजे गये कि अुन्हे अिन बँरको में रखदिया जाता था । अुनकी ओर से सस्त काम करवा लिया जाता था । पर किन्ही निश्चित टापुओं में (तालुको में) अुन्हे खुले तौर पर छुट्टी का वक्त बिताने की मर्जी के मुताबिक खाने पीने की, कुछ चुनीदाभिष्ट मित्रों से मुलाकात करने की, आज्ञा लेकर दूसरे टापूमें जाने आने की, बोलने की छूट रहती थी । अुन्ही में किन्ही दंडितों को बदी जमादार अित्यादि बनाने में आकर मासिक दो-चार रुपये जेब खर्च भी मिलता था । अैसी स्थिति में दस-अेक बरस व्यवहार ठीक रहा तो अुनमें से अच्छों को "दाखला" देकर स्वतंत्र रूपसे घरवार तथा खेतीबाड़ी बमाने और करने की छूट मिल जाती थी । अिन्ही को "दाखलेवाले" स्वतंत्र कहा करते थे । अुन दाखलेवालों के छोटे-गाव, कैदियों के टापूसे अलग रक्षित वस्तियों में बसाये जाते थे । अुन 'दाखलेवाले' स्वतंत्र गावों में बिना दाखलेवाले कैदियों को विशेष अनुज्ञा के बगैर जाने नहीं दिया जाता । अुन दाखलेवालों में, दाखलेवाली कैदी स्त्रियों से शादी करने के बाद, जिन लोगों को बच्चे हो जाते अुन लोगों के बच्चे मात्र जन्मत भवत्था स्वतंत्र नागरिक समझे जाते थे । ये परिवार स्वतंत्र खेतीबाड़ी तथा अन्य कामधंधा करके अपना पेट भरते थे । अुनमेंसे कितनेही लोग अपने कर्तृत्वमें अच्छे धनवत्तर भी बन सकने थे ।

काले पानी पर गयी हुयी दंडित स्त्रियों की भी व्यवस्था असीही होती थी। पर उनकी बढ़ती मात्र शीघ्र होती थी। काम पुरुषों के सदृश कठिन नहीं रहता। स्त्री वदीगृहमें प्रथम पांच अंके वरस अन्ह वद रखते थे। फिर अंके विहार-स्थानमें अन्ह छुट्टीमें घूमने फिरने की छूट मिल जाती थी। वहा, जिन्हें शादी की अनुज्ञा मिल जाती थी, अैसे कैदी पुरुषों को भी भेजा जाता था। कडे पहरे में अून स्त्री पुरुष कैदियों को अूस छुट्टीमें अंके दूसरों से जानपहचान और प्रेमपरिचय प्राप्ति करने का मौका दिया जाता था। यह विहार स्थल क्या था, लंडन का 'हाजिड पार्क', पूने का बडगार्डन, अूस काले पानी के पापियों का प्रेमोद्यान। वहा होनेवाले प्रत्यक्ष परिचय के अनंतर यदि किसी स्त्री पुरुष का आपस में विवाह करने का निश्चय अभय समति से स्थिर हो जाता तो योग्यायोग्य का निरीक्षण करके सरकार जिन्हें अनुमति देती वे आपस में रजिस्टर्ड पद्धति में शादी कर लेते और "दाखला" मिलने पर अूस जोडे को स्वतंत्र गावमें भेज दिया जाता था। शादी के वास्ते जातपात का विलकुल बधन नहीं रहता था। किन्ही निश्चित कारणों के लिये घटस्फोट (तलाक) भी मिल सकता था।

किमीने फिर अपराध किया तो अूसका "दाखला" रद्द करके अूम शस्त्र को पुन कैदमें डाल दिया जाता था। यथारीति जाच पडताल करके फाँसी तककी सजा अुमें मिल सकती थी। हत्याका प्रयत्न भी वयार्ह अपराध अदमानके कैदियों के प्रकरणमें समझा जाता था। अुदड, अधारी और अमानुष प्रवृत्ति के अतावधि जन्म कैदियों को अीदृश अत्यंत कठोर अनुशासन में रखे बिना, अूस टापूमें जीवनमुश्किलता, अातना और मुब्यवस्था को कायम रखना पूर्णतया दुर्घट ही था।

अपराध विज्ञान (Criminology) के ध्येय तीन हैं। प्रतिगोध, प्रायश्चित्त, और प्रगति। अपराधियों में बदला लेना यह मनुष्यकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। 'दातको दान और आस्र को आस्र' यह यहूदियों का धर्म दंडक (=प्रथा) था। जिस अवयवद्वारा अपराध हो अुमका छेद कुछ प्रकरणां में तो मनुस्मृति क्या, जग के प्राचीन ग्रीक अित्यादि निर्वध (कायदे) पठानों जैसे किंवा सर्वथा जगली जातियों में 'जिसने हत्या की वह पकडमें न आया तो अुमके वशमें किमी न किमी को जान से मार डालने

का रुढाचार क्या, सभी प्रतिशोधो के ही अग्र अथ सौम्य प्रकार है। उसके आगे का विवेक ऐसा है कि, राजसत्ता को तो अपराधी का प्रतिशोध, बदला, यही एक अद्देश्य न रखके, जिससे कृतकर्म के भोगने पडनेवाले दडसे उसपर आतक बैठ मके अितनाही दड, प्रतिवधक प्रायश्चित्त देना चाहिये । चोरका हाथ ही न तोड डालकर, हाथ को अितर उपयोगी कामो के लिये सुरक्षित रखकर, चोरी करने भर का उसे भय लगे, सजा के डर से तो वह चोरी न करे अँमा उसके अुदाहरण को देखकर औरो परभी आतक बैठ जाय, अँसा दड देना अुचित है, यह अगली सीढी हुअी । प्रतिशोध यह ध्येय न होकर प्रायश्चित्त यह दूसरा ध्येय अिष्टतर प्रतीत होने लगा । अुसमे भी आगे जाकर अपराधियो का मन केवल मजाके डरही से नही, बल्कि मूलत ही म्वेच्छा से अपराधो मे परावृत्त किया जावे, जिन परिस्थितियो के कारण सुशील मनमे अपराध की प्रवृत्ति अुत्पन्न होती है अुन परिस्थितियो को पलटा जावे, शिक्षण, सत्सग मनोविकास अित्यादियो के सपोषण से अुनके मनो को ही ममाजशील और सुमस्कृत बनाया जावे, अुनके भीतर की मानवता को बढानेवाली, अुनके स्वभावो की मुधारणा की जावे, अुनके भीतरकी मानवता की ही प्रगति होती जावे, यह अपराधियो के माथ व्यवहार करने का तीसरा अुद्दिष्ट रहना चाहिये ।

सब मिलाकर देखने से, अदमान के अपराधियो से बरताव करने की जो नीति तीस चालीस बरस पहले आकी गअी थी, अुसमे कटककोट्यग्रता न भी हो तो भी बव्हशमे अिन तीनों शास्त्रीय अुद्दिष्टो का अेक अशास्त्रीयही क्यों न हो पर सहेतुक मिश्रण किया हुआ था, यह अुपरिवर्णित काले पानी के दडितो के अुस काल के वर्गबध पर मे, बढतियो के बरमपर मे, सुधारणीय और दु सुधारणीय कमीटियो के अनुसार प्रत्येक के लिये पात्रापात्रता के अनुरूप कठोर अथवा मृदु म्वम्पके विभिन्न बरतावे की नीतिपर मे दृष्टिगोचर होगा ही ।

जिस कैदी का दम बारह बरस के कठोर अनुशामन से, कडी मशकब मे और कृतकर्मो के बथेष्ट प्रायश्चित्त के भी अुपभोग से, धील सुबरा हुआसा प्रतीत हो, अुन्हे " दाखला " देकर अदमान के अदमान में ही म्वतग्र रूपसे

रहने की अनुज्ञा मिलनेपर, अन्तर्गत गाव अलग से बसाने में और सुधरे हुओं के गावों में अच्छे व्यवहार के बरह बरस जिनके अभी पूर्ण नहीं हुअे हैं, अन्तर्गत कैदियों को मुक्त रूपसे जाने आने न देने में भी अधिकारियों का यही कटाव्य रहता था कि, जिस प्रकार के पृथक्करण से अन्तर्गत सुधरे हुओं का भिन्न न सुधरे हुअे चड प्रकृति कैदियों के अपद्रव से संरक्षण होवे और अन्तर्गत कुसंगति से अन्तर्गत दाखलेवालों का किंचित वही पैदा हुअी हुअी अन्तर्गत नअी पीढी का अवपतन न होवे ।

कटक को भी तब काले पानीपर आकर पाच अंक बरसही हुअे थे, अतः वह अभी कैदियों की श्रेणीमें ही था । अन्तर्गत कक्क-कारागृह में थोड़े दिन सख्त हस्तश्रम करना पडा । अन्तर्गत के बाद लिखनेका काम मिला । वहाँ अन्तर्गतने बहुतही अच्छा बदीगृहीय व्यवहार रक्खा अतः छह महीने के बाद अन्तर्गतसे कारागृह में से निकाल कर बाहर टापू में लेखक के काम पर भेजा गया । अन्तर्गतने अगेजी का भी लेखनवाचन बढ़ाया । काम भी अच्छा किया, अधिकारीवर्ग अन्तर्गतको चाहने लगा । अदमान में के अत्यंत कठिन और कष्टप्रद कामों में गिनेजानेवाले जगल कटाअी के कामपर अब अन्तर्गतकी, गिनती और देखरेख करनेवाले "कैदी बाव" (Convict Clerk) के तौरपर नियुक्ति हुअी थी और अन्तर्गतके हाथके नीचे सौ सश्रम बदीवानों की टुकडी सघन अरण्यच्छेदन के कामपर भेजी जाती थी । पर तो भी वह स्वतः चूकि अभी अन्तर्गतसे काले पानीपर आकर पाचही बरस हुअे थे जिस लिये, नियमानुसार कैदियों के वर्गही में अतर्भूत होता था । और इसी लिये अन्तर्गत दाखलेवालों की वस्तीमें अन्तर्गतसे मुक्त रूपसे जानेजाने की प्रत्यक् अनुमति नहीं थी । अप्पाजी के परिवारके साथ जगल कटाअी के लिये जाते आते योगायोगसे पहिचान होकर अच्छी धनिष्ठता भी जो हो गअी वह भी अतस्थ रूपसेही थी और अतर्गत आज भी वह अन्तर्गत वस्तीमें वहाँ के चौकीदारों के साथ अतस्थ सघन बाधकर ही हमेशा की तरह चोरी चोरी भेंटने के लिये जव गया, तब वह भेंट माझको चौकीपर आना जाना बंद करने के पहले समाप्त करके और अप्पाजी से बिदाअी लेकर अन्तर्गत टीलेपर से लुक्ते छिपते अतर्गतमें बदीवानों के लिये खुले हुअे और अन्तर्गत जगल तुडाअी की टुकडी के रोजमर्रा के रास्ते पर आतेही अन्तर्गतकी जानमें जान सी आगअी ।

कटक के खतरे से शून्य रूपमें राह पर लगने के बाद अुसके मनमें अनसूया के मुँह से मालती के बारे में जो जानकारी बहुत दिनों के बाद मिली, अुसके सवध में विचार चलने शुरू हुअे । गत पाच वरसों का सारा अपना अितिहास अुसकी आँखों के सामने आकर खडा हो गया । अुन दोनों विषयों में ही, अुसदिन अप्पाजीने सत्तावन के स्वातन्त्र्य युद्ध में भाग लेनेकी जो बात अुससे कही थी और अुसके जाननेके साथही अुस कुटुब के बारे में जो अेक राष्ट्रीय आदर प्रतीत होने लगा था, अुसके विचार भी मनमें आ रहे थे । अुनके अनुषंग से अुस कुटुब के साथ कटक का परिचय कैसे होगया, और कैसे बढ़ता गया, यह चरित्रभी अुसके विचारचक्रों में गुफित होता जा रहाथा । और सबसे महत्त्व की जो चिंता, 'आगे क्या चरना चाहिये' यह भावी कालके गर्भ में विद्यमान घटनाचक्र अुन अतीत कालिक घटनाचक्रों की स्मृतियों को पुन पुन पीछे धकेलते हुअे, 'मेरा निर्णय पहले करो' अैसा जताते हुअे अुसके सामने बलपूर्वक आकर खडा हो जाता था ।

ये सारे विचार किसी भी विषय पर क्रमेण अुसके चित्त में नहीं आते थे, बल्कि अुलझे-सुलझे रूप में आगे पीछे, बीचके बीचमें आते जाते थे । डेढ दो मीलके अुस रास्ते पर झपटकर चलते समय कटक अुन विचारों की गुरझट में विलकुल अुलझ गया था । अुन विचारों की गुरझट को मुलझा कर यदि विषय-वार क्रम लगाया जाय तो मालती के प्रकरण की जोड तोड साधारणत अिस तरह की जा सकती हैं ।

अप्पा के कुटुब से परिचय कुछ महीनों पहले जब हुआ था तब अुसे मालूम पडा था कि अुसकी स्नुषा अनसूया स्त्री बंदी गृहकी अेक 'दाखलेवाली' जमादारनी है । काले पानी पर आने के बाद से, अदमानके स्त्री बंदी गृहमें मालती आयी हुअी है या नहीं किंवा अुसे आजन्म कैद हो जाने के पश्चात् हिंदुस्तान के ही किसी कैद खाने में रोक रक्खा है, अिसकी वह खोज जोरशोर से कर रहा था । परंतु स्त्रियों के बंदी गृहपर सख्त पहरा रहने के कारण और अुसमें पुरुष कैदियों का प्रवेश भी न हो अेवच सवध तक न आये अैसी पक्की व्यवस्था थी । अतः कटकों अुस बातका लेख भर भी ज्ञान नहीं हो पाया था । जो जानकारी अुसे मिल पायी थी वह यही थी कि कटकी नामकी कोअी स्त्री कैद

स्नाने में हिटुम्नान ने नहीं आयी थी। जब अमन छे सात महीनो पहले अन-
 मूया वाओ मे धिम बारे में जानकारी पहली दफा पूछी थी, तब भी यही पता
 चला था कि कटकी अस कैदखाने में आयी नहीं है। तम्मात्, मालती को
 मजा हो जाने के बाद अमका क्या हुआ, अतद्विषयक चिन्ता उसे निरंतर व्याकुल
 करती थी। असकी याद आतेही भोजनमें मिठास नहीं मालूम पड़ती थी।
 वह उसे जब पहले प्रत्यक्ष रूपमें भेटती थी अस वक्त भी उसके स्पर्श के
 लिये वह जितना रोमांचित नहीं होता था, अतना अब सिर्फ स्पर्श के स्मरण
 मात्र में हो अठता था। अन्न जब मिलता है अम समय वह जितना लगता
 है, असकी अपेक्षा भी वह जब दुर्लभ हो जाता है तब असकी स्मृति ही में
 वह सौ गुना अधिक मीठा लगता है। पुन अब उसके मनमें मालती के अम
 स्पर्श की याद आतेही पहले की तरह केवल स्नेहकी भावनाही जागरित न
 होकर अपभोग की भावनाभी अदीप्त होने लगती थी। वह माकपात् जत्र
 मेरे पास थी, तब मैं असका आलिंगन लेने के लिये क्यों प्रवृत्त नहीं होता था,
 किस तरह प्रवृत्त नहीं हुआ, किसे मालूम। किसी बात का अम रह रहकर
 खेद होता था। आखिरी रात, असको सतानेवाले अस मुमलमान गुडेकी
 मार डालने के बाद जब अम भयकर माहम के परिणाम से आन्तरकपा फग्न
 के लिये मालती के साथ अस देवालय में भरे अंदरे में जाकर छिपा था, अस
 रात को तो नीदमें मैं डरके मारे धरयर कापती हुमी वह दचक कर अठी,
 अपने आप अस के गले से लिपटी और 'मुझे अपने मग लेकर सो, आ' अने
 अपने आप उसे बुलाकर उससे चिपट कर सोगयी, अस समय की अम प्रत्येक
 चेष्टाओ की स्मृतियाँ अब अम अंकात में रहते समय बारबार होती थी।
 मालती के केशों की लट, वह जब अमकी छाती में चिपट कर सोयी थी, अम
 समय, अस रात उसके गालों पर जैसे रुकती थी, विलकुल अनी तरह पुन
 मानो अमके मुखपर और गालोंपर रुल रही हो असा अम भास होता था।
 अमका मारा अतकरण काम-कपित होकर यरता था, पछतावे में निर-
 मिलाता था कि, अमरात तो कम अज कम, मैं केवल समय का और भी
 मकोत्र का शिकार निष्कारण क्यों बना? अमून का प्याला ओठों के पास
 रखा, पर पीने की ही बात भुलादी। अमके ममोगमुख में मैं जन्मभर के लिये
 वचित होगया।

प्रेमिक व्यक्ति समक्ष माग्निध्यमें रहे तो सर्वथा आलिंगनमें भी उसकी अिच्छा अनिच्छा का दबाव उसपर अनुरक्त रहनेवाले प्रणयी जनकी अनुमत्त अिच्छापर कुछ न कुछ पडा हुआ रहता ही है । पर जब उस प्रेमिक व्यक्ति की स्मृति के साथही उसपर अनुरक्त प्रणयीजन कल्पना के मंदिर में विहरने लगता है, उस समय उसके मनकी अिच्छामें अनिर्वच रूप से प्रकट होने लगती है । उसके मनके अनुरूपही सब कुछ हो रहा है, ऐसा मनको समझानेकी राहमें किसी किस्मकी बाधा बच नहीं रह जाती । उसकी अतृप्त और अव्यक्त वासना सारा सकोच छोड़कर अपनी अिच्छा पूर्णकर सकती है । उस प्रेमिक व्यक्ति का, वह समक्ष सन्निध रहते समय जिस हृद्गत को कह डारने में मन लगाना है, वह उसकी स्मृतिमूर्ति में खुल्लमखुल्ला कहने में कोई सकोच नहीं होता । अपनी लहर के मुताबिक ही उसकी भी लहर बनाली जा सकती है ।

कटक की भी अवस्था उसअंकात तिलमिलाहट में वैसीही होती थी । मालती उसके सन्निध समक्ष रूपमें थी तब उसके विषय में कामुक भावनाओं उसके असन्न मनके ही भीतर बोआ जा रही होगी तो होगी, पर वे उसके सन्न मनसे भी खुली तौर पर अपना हृद्गत कहने में लजाती थी । पर अब उस विरहजन्य अश्रुविंदुओं के जल से सिक्त होते होते अकुरित होकर, पल्लवित होकर, उसके सन्न मन की भूमिका में भी वहार पर आकर रहने लगी थी । पहले प्रथमतः उसके कल्याण के अर्थ, और अपने कर्तव्य के अर्थ उसे सकट में से मुक्त करके सुखी बनाने के काममें अपनी जान उसने खतरे में डाली थी । पर अब उसके कल्याण के लिये किवन अपने कर्तव्य के लियेही नहीं, तो उसके साथही उसकी प्राप्ति के लिये और उसके सभोग के स्वर्गीय सुख के लिये भी वह तडफडाने लगा । उसे सकटमें से छुड़ाने के काम में अपनी जानको पुनः अंकदफा खतरेमें डालने के लिये हिचकिचाहट नहीं हुई ।

और उसे आज अनमूयाने जो खबर दी थी उसे देखते हुए तो मालती उस म्त्री वदीगृह में भी जानपर बीतनेवाले सकट में थी । उसे यदि छुड़ाना हो तो कटक को भी अपनी जानको पिछली दफा की मानिंदही अंक भयकर खतरे में प्रवेष्टना लाजमी था । जिस दफा का सकट कोई दूसरा उसपर नानेवाला था यह कहने की अपेक्षा यह कहना ज्यादा मौजू होगा कि, वह

शुद्धी अपनी जान का खतरा मोल लेनेवाली थी। उसने स्वतः ही अनसूया के हाथ तादृश अत्यंत करुण-व्याकुलतापूर्ण मदेशा पहुँचाया था।

अनसूयाको उसने 'कटकी' का पता चलाने के काम पर पाच-छ महीनों से नियुक्त किया हुआ था। पर उस स्त्रीवदीगृहमें कटकी नामकी कोई स्त्री तबतक आभीही नहीं थी, ऐसा उसे मालूम पड़ा था उस वक्त। तथापि उसके घरपर उसके बच्चों को-मोहन अंषा को पढ़ाने के लिये कटक हमेशा जाता आता था। अनसूयाको वहन मानकर भाभी दूजके मीकेपर तथा अन्य त्यौहारों पर उसे भेंट के तौरपर कुछ न कुछ दानव्य अवश्य दिया करता था। उसके सुशील-विलोभनीय स्वभाव के कारण, उसकी सुविद्य योग्यता के कारण नानाविधों के सार्वजनिक हिताहित की चिंता के कारण प्रौढप्रज अप्पाजी को उसकी बहुत चाह थी। उसकी यह घनिष्ठता जिस तरह बढ़ती जा रही थी, अतः अनसूयाने भी उसका कटकी के पता चलाने का काम मन से करने का सकल्प कर लिया था।

जिस दिन अपरिनिदिष्ट मुलाकात उस कुटुंब को कटक ने दी थी उसके आठ अंश दिन पहले ही कटकी नामकी कैदी स्त्री हिंदुस्तान में काले पानी की सजा पाकर उस अदमान के कैदखाने में आयी है, यह अनसूया का मालूम पड़ गया था। उसकी प्रत्यक्ष मुलाकात का मौका पाकर अनसूया जमादारनीने उसदिन कैदखाने की ऐसी चोरी छिपे मुलाकात में जल्दबाजी में जितना कुछ पूछा जा सकता था सबपूछ लिया। उसमें कटकीने भी कटक के सामने पहले हिंदुस्तान में घरपकड़ होते समय जो निश्चिन्त स्थिर किया था, उसके मुताबिक अपने 'मालनी' के सबब के पूर्ववृत्त को प्रकट न करते हुए, कटक की मैं वहन हूँ, मुझे अपहर्गनेवाले अंश दुष्ट का बव करने के साहस के कारण कटक को और मुझे आजन्म कालेपानी की सजा हुई है, ऐसाही पूर्ववृत्त कह मुनाया। वह सजा हो जाने के बाद कटक से अलग करके मुझे हिंदुस्तान ही में दूसरे अंश कैदखाने में ठूस दिया गया और वही गुजिस्ता पाँच बरस, सड़ते, कुढ़ते और रोते हुअे बितादिये। कटक का क्या हुआ सो कुछ पता नहीं चला, पर वह सजा पाकर अदमान भिजवा दिया गया है, जिस बात का पता कैदियों के द्वारा आभी खबर में मिला। उसके बाद, हिंदुस्तानमें मड़ने रहने की अपेक्षा अपने को अदमान भिजवा

दिया जाय, जिसबातपर सरकार के यहा वरना दिया । और अतमें अपने को कालेपानी भेज दिया गया—असा अपनी सजाके वाद का पूर्ववृत्त भी कटकी ने अनसूयाको बतला दिया ।

तब उस भेटमें कटकी अनसूया से बोली,

“जमादारीणवाजी, मेरी अमरकी अभीतक वीसीतक अलटी नही पर जगकी अत्यत असह्य यातनाओकी जो भरमार सौ बरस तक जीवित रहे हुओ के हिस्से में सहसा नही आती वह मेरे हिस्सेमें आचुकी है । अितना जुल्म , अितनी विडवना, अितनी तकलीफ, अितना दुःख मैंने आजतक सहन किया । और खास बात यह है, श्रीमतीजी, कि, मैं देवके सम्मुख कहती हूँ, मेरा खुद का मेरे अेक अपराध को छोड, दूसरा कोअी भी अपराध मेरे हाथसे नही हुआ, जिसके लिये मुझे यह सब सहन करना पडे । और मेरा जो अेक अपराध है, वह है, मेरा रूप । मैं जहा भी जाती हूँ, वही मेरी राह में अडगा बन कर खडा हो जाता है । अिसी रूपके खातिर मैं मातृगृह से निकलकर कैद खाने में भी जिसके हाथमें पडी, उसीने मेरी विडवना की और जिसके हाथमें नही गयी, उसने केवल अिसी कारण मुझपर जुल्म तोडे । श्रीमती जी ! अब तो मुझे अिस जीवन की अिच्छाही नही रह गयी है । हिंदुस्तान के कैद-खानेही में मैं अेकदफा जान देने बैठी थी, पर मेरा वह प्रयत्न असफल हुआ, और मुझे अुलटे छह महीनेतक हाथमें कड़ियाँ और पैरो में वेडियाँ डालकर कोठडी में ठूस दिया गया । जुल्म से छुटकारा पाने के लिये किये गये अपराध के कारण और भी अधिक जुल्म होने लग गया । अतमें अेक ही आशातनु अवशिष्ट रह गया था, उसी के सहारे लटक कर किसी तरह मृत्युकी खात्री में गिरने से बचगयी । वह आशातनु—आजन्म कैद की सजा मुनाते समय जजकी अेक आश्वासन भरी सभावना थी । उसने कहा था—‘काले पानी पर जाने के वाद कुछ वर्षों के पश्चात् शायद तुझे छोड दिया जायगा, और उस टापू ही में क्यों न हो, तुझे अपनी पसदके सहचर के साथ ममता और वात्सल्य भरा कौटुविक सौख्य उपभोगना मिल जायगा ।’ न्यायाधीश के वे अमृततुषारसदृश शब्द ही मेरे मनकी कोमल स्त्रीय लालसा को पुनः पुनः अकुरित करते थे ।

“ अितने में मुझे मालूम पडाकि, कटक भी अदमान हो में है । आत्म-घात से पहले अेक मर्तवा तो अुसकी मुलाकात हो, अिस आतुरता से हर प्रयत्न करके, कालेपानी पर चली आभी हू । पर यहाँ देखती हू तो अभी अुमी गदगी में मुझे वरसो सडते रहना पडेगा । हरे, हरे, भगवान, मैं अब अेक दिन भी अुम तरह सडना नहीं चाहती । अिस शरीर से मैं अब अूव गभी हू । तुम कटक की चिट्ठी लाभी हो अत मैं फिर अेकदफा तुमपर विश्वास करती हू, मँकडो आत्मीयता का दिखावटी अभिनय करनेवालो ने मुझे अितनी दफा विश्वासघात करके धोखा दिया है कि, आपभी मुझे धोखा देगी ही नहीं यह निश्चित रूपमें मैं नहीं कह सकती । गुस्से में मत आभियेगा । मैं आपको झूठा नहीं कहती हू,—अपने दैव को कहती हू । पर तो भी मैं आपकी गोद में अपना सिर देती हू । काटना हो काट डालिये । मा समझती हू आपको, पैर पडती हू आपके, मुझे आप धोखा न दीजियेगा । नहीं तो कटक बाधूके नामसे मैं जो अपना हृद्गत आपको बतला रही हू, वह आप अधिकारियों को जाकर कही सूचित कर बैठें और मेरे सिरपर अेक नया ही सकट टूट पडे । डरनेकी जरूरत नहीं न मुझे अुस बात से ?

“ अच्छा, तो कटकसे कह दीजिये कि, यदि अुन्हें मेरा छुटकारा तीन चार महीने के भीतर करना संभव हो तो मैं जीवित रहूंगी । मैं अितनी कठोर, अितनी साहसी और अितनी कृत्या बन गभी हू, दुष्टो में भी दुष्ट लोगों को सगत की शराब जवर्दस्ती पिलाये जानेपर अितनी दुष्ट बनगभी हू कि, अपने छुटकारे के लिये मैं हर तरह का साहम, कष्ट, कूरता करने से हिचकिचाऊंगी नहीं । पर यदि अिन चार छे महीनो में अिस कैदखाने से ही नहीं बंकि अिस गलीज दुर्दशा से मुझे छुटकारा नहीं मिला तो मैं आत्मघात का यत्न आत्मघात सिद्ध होने तक निरंतर करती चली जाऊंगी । और दस पाच वरस तक कारागृह के नियमानुसार मैं यहा विलकुल जिंदा नहीं रहूंगी, यह निश्चित है । देखिये भाजी, यह मेरा निश्चय कटक तक पहुँचाने का, नया किसी अन्य को सूचित न करने का कष्ट आप करेगी न ? मुझपर ये दो अुपकार करने की दया आप दिखलायेंगी न ? हा, अेक और अत्यधिक महत्वका शब्द ।—कटकबाधू मे वितति है कि, यदि वे अिस वक्त सुनमें हों तो मेरे अिस संदेश को सुनकर अैसा कोअी भी कृत्य न करें, अिममें अुनर्ग

जान फिर खतरे में पड़े । पर सचमुच, 'मेरा छुटकारा करो' यह मेरी पहली विनति जिस दूसरी विनति से सर्वथा विसंगत है, नहीं ? न, न, माजी, मैं चूक गयी, मेरी पहली विनति अन्हे विलकुल न कहिये, अन्मे अितनाही कहिये कि, मैं समाधानपूर्वक हूँ, और तुम आनन्द से हो यह सुनकर खुशी हुई—अितनाही कहिये । शपथ अ । माजी, मैं जो बोल गयी हूँ, वह बोली ही नहीं हूँ, ऐसा समझ कर ही चलियेगा अ । नहीं तो मेरे छुटकारे के लिये कटक कुछ न कुछ खतरनाक काम कर बैठेगा, और कोभी निष्कारण बुरा प्रसंग अुसपर आगुजरेगा । —क्या ? अब आपके साथ की यह मुलाकात खत्मही करनी चाहिये ? अच्छा, जाती हूँ मैं । हा, विलकुल चुपचाप जिस दरवाजे से जिस प्रकार से लुक छिपकर निकल जाती हूँ । पर माजी, हाथ जोड़ती हूँ, मुझसे किसी तरह कभी कभी मिलनी रहा करेगी न ? —कौन ? कोभी आरही है ? गयी ही मैं, देखिये । "

अनसूया जमादारनी ने कटक की मुलाकात की जो विखरी हुई बातें कही, अन्का अपने मनमें सुसंगत करम लगा कर कटकने मालती के अुस मुलाकात के भाषण को जिस तरह मनही मन जोड़ लिया । अुसको मनमें दुहराया तिहराया, अुस तन्मयताकी स्थिति में मालती द्वारा हुअे हाथ के विशारो का अुसने भी बीचबीचमें अनुकरण किया और अुसी क्षोक में वह अपाक्षप रास्ता तै करने लगा ।

अुतनेही में अुसे याद आयी 'मालती वदीगृहमें किस कामपर है, अुमकी प्रकृति (तदुरुस्ती) कैसी दिखायी दी ' जिस तरह अुसने अनसूयासे जब सवाल किया था तब अुमके द्वारा वर्णित अुमकी दुर्दशा । वदीगृहकी रमोभी के काम में अुमे डाला था । वहा का अुसका चित्र अुसके मन में खेडा होगया । विलकुल सूख गयी हुयी, घुटनेतक अेक मोटीवाटी चिघडी पहनी हुयी, मोटीवाटी वदीगृह छावकी अेक अँगिया पहनी हुयी, अेक हप्ते में जो कडछीभर तेल मिलता अुसी को बचा बचा कर अिस्तेमाल करते हुअे मिर्फं औषध की तरह जिन बालोपर हाथ फेरने भरके लिये अुपयोगी, जिन बालों को अँछने के लिये चक्क नही, अैसे अुलझे हुअे, पसीना-पसीना होकर प्रत्यह चिपचिपाते जानेवाले, और अुन गँदली, अमगल, अुलटे पंजरे की चुँहले जैसी नैकडो स्त्री कैदियों के नीच महवान में, जूआ और

लीखोसे भरे हुअे अपने वालो का जैसे तैसे अवाडा बाधी हुआ, जिसके शरीरमें चोर वुखार आता रहता है, असी, और वसी स्थिति में ही वदीगृह के अके तपे हुअे टीनो की छत के नीचे, भट्टियों की तरह भडके हुअे, बडे बडे चूल्हो की असह्य अुण्णतामें, वडी वडी देगचियो में, भात और भाजियो के ढेरके ढेर पकाती हुआ, अुवालती हुआ, घुटनेतक आनेवाले आटेके ढेरो को कूटती हुआ, अुनकी दो-दो सौ रोटियाँ सेकती हुआ, दिनभर शरीर सना रहता है जिसका असी मालती अुसके समक्ष खडी होगयी । अुभी दिन रसोअी के कामपर रहनेवाली स्त्री वॉर्डरने मालतीमे चोरी छिपे ४-५ सेर आटा मागा । मालती ने अधिकारियो की चिट्ठीके सिवाय वह देना नामजूर कर दिया । अिस पर वॉर्डर ने झूठ मूठ के आलसीपने का आरोप अुसपर लगा कर नीच और जैसी मुंहमें आयी वसी गालियाँ देनी शुरू की । तिसपर मालती भी अुलट कर अेक गाली दे मारी—अब वह भी कितनी ही नयी नयी गालिय सीख गयी थी । —यह सुनतेही दो तीन दुष्ट स्त्री वॉर्डरने पकडकर अुसवे फडफड मुहमें मारा था । अनसूया जमादारनी ही वहाँ अुस बीच आगयी अत मालती का पक्ष सही सावित हुआ । नहीं तो विना कसूर के मार खाकर भी अुसी को अुलटे अुदडपने के अपराध के नामपर अधिकारियो के सामने खीचकर ले गये होते, और मजा दी होती ।

कटक के मानस-चक्कुओ के सामने अुन राक्षसियोद्वारा मुह पर फडाफड मारने के कारण धाँय धाँय रोती, सनापसे चिल्लाती, निरुपाय होकर अदरही अदर कढती हुआ वह मालती विलकुल राह रोककर खडी हो—अुस तरह खडी रही । करुणा से बेचैन हुअे हुअे अुस कटककी आखो में से आँसू टपटप करके गलने लगे, अुसकी दृष्टि बाष्पधूसर होगयी । —पर तो भी अुसके पैर सीधे तौर पर वह रास्ता अुपासप तै करते हुअे चलेही जाते थे आगे ।

अिस सब करुण वृत्तात की दुःखद स्मृतियो से भर आये हुअे अुसके चित्त में, पानीयीभूत अुसकी अुम बाष्पाकुल दृष्टि के आगे, अगला कोअी निश्चय सुस्थिर होकर आया ही नहीं । आगे का विचार बहुत कुछ निश्चित था ही । कुछ भी क्यो न हो जाय अब मालती का और अपना अिस वदीवाम से छुटकारा करना ही होगा । अुम का आत्मघात हर हालत में टालना ही होगा । आयुष्य मे के दो ही दिन क्यो न हो, वेही दो दिन अुस साहस कार्य

के कारण आयुष्य के आखीर के सावित हुअे तो भी, मरने से पहले दो दिनही क्यों न हो, पर मालती के गाढ आलिंगन में, प्रीति की गाढ तन्मयता के स्वर्ग सुख का अुपभोग करकेही छोडना है । अुसे सुखी करना है, खुद सुखी होना है ।

अितने में, विचारों के अैसे असयत कल्लोलमें, अेक आघ, दीखने में विलकुल वपुद्र दिखायी देनेवाली अडचन अकस्मात् ध्यान में आते ही बडेबडे मनोरथों की आकावपा जैसे अेकदम ठिठका देती है, छोटासा पौर के बराबर का विच्छू किसी महारथी वीर को भी जैसे झटसे विव्हल बना डालता है, अुसी तरह अेक शका कटक के अुस स्वर्ग-सुख की मधुर कल्पना को अेकदम किरकिरा कर गयी । ' गाढ आलिंगन में अुसे सुखी करना है, दो दिन तो अुसकी सगतिका स्वर्गसुख अुपभोगना है । ' अिस रगमें अुसका मन रगा जा ही रहा था कि, त्योही मन ही मन किसी ने अुसे झटका दिया, ' अरे, पर वह कितनी सुस्वरूप और तू ? —कितना कुरूप ! अुसका सगम तुझे स्वर्ग प्रतीत होगाही-पर अुसे ? '

अुसका अकस्मात् विरस हुआ । वणभर किशन सुन्न होगया । सुस्वरूप ही मालती को शाप महसूस हुआ, कुरूप ही किशनको शाप महसूस हुआ । अुस चमत्कारिक विचारके आते ही अुसको अपने आप पर हँसी आयी । अुसका मन कुठित होगया । कुठा ही में हँसा-पर अुसकी गति मात्र कुठित नहीं हुयी । स्वयचल (Automatic) यन्त्रकी तरह अुसके पैर झपाझप मार्ग निकालते हुअे आगे बढ़ रहे थे । अपने को सरकारी नियम के अनुसार ठीक वक्त पर बदीवानों की बैरक में पहुँचना ही चाहिये, यह यद्यपि अुसका मन भूल चुका था, तो भी ज्ञानतनुओं की कुछ तनुमें अुसे भूले नहीं बैठी थी ।

कुठित हुआ हुआ अुसका मन अनिष्टमें से यथाशक्ति अिष्ट तात्पर्य निकालने लगा कि, ' तो भी चिता काहे की ! वह मुझ सरीखे कुरूप पर अनु-राग में अनुरक्त हुयी नहीं तो भी मेरे स्नेह को वह दूर नहीं करेगी । रूपकी अपेक्षा शील का आकर्षण अधिक मधुर लगे अितनी वह स्वत ही मुशील और मुश्चि युक्त है ही । अुसके सग का सुखन सही तोभी सगति का सुख तो मुझे दुप्पराप्य नहीं होगा । अुसे तो वह स्वयही चाहती है, अिसमें सदेह नहीं । '

अिन विविध भाव भावनाओं के कल्लोल में अुसका मन अुलझाही था कि अुननेही में अुनके नेत्रों ने, किसी पहरेदार की तरह हिला कर अुस-

के मनको जगा दिया, 'सावधान, वह देख, बदिवानो को बैरक दिखाओ देने लगी, देख ! क्या करना है, यह ठहराने ही में रास्ता खत्म होगया ! कैसे करना है, उसका अपाय क्या है ? '

यो देखें तो, सारा जन्म काले पानी की गदगी में सड़ते हुअे पडना नहीं है, मौका मिलते ही कैद की बेडियो को तोडकर निकल भागना है, यह निश्चय किशन का कोभी आज ही का था, सो नहीं ! काले पानी पर आते समय ही उसने यह निश्चय किया था ! रफिअुद्दीन सरीखे अघोरी मनुष्य को अपने अस्थिवैर का परिचय न देते हुअे उसी अद्देश्य से अपने नजदीक किया था ! उसके साथ गत पांच बरसों में कालेपानीपर भी उस निश्चय के सबब से उसने गुप्त रूप से अनेक बार खासी चर्चा भी की थी, और उस चर्चा के अनुरोध से ही उसने लकडीकटाओ के काममें अपनी नियुक्ति करवाली थी ! अितनाही नहीं, उस लकडीतुडाओ के काम पर आनेवाले बदिया का जब वह मुख्य बदीबाबू बना, उस समय उसने अपने द्वारा तथा दूसरों के द्वारा कोशिश करके युक्ति से रफिअुद्दीनको भी उस कामपर आनेवाले अपने हाथ के नीचेके कैदियों में भरती करवा लिया था ! परंतु उसे मालती का कुछ भी पता न चलने के कारण उस साहसके बारे में अबतक उसने चुप्पी साध रक्खी थी ! आज उसके मन ने जो उस सबब में चुप्पी तोडी, उसका कारण मालती का वह सँदेसा—वह दुर्दशा की तथा आत्मघात के निश्चयकी अत्यंत चिंताजनक खबर ही थी !

काले पानी पर के आजन्म कैद की लौहशृंखलाओ को तोडने का साहस कोभी आसान बात नहीं थी, सिर्फ जीम हिलानेमें वह सिद्ध होनेवाली नहीं थी ! मिरको काटकर जो हाथमें ले सके वही उस काममें हाथ डाल सकता है ! यह किशन को मालूम था ! वह डर उसके मन को खा रहा था, जिनी लिये आजतक वह सिर्फ स्कीमे ही बनाता जाता था और धीरे धीरे उस दिशामें बढ़ता जाता था ! पर पासा सिर्फ हाथमें लेकर बैठनेवाले और पेंकने से डरनेवाले जुआरी की तरह, कानूनकी मर्यादा से बाहर पैर रखने में वह हिचकिचाता था ! आज उसने वह पग अुठाने का धीरज दिखलाने का भी निश्चय किया ! वह साहस कितना भी जानपर वीतनेवाला हो तो भी दिवसगति पर घकेलने का वह प्रयत्न नहीं रह गया था—आज वह अत्यंत निक्कट का, अंक

अत्यधिक त्वर्य (urgent) प्रश्न होकर बैठ गया था । और उसकी वैसे निकट की चर्चा भी अब रफिअुद्दीन के साथ करने का उसने निर्वारण किया ।

पर मालती के बारे में मिली हुयी जानकारी ? वह उस दुर्जन को बताओ जाये या नहीं ? अह ! किशन का साथही साथ निश्चय हुआ । उसका अवाक्पर भी रफिअुद्दीनको, कम-अज-कम आज तो बताना योग्य नहीं । “ रफिअुद्दीन को यह भी बताना नहीं है कि अपने साथही अपने को छुटकारा कराना है मालती का भी — ”

मनमें ही अुच्चारित उस नामके साथ उसने खस करके अपनी जीभ चवाओ । कुछ असें से वह मनही मन जब मालती के सबध में विचार करता आ रहा था तब उसके लिये ‘मालती’ अिस प्रेमल नामही की वह योजना करता आ रहा था । कटकी नामके प्रयोग से उसके मनमें, मालती नामके साथ सबद्ध मूलकी प्रेमल भावना किसी भी अवस्था में जागती नहीं थी अन वह जब तक मन को भाषामें बोलता रहा ‘मालती’ नामही का अिस्तेमाल करता रहा था । पर मन में आकठ भरा हुआ वह नाम यदि भूलकर ओठोपर खिँड गया तो ! तो अपना और उसका आजतक छिपाकर रखा हुआ रहस्य खुल जायगा, रफिअुद्दीन का पुराना अस्थिवैर जाग जायगा, उसकी (मालती की) माका अपना पुराने खटले का सारा सबध सामने आजायगा, अविद्यमान विघ्न बाधाएँ सामने अेकाअेक आकर खडी हो जायँगी । पुन विस्मरण न हो जाय, अिस वृद्धि से वह स्वत गुनगुनाता हुआ घोखता चला, “ मैं कटक, कटक ! —और वह मालती नहीं—कटकी ! कटकी ! कटकी ! मेरी मर्गी वहन कटकी ! ”

—और उसका पैर वैरक के आवार में ज्योही पडा त्योही कैदियों की वैरको में लौट आने की रातकी घटा का पहला ठोका घन्न्न् करके घन-घना अुठा । ‘ पहुँच गया बाधा, बापिस ठीक ववत पर ’ अैसा कटकने अेक दीर्घ श्वास छोडा । और मट् से दरवाजे के सामने ही पडी हुयी अेक काठकी पेटीपर, पैरो पर पैर डालकर बैठ गया ।

घोडी देर में बदीवानो का सारा खानापीना खत्म हो जाने पर कटक-बावू वैरक से पर्याप्त आगे अेक खुली जगहपर टहलने लगा । वैरको

के कैदियों का रातको सोने की घटा होने से पहले कुछ दूर तक स्वच्छदतया टहलने बोलने-बैठने का वक्त था वह। उसपरभी कटक तो वहाँ का मुख्य बंदी बाबू। कुछ देर अकेला टहलने के बाद वह आजू बाजू से साफ दिखायी दे अमी अक अची जगह पर बैठगया और उसने पुकारा,

“अुद्दीन ! रफिअुद्दीन ! ! ” यह सुनतेही—

“जी ! जी ! कटकबाबू ? आता हूँ ! आता हूँ ! ” असा अत्यंत आतुरता से उत्तर देता हुआ रफिअुद्दीन तत्परता से खड़ा होगया ।

अब रफिअुद्दीन अिसीतरह कटक बाबूके विलकुल आधे वचन में व्यवहार करता था ।

क्यो कि रफिअुद्दीन को जिमदिन वह कोडो की मयकर सजा हुअीयी और दुखार के मारे वह फनफना कर बीमार पड गया था, अुसी वक्त बंदीगृह के रुग्णालयमें डॉक्टर के हाथ के नीचे के शिशिकिपपित मिशरको (Apprentice compounder) में कटककी नियुक्त हुअी थी । रफिअुद्दीन अुस रुग्णालय में दुखारसे बहुत दिनो तक बिन्तरेपर पडा रहा अुस वक्त कटक ने अुसे अुस असहाय स्थितिमें बहुत कुछ मदद की । दवादारु, और कैदियों की अपेक्षा अधिक सहूलियते, चोरी छिपे जरा अधिक दूध की घार, शक्कर की पुडिया, तमाखूकी चुटकी भी अधिकारियों की आंखें बचाकर पहुँचाअी थी । रफिअुद्दीन को पुन कोल्हूके ही कामपर भेजने का दिन यथामभव दूर करने के लिये, ‘सस्त काम के लिये अभी अयोग्य’ अमी समति डाक्टरों की ओर से कटकने ही अजोजी करके लिखवाअी थी । रफिअुद्दीन की गिनियों की गरमी अविद्यमान—भी हो चुकी थी, कोडो की मार का अच्छा डर बैठ गया था, अत वह आगे चल कर दीगअी कडी मसक्कतो को चुपचाप करता चला गया । कटक की जैसी जैसी पदवृद्धि होती चली गअी, रफिअुद्दीन भी वंसा वंसा अुसका आज्ञावाहक, चरणचुबक बनता चला गया । अुसके साथ अपना कोअी लगाव नहीं है, असा कटक अूपर अूपर अिमलिये दिखाता था ताकि अधिकारियों को सशय न हो । रफिअुद्दीन को भी वंसाही करना चाहिये, यह निश्चय हुआ था । परअदर से सब प्रकारकी मदद कटकही रफिअुद्दीन को करता था । अिसीवास्ने रफिअुद्दीन के दिन अच्छे गये । और अतमें तीन बरस

के भीतरही उसको कपकारागृहसे बाहर निकालकर खुली बैरको के कैदियों के काम पर भेज दिया गया । उस के बाद कटक की और बढ़ती हुयी । वह ज्योंही लकड़ीतुड़ाओ का मुख्य बंदी बाबू बना त्योंही उसने अदरकी युक्ति से रफिअुद्दीन की भरती भी उस कठिन काममें लगनेवाले हट्टेकट्टे शरमिकों में करवाली । कटक के आश्रय के वगैर अपनी दुर्दशा को कुत्तों ने भी न खाया होता, यह रफिअुद्दीन पूरी तरह जानता था । तम्मात्, कालेपानी पर आतेही कटक के साथ अच्छा व्यवहार किये जाने का रफिअुद्दीन के दुष्ट हृदय को जो वैषम्य प्रतीत होता था वह अब नष्ट हो चुका था, और अल्टे अब वह सदा सर्वदा मनसे प्रार्थने लगा था—‘दुवा’ करने लगा था कि, ‘कटक बाबू की बढ़तीही बढ़ती होती चली जाय ।’ उसकी दुष्टाओ बदल गयी हो जिस कारण से नहीं, पर दुष्टों जालिमों में ही एक खाम बात बहुधा ऐसी नजर आती है कि, जिन लोगों के हाथमें उनका हिताहित अगतिक रूपसे पहुँच जाता है, उन लोगों के वे अतने समय तक तो पूरी तरह से मन पूर्वक पैर चाटने लगते हैं ।

रफिअुद्दीन तो पहलेही से साहसी, अल्टे कलेजे का, भयकर उपद्रव्यापी । अच्छे कामों में यदि विनियोग किया जाता तो, वही गुण वीर्य, पराक्रम कहलाता—ऐसा नाहमी—ऐसा ठिकारी कुत्ता । जो पालेगा, जिसके हाथ में उसका हिताहित, उसके छूँवोलते हों जो सामने आये उसको फाडकर खानेवाला ।

वह अब कटक बाबू का पालतू कुत्ता था । इसी लिये कटक बाबू के ‘यू । यू ।’ करतेही उसके नामने अछलते हुअे आकर जिस तरह लार टपकाता हुआ खड़ा होगया ।

कटकने उसे ‘बैठो’ कहा । और यह देखकर कि दूर तक कोओ भी नहीं है, कटक उसने धीमेमे बोलने लगा—

“अुद्दीन ! तेरी और मेरी कालेपानी की तरफ जब रवानगी हुयी थी, अभी दिन कालेपानी से भाग निकलने की प्रतिज्ञाओं हमने की थीं ? दस तो ! अुन्हे जब सही करके दिवायेगा ?—चर्चा की जरूरत नहीं, कभी की जान नहीं—! बिलकुल आज से सिर हाथमें लेकर, उस राहपर लगना है । है तू निद्र ? ”

“बेक पैरपर ! आपकी जानके वास्ते जान दे दूंगा, पीछे नहीं हटूंगा । पर योजना मात्र व्यवस्थित होनी चाहिये ! बहुत दुर्घट कर्म है वह ! असफल हो गया तो—”

“जोवितावस्था मे असफल ही न हो, ऐसी ही स्कीम होनी चाहिये । वैसी बनायेगा तभी तू खरा रफिअुद्दीन ! कालेपानी पर से भाग खडा हुआ धरवीण पायो ! ”

वह म्नुतिही थी अुसकी ! छाती फुलाकर रफिअुद्दीन बोला,

“कटक बाबू, वह चर्चा मैंने आपसे अनेक मर्तवा की है । मैंने भी अपनी अेक योजना आकी है पर भयकर ”

“पहले सुना तो सही, क्या है वह ? तब पीछे से ‘भयकर’ की बात देखेंगे ! ”

रफिअुद्दीन खासा, ग्वखारा, चारो तरफ कोअी आ तो नही रहा है, यह फिर से देखकर, अपना वह सिर्फ कहते सुनते वक्तही शरीर थरा जाय अैसा भयकर निश्चय सुनाने लगा ।

हिंदू संस्कृति का नया जानपद : : : १५

अुक्कूठ दम दिन हो गये, वृद्ध अुप्पाजी अपने अुम ‘दाखलेवाले’ गावकी झोपडी मे विस्तरपर बीमार पडे थे । सत्तावन के स्वातन्त्र्य युद्धमे मेनापति तात्या टोपे की तरफ से लडते समय गोली लगने से जखमी हुअे हुअे अुप्पाजी के अुम पर में तीव्र वेदना हो रही थी । जन्मभर कालेपानी के वदिवाम कठोर और कडी मसक्कत से जर्जरित अुनकी देह्यष्टि अब कपीण होने और नत्तर मे भी अधिक वरस की अुम्रके कारण थक चुकीथी और अब अुनके हृदयमें भी असह्य पीडा अुत्पन्न होती थी । अिस बीमारी के कारण आगर्न मे खुली जगह हमेशा पडी रहनेवाली अुनकी वह खाटपर की बैठक भी अिस

हफ्ते सूनी पड़ी थी, और अुनका विस्तरा अदर झोपडी ही में चला गया था ।।
 भिस वीमारी मे न जाने अुनका अत भी कव बोलते बोलते हो जाय, भिसका
 अुन्हे भरोसा नही था अत अेकदफा कटक आकर अुनसे मिल कर जाय, अैसा
 अुन्होने कटक के पास बहुत जरूरी सदेगा भेजा था । आज रविवार है, आज
 अप्पाजी अुस अपनी झोपडी में के विस्तरेपर कराहते हुअे पडे रह कर भी
 खिडकीमे से वार वार बाहर झाकते थे और अुस टेकडीपर से कटक
 अुतरता हुआ कव दीखता है, भिधर अुनकी आख लगी हुअी थी।

अुनके सामने के आंगनमें पाच-पचास कच्चे नारियल की फाँके सूखने
 के लिये डाली हुअी थी । अदमानमें भिस तरह कच्चे नारियल काट काट-
 कर अुनकी फाके किंवा गोल गोल कटोरियाँ सुखा कर के अुन्हे बेचनेका धधा
 दाखलेवाले लोगो की अुपजीविका का अेक साधन रहता है । अुनका तेल
 भी निकालते हैं । वहाँ सहस्रावधि नारियल के घरेलू और सरकारी पेड बोये
 हुअे हैं । अप्पाजी का भी वह अेक घरेलू धधा है । अुस सारे आंगनमें सुखाने
 के लिये डाले गये नारियल की फाको पर पविषयो के झुडके झुड आकर बैठते
 थे । झुडायें जाने पर झुड जाते, आजूबाजूके झाडो पर जाकर किलबिल
 किलबिल करना शुरू कर देते, फिर मौका मिलते ही, फाको पर चढाभी कर
 बैठते, भिस तरह लूटमारी के घघे में वहा के पविषयो के झुड पूरी तरह प्रवीण
 हुअे हुअे थे ।

वहाँ के जगलो और बागो मे रग विरगी अनेक सुंदर पविषयो की चहल
 पहल बनी रहती है । भिनमें तोता, मैना, नीले और सफेद सतेज रग का,
 लयी और बलोत्कट चचुवाला मछलियाँ मारने में प्रवीण राघव पवषी, मजुल
 बयाल पवषी और विगेपत बुलबुल भित्यादि कितनीही जाति के पविषयो को
 प्रथमतः भारतवर्ष से ही, अुपनिवेश बसाने के समय, सरकार वहा ले गअी
 थी अैसा कहते हैं । पर अुनकी समृद्धि के लिये वह अरण्य और वह भूमि पहलेही
 से अत्यधिक अनुकूल होनी चाहिये, यह अुनकी वहापर अजकी सख्या और
 चैन देखकर नहजही दिखायी पडेगा । कौवे चिडियाँ वगैरह का तो बस बाजार
 गरम है वहाँ । अदमान के बुलबुल तो बहुत ही खुबसूरत ! यह पक्षी चिडिया
 ने थोटासा बडा, सिरपर छोटासा सुंदर तुरी, आखो के पास किनारो पर
 थोडी सी लाली, नन्ही सी अेक पूछ, अदामे हमेगा अूपर अूठाअी हुअी, अेक

आव तसवीर की भी रेखाकित आकृति, फुर-फुर फुदकनेवाली और भरं से बुड जाने की चपलता का तो कुछ न पूछिये । और शब्द अितना मजुल । नन्हा पर चटपटा और मधुर कि मानो कामिनियो के हाथो के ककणो का कलरव । अैसे अुन अदमानी बुलबुलो के झुडके झुड सुखाने के लिये रक्खे हूवे नारियलो की फाकोपर चढाभी करते समय अदमान के आगनो आगनो में किलविल करते हुअे दिखाभी देते है ।

अप्पाजी के सारे आगन में सुखाने के लिये डाली हुअी अुन कच्चे नारियलो की फाकोपर भी बीचबीचमे अुन बुलबुलो के झुड चढाभी करते थे और अुन पक्कियो को भगाकर अुन खोपोपर पहरा करने का कामभी करते थे अप्पाके दो पालतू बुलबुलही । —अुषा और मोहन ।

कौवे, चिडियाँ, मैना प्रभृति अितर पछियो को भगाने में यद्यपि अुषा और मोहन बिलकुल कमी नहीं करते थे तथापि बुलबुलो का झुड आगनमें अुतरा कि, अुन्हे भगाने की अपेक्षा अुनका तमाशा देखने की ओरही अुन अुत्सुक बच्चो का आकर्षण अधिक दिखाभी देता था । बुलबुलो की अुन हमेशा खडी की हुअी पूछ के नीचे गुलाबी रगके मृदु मृदु परो का अेक नन्हासा सुरेख फूल रहता है । वह पक्कियो का झुड खोच मारमारकर अुन खोपो की मीठी मीठी फाको के खाने में जब मस्त हो जाता है, तब अुनकी आनद से खडी की हुअी अुन पूछो के नीचेके वे रगीन परो के वृत्त, अैसे मुहाते थे मानो आगन भर में गुलाब के नन्हे फूलही फूल बिखर गये हो । अुमसे मोहन और अुषाका बहुत अधिक मनोरजन होता था ।

अप्पा भी अुन बुलबुलो का तमाशा देखते वक्त असावधान स्थिति में अपना दूसरा पैर फट्मे सीधा कर बैठे और अुसमें अेकदम दंद पैदा हो अुठी, 'मैयारी ।' कह कर वे किचित् चिल्लाये और कराहने लगे ।

"अुपे । अरी, अप्पा कराहते हैं ।" घबराये घबराये मोहन और अुषा आगनमें से दीडते हुअे अप्पा के कमरे में गये ।

"क्या हुआ अप्पाजी ?" मुह फीका कर के अुषा ने हिंदी भाषामें पूछा । क्यो कि वे बच्चे मराठी की ही भाति किवा मराठी की अपेक्षा हिंदी ही में अधिक बातचीत किया करते थे । अदमान में निवाम करनेवाले मराठी बंगाली, मद्रासी, पजाबी वर्गरे सब मातापिताओ के पेटमें अुत्पन्न हुअे बच्चे

हिंदी ही में बोलने लगते हैं। वही वहाँ पैदा हुआ की असली मातृभाषा रहती है। अपनी अपनी प्रातीय भाषा जिन्हे अन्के मातापिता शोक के खातिर सिखा देते हैं, अतन्ही ही को वह आती है ?

“कहा दर्द होरही है मेरे अप्पा को ? यहाँ ? मैं दवाअू, देखिये तो सही, अब आराम महसूस होगा।” अुपाने आग्रह किया, मोहन ने भी जिद की। अप्पाद्वारा अनुमति मिलतेही मोहन अुनके कंधे दवाने लगा और दूखने वाला पैर अुपा दवाने लगी। अप्पा खिडकी में से बाहर टीले की तरफ देखते रहे। कटक की राह देखते देखते अुससे क्या कुछ कहना है, सो वे विचार करने लगे।

तीन मिनिट,—चार मिनिट, पाच मिनिट। अुपा अपने कोमल और नन्हे हाथों से जितना लगाया जा सकता था अुतना बल लगाकर पैर दवा रही थी। पर अप्पा का ध्यान विचारों में लीन था। वे ‘बस’ कहना भूलगये। अुपा के हाथ दूखने को आगये। ‘बस अच्छा बेटा।’ बिस तरह प्रशंसा पूर्वक अप्पाजी कहे और कामके पूरे होने की खुशीमें वह दवाना बंद करे—अैसी अुसकी अुत्कट अिच्छा रहती थी। पर अुसके हाथ थकने लगे तो भी अप्पा बस ही न कहे। अपने आप ‘थकगयी’ कहकर दवाना छोड़ दे तो मोहन हसेगा। वह अुसके लिये कठिन होगया। अधिक दवाना भी कठिन होगया। थकते थकते वह रूठगयी, रुठते रुठते वह चिढ़ अुठी और अंतमें अप्पा के पैरों पर वह गुस्सा निकालते हुअे अुसने दो चार चपत मारे और रोना शुरू किया।

“मेरे हाथ टूटगये तो भी तुम बस कहके नहीं देते।”

अुस चपत और रोनेके साथही अप्पा भी होश में आये, हमे और प्रशंसा पूर्वक अुपाके सिरपर हाथ फेरते हुअे समझाने लगे—

“चुप, चुप। अरी, तो तू दावती ही काहे को रही भला, हाथ दूखने क्या ? मुझे तेरा दवाना अितना अच्छा मालूम हो रहा था कि बस कहने की अिच्छा ही नहीं हो रही थी। अिन नन्हे हाथों में कौअी जादूका गुण है हमारी अुपा के ! बँधों की औपय से आजतक जो ठीक नहीं हुअी वह दर्द बिल्कुल नहीं सी होगयी देख, तेरे दवाते ही।”

“वह देखिये, वह देखिये, अप्पा, कटक वावू टीलेपर से आते हैं, देखिये।” मोहन बीचमें ही कहकर अुठगया।

अप्पा मम्हल कर बैठ गये। वे दोनो लडके दुडूदुडू दौडते गये, कटक वावूके सामने जाकर कौन अुन्हे पहले छूना है, यही अेक अुनके वास्ते नया खेल होगया था।

“कटकवावू, यह दर्द मेरे हृदयमें बीच बीचमें जवसे अुठने लगी है तब से मैंने यह समझलिया है कि, अब मेरा अंत नजदीक ही है।” अेकातमें ले जाकर अप्पाजी कटक में कहने लगे, “पर अुसमें दु खकी कोअी बात नहीं। हम जैसो के मरने का अर्थ है-छुटकारा। पर तुममें अेक मर्तवा मुलाकात करने की अिच्छा होने लगी थी। तुम कितनेही महीनो से अपनी सुरविषतता को खतरे में डालकर भी यहां आते हो, मेरे परिवार की स्वहस्तेन परहस्तेन जितनी हो सके मदद करते हो, प्रेम करते हो, अंत. हमें भी तुम्हारे प्रति प्रेम मालूम पडता है। तुम्हारा आभार।”

“पर अुसमें आप मेरा आभार मानें अैसा मैंने कुछभी नहीं किया। अुलटे अप्पाजी, मैं ही आपके अुपकारों का ऋण चुका नहीं सकूंगा। अिन भयकर वदीवास में पडने के बादमें ममता के मनुष्य की मेरे हृदय को विलकुल भूखही लग गयी थी। आपके परिवार में मुझे वह ममता अुपलब्ध हुयी। पितृतुल्य आप, स्वमृतुल्य अनसूया भगिनी औरस पुत्रों के तुल्य ये वच्चे-ये अिन सबके प्रेमल सहवास में मेरे जो कुछ क्पण गये ह, वेही मेरे लिये, जीवित रहना चाहिये अैसी प्रतीति करावे अितने विलोभनीय। दुष्टता, दुर्गुण और दुराचारोंमें अिनभिनाये हुअे अुम वदीवास के अुत्तप्त वातावरण में मे अिन आपकी कौटुबिक-ममता की शीतलछाया में और वच्चों के प्रेमल हास्य की चादनी में क्पणभरके लिये आतेही मुझे नरकवास में नदनवन का न्वप्न पड रहा हो अैसा प्रतीत होना है।”

“तो फिर कटकवावू, मेरी भी आपमें यही वितति है कि, आप मेरे पीछे मेरे अिन वच्चों को अपना नमझें। अिन्ह अपना समझकर अिस घरको भी अपनाही बनाले। आप जैसा मुबुद्ध, मुशिकपित और मुशील मनुष्य अिन पापाचारी दम्ती में दुर्लभ। अिनीलिये आज मैं यह अपना परिवार आपके हाथों नीपता हू। आप अिये अपने हाथमें ले तो मैं अुगमें मरूंगा।”

“अप्पाजी, आपके सबधमें किमी हुतान्माके सबधमें प्रतीत होनवाली मुत्कट आदर भावना उत्पन्न होती है मेरे मनमें। अुसमे भी जो लोग सफल होते हैं, अुन स्वातश्यवीरो की अपेक्षा आप जैसे, जिन स्वातश्य सैनिकों के माथेपर सफलता लिखी न होकर केवल जुल्मही जुल्म और यातनाओं ही यातनाओं लिखी होती है, अुनके प्रति ही मुझे अधिक गौरव अनुभूत होता है। आपकी मृत्युको किचिदपि सुखयुक्त बनानेवाला कृत्य यदि शक्य होता तो मैंने अुसे अवश्य स्वीकार किया होता। पर मैं तो स्वत ही सतीका वानः लेकर खड़ा हूँ ! इस कालेपानी के भीषण कालपाश को तोड़कर निकल भागने का प्राणोपर धीतनेवाला खेल मैं खेलनेवाला हूँ ! अुसमे मैं मरूंगा या जीऊंगा किसे मालूम ? ”

“मैं कहता हूँ ! कटक, अुस खेलमें मरण ही निश्चित है। सफलता की सम्भावना अत्यंत विरली—अपवाद ! आजतक सैंकड़ों मारडाले गये अुस साहस में, डूब गये समुद्रमें ! गत पचास वरसों में पचास आदमी भी कालेपानी पर से भाग जाकर देशको पहुँचे हो और सुखसे रहे हो ऐसा मुझे तो याद नहीं आता ! ”

“पर तो भी अुन पचासों में मैं भिकावनवा बनूंगा। नहीं तो मौतकी राहपकड़ूंगा ! यह देखिय, अप्पाजी, इस कालेपानी के दुर्वृत्त, दुराचारी, और असह्य जुल्मों के वषुद्र जगत में अिसतरह जन्मभर जीते रहनेमें तो कौनसा राम है ! व्यक्ति का विकास नहीं, भावनाओं की अुडान नहीं, मनुष्यता का मान नहीं किमी अुच्च और भव्य ध्येय के लिये किंवा परोपकार के लिये शरीर सुखाने का भी पावक पुण्य भाग्य में वदा नहीं ! न स्वार्थ ! न परार्थ ! ”

“ठहरो, अिस तुम्हारे अंतिम आवपेप के विषयमें ही क्यों न हो, तुम्हें अेक नयी दृष्टि देने की अिच्छा है ! परोपकार की—किसी न किसी राष्ट्रिय अेव अुदार कर्तव्यको अपने आयुष्य का साध्य बना कर अपने समक्ष रखने की—मुत्कट अाकांक्षा तुम्हारे चित्तमें हो तो वह तुम्हारी मनुष्यता का विकास ही है। पर अिस जदमान में प्रेम की, मुख की, भोग की, किंवहुना, अन्न की अनुपया नर की तृप्ति कितनी भी दु माध्य हो, तो भी परोपकार की वृभुक्षा किंवा राष्ट्रिय सेवाकी वृभुक्षा यदि किमी को हो तो अुसके लिये अन्न की

अवसर यहाँ कभी नहीं आयेगा। पतितों के अद्वार का, सुधार का काम सदैव राष्ट्रिय अथवा धार्मिक सेवा का एक महत्त्वपूर्ण अंश बनकर रहेगा। और अदमान तो कह सुनकर अपराधियों और अद्वारों का, पापियों का और पतितों का अपनिवेश। अर्थात् परोपकार का चुनीदा कार्यक्षेत्र। ”

“ वह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। और यदि कभी मैं इस आजन्म कैद की लोहग्रथि से छूटकर और कालेपानी पर से निकल कर स्वदेश लौट सका और दूसरे ही नाम से स्वतन्त्रतया राष्ट्रसेवा कर सका तो भारतीय कैदियों को इस कालेपानीपर भेजने की यह क्रूर प्रथा बदल कर यह भयकर अपनिवेश जड़मूल से बदल करने का आन्दोलन यथाशक्ति शीघ्रता से और बलसे परिचालित किये बिना नहीं रहूँगा। हिन्दुस्तान में भी कुछ नेताओं का ध्यान इस प्रश्न की तरफ आकृष्ट हुआ है और कैदियों का अपनिवेश मूलतः बदल करने के लिये और इस पापभूमि के अनेक सारे अमानुष अत्याचारों को जड़मूल से उखाड़ डालने के लिये कोशिश हो रही है। ”

“ पर वे प्रयत्न अलटी दिशा में किये जा रहे हैं। यह देखो कटक, किसी भी देश में अत्यन्त अद्वार, और समाज के लिये सर्वथा अपद्रवकारी चोर, डाकू, हत्यारों का एक वर्ग तो रहेगा ही। ऐसा समाजशत्रुभूत जो वर्ग हिन्दुस्तान में रहेगा उनके लिये नीति और कानून की मर्यादाओं का भंग करना अमभव कर डालने के लिये शक्ति से और बल से निग्रह किया जाना ही चाहिये। फाँसी, आजन्म कैद और कोठो जैसी अग्र शारीरिक सजाओं के बगैर उन अद्वार लोगों को किसी बात का दरारा (डर) नहीं प्रतीत होगा। उन्हें कठोर दंड और अनुशासन के पैच में पकड़ और जकड़कर रखने ही से कायदापसंद और समाजशील नागरिकों का उनके अपद्रवों से बचाव किया जा सकेगा, समाज में शांति और सुव्यवस्था बनी रह सकेगी। उस अवस्थामें महात्मावधि दंडितों को ऐसे कालेपानी सरीखे अपनिवेशों में बदल कर के रखना ही राष्ट्र के हित का रहता है। नहीं तो उन्हें रखा कहाँ जायगा ? ”

“ देश के अंदर जेलखाने नहीं हैं क्या ? अन्ही में उन जन्म कैदवालों को बदल कर के डाल दिया जाय। इस कालेपानी सरीखी पापभूमि में और ऐसे अत्यन्त जालिम परिश्रम में उन्हें ज़िदा गाड़ कर डाल देना, यह निर्दयता तो हथी है, पर राष्ट्र का हित भी कोई स्वामि मिथ होता हो सो बात भी

नहीं! आपको हमें जिस नरक-भूमि में जो यातनाओं और जो जीवन असह्य प्रतीत होता है, वह हमारे साथ रहने वाले जिन सब जन्म कैदियों को प्रतीत नहीं होता होगा क्या? जिस दयाकी विच्छा हम करते हैं। "जुसी को वे जालिम होनेपर भी करते ही हैं।"

"कटक-बावू सिर्फ अंधली दया का ही सवाल ले तो दंडितों को दंड न दे कर खुला छोड़ देना ही सच्ची दया सिद्ध होगी। तुम्हें और मुझे देशमें के कैदखाने में भी रहना प्रिय लगता है क्या? आजन्म कैद तो अकेले और रख दो अकेले दिनके लिये भी कोई अपने आपको कैदखाने में बंद करवाने के लिये राजी होगा? तब क्या अंधली दया के लिये ही ऐसे समाजको भयकर अपद्रव देने के अपरही अपनी अपजीविका और चैन चलाने वाले अग्रप्रवृत्ति अपराधियों को खुला छोड़ दिया जाय? पुनः अतः हिंस्र हत्यारे, बलात्कारी और अपद्रवी मूठ्ठीभर नर स्वापदों पर दया दिखाने के लिये जेलखाने ही खुले कर डालोगे तो जिन लख्खा सच्छील पापभीरु अथवा निरागस मनुष्यों को उनके अपद्रवों के जवडों में तुम ढकेल दोगे? अतः दया करने की आवश्यकता नहीं क्या? कुछ अकेले अत्याचारियों पर दया दिखलाने के लिये निरपराध अमृत्य व्यक्तियोंपर अतः अत्याचारों को होने देना यह निर्दयता नहीं? यह लाख गुना अधिक क्रूरता नहीं? अतः दया की दृष्टि से भी लाखों निरपराधियों की अपद्रवों से रक्षा करने के लिये अपरिहार्य रूपसे यदि कुछ थोड़ेसे अपद्रवी अपराधियों को निर्दयता पूर्वक निगलना पड़े तो वह अल्पसी निर्दयता साकल्येन विचार कर्त्तपर महनीय दया ही सिद्ध होती है। अपराधविज्ञान का अथवा दंडविज्ञानका भी मूल भूततत्त्व अथवा सनयन यही है।"

"जिसमें शका नहीं। पर देशमें के जेलखानों में—"

"वही बतलाता हूँ। जो देखिये कटकबावू, देशमें के कैदखानों में आजन्म कैदिया को जन्मभर के वास्ते बंद कर दें तो वह अधिक निर्दयतापूर्ण व्यवहार नहीं होता क्या? अतः चहार दीवारी के भीतर जन्मभर सड़ते रहना होगा। अतः सभी पुरुषों को प्रेम, मुक्तवृत्ति, सतति आदि की सारी भूख दया कर मानसिक उपोषण ही में तड़फडाते हुअे मर जाना होगा। यह

मानसिक अत्याचार नहीं है क्या ? पर यदि अुन्हे जिस कालेपानी जैसे किसी स्वतंत्र उपनिवेशमें अुनकी अुद्दड प्रवृत्ति को पालतू बना सकने योग्य कठोर कायदे में यन्त्रित करके जितनी स्वतंत्रता अुन्हे दी जा सकती हो अुतनी अुन्हें दी जाय तो वे कौटुंबिक और वैयक्तिक सुख अधिक भोग सकेंगे और देशके सच्छील समाज को, अुन दडितो को भोगने के लिये दी गयी स्वतंत्रता से लेश मात्र भी अुपद्रव नहीं पहुँचता, अुसकी सभावना ही बच नहीं जाती । जिस कालेपानी पर आज वे हजारो अुद्दड और अुग़र लोग भी देखो किस तरह खुली तौरपर घूम फिर सकते हैं, अपनी अभिरुची के अनुसार खा पी सकते हैं, घरवार खेतीवाडी कर सकते हैं । अुनकी प्रेमभरी वात्सल्य, कामुक भावना ओ को भी जन्मभर पर्यवरोध नहीं होता और वे विवाह सुख भी भोग सकते हैं । पिछले अेक अपराधके लिये अुनके सारे जन्मका और अुनका सत्यानाश नहीं होता अन्यत्र सुधारका और सयमशील जीवन व्यतीत करने का अवसर बारबार मिलता रहता है ।

“ हिंदुस्थानहीमें किसी कारागारकी चहार दीवारी में बंद करके सजीव कब्रमें गाडने के मदृश अवस्थामें रखना दया है अथवा कालेपानी सदृश अुपनिवेशमें अुन्हे कठोर नियमोंकी कैचीहीमें किंतु पालतू बना कर मनुष्यता-पूर्वक जीवन का आनंद कुछ कुछ अुपभोगने देना सच्ची दया है ? कालेपानी पर आने के पश्चात् जो सुवर जाते हैं और ‘दाखलेवाले’ बनकर अपने वच्चोकच्चो से भरेपूरे घरों में नयाजन्म पाये हुआ की भांति सुखपूर्वक रहते हैं, ऐसे सैकडों जन्मकंदवाले वडीलोग आज अदमान में मौजूद हैं । अुन्हें ‘हिंदुस्तान के कारागृहहीमें यदि जन्मभर बंद करके रखा होता तो अच्छा हुआ होता क्या?’ अैसा पूछिये तब वे अुस भयकर कल्पनाके आते ही किस-प्रकार डरते हैं और ‘हमें कालेपानी पर भेज दिया गया यही अच्छा हुआ’ अैसा किस प्रकार कहते हैं यह देखिये । ”

“ यह सर्वथा सत्य है । आजन्म कारावास तथा दस दस बर्ष की दीर्घ कैदकी जिन्हें सजा हुआ है अैसों को भारतीय कारागृहों में बंद करके रखने की अपेक्षा कालेपानी सदृश अुपनिवेशों में ही जिस प्रकार धीरे धीरे स्वतंत्र रूपमें बसने देना ही अधिक दयापूर्ण है । अुद्दंडो और पतितो के सुधा-

रकी दृष्टिसे भी अच्छा है, और राष्ट्रमें रहनेवाले सत्स्वभाव नागरिकों को मुनके मुपद्रवोंसे बचाने की ओरच मुन दडितों को स्वयमपि निर्वधशील ओर सयतजीवन व्यतीत करनेकी ओर नवीन सधि देने की दृष्टिसे भी कैदियों के लिये ओदृग स्वतंत्र मुपनिवेश ही अधिक मुपयोग में आयेंगे । ”

“पर मुनमें भी जिस अदमान के मुपनिवेश की तो राष्ट्रीय हितकी दृष्टिसे अत्यंत महत्त्व की ओर विशेषता है । वह यह कि यह जो महत्त्वका टापू रोगयुक्त, सूना और मनुष्य प्रतिकूल होकर पडा हुआ था और जिसको वासाहं बनाने के लिये ही हिंदुस्थान की किसी भी राज्यसंस्था ने हजारों मनुष्य और करोड़ों रुपये हेतुत जवर्दस्ती कभी खर्च न किये होते, वह यह अदमान का महत्त्वपूर्ण टापू कालेपानीपर केवल मरने के लिये भेजे भिन पतितों के कठोर परिश्रमोंसे आज जिस प्रकार पत्र पुष्पोंसे प्रतिमडित, धान्यादिकों से ममृद्ध, मुपयुक्त, मुपजामू ओर मनुष्य वस्ती में भरा-पूरा होकर बैठ गया है । मुपनिवेशोंको जीतने के लिये राष्ट्रोंको युद्ध करना पडता है, पराक्रम करने पडते हैं । पर अपने राष्ट्रको यह ओर नवीन मुपनिवेश केवल अपने श्रम से संपादित करके जिस पतित ओर परित्यक्त कैदियोंके वर्ग ने मुफ्त ही में प्राप्त कर दिया है यह ओर अर्थ में सच नहीं क्या ? यदि ये सारे दडित हिंदुस्थान के वदीगृहों में ही बंद किये रखेंगे तो मुनके परिश्रमका, साहस का, बुद्धि का अितना मुपयोग और अितना लाभ अपना राष्ट्र कभी नहीं मुठा सकेगा । यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि भिन दडित वर्गों में सैकड़ों लोग मूलतः अत्यंत साहसी, दक्ष, कर्तृत्ववान् ओर कष्ट-सहिष्णु हुआ करते हैं । ”

“जिसमें क्या संदेह ! समाजको मुपद्रव देनेके दुष्ट कार्य में मुनकी मुन प्रवृत्तियोंका दुरुपयोग न हुआ होता तो वही मुनका धैर्यगुण, कष्ट साहिष्णुता ओर शौर्य ओर वीर का अलंकरण बना होता । ऐसे ही मुद्दह अपराधियों की सेनामें भर्ती करके सैनिक अनुशासन में मुनकी मुस मुद्दहता को मुपयोग में लाकर कितने ही सेनापतियों ने बड़ी बड़ी जीतें हासिल की हैं, कितने ही राष्ट्रोंने अपने स्वातंत्र्य संग्राम की लड़ाइयाँ लड़ी हैं । अधिक क्यों, पिडारियों के अमरखान प्रभृति स्पष्ट-रूपसे डाकेजनी करने वाले नेताओंने ही टोक सदृश रियासते स्थापित की हैं न ? ”

“की है। कटकवावू, तब राष्ट्र में रहते समय अुपद्रवी सिद्ध हुअे भिन दडितो के अुन सारे गुणो को और अवगुणो को भी कठोर कायदे के, सस्ती के और भय के दवाव के नीचे अुपयोग मे लाने के लिये भिस प्रकार के अेकाध कालेपानी को भेजना ही भिष्ट है। जो परिश्रम वे अपनी भिच्छा से राष्ट्र के लिये न करते वे अुनकी ओरसे कठोर सस्ती द्वारा करवा लिये जा सकते हैं और अुनके जीवन का अुपयोग राष्ट्रीय धनसंपत्ति अेव शक्ति के बढ़ाने के काम में लिया जा सकता है। भिस के लिये यह अन्दमानका वन्दी अुपनिवेश राष्ट्रीय दृष्टि से बहुत ही अुपयोगी है। अुस में सुवार जो समभव है वे करो, पर अदूरदर्शिता के वशीभूत हो, -अपात्र में दयामाव प्रदर्शित करते हुअे भिस अुपनिवेशको कभी वन्द नहीं करना चाहिये। पुन यो देखिये कि भिस जैसे कालेपानो के अुपनिवेश को न भेजते हुअे अुन हजारो दडितो को यदि हिन्दुस्तान के वन्दीगृहो में ही, स्त्री को अलग और पुरुष को अलग कोठरियो के पीजरों में ही जनमभर के लिये वन्द कर के रखने लगेंगे तो अुनके तारुण्य का तीन तेरह करनेवाला वह निर्दय पर्यवरोध अुन्हे कितना असह्य प्रतीत होगा और राष्ट्र के लिये भी घाटे का रहेगा। कारण, तद्द्वारा अुन हजारो स्त्री-पुरुषों की सतति से भी राष्ट्र वचित रह जायगा। राष्ट्र का सस्यावल घटेगा। अुस की अपेक्षा काले-पानी सदृश स्वतत्र और नवीन अुपनिवेश में अुन दण्डित स्त्री-पुरुषों को विवाहित जीवन अुपभोगने की सधि दी -तो प्रेम की और वात्सल्य की कोमल भावनाओं के माथ माथ अुनकी खुद की मनुष्यता भी विकसेगी और अुनकी सतति भिस अुपनिवेश की समृद्धि करके अपने राष्ट्र को अेक नवीन प्रदेश जीतकर दे सकेगी। आज ही देखिये न, अेक नवीन प्रदेश ही नहीं, प्रत्युत भिस अन्दमान में अपनी हिन्दू संस्कृति का अेक नवीन जानपद नो समृद्धि प्रवल करता जा रहा है।”

“पर अप्पाजी, पापी, अपराधी और दुष्ट दडितो की सतति में भी वे अत्याचारी अथवा दुराचारी दुर्गुण पहुँच जाते हैं अैसा अनुवश विज्ञान या कथन बतलाया जाता है, अुस वारे में आप का क्या कहना है?”

“वह अेक भ्रमभविष्यत अपुद्र तर्क है, और कुछ नहीं। वैयक्तिक अथवा कौटुंबिक दृष्टि से वह कितना मज्जा है या झूठ है यह मैं नहीं कहूँ,

पर अपनिवेशका जो अपना प्रश्न चल रहा है, उसके विषय में तादृश सिद्धांत का प्रतिपादन करना शुद्ध षडुद्र तर्क है। अजी, यह आस्ट्रेलिया देखिये, कानडा देखिये, अफरीका के अपनिवेश देखिये। अंग्लैंडके अत्यंत नृशंस और दुराचारी दंडितों को तथा आजन्म कारावासियों को नावे भर भर कर जित दिनों वे देश निर्जन और सुनसान थे मुन दिनों मुन्हे वहाँ पहुँचाया जाता था। अंग्लैंड का वह अेक कालापानी ही था। पर आज मुन्ही दंडितों के वंशजोंका अेक अेक स्वतंत्र राष्ट्र ही बन गया है। वड्डेवडे वीर कार्यकर्ता, विधिमंडल के मभासद, निर्वध पंडितअु नालोगों में निर्माण हुअे। आज वहाँ जो लोग अत्यधिक प्रतिष्ठित समझे जाते हैं अुन में कितनों ही के पर दादा चोर, डाकू, बलात्कारी, पापाचारी दंडित थ। जिस अन्दमान ही को देखिये। वहाँ की तरुण सतति को, स्त्रियों अथवा पुरुषों को, लडकों लडकियों को हिन्दुस्थान के किसी नगर में ले जाकर छोड दीजिये और सौन्दर्य, सौशिल्य, बुद्धि, दक्षता अित्यादि गुणों की कसौटी पर अुन्हे परखिये। वे किसी से हार नहीं खायेंगे, अैसा ही परिणाम आपको दृष्टिगत होगा।

“जिस मेरे परिवार ही का अुदाहरण लीजिये। मेरी पत्नी अेक राजपूत स्त्री थी। हिन्दुस्तान में वचपन ही में अुसकी शादी हुअी। अुस विवाह के अुसके पति की दो स्त्रियाँ थी, अुन सीतो सीतो में भयकर विद्वेष भच अुठने पर पति जिसी को मारापीटा करता था। जिस के अेक दुष्ट पडोसीने जिसे पाठ पढाया कि, ‘अपनी सीत को मैं जो मर्तिरत पुडिया दे रहा हूँ वह अन्न में डालकर दे, जिससे तू अुसके कण्ठों से मुक्ति पा जायगी।’ जिसने अुस पडोसी को अपने गले का मोने की मणियों वाला हार देकर वह मर्तिरत पुडिया ले ली और सीत के अन्न में डाल कर वह अुसे परोसा। वह पुडिया जहर की थी। सीत तत्काल मर गअी और जिस अठारह अुन्नीस घरस की लडकी को अुस भयकर अपराध के कारण आजन्म कारावास की सजा सुना दी गअी। पर अुस सजा के आघात के साथ ही किसी भी तादृश दुष्कृत्य के विषय में अुमके मुन में अैसा डर बैठ गया कि अुमका स्वभाव अत्यंत सरल अेव निर्वधशील बन गया। वन्दीगृह की मूक कठोर पत्थर की दीवारें ही कुछ लोगों के लिये किसी भी नीतिग्रथ की अपेक्षा अधिक

प्रभावशाली समय सिखा सकती है। कालेपानी परके आजन्म कारावास में उस राजपूत तरुणी का व्यवहार अितना निर्वधशील था कि मुझे जब शादी की अनुमती मिली तब मैंने उसीके साथ शादी की, दस अेक बरस उसने गृहिणी का कर्तव्य निरपवाद रूपसे पालन किया, सुख का गृहजीवन व्यतीत किया। आगे चलकर वह मर गयी। उस के पेटसे मुझे जो अिकलौता लडका हुआ वह भी अच्छा ही निकला।

‘ उसकी पत्नी यह अनसूया, मेरी स्नुषा। यह भी अेक बगाली कायस्थ की लडकी बाल विधवा हो गयी। उसके देवर ने ही उसके साथ अनैतिक संबंध रखा और अत में उसके गर्भ रह गया। अत्यंत अुग्र औषध देकर उसके हाथों भ्रूणहत्या का भयंकर पाप करवाया। पर समाजभय से उसने जो पाप किया वही अेक दिन अनावृत हुआ और उसे समाजदंड भोगना पडा। उस के देवर के लापता हो जाने के कारण उसी को आजन्म कारावास कालेपानी की सजा हो गयी। पर अितने पर से उसके स्वभाव पर ही किसी नित्यावस्थायी राक्षसी पने की छाप पड गयी है क्या? उसने कालेपानी की स्थिरीकृत सजा खत्म कर के जब मेरे लडके के साथ शादी की तब से अितनी प्रेमयुक्त सत्स्वभाव अेव कष्ट सहिष्णु वृत्ति से वह हमारे घर में रहती आयी है कि अैसी स्नुषा देश में भी सौ में से कोअी अेकाध ही निकलेगी। आगे चलकर मेरा लडकानौकापर मल्लाह हो गया। दुर्दैव से दो-अेक बरस पहले दुर्घटनावश वह समुद्र में डूब गया। पर उसके पीछे रहे हुअे अिन दोनों लडको ही का नही प्रत्युत मेरा भी सरक्षण वह किस प्रकार कर रही है, स्वयमेव रसोअी चौका, घर का काम चलाती हुअी दारिद्र्य में भी कितने सतोष के साथ वह व्यवहार करती है यह आपही देखिये। अिन मेरे नातियों का, अिन अपने दोनों बच्चों का यह मेरी स्नुषा अनसूया जितना प्रेम से सरक्षण करती है, उसकी अपेक्षा कौन मा अधिक बत्सल हो सकेगी भला? सर्वथा सभ्य अेव कुलीन समाज में भी हम सब का यह अनुभव होगा कि, ससार के सभी देशों में कुमारिकाओं की अल्हड अुम्र में भ्रूणहत्याका भयंकर दुष्कृत्य समाज के अत्युग्र भय के कारण हुआ करता है, पर अनेकों का वह कृत्य यदि छिप

जायें तो वे अन्य कुमारिकाओंके सदृश ही कुलीन भव सुशील समझी जाती हैं, प्रेममयी पत्नी भव अत्यंत वत्सल माता बन सकती है, जैसे कुत्ती देवी ।

“असका कारण यही है कि, दुष्कृत्यों की चाट लगे हुअे नराधम जिस प्रकार रहते हैं, तद्वत् दुष्कृत्यों से अत्यधिक घृणा प्रतीत होते हुअे भी केवल असह्य अत्याचारों के भयसे ही, जिस क्षणिक वसुधैकी सनक ही में जिन लोगोंके हाथोंसे दुष्कृत्य हो जाता है, ऐसे भी अपराधी मनुष्य रहते हैं । दंडित वर्गोंमें से अतः पहले राक्षसी प्रवृत्तिके अपराधियोंको कठोर दंडके भयसे सीधे रास्तेपर लाया जा सकता है । अतः दूसरे पापभिरु प्रवृत्ति के अपराधियों को नहानुभूति के अभयदान से सुधारा जा सकता है, अंतःवृत्ति, दंडित कहते ही वह मनुष्योंमें से सदैव के लिये अठ गया, अतःनाही नहीं असकी सतति भी वशपरपरया पाप प्रवणही रहेगी असा समझना मूलतःभवे अक भ्रम-भविष्यत क्षुद्र तर्क है । और असपर आधारित जो यह समझ कि दंडितों के अपनिवेश की सतति भी जन्मतःभवे मनुष्यतासे वचित रहेगी ही, वह समझ तो जितनी भ्रम-भविष्यत अतनी ही अत्याचार पूर्ण है ।”

“नि सशय । नि सशय । और अप्पाजी, अस क्षुद्र तर्कको जिस प्रकार अदमानकी तर्षण सतति ने असत्य सिद्ध किया है असी प्रकार अन्य अक विशेषतः हम हिंदुओं के दृढ क्षुद्र तर्क को भी असत्य सिद्ध किया है । हिंदू समाज की सारी जातियाँ—कम अजकम, बहुतसी—अक ही स्तर-पर आभी हुअी हैं तो भी अतःमें स्पर्श प्रतिवध, भोजन प्रतिवध, विवाह प्रतिवध प्रभृति जो आधियाँ हजारों वरस पूर्व की परिस्थिति में हितकर समझी गयी थी, अतःको असी प्रकार बनाये रखना आज भी हितकर है, और यदि वे आधियाँ पाट दी और जाति जातियों में भोजन, विवाह व्यवहार प्रचलित किया तो सकर अत्यधिक अनर्थावह हुअे बिना नहीं रहेगा, संस्कृति निकृष्ट भवे प्रजा अधम हो जायगी, असी जो अक धार्मिक स्वरूपकी भीति अपने देश में हिंदू समाजका आस बना रही है, वह कितनी भ्रात है, यह भी अदमानके अतः नवोदित हिंदू जानपद ने प्रत्यक्ष रूप से दिखला दिया है । अदमान में गत पचास-साठ वरसों से सारी हिंदू जाति और आरे प्रांतिक वर्ग नव मिश्र भाव से अकत्र वढते चले आये हैं । पर्याप्त मात्रामें अस्पृश्यता की बँड़ी टूट चुकी है, भोजन प्रतिवध का कमअजकम

स्पृश्य वर्ग में तो स्मरण भी अवशिष्ट नहीं रह गया । वगाली, पजाबी, मद्रासी, मराठी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—कौन कौन है यह विचार तक नष्ट हो चुका है और कम, अजकम स्पृश्य हिंदू मात्र तो अकेल भोजन करता है और बहुधा अस्पृश्य भी ! और मिश्र विवाह खुल्लम खुल्ला प्रचलित रहने के कारण विवाह प्रतिबंध नष्ट होकर जाति का नाम ही नहीं बच रहा ! अपने परिवार ही को देखिये न । आप, महाराष्ट्रीय ब्राह्मण, पत्नी राजपूत क्षत्रिय, लडके की शादी हुई वगाली कायस्थ कन्यासे ! अब आपके अिन नातियों की जात हिंदूभर ही रह गयी । अच्छा, अिन समिश्र रक्तबीजों के नाती भी कैसे हैं—तो ये मोहन और अुषा ! कितने चतुर, दर्शनीय, सुशील ! पूना, बम्बयी, कलकत्ते की किसी भी पाठशाला में ले जाकर छोड़ दें तो पहले पाचों में ही चमकेगे ! जातपात तोड़कर समिश्र विवाह करने से सतति निकृष्ट ही होगी यह भीति मिथ्या है, यह अदमान के हिंदु जानपद ने सपरीक्षण सिद्ध कर दिया है ।”

“ भाषी की दृष्टिसे भी अदमानने अन्य अेक अभिनदनीय अेव सफल परीक्षण करके दिखाया है । यहांके सब हिंदू जानपद की भाषा अेक—हिंदी ! तरुण पीढी की—मातृभाषा ही हिंदी । ”

“ पर अप्पाजी, सरकारी विचारसरणी में अेक मात्र बड़ी भारी गलती हो रही है । वह यह कि हिंदू लडको-लडकियों को भी सारा शिक्षण मुर्दू लिपि में ही जवर्दस्ती दिया जा रहा है । अिस विषय में मात्र आदोलन करके नागरी को ही अदमान की कम अजकम हिंदू जानपदकी तो अेकमात्र लिपि बनानी चाहिये । सरकारी लिखापढी और शालेय शिक्षण अूर्दूही में बनाये रखने की सरकारी विचारसरणी का हठ निर्दय है । अदमान में अैसे अनेक सुधारों का करना और नवीन स्वतंत्र पीढीको अपने गुणोंका विकास करने के लिये अनुकूल परिस्थिति प्राप्त करा देना—अिन दो कार्यों को सिद्ध करने के लिये कुछ त्यागी पुरुषों का अिसी अुपनिवेश के अुत्कर्ष के प्रयत्न को अपने सिरपर ले लेना आवश्यक है ।

“ हा कटकवावू, यही अपनी अिस आजकी चर्चाका सूत्र अपने अिस सभाषणके आरम्भके मेरे विषेयके साथ ग्रथित है । यदि तुम्हे यह स्वीकृत है कि अिस अदमानके अुपनिवेशमें निर्माण हुआ जो यह अेक नवीन जानपद

है, वह अपने हिंदुओं के सांस्कृतिक साम्राज्य में एक नवीन प्रात जीत-कर जोड़ने योग्य महत्त्व का है, तो नवीन उपनिवेश का आर्थिक, सामाजिक, राजकीय और सांस्कृतिक अन्तर्कर्म करने का ही कार्य अपने जीवन का व्यय मान लेना क्या यह राष्ट्रसेवा नहीं है ? एक तुम्हारे हमारे सदृश वदीवास अन्त जीवन की महत्त्वाकांक्षा बनने के लिये वह व्यय क्या पर्याप्त महनीय नहीं ? तब आप भुम को अपने जीवन का अतिकर्तव्य क्यों नहीं समझते ? कटक नाव, आप पाच-छै वरस बाद 'दाखला' लेकर थोड़े से स्वतंत्र हो जायेंगे, यही विवाह करके बस जायेंगे । जिस उपनिवेश में पाठशाला, देवालय, मन्दिर, मगठन आदि की जो कमी है, उसे पूरा कर डालिये । हमारे अिन किशन सेठजी का ही अुदाहरण देखिये । वे भी आजन्म कारावास की सजा पाकर यहा आये थे । पर 'दाखला' लेकर नारियलके बड़े बड़े बाग बनाकर, चाय की पौध को बढाकर लक्पावीश बन गये और मेरे विचार में मुन्होंने हजारों रुपये जिस अदमान में पैदा हुअे स्वतंत्र हिंदू तरुणों के अुदर निर्वाह के अर्थ लगाने में, पाठशालाओं वावने में, अखिल हिंदुओं का एक देवालय स्थापित करने में, छात्रवृत्तियाँ देने में, बर्माध्य औषधालय चलाने में दान दिये । पंडित, पुराणिक, चिकित्सक, नेता, आदिओं की यहाँ बड़ी भारी कमी है सो अुमे तुम पूरी करो । जिस उपनिवेश को हिंदुस्थान का, हिंदूसाम्राज्य का एक बलिष्ठ सामुद्रिक दुर्ग आजन्म कारावासी तुम सब लोग मिलकर बना डालो । जिस कार्य में हजारों जीवन नष्ट हो गये तो वे व्यर्थ चले गये अैसा नहीं कहा जा सकेगा ।। ”

“ सचमुच अण्णाजी ! सामुद्रिक दुर्ग के विषय में ही कहेंगे तो मैं जब पहले पहल अदमान में अुतरा था तभी जिस टापू का नामुद्रिक महत्त्व मेरे ध्यान में आया था । बद्धप्राचीर, अम्ब्रान्धसभार से मुसज्ज, फौलादी कवच के सदृश दुर्मेद्य—अैसा यदि जिस अदमान टापूका ही एक प्रचंड जल दुर्ग बना डाले तो पूर्वसमुद्र में अशु के नाविक दल के मार्ग में वह एक प्राण ग्राही मुरग भी बन जायगा । ये सशस्त्र और बद्धप्राचीर द्वीप हमारे पूर्वसमुद्र के पुरद्वार पर चढाभी गयी एक महाकाली तोप है । ”

“ और अब हम यूरोप की खबरें सुनते हैं, अुतपर से, मनुष्य को विमानों की विद्या हस्तगत हो ही गयी है, अैसा दिवाली देता है । आज

भले ही लडाकू विमान अल्पमात्रा में हो तोभी पाच पच्चीस वरसो में बड़े बड़े लडाकू और सामान ढोअू विमानो के जत्थे के जत्थे आकाश में विहरने लग जायेंगे जिस में कुछ भी सदेह नही प्रतीत होता । अंतावता आगे चलकर यह अदमान हिंदुस्तान के पूर्व समुद्रपर पहरा करने वाला अेक लडाकू वैमानिक बेड़े का स्थान बने बगैर नही रहेगा । तब सांस्कृतिक, सामुद्रिक अेव वैमानिक दृष्टिसे अंतादृश अनेक विष महत्त्वो का यह अुपनिवेश निर्माण करने, बनाये रखने अेव बढाने के कार्य में जिन सहस्रावधि दुर्देवी भारतीय बंदियो की यातनाअें, कष्ट, रक्त, अेव जीवन आज पचास वरसो से यहाँ व्यग्रिभूत हुआ, वह राष्ट्र के ही अुपयोग में आया, पापियो का रक्तभी पुण्यकार्य के लिये बहा, अैसा ही कहना चाहिये । जिससे आगे भी जिन को यही जीना है, अुन आजन्म कारावासियो को भी अपना जीवन इसी कार्य में लगाना चाहिये, यही अुनका अपरिहार्य धर्म है । ”

“ अितना मुझे भी स्वीकार है । अपरिहार्य अवस्थामें, दूसरा माग असंभव हो तो अुस अवस्थामें, आजन्म कारावासियो को अपने जीवन की सार्थकता जिस अुपनिवेश की जनसेवा ही में मानना चाहिये । पर मेरे लिये तो दूसरा मार्ग ही संभव है । मुझे तो अैसा निश्चित रूपसे प्रतीत होता है कि मुझे काले पानी पर से भाग जाने में सफलता प्राप्त होगी । मेरे कारण मैंने आपको पिछली मुलाकात ही में बतला दिये थे । अुसमें भी मेरी बहन कटकी तो पाँच बरस की बात दूर पाँच महीने भी कारावास में जीवित नहीं रहना चाहती । पागलपने का कहिये, पर अुस पर यह आत्मघाती भूत सवार हुआ है अवश्य । अच्छा, यदि मुझे सफलता मिली, यदि मैं स्वदेश में जिस वर्ष के अदर अदर जा पहुँचा और यदि मैं अपना आयुष्य वहाँ यहाँ के जिस ध्येय की अपेक्षा भी अधिक अुत्कृष्ट ध्येय के लिये समर्पित कर सका, मेरे गुणो का, शक्तिका और जीवन का अितना विकास अेव सदव्यय हो सका, जितना यहाँ स्वप्नमें भी संभव नही है, तब तो मेरा यह साहम गलत सावित नही होगा न ? ”

“ नही । अधिक क्यो, तुम्हे सफलता प्राप्त हो अैसी मैं प्रभुसे प्रार्थना भी करूंगा । पर तुम्हारा वही ‘यदि’ महा दुर्घट है । अस्तु । तुमने जो योजना

चनाभी वह अधूरी थी । निश्चित अवसर कब, किस प्रकार साधोगे यह सब ठीक कर लिया है ?”

“नहीं । पर अनसूयावाभीने कटकी को मैंने जिस जगह कहा था वहाँ काम पर लगा दिया है । स्त्री बदीगृह से बाहर विवाहेच्छु स्त्री-पुरुष बंदियों की पारस्परिक परिचय प्राप्ति के लिये भुतने ही में जो एक खुली जगह है, वहाँ झाड़ने बूहारने के कामपर नियुक्ति के कारण कटकी निश्चित समय पर बदी गृहसे बाहर निकल कर उस स्थानपर आती जाती रहती है । वहाँ मेरी और उसकी दूरसे मुलाकात भी हुअी है । बहुधा नजदीकी मुलाकात भी हो जायगी । उसके पश्चात् जो कुछ स्थिर करना होगा सो करने का खयाल करता हूँ । तथापि जब तक योग्य अवसर नहीं आयेगा तब तक मैं बगैर सोचे समझे जल्दबाजी नहीं करूँगा । अच्छा, आज अनसूयावाभी पडौसके गाव में गयी है असा पता चला है मोहनके कहने से, तब उनकी मुलाकात—”

“अब नहीं हो सकेगी यह सत्य है । कल आयगी वह । तुम्हारे जाने का समय हो आया है न ? मुझे तुम्हारे मिस साहसपूर्ण गुप्त अभिसंधि के अवधमे बहुत कुछ पूछने की इच्छा होती है—पर समय नहीं है । ऐसी चर्चा सुरक्षित भी नहीं रहती । तुम्हारा यहाँ आना भी अब तुम्हारे और हमारे लिये खतरनाक ही है ।”

“हा अप्पा !” कटकने अन्हे सवोधित किया । पर जो विचार वह करना चाहता था, उसीसे उसका दिल भर आया । वह लडखड़ाया, फिर बोला,

‘अप्पा, मिस बीमारी के कारण आप और मिस साहसके कारण मैं मृत्युके दष्टा करालो में कब जा पड़े मिसका अब क्षणभरकाभी भरोसा नहीं । पर अप्पा, यदि कालेपानी के भूगृह में से मैं बाहर निकल सका, जीवन की निर्मुक्त वायु पुनः श्वासोच्छ्वास कर सका तो मैं—स्वदेशमें निर्भयतया रहना संभव हुआ तो स्वदेशमें, न संभव हुआ तो यूरोप अमेरिका, सदृश्य किसी एक विदेश में—जहा कही भी रहूँगा वहासे आपके अनि नातियों की चिंता अपने औरस पुत्रोंकी भांति ही करूँगा । अनसूया वहन मेरे बंदिवास काल की मेरी वहन है । मेरे दुर्दैव, सकट अब दारिद्र्यपूर्ण स्थितिकी

भ्रातृद्वितीया के समय जिसने मेरी आरती अतारी उसे मेरे भाग्य में यदि कभी सगी वहनसे भी अधिक सुदैव की भ्रातृद्वितीया आती तो, अपने प्रेम और सहायता का अधिक उपहार दिये बिना नहीं रहूँगा। जाता हूँ अब, जाना ही चाहिये अब मुझे।”

कटक अठा, अम्पा को अुसने खड़े खड़े नमस्कार किया। अुसी प्रकार वह अुनकी तरफ थोड़ी देर देखता रहा, थोड़ा जानेके लिये मुड़ा भी। पर फिर लौटकर बोला, “अम्पा, जरा मिस तकिये के सहारे थोड़ा सा अपने को सभाल कर बैठियेगा? पैर मिस तरह थोड़े धीरे धीरे फैलाविये—नहीं आपको फैलाने ही होंगे।”

रुग्ण शय्या पर जर्जर होकर पड़े हुअे अुस वृद्ध वीर को अुस प्रकारसे विठाकर कटकने अुनके पैर अपने हाथों से ही ओढनी के बाहर निकाल कर व्यवस्थित रूपमें रखे और अुनपर अपना माथा टेक कर अुनके समक्ष साष्टांग दंडवत् प्रणाम किया।

“अम्पाजी, मिस अदमानका अुपनिवेश हिंदू राष्ट्रके लिये कितना महत्त्व का है यह आप थोड़ी देर पहले बता रहे थे न? मिस टापूका सामुद्रिक और वैमानिक वेडे के स्थान की दृष्टिसे बहुत अधिक महत्त्व है, यहाँ अेक नवीन हिंदू जानपद का निर्माण हो रहा है, वडे वडे नारियलके वगीचे, चाय बागान, खड की पौध, प्रचंड वृक्षों के विस्तीर्ण अरण्योंमें की नाना प्रकार की अिमारती लकड़ी की अगणित पैदावार—यह सारी राष्ट्रीय संपदा महत्त्व की है। तथापि मिस प्रकार की संपदा अितरअुपनिवेशों में भी अपने हिंदू राष्ट्र को लब्ध हो सकेगी। पर जो संपदा अन्य किसी भी अुपनिवेश में नहीं मिल सकेगी अैसी जो अेक संपदा मिस अदमान ही में संग्रहीत है और मिस भूमि ही में रखी गयी है जिस अमूल्य निधि के कारण अन्य किसी भी अुपनिवेश की अपेक्षा यह अदमानकी भूमि अपने हिंदूराष्ट्र के लिये अधिक अभिलषणीय प्रतीत होगी, अेक क्षेत्र भासित होगी, वह मिस भूमि की हमारी राष्ट्रीय संपदा, मिस भूमि की वह हमारी अनर्घ्य निधि है भवादृश सन् सत्तावन के सहस्रावधि राष्ट्रवीरों की मिस भूमि में विखरी हुयी राख। हिंदुस्थान को अदमान का नाम लेते ही प्रथम अुसीका स्मरण हो आयगा।”

“पर—पर इस तरह कहने वाला तू ही पहला हिंदू मुझे गत पचास वरसोंमें दिखाओ दिया है।” अुदास निश्वास छोड़ते हुअे अण्णाजी बोले, “कैसा स्मरण लिये बैठा है। अरे, हिंदूपद पादशाही-के सताजी, घनाजी, वाजी, चिमाजी, भाऊ, विश्वास, मल्हार, महादजी परभृति शतावधि विजयी सेनापतियों का भाग्य यदि न भी हो, तो भी निराशामें और अपजय ही में सच्ची कसौटी पर चढ़नेवाला जो रणचापल्य, निष्ठा, शौर्य, धैर्य, तितिक्षा, कार्यकृति, अेव राष्ट्रभक्ति आदि गुणों से अंग्रेजोंको नाको घने चढ़वाने वाला अुस अपनी हिंदूपद पादशाही का सर्वांतिम रण घुरघुर सेनापति जो तांत्या टोपे—वे जिस स्थानपर स्वराज्य के लिये और स्वधर्म के लिये फासीपर चढ़े अुस स्थान पर अुनकी यादगार तक की अेक शिलाभी जिस इस कृतघ्न पीढीने आजतक खड़ी नहीं की, अुसे अदमान में धिक्कृत होकर राख बने हुअे हम सैनिकों का कैसा स्मरण होगा। कटक, जिस दिन सत्तावन की असिलता टूटी, अुसी दिन हिंदुस्तान की आशा समाप्त हो गयी।।”

“नहीं अण्णा, नहीं। आज हिंदू जाति अचेतन पड़ी है, मानता हूँ, पर वह मूर्च्छाहै—मृत्यु नहीं। अितिहास तो शपथ पूर्वक कहता है कि अमी कितनी ही मूर्च्छाओं में से पुन जाग खड़ी हो अैसी अुज्जीवक शक्ति इसी हिंदू जातीमें निवास करती है, यह निश्चित है। दशमुखी रावण गये, शत मुखी गये।। अण्णा ये भी दिन चले नहीं जायेंगे सो काहे परसे? नये नये विक्रमादित्य अवतरेगे ही नहीं सो काहे परसे? —किंबहुना यह आपकी राख ही अुनके अुद्भव की खाद है—अूरीकारोक्ति है!!”

“तथास्तु।। जब और यदि वैसा भाग्य का दिवस कभी सचमुच ही प्रकट हुआ, तो इस अदमान में बिखरी हुअी यह हमारी राख —”

“सकलित की जायगी और अुसपर यह कृतज्ञ हिंदूराष्ट्र अेक अुत्तुग स्मृतिस्तूप खड़ा करेगा। और इस सर्व समुद्र में से होकर जाने आने वाली हिंदुओंकी प्रत्येक रणनीका अुस स्मृतिस्तूप की तोपोंकी रणवदना दिये वगैर वहा से आगे अेक कदम नहीं रखेगी।।”

कटक के इस वचन के सुनते ही अुस वृद्ध वीर के शरीर पर रोमाच सड़े हो गये, अुसकी जर्जर देहयष्टि में तरावट आ गयी, अुसके नेत्रों के

सामने कोओ अत्तुग स्मृतिस्तूप खड़ा किया मानो दीखही रहा हो विस प्रकार सुदूर आकाश में क्षण भर गड़ी हुयी अुसकी अनिमेष दृष्टि पर से भासित हुआ । दो ओक क्षण पश्चात् अुस अनिमेष दृष्टिको आकाश पर से हटाकर कटक की तरफ फेरते हुअे वह वृद्ध वीर सकय स्वर से बोला,

“ कटक, सत्तावन के क्रांति युद्ध के अनतर, सहानुभूति की और मेरे राष्ट्रके पुनरुत्थान की सुभव्य आशा की याद दिलाने वाले ये अैसे शब्द चालीस वर्ष के पश्चात् मैने आजही फिर सुने है । देख, मेरे हृदय के भीतर अत्यंत गहराओ पर दबाकर रखी हुयी मेरी पूर्वकालिन आकाक्षाओ की अूमियाँ ओक आघ तूफान की मानिंद मेरे रक्त रक्त में से अुत्स्फूर्त हुयी आ रही हैं । मुझे कटक, सहन होता नहीं अिन अनुकूल भावनाओ का भी कल्लोल कय, यह हृदय की तीव्र गति । ”

अुतने ही में चौकी बंद होने की घटी दूर पर से वजती हुयी सुनायी दी । “ घंटी । ” वृद्ध वीर चौक अुठा, “ जा, कटक जा, अन्यथा पकड़ा जायगा । ” जल्दबाजी से कटक अुठा और लुकते छिपने अुस टीले पर वेग से चढता चला गया ।

और दो तीन दिन के भीतर ही, सन् सत्तावन के क्रांति युद्ध के कारण काले पानी पर गये हुअे अुन सहस्रावधि हिंदू सैनिको में से अुस आखिर के वीर वृद्ध का भी अंत हो गया ।

अुस दिन अुसकी अुस सूनी झोपडी में अुसकी याद दिलाने वाले दो फूल ही पीछे बच गये थे— मोहन और अुषा ।

अदमान के जंगलो में घर बाघने के काम में अपयोगी लकड़ी मितनी अच्छी, मजबूत और सुन्दर मिलती है कि यूरोप के बाजारो में भी अुसके लिये भरपूर माग बनी रहती है।

आज कटक जंगल तुडाओ के जिस विभाग में काम किया करता था, अुस टुकड़ी के लिये अरण्याधिकारियो की विशेष आज्ञा हुयी थी कि, लकड़ियो की यूरोप से आयी हुयी नयी मांग को पुराने के लिये आजतक अरण्य के जिस भाग में तुडाओ का काम किया जाता रहा है, अुस से आगे के नये अरण्य में प्रविष्ट होकर तुडाओ काम चालू करना है। अुस आजतक अकृत प्रवेश सघन अरण्य में प्रथम चलने योग्य रास्ता बनाना है, तदनतर बड़े बड़े वृक्षो के चारो ओर की घनी जालियो तथा झखाडो को साफ करके मिमा-रती लकड़ी के वृक्षोंपर तारकोल से करमाक डालने है और तब बड़े बड़े करपत्र ओव अन्य ओजारो से लैस दो-दो सौ कैदियो की टोलियो के जरिये अुन प्रचंड वृक्षो को काटकर, तोडकर, तराशकर अुनके लडो की राशिकी राशि रचने का अत्यत कठिन श्रम करवा लेना है।

मिस आवश्यक आज्ञा के अनुसार कटक अपने हाथ के नीचेकी टुकड़ी को तय्यार करने के काम में लग गया था। अरण्य के आजतक न तोडे गये और सर्वथा सुदूर विभाग में पैर रखना यह अदमान में अेक साहस का काम समझा जाता था। अग्रेजो का प्रवेश जैसे जैसे अुस सघन अरण्य के अतरंग में होता जाता था, वैसे वैसे वहाके मूल के जंगली और मरने मारने के लिये तय्यार रहनेवाली टोलियो का शत्रुत्व बढ़ता जाता था। कारण अुस अुस अंश में पीछे हटना पडता था, अुनका वह जंगली राज्य समाप्त हो जाता था। मिस लिये अग्रेज मिस प्रकार सघन अरण्य में और अेक कदम बढाने लगा कि यदि अुस अरण्य में कोओ जंगली टोली रहती होगी तो वह अग्रेजोकी जंगल तुडाओवाली कैदियों की टोलीपर कब टूट पडेगी और अुनके मुर्दे गिरा देगी मिसका कोओ नियम नही रहता था। अिन जंगली और तीक्ष्ण स्वभाव टोलियो में भले ही अनेक अनेक अपजातियां और

अनुके अनेक उपनाम होते हो तथापि अनुमें जो अत्यंत जगली और अत्यंत तीक्ष्ण स्वभाव की जाति है, अुसका नाम जावरा होने के कारण कैदियोंकी बोलचाल में अनु सारी जगली टोलियों को जावरा नाम से ही पुकारा जाता था। अैसे नये घने जंगल में प्रथमतः प्रवेश करते समय वे जावरा लोग सदैव प्रतिरोध करने के लिये आया करते थे अैसी बात नहीं थी। पर कब आजाय इसकी निश्चिति भी कुछ नहीं थी। इस लिये कटक ने भी अपनी टोली में हमेशा के आलतू फ़ालतू कैदियों को न लेते हुअे निर्भीक, कष्ट सहिष्णु और जंगल तुडाओ के काम में अभ्यस्त कैदियों को चुना। अनु में रफिअुद्दीन तो था ही। वह यदि करने बैठा तो अैसे हरमसाध्य काम किया करता था और जंगल तुडाओ के काम में तो वह पहले जब कालेपानी पर था तभी से अितना प्रवीण हो गया था कि, अुसके भागा हुआ कैदी होनेपर भी जंगल की लकड़ी तोड़ने की आमदनी बढाने के काम के लिये, अुसके बदोबस्त की अुत्तरदायिता अपने अूपर लेकर अुस टोली के मुख्य जमादार ने अुसे बुद्धिपूर्वक माग लिया था।

वह मुख्य जमादार रफिअुद्दीन को मनुष्य कहता ही नहीं था। रफिअुद्दीन का नाम अुसन रखा हुआ था 'जंगल तुडाओ की मशीन।' आज कल अपना खुदका ही दाव साधने के लिये रफिअुद्दीन भी अपने अूपरके अधिकारी की कृपा-सपादन में लगा हुआ था। अुस दिन के अुस साहस के काम में आये जाने के लिये वह भी अेकदम पूरी तरह से तय्यार हो गया था।

गत दो तीन दिनसे कटक के साथ रफिअुद्दीन की भाग जाने की गूढ अभिसंधि के विषय में खूब चर्चा हुअी थी। पर स्थिरस्वरूप का कोअी भी निश्चय जमा नहीं पाता था। अितने में यह जरूरत वाला सरकारी काम आ पडा। अतका अवसर हाथ में आने तक और अुसके पाने की अिच्छा ही से कटक और रफिअुद्दीन दोनों सरकारी कामों में खूब श्रम करके अधिकारियों का विश्वास अेव बाहवाह प्राप्त करने में रंतीभर भी कसर नहीं रखते थे। अिमी नीति के कारण अुस घने और भयकर अरण्य के अप्रविष्ट पूर्व भाग में घुसने और जावराओंके यदा कदाचित होनेवाले प्राणग्राही छापे का भी मुकाबिला करने के साहसकार्य में सबसे अगली टोलीमें वे दोनों

आज प्रविष्ट हुअे थे । मुनका सारा ध्यान आज मुस काम ही में केन्द्रित हुआ था ।

मुर्गों के बाग देने से पूर्व ही बैरक की घटी हुअी । आधे घटेके भीतर सौ दो सौ कैदी मैदान में क्रम से खड़े हो गये । प्रत्येक के अंक अंक पैर में शृखला कमर से लेकर टखने तक जकड़ी हुअी थी और अंक पैर खुला था । “अंक, दो, तीन”— विस प्रकार गिनती हुअी और दो सौ की टोली को अंक ओर निकाल लिया गया ।

वह अनुमें भी चुनी हुनी टोली थी ! और आज लकड़ी की माग पुराने की अत्यधिक आवश्यकता होने के कारण मुस टोली पर जो विशेष जमादार नियुक्त करने में आये थे वे भी अंक जात ‘दडावाले’ मेहनती और काम-चोर, सरल और अक्खड जैसे दोनों प्रकार के कैदियों से जो जमादार काम केवल निचोडकर निकाल सकता है, सब से ही काम अक्षरशः ‘ठोककर’ लेता है, मुस जाति के जमादारों को कैदी लोग ‘दडावाला’ कहते हैं । ‘आगे काम पीछे राम’ यह मुस जाति के जमादारोंका घोषवाक्य रहता है । अर्थात् काम ‘ठोक पीटकर’ लेने में दया माया का धार्मिक प्रश्नही मुनके सामने नहीं रहता । सारा रोकड ‘ठोक’ आर्थिक व्यवहार ! मुद्दड और खूसट दडित भी जैसे जमादारों के सामने घोषे बन जाते हैं । ये ‘दडेवाला’ जाति के जमादार खुद पक्के डाकू अथवा मुद्दडवर्ग के पूर्वाश्रमके कैदी होते हैं और अब कैदियों पर बढती मिलने से दोयम दर्जेके अधिकारी बने हुअे होते हैं ।

अंक अंक पैर में कमरसे टखनो तक शृखलाओ से जकड़े हुअे वे दो सौ कैदी मुस प्रभात में मुस मैदानमें ‘गिनती’ करवा कर मुस प्रकार खड़े हो गये । दडेवाले जमादारों के आते ही ‘बैठो’ का हुक्म हुआ । साखल वेडियों की अंक साथ खनखनाहट हुअी और वे कैदी पवित्रमें झटसे नीचे बैठ गये । मुनके कटोरो में मुसवक्त दलिया परोसा गया । निश्चित समय के होते ही ‘मुठो’ की गर्जना हुअी । दलिया किसने खाया या कोअी खा रहा है विसका विचार न करते हुअे सबको मुठना ही आवश्यक ! तत्काल वह दो सौ कैदियों की टोली दुहरी कतार बनाकर जंगल के रास्ते हो ली ।

हाथ में वेत की छड़ियाँ लिये हुअे वाँडर और ढंढे लिये हुअे हवालदार, जमादार अून कतारो की दोनों वाजुओ में दस दस कैदियो के अतर से चल रहे थे। जगल के भीतर लकड़ी तुड़ाई का काम सब कामों में खतरनाक। अेकाध दफा अेकाध साहसी कंदी जगल में अदृश्य होकर भाग जाने में कमी नहीं करता। जिस लिये अेकाध बंदूकवाला सिपाही बिन टोलियो के साथ सदैव दिया जाता है, ताकि कोअी भगने ही लगा तो नि शक बसपर गोली चलाअी जाय। तिसपर आज तो जगल के सर्वथा निविड और हिंस्र आवराओ के भय से पदे पदे आक्रांत भागमें घुसना था। अतः तीन बंदूकवाले सैनिक भी अून सबके पीछे अूनकी पृष्ठरक्षा करते हुअे अेव बीच बीचमें अून सबसे "चलो। जल्दी चलो। और जल्दी।" जिस तरह चिल्ला चिल्लाकर खदेडते हुअे आ रहे थे।

वारिश जोरोपर थी। जगली हिस्से में बरसके दस महिने तो अदमानमें वारिश निरंतर रहती है। कंदी लोगोके समीप कपडो का अेक अेक ही जोडा रहता है। घुटन्ना और कुडता। वह तो कम अजकम वापिस बैरकमें आनेपर सूखी हालतमें पहननेको मिले जिस खयालसे अुसे भी बैरकमें ही रखकर जगल तुड़ाईके लिये जाया वरते थे। अेक लगेटी ही रहती थी शरीरपर। शरीर सारा दिनभर बुरी तरह भीगा रहता था।

जगल आते ही अुस टोलीकी स्थिरीकृत टुकडियाँ वनायी गअी और तुड़ाई फुड़ाई तथा तराशने का काम शुरू हुआ। आध मील लवाअी के जगल के टापूमें जिधर तिधर चिल्लाहट तथा काम धूम घडाकेसे शुरू हा गया। आरे से चीरते चीरते लायी गयी अजस्र टहनी पर आखिर की चिराअी चालू रहते समय जब वे कड कड करती हुअी नीचे गिरने लगती थी अुस समय 'भ गो,' 'बचावो' का अेकही शोर रहता। बडे बडे लठ्ठे दस पाच आदमियो के सिर पर रख कर टाल की तरफ ले जाये जाने लगे। बीच ही में कोअी पेड परसे नीचे गिर पडता था। किसी को विषले जन्तुके डस लेने पर अेकही वोव मच अुठती थी। वाँडर कैदियो को और जमादार वाँडरो, हवालदारो को गालियाँ वके जाते थे। जरा कोअी पडा, थका, रुका कि वेतकी छड़ी अुसके शरीरपर सपासप अुडती थी। बीच ही में कोअी अदखड अथवा कामचोर दडित विगड खडा हुआ अथवा हमेशा की आदत

के मुताबिक कामसे अिनकार करके गाली गलौजपर अुतर आया कि तीन चार वॉर्डरोको अुमपर डालकर डङ्गे के नीचे वह दनादन पिटवाया जाता था । कारण आज हमेशा के जमादारो का राज्य न होकर “ भय्या, आज तो दङ्गेवाले जमादार का राज है । ”

दो पहर के बारह बजे तक अुन कैदियो की हड्डियाँ आरे और कुल्हाडी चलाते चलाते पूरी तरह खोलो की तरह खिल गयी । बारह बज गये हैं यह तब मालूम पडा जब घटी बजी । कारण सवेरे की तरह मध्यान्ह में भी अिस जगलकी घनी झाडी में और सदा अभ्राच्छादित अेव टपकने वाले वातावरण में स्वच्छ प्रकाश तो कभी पडता ही नहीं था । घटी बजते ही सारी टुकडियाँ दौडते घूंपते टाल के सामने आयी । फिर ‘ अेक-दो-तीन-दो सौ ’ कैदियो की गिनती कर ली गयी । अुनकी सख्या अुतनी ही थी जितनी सवेरे थी । —परिस्थिति में कितना अतर आ गया था । कोअी पैरो में जहरीले काँटे गहरे गडकर टूट जाने के कारण लगडा रहा था, कोअी लकडियो के नीचे आ जाने के कारण अथवा वॉर्डर जमादार द्वारा पिटाअी के कारण खून से तर होने तक घायल हो गये थे, बहुत-मोने दल दल में का कीचड अपने सारे शरीर पर थोप रखा था—वह बारिशकी वजहसे धुल गया कि फिर शरीर पर कीचड मल लिया—कारण, जगल में सचित हुअे पत्रो-पणों के रेदे में जो जोके भरी रहती थी वे नीचे से शरीरके अुपर चढती थी और अुपर से लाखो मच्छर तहअियाँ प्रभृति जहरीले प्राणी शरीर पर केवल आग लगा देते थे । कीचड की परतोपर परते अुन कैदियोने अपने शरीरपर मल रखी थी । तो भी जोके जहाँ चिपट गयी वहाँ से अुन्हें अुपाडते अुपाडते नाक में दम आ जाता और त्वचा पर किये गये अुन अुन दशो में से रक्त की वारीक धारायें अुनके कीचड से सने हुअे शरीर पर लवे और लालवाल की तरह जहाँ तहाँ दिम्बानी देती । खुजलाहट निरतर बनी रहती, पर खुजाने के लिये फुरसत नहीं । सताये हुअे, थके-मादे, कीचड और खूनसे लथपथ वे कैदी अुस वक्त खुदाको कितने दयनीय और अन्याय परिपीडित समझते थे । अुन्हें कठिन कष्टों के कोल्हू में पीसकर निकालने वाली दड पद्धति को तथा अुन ‘ दङ्गेवाले ’ जमादारो को कितना दुष्ट समझते थे, कितना शाप

देते थे । पर मिस दडके वे शिकार क्यों बने, अपने हाथों से दूसरो पर ढाये गये किन किन जुल्मों का परायश्चित्त वे भोग रहे थे, उसका पश्चात्ताप, यदि आप पूछेंगे, तो सौ में से शायद ही किसी बिकल्ले दुकल्ले को हुआ होगा । मितना ही क्यों, अनुमंसे बहुतेरे लोग, वह डडेवाली जमादारी यदि मुन्हे दी जाती तो उसे अस्वीकार करनेवाले नहीं थे—कितने तो सवाये दडेवाले भी बने होते । ।

वारह की शटी होते ही भोजन आता । भूख से अकुलाये हुअे वे सारे दंडित झाडो झूरमुटो की आड में, उस स्थिति में जैसे भी बैठना सम्भव हो सका वैसे बैठ गये । मोटी झोटी रोटियों की राशि आते ही वह में अकेला ही खा डालू ऐसी बिच्छा हर अेक के मन में उत्पन्न हुमी । दो-दो चपातियाँ और सब्जी तरकारी का अेक अेक लगदा उनके हाथों पर डाला गया । जगल तुडाभी की टोलियों को ऐसी घावली के दिन थाली तक लेने की सुविधा नहीं रहती । अेक हाथकी थाली बनाकर उसके ऊपर चपाती और भाजीका लगदा ले, दूसरे हाथ से खायें । ऊपर से वारिश । खाते खाते चपातियों का नरम आटा बन जाता था और भाजी वह निकलती थी ।

जमादार, सैनिक और कटक बाबू मितनोने वहाँ बाँधे गये तात्कालिक झोपडे में भोजन किया । उनकी जी हुजूरी करनेवाले कैदियों में से कुछ वसीले के टट्टू भी झोपडे में लार टपकाते हुअे घुस सकते थे, अेकाब अधिक चपाती भी उनके सामने फेंकी जाती थी । रफिअुद्दीन भी बिन्हीं वसीले के टट्टुओं में रहा करता था यह कहने की आवश्यकता ही नहीं । कारण जमादार, हवालदार, सैनिक तक टोलीके ऊपर जो मुख्य 'बाबू' रहता है उससे जरा सभालकर रहते हैं । कटक तो केवल बाबू ही नहीं था, प्रत्युत अपने अुत्कृष्ट कामसे तथा निस्पृह वृत्तीसे वह अग्रेज अधिकारियों के भी पसंद का हो गया था । उसके सामने वे लोग विशेष ही दबकर रहते थे । उनकी अनेक गलतियों पर तथा अूटपटाग कामोंपर यदि कोई पर्दा डालेगा तो वही डालेगा, और उस कटकबाबू के पीछे लागूलचालन करने में रफिअुद्दीन प्रवीण, साहसी और कठिण श्रमों के कामों के कारण जमादार को भी अभीष्ट सा हुआ था । उस वजहसे

कटक घाबूके परो में लोट लगाता हुआ वह भी क्षोपड़े में जा सका । अक
पैर भर कर जकड़ी हुई शृंखला को शान के साथ बीच बीच में खन-
खनाते हुअे बेल घुगुरुओं की ध्वनी में जिस प्रकार चारा खाता है उसी
प्रकार अपनी अवस्था बनाकर उसने चार पांच चपातियों का चारा, कटक
घाबू जिस क्षोपड़े में था उसी के अक कोने में पालथी मारकर चट कर गया ।

अस दिन रफीमुद्दीन ने श्रम भी वैसे ही किये थे । अन्य कैदी जब
अस जगल की तुहाबी कर रहे थे जिसे रोज तोड़ा जाता था, अस समय
अंग्रेजों द्वारा अप्रविष्ट पूर्व आगे के जगल में घुसकर रास्ता बनाने के लिये
जो पुरस्सरो की (Pioneer) टोली कटक के हाथके नीचे गयी थी उसी
में रफीमुद्दीन भी था । कुल्हाड़ी, हँसिया, दराँती आदियोंसे टेढ़ी मेढ़ी टह-
नियाँ झुरमुट, कँटेरी जालियाँ काटकर, बड़े बड़े पत्थरो को अुठा कर
अथवा गढ़े में भर कर पक्का आधा मील का चलने का रास्ता अुन्होंने
अुन दो तीन घंटों में खुला कर दिया था । कौली में न समा सके
अैसा अक भारी अजगर खुद रफीमुद्दीनने कुल्हाड़ीसे सिर काटकर गिरा
दिया था । अस भारी भरकम प्राणी का वह भयप्रद घड कंधेपर डाल
कर और अपने शरीर में लपेटकर वह जमादार के सामने
नाचता था । तीन दिन का काम तीन घंटे में करवा लेने कारण जमादार
सहित सारे अधिकारी कटकपर भी प्रसन्न हुअे । कटक मलेही बाबू रहा हो
था तो मूल का कैदी ही ! अस कारण अस घोर और सघन जगलमें सबेरेही
जब वह पांच-छे चुनीदा कैदियोंको लेकर गया, तब उसके साथ और
विशेषत असके सगमें रफीमुद्दीन सदृश पहले भागा हुआ कैदी रहनेके
कारण अुन सबपर पहरा देने के लिये अक बटूकवाला सैनिक दिया
ही था । तिसपर अस जगलके अक नवीन टुकड़ेमें पहली ही मर्तवा सरकारी
प्रवेश हो रहा था अस कारण जावराओंके अुपद्रव की भी भीति
थी ही । परंतु अब आधा मील अंदर प्रवेश हो चुका था और अस जगल
में चलने योग्य रास्ता भी निर्विरोध बनाया जा चुका था, अत जावराओं
के अुपद्रव की वह भीति खोटी साबित हुयी थी और सबका मन अस अश
में निश्चित हो चुका था ।

भोजन की छुट्टी समाप्त होने पर अब पूर्व निर्धारित विचार के

अनुसार कटक का काम अुस दिनभर के लिये अितनाही वाकी रह गया था कि रास्ता बनाये गये आधे मीलके अुस टापू में रास्ते के आसपास जो भी अुपयोगी वृक्ष हाथ लगे अुसपर यथा साध्य तारकोल से क्रमाक डालना और साक्ष को पाच वजने से पहले पहले लौट आना । अुसके लिये रफिअुद्दीन के साथ चार पाच कैदी सग में लेकर कटक वावू फिर अुस जगल में अुस नवनिर्मित रास्ते से होकर घुसा । अुसके आगे पीछे पहरा देने के लिये और रक्षण के लिये वह बडुकवाला सशस्त्र सैनिक भी गया । वाकीके सौ डेढ सौ कैदी लकड़ियो वे तोडने फोडने का काम सवेरेवाली जगहपर ही करने लग गये । वचे हुअे बडुकवाले सैनिक अुन्ही में विभक्त कर दिये गये थे ।

बारिश बराबर पड रही थी । अुसमें भी कटकवाली टोली जिस निविड आरण्य में गयी हुयी थी, वैसे अरण्य में तो अुपरके आसमान की बारिश घन्टे भर के लिये रुक भी जाय तो भी जगल के भीतर की बारिश नहीं रुकती । कारण, अूचे और विस्तीर्ण महावृक्ष अुसके नीचे छे टे वृक्ष, अुसके नीचे झाड, अुन सबको लपेटकर अुलझाकर अेक जजाल बनी हुयी लता बल्लियाँ, जालियाँ, झुरमुट, वृक्षरूप अुपवृक्ष आदि की अेकपर अेक छपरियाँ । आसमान की बारिश रुक गयी तो भी घटोतक अुस जजाल में फसा हुआ पानी अैसे जगलो में अुसी प्रकार बरसता रहता है, सरसराता, टपकता, निथरता रहता है । वही वात प्रकाश की । अुपर घूष रही भी तो भी अुस निविड झाडी में तल तक सहसा पहुँचती ही नहीं । जब चार वजने का वक्त हो आया तब अुस जगह अितना अघेरा छा गया कि सिर्फ पास-वाला आदमी ही नजर आ सके ।

अैसा अघेरा और पानी देखकर पाच वजे तक न ठहर कर चार वजेही लौट चले अैसा कटक ने पहरेवाले सैनिक से कहा । वह तो पूरी तरह तय्यार थाही । लगातार कधेपर बन्दूक रखे रखे वह अितना परेशान हो गया था कि अुतने परेशान जगल तुडाओ के कष्ट से वे कैदी भी न हुअे होंगे । अिस समय साथके दो तीन कैदियोको निशानी लगाये हुअे वृक्षोपर क्रमाक डालनेका काम सौंपकर कटक और सैनिक अुस नये रास्ते के परली ओर के सिरे तक जगल में घुस गये थे । रफिअुद्दीन अन में भी आगे कुछ फासलेपर

विद्यमान खाड़ी की अेक शाखाके समीप पहुँचा हुआ था । समुद्र काफी दूर था । अुसकी खाड़ी भी अून वृक्षकी आड में छिपी हुअी थी । परन्तु अुसकी अेक सँकरी किन्तु गहरी शाखा दूरतक जगल में घुसकर अुस जगह खत्म हो गअी थी । अुस शाखा के कारण वहाँ थोड़ी सी खुली जगह मिल गअी थी । कटक अुस सैनिक के साथ वापस चलने का विचार कर ही रहा था कि अुस शाखातक आगे पहुँचे हुअे रफिअुद्दीन ने दबी जवान में कटकको पास बुलाया । कटक झपटकर आगे आने लगा, त्यों ही अुसका हाथ पकड कर अुसके साथ अेक दीवार जैसे वृक्षके बुधेकी आड में खडा होकर रफिअुद्दीन सशयी स्वर में बोला,

“ बाबूजी, वो देखो ! - वे गीध, चील और वे कौअे अिस खाड़ी की शाखा के किनारे भरे पडे हैं । यह चिन्ह कुछ ठीक नहीं है । ”

‘ क्यो रे बाबा, अिस से पहले अुस सजीव अेव अजस्र अजगरको देखकर डरा नहीं और अिन मरे हुअे पँखेअुको देखकर फक्क पडा जा रहा है । ’ वहाँ अतने में वह बन्दूकवाला सैनिक भी आ गया था, अुसकी ओर देखकर कटक हसा ।

“ देखो मरे चिडियो को रफिअुद्दीन डरते हैं । भूतप्रेत जिवपविषयो का रूपधारण कर के भटकते हैं अैसा जगली लोग समझते हैं, वे ही ये पक्षी हैं अैसा कदाचित् अिसे प्रतीत हो रहा है । ”

“ नहीं बाबूजी, नहीं । यह चेष्टा (मजाक)की बात नहीं । देखो, अिन जगली लोगो में मैं पहले जब भाग गया था अुसी समय खूब रहा हू । अिन्हे यदि किसीपर गुप्त छापा मार कर अुनकी हत्या करनी हो तो ये लोग आसपास के चीलो, गीधो और कौअो को मार डालते हैं । कारण अुनकी अैसी धारणा रहती है कि, ये पक्षी अुनकी गतिविधियोका समाचार अुडते हुअे जाकर शत्रुअुको बता देते हैं । चूकी ये अखिल भूत पक्षी यहाँ आज ही मारे गये पडे दीखते हैं, अत — ”

“ घाँय्, घाँय्, घाँय् ” करके बन्दूक की आवाज अुसी क्षण कैदियो की मुख्य टोली जहाँ काम करती थी अुस ओर से सुनाअी पडी । अुसके बाद ही हो हल्ला और शोर शरावा सुनाअी दिया । त्यों ही अूचाअी पर अुस क्षोपडे के नजदीक विद्यमान घटी की ‘ घनघनाहट ’ शुरू हो गअी ।

“जावरे आ पहुँचे ! हमारी टोली पर जरूर वे टूट पड़े होंगे और सैनिकोंने अंनपर बढ़के चलायी होगी !” रफिउद्दीनने भर्रायी हुई आवाज में पर निर्भयता पूर्वक अनुमान लगाया !

अस पर सबसे अधिक यदि कोई घबराया होगा तो वह अंनकी रक्षा के लिये आया हुआ पहरेदार वह बड़कवाला सैनिक !

“अरे बापरे ! तब अब हम क्या करे ? वता बाबा अक बार ! बोल बड़क चलायू क्या मैं भी ?”

“नहीं, नहीं !” कटकने असे रोक दिया, “केवल पेड़ पत्तों पर बड़क छोड़ने से क्या बनेगा ? अलटे हम जिस जगह है यह अंन जावरोको मालूम नहीं तो मालूम पड़ जायगा और वे जिस झाड़ी में घुसकर हमें भी घेर लेंगे ! मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि हम अब अपना धीरज न खोते हुअे किसी प्रकार जिस रास्ते से वापिस जा कर मुख्य टोली से जु मिले !”

सैनिक को तो वही अभीष्ट था ! असने अपने मन में कहा,

“अगर कोई जावरा हमपर चढ़ आयगा तो वह दलदल की ओर से ही आयगा ! लौटते समय हमारी पीठ किसी ओरको रहेगी, ऐसी अवस्था में जिन कैदियों के आगे आगे मैं चलू तो असमें अपनी जानको खतरा कम रहेगा ! जावरो के दलदल की ओर से आनेवाले बाण प्रथमतः जिनही में से किसी की पीठ में घुस जायेंगे ! मैं आगे का आगे निकलकर भाग खड़ा होऊंगा !” मनमें तो जिस किस्मका डर पर अूपरी तौरपर अलटे घैर्य का अभिनय करता हुआ वह सैनिक बोला,

“हा चलो सारे ! अरे डरते क्या हो जिस तरह ! यह देखो तुम्हारे आगे आगे चलता हूँ चार कदम ! जावरे हैं क्या ? अन्होंने जिन पक्षियों को जिस तरह मार गिराया है, उसी तरह मेरी यह बड़क अन्हें पटापट मारकर नीचे गिरा देगी ! चलाव !”

सैनिक आगे आगे रास्तेपर चलने भी लग गया, कटक और रफिउद्दीन असके पीछे पीछे हो लिये ! पर सैनिक की अस 'पुरोगामिता की कमजोरी रफिउद्दीन और कटक के ध्यानमें आ चुकी थी अतः कटकने अस सैनिक की अस दिखावटी बहादुरी को देख सिर्फ अपनी आँख

मटका करही अपनी अद्भुतानुभूति को रफिअुद्दीन पर व्यक्त किया। पर रफिअुद्दीन से उस खतरे और घाघली के समय भी मजाक किये वगैरे नहीं रहा गया। वह उस बूबडखावड और कंटीले रास्ते को झपट्टे के साथ तय करते हुअे ही कुचेष्टापूर्वक बोला,

“ हवालदारजी ! देखो ये जावरा लोग रहते हैं तो बडही शूर ! अुनकी रीति ऐसी है कि जिनपर छापा मारना होता है अुनपर वे पीठ पीछे से कभी बाण नहीं छोडेंगे । रास्ते में जो अुनके मुँहके सामने रहेगा उसी के सामने आकर रास्ता रोककर के खडे हो जायगे और सामना देकर बाण मारेगे ।

रफिअुद्दीन की यह गप्प सुनते ही सैनिक का मुँह अेकदम काला पड गया ! मैंने आगे होकर ही अपनी जान खतरेमें डाल ली ऐसा मनमें आते ही वह अितना घबराया कि जावरो का बाण सामने से सायें, सायें, करते हुअे आ ही रहा हो ऐसी उसकी अवस्था हो गयी अब अपने डर को छिपाकर सहज ही पीछे रहने के लिये कौनसा वहाना ढूढा जाय ? खासते खासते उसे अेक वहाना भी अखिर मिल ही गया । वहाना भी अेक नवर का था ।

अेकाअेक रुककर बडूक को जमीनपर टेककर हवालदारजीने काड-तूसी की पेटी निकाली । उसके रुकते ही रफिअुद्दीन और कटक भी थोडेसे रुक गये । अुन्हें डाँट बताकर हवालदारजीने आज्ञा दी,

“ क्या गँवार हो ! चलने लगो न झपझप । बडूक में कारतूस भरकर तथा पट्टा बाध कर आता ही हूँ मैं । डरते हो क्या अकेले चलने के लिये अिस तरह । ”

वह समय सचमुच अेक पलभर भी ठहरने का नहीं था यह कटक जानता था । मजाक जानपर आ सकती है अत केवल अुपहसने से जितना मनोविनोद किया जा सकता है अुतना ही करके कटक आगे चल पडा । उसी के साथ रफिअुद्दीन । थोडेसे फासले पर अुन्हें आगे बढा हुआ देखकर काडतुसे भरी अी अपनी बडूक फिर कंधे पर डाल कर हवालदार जी भी अब अुनके पीछे पीछे चलने लगे । जावरे रास्तेमें आये भी तो सामनेसे आयेंगे, अुनके तीरो के सामने अिन कंदियो की छाती की ढाल

रहेगी और अुसके पीछे हम रहेंगे अुस परिस्थिति में जितना सभव था अुतना आत्मरक्षा का अुपाय हुआ देखकर हवालदार को भी पर्याप्त मात्रा में सतोष प्रतीत हुआ ।

दो अढाअि सौ गज अुस दुर्गम पादमार्ग से अुस निविड अघकारपूर्ण अेव पानी वरसाने वाले अरण्यमें से होकर वे तीनों अुस मुख्य टोली की तरफ जानेके लिअे वापिस हुअे ही थे कि त्योही—

दलदल के किनारे की निविड झाडी में स्थित अेक अूँचे वृषपर से अुस सारी हलचल पर काफी देर से निगाह रखनेवाले दो मैले कुचैले जावरे नीचे अुतरे, झाडी में सर्प की भाति सरसरा कर बाहर निकले और अुनकी पीठके पीछे तक चले आये । तीर अचूक मारने योग्य विश्राति और सुविधा के निलते ही अुन्होंने अपने अपने धनुष्य तानकर दस पाँच बाण, अुस पीछे रहे हुअे बढूकवाले हवालदार की पीठपर ही अुनअुनाते हुअे छोड दिये ।

“वापरे ! मरा ! जावरे ! मरा ! ” अिस तरह अकस्मात् चिघाड कर वह सैनिक बढूक के सहित मुह के बल गिर पडा । पीछेकी ओर मुडकर देखने तक का अुसे अवसर नही मिला । अचानक अुसकी पीठमें दो जहरीले बाण जो घुसे वे रीठकी ओर से सीधे पेटमें जाकर धँस गये । अुसकी पीठपर धँसकर रहे हुअे अुन बाणो के सिरे पर के पर अुडते हुअे पक्षी के सदृश्य थरथरा रहे थे, अितना आवेग और त्वेष अुनमें भरा हुआ था ।

अुस चिघाड के सुनते ही कटक खट्से पीछे मुडा और सैनिक की तरफ को दौडा । पर रफिअुद्दीनने अुसका हाथ तत्काल पकड लिया और अुसे झाडी के भीतर खीच लिया ।—

“बाबूजी, छुप जाव, छुप जाव पहिले । ”

कटक और रफिअुद्दीन, जानपर आ पडतेही मनुष्य तत्काल केवल शारीरिक प्रतिक्रिया के कारण जैसा कुछ कर जाता है, वैसे अुस झाडी में जा छिपे । न काँटे न जोक, न साप, न पत्तो पत्तियोका गीला गीला कीचड ! अुनके ध्यान में भी ये न्यूनतर अुपद्रव नही आये । खडे खडे अदर घुसना सर्वथा असभव ! वे सर्प की भाति अुस गीले कीचड में से सरसराते हुअे जहातक जाना सभव हुआ वहातक झाडी के भीतर सते चले गये । अपने हाथ में को कुल्हाडी मात्र

अन्होने छोड़ी नहीं । पाच छे मिनिट तक अन्के मन में और हृदय म चिंता तथा घुडघुडी के अतिरिक्त अन्य किसी भी वस्तुकी अनुभूति नहीं थी । अुसके बाद कटक के अेकदम खयाल में आया कि सैनिक जो गिर पड़ा है, अुसके हाथ में भरी हुअी बटूक और कमर में कारतूसे अुमी तरह है । यदि जावरो के हाथमें वह पड गयी तो बडा भारी अनर्थ टूट पड़ेगा ।

“ जावरो को बटूक की अुतनी हविस नहीं रहती ”—रफिअुद्दीन बोला, “ और अब झाडीसे बाहर निकलने पर जान का खतरा है । ”

“ पर बटूक को अुसीतरह छोड देने में तो वह खतरा और भी भयानक स्वरूप का हो जायगा । किसे मालूम वे अुसे लेकर चल ही दें । पुनश्च अिस परिस्थिति में बटूकके अपने हाथ में रहने ही में अधिक मजबूती और सुरक्षितता है । ” अिस प्रकारके आग्रह के साथ कटक छिपते छिपाते फिर झाडी के मुखाग्र पर आया । चारो तरफ सघनाटा देखकर झपटकर आगे की ओर बढ़ा । बटूक, कारतूसे, शिकारी चाकू, और खजर निकाल लिये । सैनिक के मुंह में से खूनकी अुलटियाँ चालू थी । अुस खून में अुस का शव दूरी तरह सन गया था ।

“ मर गया बेचारा । ” अिमप्रकार निश्वास छोडकर कटक अुन हथियारो सहित फिर झाडी में घुस गया ।

रफिअुद्दीन बोला,

“ अेक दो हवा में बटूक की आवाजे कीजिये । जावरे बटूक की आवाजो से बहुत विचकते हैं । आसपास कही होंगे तो आगे घुसेंगे नहीं । नहीं तो अुस सैनिक की पीठमें घुसे हुअे अपने बाण निकाल लेने के लिये वे कदाचित् चले आयें । अुनके समीप बाण अिने गिने ही रहते हैं । शिकार करते समय छोडे गये बाण ही वे फिर यथा सभव ढूढकर निकाल ले जाते हैं । अुन्ही को ठीक करके फिर काम में ले आते हैं । ”

अुसके अनुसार कटक रास्ते के किनारे तक आया और अेक दो बटूक की आवाजें की । और फिर अुसी झाडी में वे दुवके पडे रहे ।

टोलीके सैनिक और जमादार कुछ लोगो को साथ लेकर अुन्हे छुडाने के लिये किंवा खोजने के लिये हर हालत में अुस रास्तेसे होकर आयेंगे ही अैसा अुन्हें अेक मर्तवा प्रतीत होता था । पर सकट घटा

(Alarm Bell) जो बज रही थी और जो सुदूर टीले परसे हो हल्ला बीचबीच में से पहले सुनाभी देता रहा था वह अब विलकुल बंद पड़ गया था । उस परसे अन्हें कभी कभी लगता था कि जावरो के प्रहार से डर कर उन सारे कैदियोंको लेकर जमादार सरकारी बैरको की ओर वापिस भी चला गया होगा ।

कटकने पूछा,

“ जावरो के कितने लोग छापा मारन के लिये आये होंगे ? ”

रफिअुद्दीन ने उत्तर दिया,

“ कितने सौ पूछते हो । सैकड़ों में तो वे लोग कभी आते ही नहीं । है ही सिर्फ मुठ्ठीभर बेचारे । वे लोग जब आते हैं तब वे सिर्फ पाच पचास घनुर्घर ही रहते हैं । झाड़ियों में दुबक कर पाच पचास जहरीले बाण अकस्मात् मारकर, दस बीस मुर्दे गिराकर भाग जाना, यह उनकी लडाभी है । घनी झाड़ी, अघेरी और मार्ग शून्य । बंदूकवालोंकी सेना भी निकम्मी साबित होती है उनका पीछा करने के लिये । उस सुविधा के कारण ही वे अभी तक मिस जंगल के राजा हैं । अंग्रेजों को उनका पीछाही करना हो तो किया जा सकता है, पर अितनी प्राणहानी परेशानी और खर्च करने योग्य मिस य कश्चित् एक अरण्यमय उपनिवेश में युद्ध करके मिलेगा क्या अंग्रेज को । अतः केवल तभी जब वे अपने रास्ते में रुकावट बनकर खड़े हो और अतनोही को जितने लोग सामने आये काटते हुअे अंग्रेज अपना काम चलाता है । हा, अब ये जो विमान तय्यार हो रहे हैं अैसा कहते हैं न, उस प्रकार का कोई साधन निर्माण हुआ तो उस समय आकाशमेंसे दृष्टि डालकर जावरो के निवास स्थानों को अचूक रूपसे पता चलाने में और सौ सवासौ भयकर स्फोटक गोलक अूपरसे फेंककर जावरोका सत्यानाश करने में अंग्रेज को एक सप्ताह भी नहीं लगेगा । पर वह आगे की बात है । आज तो जावरे यदि छापा मारने के लिये आये होंगे तो अेकवार पहले मेरे समक्ष अंग्रेजोंके माथ मिसी प्रकारकी हुअी मुठभेड़ के सदृश्य वे मुश्किल से पचास से लगभग होंगे । टोलीपर बाणों की वृष्टि करके वे निकल भी गये होंगे दूसरे जंगल में । ”

“वैसीही यदि सभावना हो, तो फिर यहाँ कहीं बैठे हुआ है हम विलो में चूहों की तरह ! चल बाहर निकले । अभी पादमार्ग अपने को दीखता है, समीप बन्दूक है, टोलीकी तरफ चलो । टोली के लोग यदि मिथर ही आ रहे होंगे तो अून से मुलाकात शीघ्र ही हो जायगी । वे भी चेचारे सकट में होंगे, होंगे भी या चले गये होंगे किसे मालूम । गये भी हो तो भी नजदीक ही कही हम अुन्हे पकड सकेंगे । अभी छै नही बजे है । घटी के समय बैरक में—”

‘ फिर कैदी बनकर आपने आप ही अुस बैरक में जाकर गिनती करायें ? अेह् ! कटकबाबू, अब मेरे मन में अेक भयकर विचार आ रहा है ! जो भाग निकलने का अवसर अपना अपने हाथ नही आ रहा था, वही स्वयं दैवने हमारे हाथ में अिस प्रकार लाकर नही दी है यह काहे पर से मानें ? आज सवेरे बैरक में से निकलते समय ही विस्तुअिया ने अनुकूल स्वर में चुक् चुक् किया था । बाबूजी, विस्तुअिया के चुक् चुक् करने से शुभाशुभ की प्रतीति अवश्य होकर रहती है, समझे ! ”

“ तब वह तभी क्यों नही पता चला तुझे ? आगे चलकर शुभ हुआ कि पीछे के शकुन याद आते हैं ! सौ दफा तो वे सैकडों गलत सावित हुअी चुक् चुक् की आवाजे आदमी भूल जाते हैं । वह कुछ क्यों न हो, अपनी ओर टोली के जमादार ने कुछ आदमियों को भेजा है या नही पहले यह चलकर पता चलासा ही चाहिये ! क्यों ठीक है न ? तो फिर चल बाहर निकल । ”

वे दोनों हथियारबन्द होकर घीरे से झाडी से बाहर निकले । देखते देखते वे लोग रास्ते के प्रारम्भिक भाग तक आये । देखते हैं तो क्या, चारों तरफ सुनसान—सन्नाटा !

कारण, चार पाच वजने के बीच में जब अून टोली के कैदियोंपर घनी झाडी में से होकर दस—पद्रह जावरो ने भिन्न—भिन्न स्थानों से जहरीले चाणों की अकस्मात् वृष्टि की, तब अून कैदियों में से दस बारह कैदी घायल हो गये । यह देखते ही अुस टोली में भगदड मच गअी थी । बन्दूकवाले जो दो आदमी थे अुन्हो नें बन्दूके चलाअी, पर वे गोलियों और छर्ने अुस घनी झाडी के पत्तों पत्तियों में न जाने कहा विला गये । अैसी पचास भी बन्दूके

चलायी जाती तो भी जंगल में छिप कर बैठे हुओं का तथा बाण चलाने वालों का बाल भी बाका न हुआ होता। साझ का समय था वह, अंधेरे में और बारिश में उस जंगल में आगे बढ़कर आक्रमण करने की उन बाजारू भुनगों में से किसकी ताकत थी?— और उन कैदियों का बनने विगड़ने वाला ही क्या था जो नाहक अपनी जान खतरे में डालते। मरना हो तो मरे वे अंगरेज और जावरे। जमादार सहित सारे लोग इस अुपाय की खोज में लगे कि वहाँ से अपनी जान बचाकर यथाशक्ति जल्दी से जल्दी किस तरह निकल भागा जाय। कटक के साथ गये हुओं और रास्ते के आधे पूरे भाग में वृक्षोपर करमाक डालते हुओं जो चार पांच कैदी थे अुन्होंने ज्यों ही टोली में इस तरह का हाहाकार पूर्ण शोरगुल सुना तो दौड़े दौड़े अुलटे पावों वे अपने अड्डेपर जा पहुँचे थे। कन्टक वन्टक जो भी रास्तेके परले सिरेपर अटके हुओं थे वे जिन्दा भी हैं या मर गये इस की पूछताछ करने तक की किसी में सुघ बाकी नहीं रह गयी थी। क्या बन्दूकवाले सैनिक और क्या जमादार किसी ने भी पैर आगे नहीं बढ़ाया। बस सकट घटा बजायी, जितने कैदी अिकट्ठा हुओं अुन्हें लिया, घायलों को इसके अुसके कन्धोपर चढ़ाया और बैरकों की तरफ वापिस हो लिये। जावरो ने अुनकी फेरी हुयी पीठोपर भी ज्यों ही और चार पांच बाण ताने त्यों ही वह सारी की सारी टोली सिरपर पैर रखकर जो भागी सो भाग ही खड़ी हुयी। अुसने अिधर अुधर का और कुछ नहीं देखा।

बैरकों की तरफ आते ही अरण्य विभाग के अंगरेज अधिकारी को सैनिकों ने और जमादार ने सारी बातें सुनी का सूआ करके सुनायी

“जावरो की अेक सेना की सेना अुस जंगल में युद्ध के लिये आयी हुयी है साव।”

“कितने होंगे वे जावरे साधारणतः?” साहबने पूछा।

“हजार अेक तो होना ही चाहिये, साव।”

अुस टोली के लोगों की इस तरह दुर्गति कर चुकने के बाद वे बीस पन्चीस जावरे भी अुस जंगल में से भाग कर अपने सुदुर्गम अेव सुदूरवर्ती गगमस्थान की ओर चले गये थे। कन्टक की टुकड़ी पर बाण छोड़ने वाले दोनों के दोनों भी कन्टक के बन्दूक की आवाज करते ही दलदलकी

तरफ भाग गये थे और अपने मुन वापिस होनेवाले जावरो से जा मिले थे । मुस दिन मुन्होने अग्रेजो के लोगोपर भले ही धावा बोला हो, कुछ वरस पहले हुमी जूझ में अग्रेज ने अपने लिये जो सीमा निर्धारित की थी मुसका आज अल्लघन कर के मुस से आगे के जावरो के लिये निर्धारित अरण्य में मुसने चोरी छिपे जो प्रवेश किया था, मुस सबध में मुन्होने अग्रेजो के लोगोमें से पाच-पच्चीस आदमियो को घायल करके बदला भलेही लिया हो, तो भी जावरे भी इस बात को समझते थे कि, अग्रेज भी बदलेका बदला लेने के लिये तो दो तीन दिन के भीतर ही सशस्त्र सेना की टुकडी लेकर मुस जंगल में घुसे वगैर नही रहेगा । क्वचित वह कलही कलमें धावा बोल बैठे । कारण, अग्रेजो के अेक बडूक वाले सैनिक को मुन्होने जानसे मार डाला था । मुसके तथा मुस जैसे खोये हुअे कैदियोकी तलाश में अग्रेजो के लोग अगर कलही कल में चलेही आये तो ? मोर्चा बनाकर निर्धारित रणागणपर सामना भला जावरे क्या कर सकेगे ? वह मुनका रण सप्रदाय ही नही । भूतो की भाति मुनका सचार, अदृश्यता मुनका अस्त्र और बल । अग्रेज मुन्हे जहा खोजेगा वहा वे किसी हालतमें नही मिलेगे; जहा खोजेगा नही वहीं से वे जान बूझकर छापा मारेगे । अतएव मुन्हो ने मुस अरण्य की ओर फिर दोबारा झाककर भी नही देखना अैसा निश्चय किया था । तथा अबके दूसरे ही जंगल में से अग्रेजो के लोगोपर अर्थात् कठोर श्रमजीवी अथवा स्वतंत्र ग्रामवासी कैदियो पर अगला धावा बोलने का निश्चय पक्का भी कर डाला था ।

मिस रीतिसे कैदियोकी टोली में से किवा जावरो में से कोमी भी मुस रास्तेके अगले तथा पिछले अरण्य में वाकी नही रह गया था अतस्मात् कटक और रफिअुद्दीन दोनो जब वहाँ पहुँचे तो मुन्हे सर्वत्र नि शब्दता तथा स्तब्धावस्था दिखामी थी ।

तादृश्य स्तब्धावस्था में, मुस प्रकारके प्राणोपर आ पडे हुअे सकट प्रसंग में अथवा मुस घोर अरण्य के काले काले होते जाते वाले जवहो में अपने को पडा हुआ देख अेक विशेष दिङ्मोहक भीति के कारण मुन दोनोके हृदय हिल मुठे । और दोनो ही के मनकी प्रवृत्ति नवनवीन

भीषण सकटों का शास बनने के बजाय सरल मार्गसे सरकारी बैरको की तरफ जाकर अपने वदी वधुओंसे और अधिकारियों से मिलने की ओर होने लगी।

पर दोनोंही के मनमें भाग खड़ा होने की सनक, पेट में अठनेवाली मरोड़ की तरह, निरंतर सवार होती जा रही थी। उन्हें चैन नहीं लेने देती थी।

रफिअुद्दीनने जिसके पहले कटक को जब स्पष्ट रूपसे सूचित किया की ' काले पानी के कैदखाने को तोड़कर भागना हो तो उसके लिये यही सबसे बढ़िया मौका है। तब उसे भी पहले कटक के मनमें वही साहसपूर्ण कल्पना आती थी। पर उस कल्पना के साथ ही साथ उसे याद आया कि,

“ अरे, भागना तो अवश्य है, पर मुझे अकेले हो को नहीं भागना है। अपने साथ मालती का भी छुटकारा कराकर उसके सहित निकल भागना है। यदि अब जिस प्रकार अकेला ही मैं अरण्य में घुस गया, तो पुन मालती को कैदियों के अपनिवेश में छोड़ाकर लाने का पीछे की तरफ का पुल ही मुड़ा दिये जैसा हो जायगा। अक दफा अरण्य में घुसा कि फिर अपनिवेश की ओर आना ही असंभव हो जायगा। जिसप्रकार अतर्कित रूप से आजही मौका आ जायगा जिसका सपना तक नहीं आया था। अन्यथा उसे अन्य कोशिस से छोड़ा लाने की कोभी न कोभी योजना पहले ही से तय्यार करके तब आजका मौका साधा होता। ”

जिस अक अडचन के कारण कटक तत्काल भाग जाने के रफिअुद्दीन के आग्रह पर ठीकसे ' हा ' भी नहीं कह पाता था और ' ना ' भी नहीं कह पाता था। रफिअुद्दीन को कटक की जिस असली कठिनायी की जानकारी ही नहीं थी। जिस कारण उस मौके के अन्य लाभों को कटक के हृदयपर विवित करने का पुनः पुनः प्रयत्न करके वह अंत में बोला,

“ बाबूजी, सबसे बढ़कर बात यह है कि आज सरकार आपका पीछा भी नहीं करेगी। और चार पाँच दिनों तक तो सरकार को असाही प्रतीत होता रहेगा कि, हम भागे नहीं हैं प्रत्युत जावरो ने ही हमें उस सैनिक की भाँति जिस जंगल में कहीं घेरकर मार डाला होगा। सरकारी लोग हमारी

सोज में यहाँ आयेंगे, पर ' भगोडे ' समझ कर नहीं प्रत्युत ' मारे गये ' समझ कर ! और किसी जगल में खोजेंगे पहले पहल । जिससे बढकर सहूलियत और कौनसी मिलेगी अपने को ! सचमुच, जिन्हें भागना है भुन कैदियों को सरकारने खुद ब खुद सरकारी खर्चसे बढूक, काडतूस, हथियार पुरा कर पहरे में से छोडकर जिस घने जगल तक स्वय सुरक्षिततावस्था में पहुँचा कर, ऊपरसे यह आश्वासन और दे डाला है कि, चार पाच दिन तक हम तुम्हारा पीछा भी नहीं करेगे समझे, जाओ तुम, तब तक तुम जितनी दूर जा सकते हो उतनी दूरभाग जाओ ! ”—अैसे भाग्यवान् भगोडे (पन्नायन कारी) कैदी जिस अदमान के सपूर्ण इतिहास में हम दोनो ही निकले हैं ! अब कितने पर न भागकर जो मुलटे अपने पैरो से बैरको की तरफ जा कर सरकारी कैदखाने में पुनरपि घुसकर बँठ जायगा वह केवल कैदखाने में ही सडकर मरने की योग्यता का है अैसा कहना चाहिये ! तब कहिये, आप को वही इष्ट हो, तो आप बैरक की ओर वापिस चले जाभिये । मैं तो अब जान भी गयी तो भी नहीं लौटूंगा । वह उतनी बढूक मुझे दे डालिये, बस मैं घुसा ही समझियेगा जगल में, जाकर पहुँच गया ही समझिये हिन्दुस्तान में ! ”

अुसके जिस अतिम निश्चयात्मक वाक्य को सुनकर कहू या न कहू जिस प्रकार चलनेवाला कटकके मनका अतरङ्ग समाप्त हो गया । थोडी मात्रामें क्यों न हो पर अब कह डालना ही मुचित होगा यह समझकर कटक बोला,

“दो चार दिन पहले यदि यह मौका आता तो मैं ही जिस भाग खाडे होनेके काम में तुझसे भी चार कदम आगे ही रहता; पर तुझे मालूम नहीं । गिन तीन चार दिनोंके जिस नये अव्यावश्यक सरकारी काम की झझट में मैं तुझसे कह नहीं पाया जहा मेरी आजन्म कारावास की सजा हुअी हुअी वहन भी यहाँ की स्त्रियोकी जेलमें गत सप्ताह ही आयी है ! यदि मैं भागूंगा तो मुझे लेकर ही भागूंगा । सरकारी अधिकारियो में सबको मेरी सजाके इतिवृत्त से मालूम है कि वह मेरी स्त्री वहन कटकी है । हम दोनोपर अेक साथ मिलकर की गयी हत्या का ठिकठ्ठा आरोप आया और दोनो को कालेशानी की सजा हुअी । यदि मैं अकेला भाग गया तो वे क्वचित्त मेरा बदला लेने के ख्याल से, कम अज कम मुझे भी जिसकी जानकारी होगी

मिस सशय पर मुसपर जुलम तोड़ने से बाजु नहीं आवेगे। पुनश्च, जब तक वह कैदखाने की कबरमें गड़ी हुई है, तबतक मैं भले ही मुसमें से बाहर निकलकर जीवित हो जाऊँ पर हालत तो मेरी भी मरे हुअे की सी ही रहेगी। यह मेरी आजही भाग निकलने के रास्ते में सबसे भारी अड़चन है। अक दफा अब मैं मिस तरह भाग पड़ा हुआ तो फिर उसे छुड़ाने के लिये कोअी गूढ़ अभिसधि करूँ क्या, मुससे दोवारा मिलने के लिये जाना भी मेरे लिए सम्भव हो सकेगा क्या? वह घबरा अठेगी, मेरे लापता 'भगोडा' बन जाने की खबर सुनकर, चिंताओंसे क्षीण होकर वह जान तक दे बैठेगी। —"

"ठहरिये! यही है न अड़चन? तो मैं आपसे प्रतिज्ञापूर्वक कहता हूँ कि आपकी वहन को कैदखानेसे मुक्त कराना, जिस समय हम स्वयं वधन में थे, भागे नहीं थे, मुस समय की अपेक्षा अब हमारे भाग जानेपर, स्वतंत्र हो जानेपर ही अधिक सुसाध्य होगा। आज हम जंगल में भागकर जा पहुँचे हैं। मिसका मतलब यह नहीं कि हम फिर मिस कैदियोंके अपनिवेश में पँर रखही नहीं सकते। यह डर गलत है। मैं पिछली दफा जब भागा था न तब तीन चार महीने रातके वक्त खुले तौर पर रहता था जिन जावरो में और दिनभर गुप्तरूप से घुमा फिरा करता था मिस अपनिवेशमें। कटक वावू, यह काम मेरा रहा। मैं आपकी वहनको कैदखानेसे निरावद रूप में अुठाकर जंगलमें जिस जगह आप रहेंगे मुस जगह लाकर आपके सामने खड़ी किये देता हूँ। देखिये तो सही मेरे करिश्मे। थोड़ा खुला छूटने दीजिये, जंगलका चारा और वारा (हवा) मिस वाघने अक दफा फिर खाया कि आ ही गयी समक्षिये मिस गज खाये हुअे नाखूनो में पुन वह पूर्व गलिक व्याघरीय धार। कटक वावू, आपको मेरा पहले का पराक्रम मालूम नहीं है। आपको मेरी जानपहचान मेरे हाथो में हथकड़ियों पड़नेके पश्चात काले पानी की तरफ आते समय 'महाराजा' वोटपर जो हुअी थी वही है। पर मुसदिन वधुभाव की जो सौगध हमने ली थी, मुसका पालन करके आपने मिस कठोर कैदखानेमें मुझपर जो अनेक अपकार किये हैं मुन्हे जनम जनम तक भूलूँगा नहीं। मुसी वोटपर कालेपानी की ओर आते हुअे मैंने कालेपानीके वधन लौह को तोड़नेका आपको अभिवचन दिया था आज मुसे आधिक रूपसे सच्चा सावित किया है, कल परसों

पूर्णरूपसे सच्चा साबित कर दूंगा कटक बाबू ! बेडियाँ पहने, पीजरे में बद पड़ा हुआ रफिअुद्दीन ही आपने देख रखा है, अतः कदाचित् आपको मेरा कथन आज बलाना प्रतीत हो । पर यहि कही पीजरे में बद होनेसे पूर्व का मेरे भीतरका व्याघ्र आपने देख रखा होता न, तो मेरे करिश्मो पर आपका मेरे कहे वगैर ही विश्वास बैठ गया होता । ”

रफिउद्दीन के अति अतके दस-पाच वाक्योंसे कटक का अुसके सबध में विश्वास बढ़ने के स्थान पर अुसके सबध में भय ही अधिक बढ़ता चला गया था । रफिअुद्दीन बोल रहा था कटक से, पर रफिअुद्दीन की वे बातें सुन रहा था किशन । कटक को पीजरे में बद रफिअुद्दीन ही की जानकारी थी, यह सचमुच है,—पर किशन भूल के रफिअुद्दीन को भली भाँति पहचानता था । वह थोड़ी देर स्तब्ध रहा । फिर मनही मन बोला,

“ तो भी यह मेरा विगाड क्या लेगा ? अिसके भीतर के पहले का व्याघ्र फिर विगड खड़ा हुआ तो भी चिंता काहे की ! यह यदि बाध है तो अदमान में आकर तो मैं भी अेक प्रवीण दरवेशी बन गया हूँ । यह विगडा ही तो अिसी बहूक से अुडा डालू अिसे आन की आनमें । ”

“ तब कहिये, कटक बाबू, क्या तय किया ? जाना है न भागकर ? आजन्म कारावास की बधन शृंखला तोड कर फेंक देनी है न अिसी क्षण ? ”

“ तोडकर फेंक देने की बात क्या पूछता है ? तोड तो चुके ही हैं न अब ! भाग जानेकी बात क्यों ? ये हम भागकर तो आये ही हैं । अब अगला कदम किधर रखना है वह बता । ”

“ भले वीर ! अगला कदम — हिंदुस्तानमें । स्वदेशमें । । ”
कटक हसा ।

“ पर अघकार और सकट का अेक समुह का समुद्र—यह कालेपानी का समुद्र— रुकावट बनकर फैला पड़ा है अिन कदमों के और स्वदेश के मध्यमें ।—वह ? ”

“ वह अुल्लघकर । ” तैरने के पैतरो के दो हाथ अुस अंधियारे वातावरणमें आवेश पूर्वक मार कर रफिअुद्दीन ने अुत्तर दिया । “ अुस कालेपानी के सकट समुद्र को अुल्लघकर स्वदेश जाना है यही निर्धार जाकर ही रहेंगे यही निश्चिति । । ”

४४ टक वाबू —” अुस घने, जन शून्य और अधकार पूर्ण अरण्यमें आध अेक घटा चर्चा हो चुकने पर रफिअुद्दीन की जानेवाली पलायनाभिसन्धि की चर्चा का अपसहार करने लगा, “ अुस दिन रात को चैरक के सामने के मैदान में हम यही चर्चा कर रहे थे । अुस समय जावरोके गाव में आश्रयार्थ जाने का अर्थ भयकर मृत्युही के आश्रयमें जाना है अैसा आपने कहा था, नही क्या ? ”

“ हाँ । तूने अुन जावरो के आश्रय में जाते समय अपस्थित होने वाले जिन सकटो का अुल्लेख किया था वे थे ही अुस प्रकार के । विजाति का और विशेषत सुघरे हुअे मनुष्यो को गध आते ही यदि वे बहुधा अेक समयावच्छेद से चारो दिशाओ से जहरीले तीरोकी वृष्टि करने लग जाते है, तो अुस अवस्था में अुनका आश्रय मागने के लिये जाना प्रत्यक्ष मृत्युसे भी आश्रय मागने के लिए जाने जैसा आशा पूर्ण कृत्य नही है क्या ? पर अब अुसे लेकर क्या करना है ? अिन जावरो के जगल में और अुनके हाथमें जा पडने के पश्चात् अुनकी वस्तीमें से तू पिछली दफा जिस समय भाग आया था अुस समय तूने स्वय अनुभूत जिन सकटो का वर्णन किया और पुनरपि अुन्हीं के जवडों में जा कूदने का निश्चय सुझाया, वह मुझे कितना भी भयकर क्यों न लगा हो, पर वह अब सच देखा जाय तो मुझे अुतना कुछ भयकर नही लग रहा है । कारण, अब वह अेक ही अपाय अपने सामने रह गया है । अब अुसकी बाल की खाल अुतारना खत्म कर अिस वक्त के लिए । मुझे अब यदि सचमुच कोभी वस्तु भयकर भासित हो रही है तो वह तेरा अभिसंधिका निश्चय नही, प्रत्युत मेरे पेट में कूदने फादने वाले ये चूहे ।

“ मेरे भी पेट में भूख की अेकमात्र ज्वाला भडक रही है, पर अब सवेरे तक तो अुसके बुझाने का कोभी अपाय वच नही रहा है । हा अेक अपाय मात्र बाकी है पेटकी आग को बुझाने का ! ” रफिअुद्दीन अघेरेही में हास्ययुक्त चेहरा करके बोला ।

“ कौनसा वह ? बता तो सही ! ” कटकने पूछा ।

“दूसरा कौनसा हो सकता है। आप जायकेदार चीजों का नाम लेते चलिये। चटपटेदार पुलाव, पूरिया, पकौड़ियाँ, गोश्त, भाजी का मसालेदार रस्सा, चाशनी से भरी हुभी जिलेवियाँ, अ उनके नाम श्रवण अवे ग्रहण समकाल ही आनेवाली सुगव से मेरे मुँह में जो पानी भरा आ रहा है उसके छिड़कने से वह पेट के भीतर की भूख की आग अगर बुझ सके तो बुझ सके!” खाकर न सही हँसकर तो पेट भर लिया अद्दीन ने।

“ठीक तूने अपने पेट भरने का अुपाय तो खोज निकाला अब मुझे भी अपने पेट भरने का कोअी अुपाय खोज निकालना चाहिये। दिन भर बारिश में भीग भीगकर मैं तो भय्या, बुरी तरह से जम गया हूँ।” मिस तरह से स्वर में अुद्गारते हुअे कटक अुठा और वदूक लेकर अिघर अुधर कुछ चहल कदमी करते हुअे, हाथ मलते हुअे, पैर पटकते हुअे शरीर में गर्मी लाने का यत्न करने लगा। त्यों ही अुसे समीपस्थ आधे अेक मील दूरपर के जगल किनारे के अुस सरकारी नारियल के बगीचे की याद हो आयी। वह एकदम रफिअुद्दीन की तरफ मुड़ा

“अुठ रसोअी तय्यार है सारी। अमृत प्राशनार्थ मध्वर मिष्टान्न भक्षणार्थ चल। अुस ओर के नारियल के बगीचे में जाना है।”

“और? नारियल कोअी हाथ मारते ही जमीन पर झडकर पडने वाली नीमोलियाँ नही है। अयच, हाथ से नारियल तोड सकू अितना मैं कुछ लवा नहीं हूँ।” रफिअुद्दीन हँसा।

“अदमान में दोन दफा रहकर नारियलो के पेडो से ठिगना रहा आदमी तू ही मुझे पहली मर्तवा नजर आया है। पर कोअी भी नारियल का पेड मुझसे तो अूँचा नही है यह मैं दिखाये देता हू तुझे, चल।”

वे दोनो अुठे। आगे पीछे सन्नाटा है यह देखकर सरकारी सडक पर जा लगे थोडी देर बाद बाग की तरफ को मुडे। अ उनके रोजके परिचय का था वह बाग। नारियलो की घनी पौध के आते ही छुरियाँ कमर में बाधकर दोनो के दोनो दो अूँचे नारियलो पर चढे। अ उन वृक्षो में पैर रखने के लिए पहले ही से खोदे बनाये हुअे रहते है। दोनो ही चढने में प्रवीण। सिरो से चिपक कर अुन्होने नारियल तोडे। वे नारियल घपाधप नीचे गिर पडे त्योंही, वह आवाज सुनते ही, बाग की परली ओर की बाजूपर बनी

हुआ रखवालदार की झोपड़ी की तरफ से सू सनसन करते हुअे गोफन के पत्थरों की दृष्टि होने लगी ।

दोनों के पेट में घस्स हो गया । कटकने नारियल के पेडपर चढ़ने से पहले बटूक और कुल्हाड़ी नारियल के झमोलो और पत्तो बत्तो के ढेरमें जमीनपर ही छिपाकर रखी थी अतना अच्छा किया था । पर वे हाथियार कोभी दीया लेकर ढूँढने आये और अुसके हाथ जा लगें तो—! कटक के अेक दफा मन में आया कि, साहस करके नीचे अुतरे और बटूक चलायें । पर अुस प्रकार की आवाजसे सारा सोया हुआ जंगल खडा हो जायगा । वह भी मूर्खता ही होगी । अूपर ही बैठे रहे तो अेकाध पत्थर सनसनाता था कनपटी पर दठ गया कि सारा ही किस्सा खत्म हो जायगा ।

अैसी दुत्तर्फी भीति के कारण वे जहाँ थे वही चुपचाप चिपके बैठे रहे । पर भूख अुन्हे चुप भी बैठने न दे । भीति की अपेक्षा भूख से वे अधिक सन्नस्त हो रहे थे । अततो गत्वा पेडसे चिपके चिपके ही अुन्होंने कवैले कवैले नारियल काटे, छुरीसे छीलकर अूपरका का मोटा छिलका वहाँके झुवके ही में अटकाकर अुन्होंने नारियलोका पानी पिया और अदर का मलाभी सदृश मृदु खोपा निकालकर खाया । वह अिस समय अुन्हे कितना मीठा लगा होगा अिसका वर्णन करना कठिन है । सुनहरी कलशोवाले राजमहल की अूपर की छतपर बैठकर सोने के प्यालेमें भरकर द्राक्षासव पीनेवाले राजा की भीति अुन्होंने अुसका आस्वाद लिया । गोफन के पत्थर सनसनाते हुअे बीच बीचमें अुनके आजू बाजू से होकर जाते थे और तो भी वे अेकअेक कच्चा नारियल तोडकर छीलकर अुसका मधुर पानी पीतेही जाते थे मलाभी खाते ही जाते थे ।

अुन्हें अब अच्छी तरावट महसूस हुअी । पत्थरभी आने बंद से पड चुके थे । नीचे अुतरने के अिरादेसे रफीअुद्दीन थोडासा नीचे सरककर आया भी, पर त्योही अुस परली ओर के झोपडे में किसीने लालटेन जलाभी हो अैसा प्रकाश दिखाभी दिया । दचककर रफीअुद्दीन आधे वृक्षपरसे अुतरते अुतरते फिर सर्प की भीति सरसराता हुआ चोटी तक जा पहुँचा । लालटेन झोपड़ी से बाहर हिलती हुअी दिखाभी दी । कोभी न कोभी अपने को ढूँढने के लिए निश्चित रूप से आ रहा है । अेक के बजाय दो लालटेने । बटूके ?—कधेपर क्या है

अनुके ? हा ! बटूक भरे हुअे दो सिपाही, जो अुस रात जावरो से हुअी हुअी साझ की मूठभेड के कारण अुस बागमें विशेष देखरेख रखने के लिअे तैनात किये गये थे, वे आवाज किधर से आयी यह देखने के लिअे बिधर अुधर देखते जा रहे हैं । बीचही में गोफन के पत्थर अनुके साथ आये हुअे अेक दो कैदी फेंकते हैं । बिलकुल किसी बाजकी ओर अत में बिधरही आ रहे हैं वे ।

कटक और रफिअुद्दीन पासपास के जिन दो अूचे नारियल के पेडोपर चढकर बैठे हुअे थे, अनुके बिलकुल जड के नजदीक वे पुलिसवाले चले आये । कटक और अुद्दीन की छाती में अेक ही घबराहट समा गयी । तोपके मुहपर बाधे हुअे आदमी का हृदय जैसे तोप के छूटने की प्रतीक्षा में प्रत्येक स्पदन स्पदन में घडकता रहता है, अुसी प्रकार पुलिसवालो का ध्यान न जाने कव अपने ही वृक्षो के अूपर चला जाय और अनुके बटूक की गोली जाने कव अपने अूपर छूट जाय अिस विचारसे अनुका हृदय प्रतिक्षण धर्ा उठता था । अब हम निश्चेष्ट अवस्था में नीचे लुढक तो नही पडेंगे न अैसी भीति प्रतीत होती थी । पर अनुके सामने अिस स्थिति में अुपाय तो अेकही रह गया था कि वे वृक्षमे और भी अधिक सटकर चिपके बैठे रहें—मृत्युको अपनी ओर आने का वुलावा देने का तथा अुससे अपना पिंड छुडाने का यही अेक मार्ग था ।

जैसे जैसे अुन पुलिसवालो की लालटेनो की किरणे अूपर अूपर अनुके नजदीक नजदीक आने लगी वैसे वैसे कटक और अुद्दीन के प्राण अुन्हे छोडकर दूर दूर जाने लगे ।

त्योही पडोस के दस पाच नारियल के शिखरभागो में फडफडाहट हुअी । पुलिसवाले चाँक कर अुस ओर को दौडे और अेक ने क्षटसे बटूक चलाअी । बटूक छूटते ही घू घू घू करते हुअे कुछ घूवड (अुलूक पक्षी) अूपर अुड गये और अेक बेचारा टप्से नीचे को टपक गया । पुलिसवाले खिलखिलाकर हँस पडे ।

अेकने वह अुलूक पक्षी अुठाकर दूसरे को दिखाया ।

“यह देखा तुम्हारा चोर । घूवड पर फडफडा रहे थे । तुमने हठ पकडा कि चोर नारियल तोड रहे हैं । लौटो अब, चलो ।”

वह मजमा जैसे जैसे आगे जाता गया, वैसे वैसे कटक और अद्दीन की जानमें जान आती गयी। अद्दीन मन ही मन हँसा, “आयी थी वीतने जानपर सो अल्लूपर ही चली गयी।”

पर फिर से प्राणोपर सकट को न बुलाना हो तो जबतक वे पुलिस-वाले लालटैनें बुझाकर अपनी अपनी झोपडीमें नहीं चले जाते तबतक उन वृक्षों के शिखरपर ही लटकते हुअे बैठे रहना आवश्यक था। उस तरह वे दोनों भी बैठे। पर उस दिन किये गये श्रमकी पहले की थकावट तथा जिस समय निष्क्रियता बिन दोनों कारणों से उन दोनों के दोनों को अूघ आने लगी। शिखर भाग का गाढ परिरभ करके वे दोनों अूघने लग गये। आधा अेक घटा हो गया तोभी पुलिस पहरेदार अपनी लालटैनो के अतराफ बीडियाँ फूकते बैठे ही रहे। कटक और अद्दीन उनकी तरफ देखते, अूघते, न जाने कब गाढ निद्रा में निश्चेष्ट हो गये।

अुसी निश्चेष्टावस्थामें अद्दीन का वृक्षको दिया हुआ परिरभ किसी अेक समय शिथिल हो गया, अुसकी बैठक जो चक्रायमान हुअी सो वह सरं करके नीचे की ओर फिसल आया। अुसके साथही, अुसके मनसे पूर्व अुसका देहही जाग गया और अुसने फिर पेडको सर्पकी भाति मजबूती से लपेट लिया। निद्रारोगियोकी अैसीही अवस्था हुआ करती है। वे स्वयं निद्राधीन अुनके पैर जागरित, अूची अेव सँकरी दीवारोपर पाणरक्षा के योग्य सावधानी बरतते हुअे सीधे चले जाते है, अुसी तरह अद्दीन अुस अूँचे पेडपर से नीद ही में फिसल आया, पर वृक्षसे लिपटा हुआ ही सर्राटेसे अैसा फिसला कि सीधा जमीनपर पहुँचा। अुसकी छाती, जाँघें, सारी छिल छिला गयीं। पर अूपरसे गिर पडता तो कपालमोक्ष ही हो गया होता, अुससे बच गया यह देख अुस रक्ताक्त रूपसे खुरच जाने के बारे में अुसे कुछ अधिक अनुभव नहीं हुआ। नीचे आते ही अुसे सारी परिस्थितिका स्मरण हो आया। झोपडी की ओर देखा तो लालटैन बुझ चुकी थी चारो ओर नि शब्दता छायी हुअी थी। थोडा ठहर कर अुसने कटक जिस पेडपर था अुसे हाथसे घीरे से थपथपा। कटक को अूघ में भी जागृति का स्मरण था, वह समझ गया। अुसने भी हलकीसी अेक ताली अुत्तर में बजायी। “तू अुतर गया? ठीक। मैं भी घीरे से अुतर आता हूँ, ठहर।” अितना सारा अर्थ अस ताली में गर्भित था।

कटक के नीचे आते ही दोनों थोड़ी देर तक दुबक कर चुप बैठे रहे । उत्तर रात्रि हो चुकी होगी ऐसा तर्क करके उसके पश्चात् उन्होंने वह बटूक, कुल्हाड़ी आदि वस्तुओं जहा छिपायी थी वहा से निकाल ली । सबेरा होने से पहले लौटकर किसी अंक घोरतर कातार में अन्हे विलुप्त हो ही जाना चाहिये था । उसके अर्थ वे वहा से निकल कर सडक की तरफ आये । निकलते समय अद्दीन पत्तो के ढेरमें से कुछ अुठा रहा है यह देख कटक ने धीरेसे कहा,

“ किस बात की खटपट कर रहा है रे निष्कारण ? ”

“ निष्कारण ? अस वक्त तोडकर गिराये हुअे दो तीन नारियल क्या यही फेंककर चले जायें ? ”

“ कितना भुक्कड है तू ! कहा डेढ दमडीके नारियल है वे ! छोड ! ”

“ डेढ दमडी के ? अिन्ही डेढ दमडी के नारियलो के कारण दो पूरे पूरे सिर छंटे जाते थे हमारे ! ”

रफिअद्दीनने अंक दो नारियल काख में दबा लिये । अस सडक से जिस तरह आये थे अुसी तरह वापिस वे अरण्य मार्ग के समीप चले आये । पौ फटने के मौके पर वे अुसी रास्ते से अरण्य के बीच घुस गये । रास्ते में वह पुलिस जमादार जहा मरा पडा था, अस जगह जाकर अुसकी पुलिस की बर्दी, दियासलाबी और बीडियो सहित सारी वस्तुओं अुन्होंने निकाल ली । जावरो का वह बाण अुसी तरह घंसा रहने दिया । उसके पश्चात् अुन्ही ने अस मार्ग को वही पर नमस्कार किया ।

अुसके बाद अस अरण्य के अस पार्श्व से दूर अंक सघन भाग में घुसने का अुन्होंने जितना अुनसे वन पडा अुतना प्रयत्न किया । रास्ते में अंक चौडी और गहरी खाडी मिली । असका रेतीला किनारा जिस समय अुन्युक्त, सूखा हुआ और श्वेत शुभ्र हुआ हुआ था । अदमानके सिंधु तट पर कभी कभी पडनेवाली कडी धूप जिस समय पड रही थी और अस कारण वह रेतीला किनारा अस जगह पडी हुअी रगविरगी सीपियो अेव शुभ्रश्वेत स्वच्छ रेतके कारण चमचमा रहा था । वस्तुत वह स्थान अनभिष्ट मात्रा में, तपा हुआ था । पर गत दो अहोरात्र निरतर काम के पसीने में, बारिश में सडे हुअे पर्ण सचयो में, कीचड में भीग भीग कर प्रस्वेदाक्त होने के

कारण और ठंडके कारण परेशान हुअे हुअे अुन दोनों 'भगोडो' को अर्थात् कालेपानीसे भागे हुअे कैदियो को, वह अनीप्सित मात्रा में प्रतप्त कडी धूप अेव रेतीला किनारा ही बहुत अधिक अीप्सित प्रतीत हुआ । जहा मनुष्य के संचारण की सभावना हो ही नहीं सकती अैसा वह दुर्गम अेव दु साध्य स्थान था । अैसी अवस्था में वहा यदि वे लोग खुली जगह में भी चले आयें तो भी कोअी आपत्ति जनक वस्तु नहीं रह गअी थी । अतअेव अुन दोनोंने अुस खाडी पर अपने सग लाये हुअे सारे कपडे खूब मल मलकर धोये और अुस कडी धूप में सुखा डाले । अुनके शरीर की गत अहोरात्र में जोको, मच्छरो, काटो ने पुरी तरह छलनी ही बना डाली थी । अुसपर अुस अरण्यका औषध जो किचड अेव मिट्टीका लेप सो अुन दोनों ने अपने सर्वांग में लगा लिया, धूप में सुखाया, और तत्पश्चात् डालो पत्थर तथा मिट्टी के साबुन से शरीर के अवयवो को रगड रगड कर अुस खाडी में अुन्होंने यथेच्छ गोते लगाये ।

अुसके बाद अुन्हे जो जोरदार भूख लगी आयी, आह, अुसका क्या कहना ? अुसका अनुभव तो अुन जैसे कठोर श्रमजीवी मनुष्यो को, घोर श्रमके अनतर अुस प्रकार का स्वच्छ स्नान किये हुअे बलवान् प्रकृति के मनुष्यो को ही आ सकता है । पर वहा अन्न कहासे मिलेगा ? वहा तो मृगया पर ही आजीविका चलानी होगी । अुस में भी बढ़क चला कर सारे प्रसुप्त अरण्य को जगा देना अुनके लिअे अब भी खतरेसे खाली नहीं था । पर अुस अरण्य में मिलता क्या था ? जगली सूअर ! और अुद्दीन पिछली दफा अुस जगल में जब भाग गया था तबसे जावरो की भाति ही सब प्रकारके शिकार करने में अुसने प्रवीणता प्राप्त कर ली थी । अब अेक घटा झाडीमेंसे लुकते छिपते जाने के बाद अुसके अेक शिकार हाथ लगा और हाथ की कुल्हाडी के अेक ही प्रहार में अुसने अुसे जमीन पर लिटा दिया । अुमके बाद सूखी हुअी रेतीली जमीन परसे लकडियाँ जमा करके जावरो के सूय-शास्त्र के अनुसार वह मास अुसने विधिपूर्वक भूना और फिर अेक पत्ते पर परोस कर अुन लोंगो ने भोजन के लिअे प्रारंभ किया ।

और अुस अवस्था में भी, तादृश्य पक्वान्न के समस्त जन्म में पहली

ही बार खानेका अवसर आने के कारण कटक को मुँह टेढ़ा मेढ़ा बनाकर येनकेन प्रकारेण उसे निगलना पड़ा । साथ लाये हुअे नारियल के टुकड़ों का व्यजन रहने के कारण अलटी की नौबत तो नहीं आयी । तो भी जीभ के लिये वह जितना कठिन अनुभव हुआ उतना पेट के लिये अनुभव नहीं हुआ । सारा चट कर चुकने के अनंतर कटक को पेट भरने के समाधान की ओक डुकार आयी और ऐसी कुछ तरावट महसूस हुअी कि, यव् ! उसे देखकर अुद्दीन हँसा—

“बाबूजी, दो तीन दिनमें यह जावरो खुराक आपको अितनी अनुकूल लगने लगेगी ऐसाही दीखता है कि मेरे हिस्से में कुछ बच भी रहा करेगा या नहीं मिस का मुझीको डर लगने लग जायगा !”

अुनका भोजन मिस तरह हँसते खिलखिलाते चल ही रहा था कि त्यो ही आकाश अम्नाच्छादित सा हो गया । कटकने कहा,

“वह देख बादल किस तरह फिर घिरते चले आ रहे हैं । तब अगला कार्यक्रम निश्चित होने तक मिस अरण्य में पहले आसरे का स्थान कही न कही खोज निकलना चाहिये । कलकी रात तो पेड़पर ही सोकर बिता दी, पर अुस जैसे शय्या मदिर के वे विलास प्रति रात्रि सहन करने का मुझे तो कौअी शौक है नहीं । मिस अरण्य का हमारा पथ प्रदर्शक तू ही है । तुझी को ढूँढ निकालना चाहिये ओकाध अुमदासा वगला साँझ होने से पहले पहले । चल अुठ ।”

“पर मैं जो आपको मिस भाग में ले आया हू वह मिसी लिये तो ले आया हू ताकि आपको वगले वगलेही ओकसधि, सुरेख, पत्थरके बने हुअे, जितने चाहिये अुतने मिल सके । आअिये, मिस टीले की अुतनी झाड़ी पार कर ले ।”

अुस झाड़ी को पार करके वे टीले पर चढे । वहा से समुद्र दूर पर दिखानी देता था । अुस टीले की अुपत्यका में गुफाओं ही गुफाओं थी और वहा से आगे रेतीले भाग तक प्रचडाकृति अलग अलग शिलाओका ओक सघ का संघ फैला हुआ था । मानो हाथियो के झुडके झुड ही सिंधु पुलिन पर अवतीर्ण हुअे हो ।

अुन गुफाओ को दिखला कर अुद्दीन बोला,

“देखिये बाबूजी, बगले से दूसरा बगला किस तरह लगा हुआ है ।। जैसी कि बबजी की मलवार हिल । देखियेगा अब किराया विराया किस बगले का सस्ता पड़ता है । ”

अन्होने गुफाओ का निरीक्षण करना शुरू किया । देखते देखते दो विशालकाय शिलाओं अेक दूसरे के सिरोपर टेका दिये हुअ तबू की सी आकृति में खड़ी हुअ, दो मस्त हाथी अेक दूसरे से जूझने का खेल खेलते समय मदोन्मत्त मस्तकसे अपना अपना मस्तक भिडा कर अेक दूसरे को पीछे धकेलने के पैतरे में खड़े हो मिस प्रकार सुहाती हुअ अुन्हे दिखायी दी । अुन शिलाओ की अुस तबू जैसी दर्शनीय रचना के भीतर तबू जैसी ही खूब खुली हुअ जगह थी । अुसमें फिर छोटी छोटी दो तीन गुफाओं कोठरियो की तरह दीवार के दोनो पार्श्वों में बनी हुअ दिखायी दे रही थी । वह देखते ही अुद्दीन को वही जगह वननिवासके लिअे सुदर प्रतीत हुआ । वह तत्काल भीतर गया और मध्य भागमें जाकर आसन जमाकर बैठ गया पर अभी बैठा ही था कि त्योही अेकदम “घात । ” “घात । ” मिस तरह भरीअी हुअ आवाज में चिल्लाकर धवराया धवरायासा बाहर निकल आया ।

“क्यो रे, क्या हुआ ? ” वदूक सभालते हुअे कटकने पूछा ।

“मनुष्य कहिये, भूत कहिये, पर कटक अेक अत्यंत जुगुप्सिताकृति प्राणी अुस अूपर की कोनेवाली गुफा में दुबक कर बैठा हुआ है । अुसकी आँखें अुसके चेहरे की कालिमा में दीपवर्तिका की भाति चमक रही है । ” अुद्दीनने भीति भी अपनी आदत के मुताबिक हसकर व्यक्त की ।

“तब ? आओ गोली चलाओ जल्दीसे । ” कटक ने वदूक अूपर अुठायी ।

“न, न । जबतक विलकुल जानपरही नहीं आ पड़ती तब तक वदूक की आवाज ठीक नहीं । निष्कारण अुपद्रव मच अुठेगा सारे जगल में अेकाध दफा ! प्रथम अुसे लकड़ी से चुभोकर देखें । देखें तो सही है कौनसा प्राणी वह । ”

अुद्दीनने अैसा कहते कहते अेक लवी सामने पड़ी हुअी लकड़ी अुठायी और थोडासा भीतर धुस कर अुसने अुस दरार में से अुसे अदर धुसेड

दिया । ऐसा करते ही अक दयनीय स्वर में चीत्कार सा हुआ और किसी अक प्रकार के कण्ठा भरे शब्द सुनायी दिये !

“अरे ! यह तो कोयी जावरा है ।” रफिअुद्दीन को जावरो की जो थोड़ी टूटी फूटी भाषा आती थी अुसके आधार पर अुसने पहचान लिया “मारिये मत मुझे, अिस तरह यह अपने ही से दीनवाणी में वितति कर रहा है बहुधा ।”

“ तब अुसे किसी तरह बाहर आने के लिये कह और यह भी कह दे कि, हम जावरो के मित्र हैं शत्रु नहीं ? ”

रफिअुद्दीनने जावरो की बोली में जैसे तैसे करके वह बात कह दी और पूरी तरह समझाने के ही खयालसे अुसने अुस लकड़ी को बिल में डालकर फिरसे अक वार खडखड़ाया ।

“ आया आया —” अिस प्रकार का आर्तवाणी का अुत्तर अुस बिलमें से आया । शनै शनै प्रथमतः सिर बाहर निकालकर अुसके पश्चात कटिनिम्नभागसे घिसटता घिसटता अक दुखी कष्टि जावरा अुस बिलसे बाहर निकला । बाहर आते ही अुसने अक पैर फैलाकर अुसकी पिंडली की ओर अँगुली का अिशारा किया और आखों में पानी भरकर कराहने लगा ।

कटक और अुद्दीनने जब अुस पिंडली की ओर देखा तो अुन्हें मालूम पडा कि वहाँ खून वहने वाली किसी प्रकार की अक चोट आ गयी है । कुछ कुछ अिशारों से और कुछ शब्दोंसे अुद्दीन को यह पक्की तौर पर मालूम पडा कि, कल जावरो ने अंग्रेजों की टुकड़ी पर जो छापा मारा था, अुस समय अुत्तर में अंग्रेजी पुलिस द्वारा किये गये गोलीबारमें अक गोली अिस जावरे के पैरमें आ कर लगी अुसके साथवाले लोग अपनी जान लेकर जब भागे जा रह थे अुस समय अिसके लिये भागना कठिन हो गया, अेतावता अिसे वही छोड दिया गया ।

रफिअुद्दीन के ध्यान में जब वह वस्तुस्थिति आयी तब अिस तरह आनदित हुआ मानो अुसके हाथ में कोयी बड़ी भारी अमूल्य निधि ही आ गयी हो । कटक को अक ओर को ले जाकर वह बोला,

“ ताली लीजिये बाबूजी पहले ! जावरों की वस्तीमें अपनेको

आश्रय प्राप्त करना था। पर जिस समय वे अंग्रेजों पर बुरी तरह नाराज हैं। हम ठहरे अंग्रेजी कैदियों में से अन्यतम लोग। कारणके लिये भी हम गये तो भी दूर से देखतेही सशयग्रस्त होकर जावरे हमपर तीर चला बैठेंगे यह जो बड़ी भारी मुसीबत थी हमारी गहमें वह जिस जावरे की दोस्ती से टल जायगी ऐसा प्रतीत होता है। जावरो के राज्य में जाने के लिये यह जावरा अकेल चलता फिरता प्रवेशपत्र ही बनकर मिल गया है ऐसा समझना चाहिये। तब आजिये जिसकी शुश्रूषा हम अच्छी तरह करें।

कटक को भी यह निश्चय पमद आया। अदमानके कक्ष कारागार में रहते समय प्रथमोपचारों का और दवाभियोका काम उसने खूब कर रखा था। वह वैद्यकीय कामचलाभू ज्ञान उसके जिस समय उपयोग में आया।

उस जावरे को उन्होंने ढाढस दिया। उसकी पिंडली की छुरी द्वारा जिसभी प्रकार हो सकी उस प्रकारसे चीरफाड़ करके वह गोली बाहर निकाली चोट की जगह को घोंकर पोछकर, कुछ अकेल बनस्पति लाकर लगाकर पट्टी बांध दी। गोली के निकलतेही असह्य वेदना कम होकर उस जावरे को थोड़ासा भला मालूम पड़ने लगा। जिस उपकार की कृतज्ञता वह नाना प्रकार के शब्दों और संकेतों से व्यक्त करने लगा।

उसी स्थानपर वे तीनों भी दो तीन दिन उसी प्रकार छिपे रहे। जंगल के पशुपक्षियोंका आखेट बंदूक बिंदूक न चलाते हुये जितना संभव हुआ उतना किया। उस जावरे से पूछकर उसकी वस्ती की जानकारी भी उन्होंने हासिल की। वे लोग कालेपानीसे किस तरह भाग आये, अंग्रेजोंके अब वे किस तरह दुश्मन बन गये हैं और जावरोकी वस्तीमें किस प्रकार कारण पाने की सोच रहे हैं, अित्यादि बातें भी उसे बतला दी। उस जावरेने भी अतः करण से उन्हें आश्वासन दिया कि उसे उन्होंने जो प्राणदान दिया है जिस उपकार का बदला देने के लिये जावरे भी उनकी भरसक सहायता किये वगैर नहीं रहेंगे। कारण, जावरो की जिस जातिका वह घटक था उस जातिके नायक का वह भगिनी पति था और अकेल शूर अकेल विश्वस्त स्तम्भ भी।

उस जावरे के ठीक होने तक वही चोरीसे छिपे रहेनेमें उनके जो

तीन चार दिन व्यतीत हुये, उस कालमें रफिअुद्दीन सर्वथा निश्चित एवं आनंदमें था। पर कटक मन ही मन अत्यंत चिंताक्रांत अवस्थामें था। रफिअुद्दीन की जितनी कल्पना थी उससे भी कहीं अधिक सुलभता पूर्वक उसका भाग जानेका निश्चय जिस मजिल तक पूरा हुआ था। जिनकी कल्पना तक नहीं थी ऐसे कितने ही अनुकूल अवसर उनको प्राप्त होते चले गये। वह स्वयं तो अपने मनमें यही सोचता था कि अब तो हम कालेपानी से भागही गये हैं। पर कटक के मनको चिंता निरंतर खायें डालती थी। उसके सामने अपनी ही मुक्तता का सवाल नहीं था, अपितु मालती की भी मुक्तता उसे अभी करनी थी।

उसे किस प्रकार छुटकारा दिलाया जावे ? छुड़ाकर ले भी आये तो उसे जिस जंगल में, जिस गुफा में, जिस भयानक पेंच में किंवा जावरो की वस्तीमें रखें कैसे ? सभाले कैसे ? रफिअुद्दीन के वगैर तो एक कदम भी आगे बढ़ना दुर्घट है। वह आजकल भले ही अकनिष्ठ दिखायी देता हो। पर है तो वह मूलका एक जातिवत् हिंस्र पशु। ऐसी अवस्थामें उसपर विश्वास कहा तक किया जावे ? पुनश्च, भलेही उसे जिस बातकी शका तक न आये कि यह कटक किशन है अतः कटकी के मालतीत्व की स्मृतिका किसी प्रकारका सूत्र उसके मनमें अलक्ष्य हुआ न रहे, और भलेही कटक की भी अग्रसे, रूप से और श्रमसाध्य कष्टोंके कारण आयी हुयी क्षीणतासे, यह मालती ही है ऐसा संकेत करने पर भी देखते ही प्रत्यभिज्ञातव्य न रह गयी हो तो भी—कैसे मालूम उसे देखते ही रफिअुद्दीन ने उसे मालती समझकर पहचान लिया तो ? अकाध भयकर विपत्ति अपने ऊपर नहीं टूट पड़ेगी जिसका कोई भरोसा है ? पुनश्च, वह तो उसे पहचानेगी ही। तब जिसकी पूर्वकालिक नीचता अथवा उसकाही पूर्वकालिक क्रोध भडक उठेगा और उस आगकी लपटों में सभी की राख निश्चय से हो जायगी। जिस प्रकारके अकात कातार में वह, मैं और यह ! जिसकी सहायता लेकर उसकी मुक्तता करनेका मतलब रावणकी सहायता लेकर राम का सीता की मुक्तता कराना हुआ। पर—। जिसे छोड़ दूसरा कोई उपाय अपने पास है ही कौनसा ?

अुद्दीनके मनमें मात्र उस समय प्रतारणाके भावका लवलेश तक

नहीं था। उसके सामने यदि कोई कठिनाई थी तो वह एक ही थी—पैसा।

जावरो की वस्तीमें लोकप्रिय होना हो तो मदद चाहिये और आगे चलकर कालेपानी को अंतिम नमस्कार करना हो तो किश्तियाँ, कपड़े, हथियार, खाद्य अित्यादि साधन जुटाने के लिये पैसा चाहिये। उसके लिये दो ही मार्ग थे। एक यह कि कैदियोंकी वस्तीमें रातविरात फिर घुसकर डाके डालना अथवा कटक बावूकी जो हजार डेढ़ हजारकी रकम वे देनेवाले थे उसको प्राप्त करना। पहले का अनुका यह निश्चय हुआ करता था कि कटक को अपनी सारी रकम अपने साथमें लेकर ही बैरकसे निकल भागना चाहिये। पर इस बीच जावरो के छापे का अप्रत्याशित मौका हाथ लगनेके कारण अन्हे अचानक रूपसे जंगलमें घुसना पड़ा। उसके कारण अन्के अन्य सारे सकट टल गये, पर पैसा मात्र साथ नहीं लेने में आया। अतनी अडचन वह कटक के सामने उपस्थित किया करता था और पूछा करता था कि, “क्या करना चाहिये बतलाविये। डाके डाले जायें या आप अब भी अपनी वह रकम किसी युक्तिसे वापिस ले सकते हैं?”

कटक कहता, “ना, ना डाके की बात ही मत निकालो। जहाँ तक वन पड़े अपने हाथों अपनी मौतको बुलावा नहीं देना चाहिये। मैं अपनी रकम किसी न किसी युक्तिसे प्राप्त करनेका प्रयत्न करूँगा। अभी मुझे आशा है। पत्थरके नीचे भिचा हुआ हाथ जहाँतक वन पड़े सफाईसे निकाल लेना ही अच्छा रहता है। अन्यथा गड़बड़ करनेसे हाथ ही टूट जायगा।”

दो तीन दिन जब इसी तरह बीत गये तब कुछ तो इसलिये कि रहा नहीं जाता था और कुछ इसलिये कि अन्य कोई उपायही नहीं था, अतत एक दिन कटकने अुद्दीनसे अपनी वहन के छुड़ाने की चर्चा छेड़ही दी। अून दोनोंने मिलकर अनेक अुलटी सुलटी तरकीबों को सोच निकाला। पर जब निश्चित योजना कुछ नहीं बन सकी तब वे हारकर सोने चले गये।

पर चूँकि उस दिन अुद्दीनके मनमें कटकी को छुड़ाने के विचार लगातार आते जा रहे थे अत उसके संवधमें अन्य विषयोंकी भी जिज्ञासा स्वभावतः उसके मनमें उत्पन्न होने लगी। विस्तरे पर पड़े पड़े ही वह सोचने लगा, वह कैसी दीखती होगी? छुड़ाकर लेही आये तो उसकी

सगति अपना भी समय विनोद पूर्वक व्यतीत हुआ करेगा ! कैसा होगा भला, उसका स्वभाव ? और यदि वह दीखने में सुंदर और स्वभावसे प्रेमला रही, तो—?’ अकस्मात्, उसकी लालसा जाग उठी और बोली, ‘तो उसे तू और तुझे वह अभीप्सित प्रतीत नहीं होगी यह कैसे कहा जा सकता है ? पुनश्च, कटक तो उसका सगा भाभी ही है ! तब उसकी कामुक अमिलापा में तो उसका प्रतिस्पर्धी होना संभवही नहीं । बहुत हुआ तो उसको उसका तथा मेरा प्रेमसवध भाभी और अभिभावक के नाते प्रिय नहीं लगेगा, अतनीही भीति । पर, पर, पर—’

अहीन को अकस्मादेव एक उपाय सूझा, ‘कटक बाबूके अपने ऊपर जो उपकार हुअे हैं उनका बदला चुकानेके लिये स्वयं उनकी जानपर आपकी जान कुर्बान करके उन्हें और उनकी मिस बहिनको कालेपानीपर से छुड़ाकर सुरक्षित रूपसे परतीर तक पहुँचाने में सेवा की और अमानदारी की अतनी पराकाष्ठा की जाय कि उसकी बहन स्वेच्छापूर्वक मेरे लिये माग पेश करे और कटक बाबू आनंद से उसे पूरा करे ! ’ ऐसी आशाको भला असंभव क्या प्रतीत होगा ?

पर मिससे अतना अवश्य हुआ कि अहीन की कटक के प्रति विद्यमान निष्ठा अब अवलव पूर्वपेक्षया कहीं अधिक मजबूत हो गया । पुनश्च पैसे और सहकार्य की आवश्यकता के कारण भी कटक वगैर उसका काम चलने वाला नहीं था यह भी तो एक बात थी न !

ऐसी मनस्थिति में उस जावरे के स्वस्थ होने की राह देखते हुअे वे जो उस जगह छिपकर रह रहे थे उस कालावधी में अघर उनके पीछे सरकारी अधिकारियों की चाल ढाल भी उनके लिये अनुकूल ही थी । उस साझ को जावरो का घावा बोलते ही जंगल छोड़कर और जान लेकर मरकारी कैदियों की टोली बैरक में जब वापिस चली गयी उसके अगले दिन एक सशस्त्र सैनिकोंकी टुकड़ी उस जंगल में भेजी गयी अन्हे उस रास्तेपर जावरो के तीरोसे मरे पडेँ उस जमादार का शव दिखायी दिया । तीर भी उस तरह गड़ा हुआ था, अतः उसे जावरोने ही मार डाला है यह स्पष्ट ही था । उसपर से सरकारी अधिकारियों ने यह अनुमान लगाया कि उसके साथ जो कटक और अरफिअहीन थे अन्हे भी

जंगल में कहीं अकेला में घेरकर जावरो ने खत्म कर दिया होगा। और जब तक जिस तर्क को असत्य सिद्ध करनेवाला कोभी प्रबल प्रमाण न मिले तबतक अून कैदियों का नाम 'भगोड़े' कहकर घोषित करना अुन्होंने स्थगित कर दिया। अतः जिस दृष्टिसे अूनका पीछा किंवा खोज कितने ही दिनों तक सरकार की तरफ से हुअी ही नहीं। यह कटक और रफिअुद्दीन के फायदे की ही बात रही। दलदल तक का अुस जंगल का वह नया हिस्सा मात्र अग्रेजोंने सर्वदा के लिये अपने अुपनिवेश में समाविष्ट कर लिया, अुस पर कडा पहरा विठा दिया, और जावरो ने भी अपना सामर्थ्य परखकर सदा की भाति अुस हिस्से का आना जाना बंद कर दिया। और अेक पैर अुन्होंने अपना पीछे ले लिया और प्रकरण बगैर बोले जहा का तहा णात हो गया।

चौर पाच दिनके पश्चात् अुस जावरे का पैर थोडासा अच्छा हो गया है यह देख अुसे आगे करके अुसके बसीले से अुसके सजातीय जावरो के समीप आसरा लेने के लिये कटक और अुद्दीन अुस घोर अरण्य में अुस जावरे के पूर्ण परिचय के चोर रास्तोसे जावरो की अुस आरण्यक 'राजधानी' की दिशामें वे चल पडे।

पर जाते समय अुस जावरे की छाती में जिस बात की घडकी भर रही थी कि, जावरे अूनका स्वागत वृक्षो पर से अकस्मात् सनसनाते हुअे आने वाले जहरीले बाणो की वृष्टि से तो करेगे नहीं न? कारण जावरे कभी कभी भगोडो को अपने यहाँ शरण आते ही आसरा देते हैं यह भले ही सच हो, और अूनकी खुदकी जाति में कितने ही बरसो में आसरा लिया हुआ अेक भगोडा भले ही अुस समय रह रहा था, तो भी अूनकी वह लहर जिस प्रकरण में भी अुसी प्रकार काम देगी या नहीं जिसकी अुस जावरे को भी शका ही थी। कारण, जिस समय वे अग्रेजोपर अर्थात् अग्रेजी कैदियोंपर भी अुलटे हुअे थे। कुछ कैदी 'भगोड़े' के बहाने से अूनकी वस्तीका पता लगाने के लिये गुप्तचर के तौर पर भी अग्रेज भेजेगा, जिस बातका भी जावरो को डर लगा ही रहता है।

प्रत्येक कदमके साथ, जावरो की वह आरण्यक राजधानी जैसे जैसे समीप आती जा रही थी वैसे वैसे कटक और रफिअुद्दीन की घबराहट भी

बढ़ती जा रही थी। वे लोग सोचते थे, हम जिस जावरे के साथ जा तो रहे हैं, पर जावरे हमें जिसके साथ आता देख आसरा दे ही देंगे या जिसको भी अग्रेजी के आदमियों के साथ आता देख जातिद्रोही मानकर हम सभी को विषमक्षित बाणों का एक साथ भक्ष्य बना डालेंगे। प्रत्येक कदम पर झाड़ी में कहा भी थोड़ी सी खुडक हुमी कि भिनको लगता कि निगरानीके लिये तैनात किये हुअे किसी जावरे का बाण तो नहीं छूट रहा सनसनाता हुआ अिधर से, — या अिधर से, — या अिधर से। । । जब राजधानी दो तीन मील दूर रह गयी, तब तीनो रातका सा समय आया जान ही ठिठक गये। वह रात मुन्होने मुस झाड़ी ही में व्यतीत की।

‘तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् : : : १८

इह देखिये जावरो की अेक अनादि राजधानी।

अेक राजधानी कहने का कारण यह है कि अदमान में आदिम मानवों की जो आरण्यक टोलियां हैं वे वहासे विस्तीर्ण और घने कातारोंमें बड़े बड़े टीलोपर भिन्नभिन्न स्थानोंपर जिस जगह बस गयी वही वे पृथक् रूप बसी हुमी हैं। अुन सबका मिला हुआ कोअी राज्य नहीं है, सघ नहीं। जो टोली जहा रहती है अुनकी अुतनी ही राजधानी, वह अेक जाति ही अलग होकर बैठ गयी। अुस प्रकार की भिन्न भिन्न जातियोंमें से जिस जातिने अग्रेजोंके अूपर अुस दिन घावा बोला था वह टोली यहा रहती है, यह अुसकी राजधानी है।

घने वृक्षों क्षुरमुटों से ढके हुअे जिस टीले के मध्य भागपर पठार के सदृश अेक अुन्मुक्त स्थल था। अुसके पार्श्वमें अुस टीले पर की पथरीली अमीन, चित्र गुफाओं में जैसी होती है वैसी बड़ी बड़ी चारपाच फूट अूँचाअी की अदर दूर तक पहुँची हुमी और सलग्नावस्था लेवी चली गयी पाच छे दरारें थी। यही अुस राजधानीका प्राकार बद्ध पाषाण निर्मित सुदृढ़ आभरण था। अुन दरारों में वे सारे नागरिक घर्मशाला के सलग्न सहन में जिस तरह यात्री लोग खाते सोते बैठते अुठते हैं अुसी प्रकार सयुक्त

परिवार की भाति अनेक पीढीयो से रहते चले आये है । जिस विस्तीर्ण राजधानी के प्रजाजनो की जनसख्या यदि औरतों, बच्चो और पुरुषो को मिलाकर डेढ सौ से अधिक न भो हो तो भी कम तो थी ही नही ।

वहा दीवारे नही थी, टट्टिया नही थी, अुपविभाग नही थे । सारी राजधानी मिलाकर वह अेक ही घर था, और भी अैसा कि जिसमें कमरा, अुपर का मजिल, मध्यवर्ती घर, रसोभी घर प्रभृति अेक भी विभाग नही था । बस था तो केवल अेक दूरतक गया हुआ वरामदा ।

अुसके सामनेके खुले मैदान को अुस मुख्य राजधानी का अेक अुपनगर कहा जा सकता है । अुस अुपनगरमें जिस दिन आसमान साफ रहता अुस दिन धूपमें अथवा रातको चादनीमें विलास करनेके लिअे कुछ विलास मंदिर भी प्रमुख दरानोने बांध रखे थे । जिन्हें घर कहते है, वैसे वे नही थे, पर जिन्हें हम झोपडियो कहते हैं वैसे भी वे नही थे । बास की खंफचियों लवाभी और चौडाभी में बाधकर तय्यार की गयी अेक लवी टट्टी दो तीन वृक्षोसे बाध डाली कि अुस विलास मंदिर की अिमारत खडी हो गयी समक्षिये । अुसके अुपर छप्परका रहना भी जावरोके शिल्पशास्त्र के अनुसार सगत नही था । तब खिडकियो, दरवाजो आदि अनावश्यक वस्तुओका तो नाम भी नही लेना चाहिये । अूँचे पथरीले भूभागोके सिरोपर नीचे पैर लटका कर जब लोग बैठंग तब टेका लेने के लिअे कुछ चाहिये न ? बस अुतने ही भरके लिअे यदि वह बास की टट्टी बाध ली ति हो गया तय्यार वह विलास मंदिर ।

अुस टोलीके राजा नानकोवी ने भी अपनी रानीके लिअे जिस प्रकार का अेक विलासमंदिर अुस राजधानीके समक्षवर्ती अुपनगर में बाध रखा था । वहाके पथरीले भूभाग के लवे और संलग्न पलग पर अपनी रानी और बच्चोके साथ बैठकर, अुस बासकी टट्टीका टेका लेते हुअे और नीचेकी ओर पैर लटकाये हुअे राजा नानकोवी जिस दिन आसमान साफ रहता अुस दिन धूप खाता हुआ अथवा रातको चादनीमें अुसी मचपर, सुखशय्याके विलासोका अुपभोग करता हुआ दिग्वाओ देता । पर बारिश तो सदैवकी वस्तु थी, अतः अुसको अधिकांश काल अुम मुख्य राजधानीही में अन्य प्रजाजनोके साथ हिलमिलकर खाने-बैठने-जुठने-सोने आदि में व्यतीत होता था ।

दिनभर वह राष्ट्र जंगल में मृगयाके लिये जब निकल जाता तब वह सारी राजधानी सुनसानसी रहती थी। रातको सारे के सारे नाचका कार्यक्रम रहा तो उस मैदान में नाचते अन्यथा मुन्ही दो तीन खोहोमें सारे पुरुष स्त्रियों वच्चे अके ही साथ वगैर किसी विस्तरे विस्तरेके सर्वथा नगनावस्था में हँसते खेलते, जब नींद आती तब सो जाते। विवाहित दम्पति और अविवाहित स्त्रीपुरुष सब मिले जुले।

अनुका वही धर्म था, नहीं, सनातन धर्म था। धर्मोंधर्मोंमें बड़पनका मान आजके हमारे किसीभी धर्मको प्राप्त नहीं होगा। सिर्फ जावरोके ही नहीं प्रत्युत हमारी मनुष्यजातिके भी ‘तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्’।

अस धर्मके समानही अनुकी दिनचर्या भी लगभग सनातन ही थी। उस राजधानीही को देखिये। वह वहाँ कब स्थापित हुमी वह बतलाना इतिहास तथा स्मृतिके लिये भी संभव नहीं था। तोभी उसकी मुम्रका अके कालमापक यत्र वहाँ लगा रखा था। यत्रका अभिप्राय अस नैसर्गिक गहरे गड्ढेसे है, जो अस टीले और मैदान की अके बाजूमें था। जिस बस्तीके जावरोकी पीढियों पर पीढियों समुद्रकी सीपियोंके भीतरके प्राणी पकड़ लाती आजी है, जिस तरह हम मूँगफली खाते हैं और दाने अलग करके उसके छिलके फेंक देते हैं, उसी तरह वे सीपियोंके अंदरके प्राणीको मैं हमें डालकर वे सीपियाँ अनु गड्ढो में फेंकती चली आयी है, अनु सैकड़ो बरसोंसे थरपर थर जमकर शिलास्थि (Fossilized) हुमी हुमी सीपियोंके किमाकार सचके आधारपर यदि कालगणना की जाये तो अनेक युगोंसे यह बस्ती इसी अवस्थामें बहा रहती चली आयी होगी, वे जावरे प्रत्यह दोपहर को समुद्र की सीपियोंके प्राणी मूँगफलीके दानोंकी तरह खाते आये होंगे, और सीपियोंको उसी गड्ढेमें फेंकते चले आये होंगे तथा अपने उसी रसोओ घरमें इसी तरह जीभ चाटते हुअे बैठते चले आये होंगे ऐसा अनुमान निकलता है।

अस राजधानीके सारेके सारे नागरिक अपने सदाके समुद्रनृत्यके लिये आज फिर जानेवाले थे। फिर कहनेका कारण यह कि बीचमें अग्ने-बौके साथ जो युद्ध ‘ठन’ गया था उसके कारण अनुके दस-पंद्रह दिन उसी गड्ढोमें चले गये थे और सर्वदा का नाचवाच कुछ भी नहीं हो पाया था। तिसपर भी आज का नाच अनुके राष्ट्रीय विजयका था। अनुकी अपनी

समतिमें अग्रेजोंके साथ हुअे युद्ध में जीत अुन्ही की हुअी थी। अुस दिनके छप्पे में अपने मुठ्ठीभर आदमियोंके सामने अग्रेजोंकी वह छसौ-सातसौ की सेना भी अुखड गयी थी और जान लेकर भाग गयी थी। अितनाही नहीं, अग्रेज सेनाका अेक बडा अधिकारी (अर्थात् वह सशस्त्र पुलिस) जावरोके अेक वीर ने ताककर बाण मार कर ठडा कर दिया था। वह वनका भाग भलेही अग्रेजों ने हस्तगत कर लिया हो पर अुसे गिनताही कौन है। जितने चाहिये अुतने जगली सूअर, सुविस्तीर्ण सधन कातार और अेकातवर्ती सिधुतट अेव वालुकामय प्रदेश जब तक निर्वेध रूपसे अपने लिअे खुले हुअे हैं तब तक अग्रेजोंके हाथमें गया हुअा वह नया वन्यभाग अैसा ही है, जैसी कि लक्षाधीश के जेबसे निकलकर गिरी हुअी अेक कौडी। युद्धका हेतु वह अरण्यभाग अुतना नहीं था जितना था जावरोका अपमान। अुसी का बदला अुन्होंने लिया था।

और बदला ही जावरोकी जीत रहती है। अुनका क्रोध जितने वेगसे भडक अुठता है अुतनेही वेगसे वह शात भी हो जाता है। अपने वैयक्तिक शत्रुसे भी वही का वही बदला लिये वगैर वे नहीं रहेंगे। पर यदि वह कुछ वर्ष लापता होगया, तो अुसका अुन्हे अितना विस्मरण हो जाता है कि, वह यदि फिर अुन्ही में वापिस आ गया तो अुसके सबधके क्रोध की अुन्हें याद नहीं आती, वह अुनमें मजेमें हिलमिलकर रह सकता है। अग्रेजोंद्वारा किये गये अपराधका भी अुन्होंने जो बदला लिया सो अुसीमें अुनका समाधान हो गया। अुनके अुस विजयके अुत्साहमें शल्यवत् चुभनेवाली बात यही थी कि राजा नानकोवी का श्यालक अकेला पैरमें गोली की चोट खाकर कहीं जगलहीमें छिपकर बैठा हुअा था। पर वह सुरक्षित रूपसे वापिस अवश्य आ जायगा अिस बारेमें अुन्हे कुछ भी सदेह नहीं था। कारण, वह अग्रेजोंके हाथ तो लगाही नहीं था, अगर किसीके हाथमें पडा हुअा था तो वह था अुस दुष्ट अरण्यभूत के—अुस 'अेरम चौगा' के।

हा। अुन जावरोमें अेक पचाक्षरिणी थी, अुसे परसो रातही को राजा नानकोवीने अपने खोये हुअे श्यालक का पता मन्त्रतंत्रके बलपर ढूढ निकालने के लिअे कहा था। तब अुस पचाक्षरिणी स्त्रीने अग्निके समक्ष आसन जमाया। आगकी ओर टक लगाये अुस ज्वालामें आकृति सी को देखते

हुआ वह बहुत देर तक मग्नसी बैठी रही। उसके पश्चात् आवेगसे अकदम अठकर उसने अपने गलेमें पहनी हुयी अस्थिखडकोकी माला हाथमें ली और आगके चारो ओर चिल्लाती हुयी नाचने लगी। “हा, हा, मालूम पड गया। यह देखिये, वह ‘अरम चोग।’ बोल। कौनसी दुष्टता तुने की है, बता !” ऐसा आवाहन देकर, वह हवामें से कोभी बोल रहा हो जिस प्रकारसे कान लगाकर सुनने लगी। और फिर बोली,

“अच्छा, ऐसी बात है। सुना न राजा नानकोबी ?” हम जावरोका शत्रु यह अरम चोग, यह अरण्य का दुष्ट भूत है न उसीने तेरे श्यालक का विश्वासघात किया है देख। वह वीर घनी झाडी में छिपकर अग्नेजो पर बाण चलाता था, पर अग्नेजो को दीखता नहीं था, अतनेमें जिस धूर्त अरण्य के भूतने उन सारी टहनियो को झुका दिया। उसपर वह वीर अकदम आखो के सामने आ गया, अग्नेजने देखा, निशाना लगाया, जावरा वीर के पैर में गोली लग गयी। अन्यथा अग्नेज की क्या ताकद कि वह जावरा वीर को देख भी सकता। अरे दुष्ट अरम चोग। अब जो हुआ सो हुआ, अब अपने ही अरण्य में छिपाये हुअे हमारे उस वीर को दो तीन दिनके भीतर हमारे समीप सुरक्षित रूपसे पहुँचा दे, अन्यथा, जिस अरण्य में जहा तहा आगही आग लगा दूगी, और जिस थिगरे की तरह तुझे उस आग में जला डालूगी।”

ऐसा कहते हुअे अपनी कमर के चारो ओर बाधे हुअे अक लाल कपडे के अगुल भर चौडे थिगरे को खोलने लगी। पैर से लेकर सिर तक उसके शरीर पर अन्य स्त्रियो की भाँति किसी प्रकार का कोभी कपडा नहीं था। और वह जो लाल थिगरा उसने कमर से बाध रखा था वह भी मत्र तत्र का अक कटिसूत्र समझकर। कटिसूत्र की भाँति ही वह थिगरा भी बारीक था। उसके शरीरके किसी भी अवयव को ठकन रूप दुष्कर्म के घटित होने की कोभी समावना नहीं थी।

वह अरण्यवर्ती भूत, अरम चोगा आग से बहुत अधिक डरता है। वह थिगरा आग में डालते ही जिस तरह धोडी ही देर में जलकर राख हो गया, उसी प्रकार मेरी भी गत बनेगी यह जान डरके भारे उस अरण्य भूतने उसे वचन दिया कि दो तीन दिन में उस घायल और जगल

में छिपाये गये जावरे को नानकोवी के समीप सुरक्षित रूपमें भेज दिया जायगा ।

जिस आश्वासन के कारण स्वभावतः जावरो की उस युद्ध में हूजी जो थोड़ी बहुत हानि हुई थी वह भी जिस तरह पूरी हो जानेवाली थी । जिससे सभी को बड़ा आनंद हुआ । और इसी कारण आज के उस सिंघु पुलिन पर होनेवाले विजय नृत्य को बड़े ठाठ वाट से सपन्न करने के लिये प्रत्येक जावरा आतुर हो उठा था ।

सवेरे ही वह सारा का सारा राष्ट्र नित्य नियम के अनुसार मृगया के लिये निकला । औरतें, पुरुष, बच्चे, सारे के सारे ! छोटे बड़े सभी के हाथों में अपना अपना धनुष्य बाण विद्यमान था । राजधानी में घर तो कोभी था ही नहीं । अतः उनके दरवाजे बंद करने का भी कोभी सवाल नहीं था । जब दरवाजा ही नहीं, तब साखल और ताले का तो नाम तक लेनेकी आवश्यकता नहीं । अतः जावरो की भाषामें साखल और ताले के लिये कोभी शब्द ही नहीं है । पीछे सामान भी कुछ रहनेवाला नहीं था । प्रत्येक की द्रव्य संपत्ति यदि कुछ थी तो वह थी, तीरकमट और गले में पड़ा हुआ कौडियो का हार । कुछ उपकरण किंवा हथियारों के अतिरिक्त निरर्थक वस्तु उनके घरमें कुछ रहती ही नहीं । वस्त्रों का तो नामो निशान नहीं, अन्न धान्य के सबंध में बात करना हो तो उनके सारे सग्रह, साधन, यथा, पेटारे, बोरियाँ, तहखाने, डिब्बे सब कुछ यदि कोभी था तो या तो वह अरप्य था या फिर वह महाविस्तीर्ण समुद्र । कल की साझ का खाना पीना सब कलही को समाप्त हुआ हुआ । आज अब जो मृगया में मिलेगा वह ! Enough unto the day the evils there of Let tomorrow take care of its own ! " हजारों बरसों पहले से वे जावरे बीसा के जिस धर्म सूत्रको प्रत्यह आचरण में लाते आये हैं ।

राजधानी को किसी रास्ते की धमंगाला की तरह खाली छोड़कर जावरोका वह सारा राष्ट्र अपने दैनिक कार्यक्रमके अनुसार सवेरे ही जंगल में शिकार की टोह में चला गया । उसके पश्चात् थोड़ेही समय में उनकी अलग अलग पार्टियाँ अपनी अपनी अभिरुचि और सुविधा के अनुसार

भिन्न-भिन्न शिकारो के पीछे लगती हुई सारे जंगल में बिखर गयी। कुछ स्त्रियाँ और बच्चे घनुष्यवाण अथवा पत्थर हाथ में ले पक्षियों को मारते चले गये। कुछ स्त्री पुरुष बड़े बड़े जंगली सूवरो के पीछे लगे। कुछ समुद्र की ओर मुड़कर प्रत्येक पथरीले भागपर बड़ी बड़ी मछलियों हके झुछल आने और अपने वाणसे उनका निशाना बनाने के लिये अतुसुक होते हुअे बगुले की भाँति ताकमें खड़े रहे।

राजा नानकोवी और अुसकी रानी ‘फुली’ यद्यपि राजा रानी की हैसियत में थे, तो भी अन्य सभी प्रजाजनो की भाति मृगया अुन्ही को करनी पडती थी, अन्यथा भूखे रहना पडता। जावरो में राजा को कोअी कर नही दिया करता। राजा के पास अेक भी पुलिस, नौकर या नौकरानी नही रहती। सधि-विग्रह, सकट-विकट अित्यादि अवसरो पर वह अुनका मुखिया बनता है, अुसके विचारो को विशेष महत्त्व प्राप्त होता है, यही अुसका राजापन है। अुसकी तरफ जाति जाति में होनेवाली लडाअियों के मामले में न्यायान्यायका काम तक कानून की दृष्टिसे नही रहता। कारण जावरो में जो जावरो से लडेगा, अुसी को अुससे, जितना अुसमें दम हो अुतना बदला लेना होगा। न हो तो न भी सही। जातीय न्यायालयका वह प्रश्न ही नही रहता। व्यक्तिगत शत्रुका विनाश व्यक्ति ही चाहे तो करे, न चाहे तो न करे। वह व्यक्तिगत वस्तु है। जाति से अुसका कोअी मवध नहीं। न मुकदमा, न जाँच, न सजा, न कारागार, न पुलिस, न पटेल,। अैसा अुनका राजकीय विधान है, और अैसा है अुनका राजा जो सिरपर मुकुट तो क्क्या, लगीटी तक नही पहनता अथवा, अैसी है अुनकी रानी जी कमरके नीचे अिचभर पेडका मुदर ढगसे कतरा हुआ पत्ता ही लटकाये रहती है और अुसके अतिरिक्त अन्य किसी मूल्यवान् साडी का जिसे ज्ञानतक नहीं।

अुम दिन सबके साथ मृगया के लिये चलते समय रानी फुली अपने अेक बरस के बच्चेको भी अपनी पीठपर खडा करके ले गअी थी। अपने अिधर कातकरी अित्यादि जातियों को औरते अपने बच्चेको पीठपर अेक झोली में डालकर ले जाती हैं, किंवा बच्चा ही पीठकी ओर से अपनी मा के गले को हाथोद्वारा पकडकर तथा पेटको पैरोसे लिपटा कर पीठपर बैठा

रहता है। पर अदमानी स्त्रिया अंक पट्टी सिरके तालुभाग में अटका कर पीठपर छोड़ती है। वच्चेको पीठपर लेने पर वह उस पट्टीका टेका लेता है किंवा मा के कटिनिम्न पृष्ठभाग पर घड़ाची की परजिस तरह टेका लिया जाता है, उस प्रकार पैर टिकाकर पट्टीको पकड़कर खड़ा रहता है। उस पट्टीके निरंतर दबावके कारण स्त्रियो की तालु प्रदेशका अस्थि भाग सर्वथा स्पष्ट दीखने योग्य दबा हुआ हो जाता है और वहासे सर्वदा के लिये अंक गढ़ासा बन जाता है। उसमें पट्टी पत्रकी तौरसे बैठ जाती है। और वहाकी प्रौढ स्त्रियो की कटिपृष्ठ भागस्य अस्थि और कटिनिम्न पृष्ठभाग मूलतः अतना मुभरा रहता है कि लडका वगैर किसी तकलीफसे उसपर पैर रखकर खड़ा हो सकता है। अतः यदि हम वहाकी स्त्रियोकी पीठपर वच्चा बैठता है, असा कहे तो अुधर की स्त्रियोकी पीठसे लगकर वच्चा खड़ा रहता है, असा कहना पड़ेगा।

राजा नानकोवी के उस लडके का नाम, रानी फुली की गर्भा-वस्था में ही 'कोरी' रखा गया था। क्यों कि जावरो के स्मृति शास्त्रके अनुसार स्त्रियोके गर्भवती होतेही उस लडके का नामकरण संस्कार हो जाना चाहिये। स्वभावतः ही लडके लडकियो के पहले नामों में भिन्नता नहीं रहती। उसके कारण उस वच्चे के 'कोरी' नामसे वह जावरो का युवराज या अथवा राजकन्या मिसका पता चलना कठिन था। अतः अलगसे यह बताना आवश्यक है कि वह लडका था, युवराज था। लडकी होती तो उसका गर्भावस्था का यह पहला सामान्य लिंगी नाम उसके अुम्रमें आ जाने पर बदल जाता और उसके उस प्रथम अृतुमें जो फूल खिले होते अुनमेंसे किसी अंक के नामपर उसका नाम रख दिया जाता। नामकरण की यह पद्धति अुतके सनातन धर्मका द्योतक अंक जातीय संस्कार है। जिस प्रकार प्रत्येक लडकी नाम बदलती है, उस प्रकार रानीका भी गर्भावस्था में रखा गया अंक सामान्यलिंगी पहलेका नाम था। जब रानी अृतुमती हुयी तब उसका नाम बदला और चूँकि चारों ओर अुम समय फूल ही फूल खिल रहे थे अतः उसका यह दूसरा नाम 'फुली' रखा गया।

अन जावरो में से जो लोग समुद्रपर मछलियों मारने के लिये गये हुये थे, उसी ओर राजा नानकोबी और रानी फुली भी अपने बच्चे को पीठपर लिये गयी हुयी थी। ऊँचे पथरीले भागों के शूलाकार प्रदेशों पर अपने अपने घनुषोंपर बाण चढाये हुये जावरे खड़े थे। नीचे समुद्र की लहरे अँक के पीछे अँक आकर अन पाषाणमय तटोंपर टकराती हुयी फूट जाया करती थी। बीच में कोभी अँक मत्स्य किंवा मत्स्य समूह अन लहरों की अछाल के साथ ऊपर चला आता था। श्वेतशुभ्र बड़ेबड़े गृध्राकृति पक्षी आकाश में से होकर समुद्रपर नीचे ऊपर अँकसा चक्कर मारने रहने थे। अनकी परछाभी अन लहरों पर पडती थी। तब अँसा लगता था, मानो वे पक्षीही अन तरंगोंपर तैर रहे हों। पर कभी कभी जब कोभी जलजंतु समुद्रके ऊपरी पृष्ठपर समूह बनाकर चला आता तब वे बड़े बड़े पक्षी सचमुच ही झपट्टा मारकर अन तरंगों पर डोलने लगते। अन तरंगोंपर जब अनकी कतार पर कतार और परछाभी डोलने लगती तब अँस नीले समुद्र की सारी लहर अँसी कुछ शुभ्रश्वेत दिखायी देती, मानो क्षीरसागर की कोभी अँक लहर मूले से बिघर बहती चली आयी हो।

पानी के ऊपर आने वाले मत्स्योंपर जावरो के बाण छूटते त्योही वे मत्स्य शीघ्रही समुद्र में अदृश्य हो जाते। मिस तरह अँक घंटे तक बाण मारते रहने के पश्चात् राजा नानकोबीने तथा अँसके पीछे पीछे अन्य जावरोने अँस के गहरे समुद्र में गोला मारा। तीनतीन आदमियोंके मितने गहरे पानी में गोता लगाकर वे अँकदम अँसके तलपर पहुँचे। पानी में गोता मारने में जावरे अत्यंत प्रवीण होते हैं। वह अनका रोजमर्राका खेल भी है और आजीविका भी। जिन मछलियों के अँसके तीखे बाण गड जाते हैं वे मछलियाँ निश्चयही समुद्र के तल पर पडी हुयी मिल जाती हैं। अँसमें से जितनों को लाना संभव था अँतनी मछलियोंको वे अपनी पीठपर लादकर ऊपर ले आये। रेतीले तटपर आतेही अँन्होंने अपनी वह सारी निधि नीचे डाल दी। सारे लोग अँस के चारों तरफ बिकट्टा होकर हँसते खिल-खिलाते तथा किसके बाण से कौन मछली मरी अँसकी चर्चा करते हुये अपनी अपनी प्रशंसामें मग्न हो गये। अँसके वाद अँन्होंने बड़ी बड़ी आगें जलायीं। अँसपर कुछ तो वे मछलियाँ, कुछ अपने बच्चों और औरतों पर

शिकार कर के लाये गये पक्षियों को तथा कुछ अन्यो द्वारा लाये गये जंगली सूअरों को आवश्यकतानुसार कुछ को भूना गया और कुछ को साझके लिम्बे रख छोड़ा गया। उस समय तक सबेरे अलग अलग बिखरे हुये लोग लगभग सारे के सारे लौट चुके थे। उस के बाद उस शुभ्र भेव विस्तीर्ण रेतीले तटपर धूप की भूषामें अुन का वनभोजन प्रारम्भ हुआ। उस सघन अरण्य की वरसात में तथा समुद्र के जल में सबेरे से लेकर अब तक बुरी तरह भीगते आने के कारण वे ठिठुरा रहे थे। अतः धूप में जब अुनके शरीर सूख रहे थे तब अुन्हें अुतना ही आनन्द हो रहा था जितना कि चादनी में बैठकर भोजन करते समय हम लोगो को आनन्द हुआ करता है। कुछ भूना, कुछ अधकच्चा, कुछ कच्चा मांस—जिस को जैसा भाया अुसने वैसा उदरस्थ कर डाला। कठिन हड्डियों को दोनों हाथोंसे कडाकड तोड़ते हुये अुन की जोड़ो में से वह आनेवाले रस को किसीने बड़े ही आस्वाद-पूर्वक चखा, तो किसीने मुलायम मुलायम हड्डियाँ वैसी की वैसी ही दाँतो से कचाकच चबाकर खा डाली। जावरे अन्य सब पदार्थों की भाँति मांस भी कच्चा खा जाते हैं। सर्वथा पक्वान्न का ही निश्चय हुआ तो भूना हुआ मांस खा लिया। पर भूनने से आगे पकाना, राखना, मसाला डालना—कितना ही क्यों, रसोमी करना यह शब्द भी अुन की भाषा में नहीं है।

कितने में नानकोवीने हाथ के भिंशारे करते हुये पूछा,

“दोलकाष्ठ ?—विलायती पानी ?”

जावरो की भाषामें शब्द अिने गिने ही रहते हैं। अुसपर भी अुन्हें यथाशक्ति हाथ के भिंशारो से ही बातचीत करना अधिक पसन्द है। शब्दोंसे अुन्हें बहुत अधिक अरुची है। अतः सारा वाक्य बोलना हो तो अेक शब्द में बोल जायगे और अुसका अवशिष्ट अर्थ हाव भाव द्वारा पूरा करेंगे। राजा नानकोवी ने जब केवल ‘दोलकाष्ठ’ कितना ही शब्द कहा तब अुसने भी अुस वाक्य का अवशिष्ट भाग हाथ से तथा लक्षिसकेतोसे ही पूर्ण किया। वे सारे शब्द तथा हावभाव अेकत्र करके हिंदीमें अुस वाक्य को लिखें तो अुस अेक शब्दका सारा अर्थ यो होगा—

“क्यों भाजी, क्या बात है ? अपना वह दोलकोष्ठ किधर चला गया है। बहुत दिनों से अिधर आता ही नहीं, क्या बात हो गयी ? वह आज

अगर रहता तो वह विलायती पानी — वह शराब पेटभर कर पिलाता ।
अब कमी है तो वस अुसी की है ।

यह सुनकर अेक जावरेने दो शब्द और दस अिशारे तथा दृष्टि-
विभ्रम करके जो अुत्तर दिया, अुसका भावार्थ अितना था— “वह ‘दोल-
काष्ठ’ अरण्यके दूसरे भागमें रहनेवाली, ‘टटोवी’ “नामकी जावरो की अेक
दूसरी जाति के लोगों परिचय के कारण चला गया है, और थोड़े
ही दिनोमें वापिस आनेवाला है । ”

पर अुसके लिये आजका विजय नृत्य रुक थोड़ा ही सकता था ?
मृगया और नाचही तो अिन जावरोका श्वासोच्छ्वास । अुसमें भी अितने
दिनो से अुन अग्नेजो के साथ की लडाओ की गडवडी में नाच हुआ भी
नही था ? अुस अिच्छा की पूर्तिके अभावरूप अुपोषण की आज
पारणा ही थी । अिस नृत्य के लिये पर्युत्सुक वे जावरे पुरुष, स्त्रियाँ,
लडके सारे अुस विस्तीर्ण वालुकामय तटपर अिनअिनाते हुअेसे अेकत्र
हो गये । कोअी जोरजोरसे अपनी भुजाअे थपथपाने लगे, कोअी योही
अकेले छलागें और कुलागें मारने लगे कोअी गरजने लगा, कोअी न जानने
कैसा अेकस्वरी स्वरपर तीनचार शब्दोका गाना लगातार गाते हुअे फिरने
लगा । प्रायः सारे स्त्री-पुरुष अेकदम नगे । कुछ श्रृंगारप्रिय लोगोने
आभूषणके तौरपर कटिके पुरोभागके नीचे पत्ते लटका रखे थे । दो-तीन-चार
लोग ज्योही अेक दूसरेके हाथमें हाथ डालकर नाचने लगे त्योही चालीस
पचास लोग अेकत्र हुअे, अेक दूसरेके हाथमें हाथ डाले अेकवृत्त बनाकर
बीचमें शास्त्रोक्त रीतिसे अेक वर्तुलाकृति वस्तु रखकर अुसके चारो ओर
नाचने लगे । अुस अेकस्वर, अघूरे और त्रुटित तालके गानेको अुसी प्रकार
गाते हुअे घूमने घामते अुस नृत्यका वेग बढ़ता चला गया । अेक थका कि
अुस वृत्ताकृति हस्नश्रृखला में दूसरा घुस आता । थकना यह व्यक्तिगत
दोष था तो श्रृखलाको टूटने देना तथा नृत्यके वेगको शिथिल बनाना जातीय
दोष सिद्ध होनेवाला था , अपने राष्ट्रीय देव भगवान पुलगाके अुपहासका
पात्र बनता था , वह जावरोके सनातनधर्मके विरुद्ध अेक पापाचरण हुअा
होता । अंतमें जब नाचकी समाप्तीका समय आया, तब तो अुस वृत्तके

नृत्योन्माद की सीमाही नहीं रह गयी। भरपेट तथा भरपेटसे फिरनेवाले उस नृत्यमय वृत्तपर आखका ठहरना कठिनसा हो गया।

आजकल के यूरोपके किसी भी नग्न सभ के सभासद उस समय यदि बहा रहते और उन नग्न मिले जुले स्त्री पुरुषों को उन नग्न नृत्यावस्था में अपने देहभान को विसराया हुआ देखते तो आश्चर्य से अपने मुँह में अगली डालकर कह बैठते — “नगा नाच अगर हो तो ऐसा हो!” मार्क्स से भी सैंकड़ो वरसो पूर्व जावरे जिसप्रकार समाजसत्तावादी थे, उसी प्रकार आज के यूरोप के नग्न सभ की अत्युच्च महत्वाकांक्षा को वे सैंकड़ो वरस पहले किया में परिणत भी कर चुके थे।

वह नाच अभी खत्म होने भी न पाया था कि अतने ही में अक जावरे ने जोर से ताली बजायी तथा अूचे स्वर में चिल्लाया—“दोलकाष्ठ ! दोलकाष्ठ !” देखते हैं तो सचमुच ही ‘दोलकाष्ठ’ आ रहा है और उसकी काख में तथा हाथों में भी ‘विलायती पानी’ की बोतले हैं। जावरो के आनंद का ठिकाना न रहा।

जावरो को तमाखू पहले ही से बहुत प्रिय लगती है और गत चालीस पचास वरसो से उन में विलायती शराब का भी प्रवेश थोडा बहुत हो गया है। वे यदि अभी शराब के व्यसन के चगुल में पूरी तरह नहीं फँसे हैं, तो उसका कारण यह नहीं है कि, वह अुन्हें बहुत अधिक अच्छी नहीं लगती, प्रत्युत यह है कि शराब अुन्हे मित्र नहीं पाती है। यह जो ‘दोलकाष्ठ’ नाम का व्यक्ति जो आजकल उन लोगो में अितना अधिक लोकप्रिय हो गया है वह अपने मिलनसार स्वभाव के कारण जितना लोकप्रिय हुआ है, उसकी अपेक्षा भी अधिक तो वह शराब हासिल करके देने और तमाखू लाकर देने के कारण ही है।

जिस मनुष्यका नाम जावरोने ‘दोलकाष्ठ’ जिस अर्थवाले जावरो शब्दमें रखा था, वह मूलतः अक ‘भगोडा’ ही था। अग्रेजोकी कालापानी की जेलही में आजन्म कारावास की सजा पाकर आया हुआ था और अनेक वरसो पहले वह जेलसे भाग गया था। पर भारतवर्ष वापिस जाने का उसका अकवार प्रयत्न निष्फल हो गया था। और उस साहस कृत्य में कुछ जावरोसे उस जंगलमें जिस विलायती पानीके कारण ही घनिष्ठ

परिधय हो गया था, अतः अिन जावरोकी टोली में अुसे गत तीन चार वरसो से आश्रय मिला हुआ था । वह चोरी छिपे अदमान के आग्ल अुपनिवेशमें जाता, जावरोद्वारा प्रदत्त अनेक सुंदर और बडे बडे शख, दो-दो फुट की तश्तरियो और थालियो सदृश चौडी और गुलाबी रगकी सीपियाँ अुस कैदी अुपनिवेश के ध्यापारियोको चोरी छिपे बेचता, बहुत कुछ पैसे गाठमें बाधता और बाकी पैसे से थोडासा विलायती मद्य और बहुतसी तमाखू गुप्तरूपसे जावरो को लाकर दिया करता था । अुन लोगो में वह अिस तरह घुलमिल गया था मानो वह अुन्ही का कोअी रिश्तेदार हो । वह अुनकी बोली बोलता, खाना खाता, नगा रहता, रगीत मिट्टी के पट्टे शरीरपर मलता, अुनके सुखदुःखमें ममवेदना दिखाता, अुनके स्त्री पुरुषोमें हिलमिलकर वह अुसी प्रकार नाचता और सोता जिस तरह वे लोग नाचते और सोते थे ।

वे जावरे अुसे स्नेहवश ‘दोलकाष्ठ’ अिस अर्थके जिस नामसे सवोधन किया करते थे, वह भी अुसे पूरी तरह फवता था । कारण अुसकी कमरतक आनेवाले टिगने तथा बूट पॉलिश की भांति काले कलूटे जावरो में वह अधगोरा और छै-अेक फूट अूचाअीका भारतीय भगोडा जब खडा होता था तब अैसा ही दिखाअी देता था कि, तारकोलसे पुती नौकाअीके टीक मध्य में खडा किया हुआ कोअी ‘दोलकाष्ठ’ ही हो । अिस साम्य के कारण ही जावरे विनोदमें अुसे अिस नामसे सवोधन करने लगे थे ।

जिन्होंने अुसे अुसवार शख और सीपियाँ दी थी, अुन अुनको अुसने चार चार घूट पिलाया, अन्यो को यथेच्छ तमाखूकी बुकनी भरकर दी और राजा रानी को तो दो पूरे के पूरे प्याले शराब के आकठ भरकर अर्पण किये । अुस अुन्मादमें राजा नानकोवीने और रानी फुलीने ‘दोलकाष्ठ’ का अकअेक हाथ पकडकर और अुसे मध्यमें लेकर अुसके सन्मान के लिअे अपने तीनों का अंक स्वतंत्रही नगानाच चालू किया ।

अिधर विजय नृत्य का वह अुत्सव सिधुतट पर ‘विलायती पानी’ के प्राशन द्वारा सपन्न हो रहा था और अुधर गत प्रकरण में बताया अनुसार वह घायल जावरा कटक और रफिजुद्दीन को साथ ले अुस राजधानी के समीप दो तीन मील पर आकर ठहरा हुआ था । अुस घायल जावरे ने

अुन्हें 'दोलकाष्ठ' नामक भगोड़े की बात सुनायी। अुसने कहा कि यदि वे भी अुसी की भाति तमाखू और शराब लाकर जावरो को पुराया करें तो अुन्हें भी जावरे पूरी तरह मदद दिया करेंगे और अुन्हें स्नेह और आदर की दृष्टि से देखा करेंगे। पर पहली कठनामी यह थी कि वे भारतीय कैदी थे अंग्रेजों के लोग। और जावरे थे अुस समय अंग्रेजों से सहित नाराज। अत यदि अुन्होंने अुस घायल जावरे को अुन्ही के साथ आते हुअे देख लिया तो वे जावरे कदाचित् अुस जावरेपर भी सदेह कर बैठें। क्रोध से जहरीले वाण बरसाना शुरू कर दें। अुस आपत्ति को टालने के लिये अतमें यह निश्चय हुआ कि, कटक और रफिअुद्दीन दोनों अुस रातको अुसी अरण्यमें रह जायें, वह घायल जावरा जाकर अपने टोली वालों से मिल जाय, असा करने से निन्यानवे प्रतिशत अुसका स्वागत निरापद रूप से होगा, अुसके पश्चात् वह जावरा अुन लोगों को बतायें कि कटक और रफिअुद्दीन ने किस भाति अुनकी जान बचायी, वे दोनों अंग्रेजोंके आदमी नहीं हैं, बल्कि अिस समय तो वे अुनके कट्टर दुश्मन बने हुअे हैं, 'भगोड़े' हैं, और जावरोको नाना प्रकार के मद्य, तमाखू, काचमणि, रंगीत रेशमी वस्त्रों की पट्टियाँ अित्यादि वस्तुओं सदैव पुराया करेंगे। ये सब बातें बड़ी युक्ति से वह कहे और अुसके पश्चात् घायल जावरे की जान बचानेके अुपकार के बदले अुन नये भगोड़ों को टापने यहा आश्रय देने के लिये टोली के राजारानीको राजी करे। अितना काम हो जाते ही वह जावरा फिर अिस जगलमें आये और कटक तथा अुद्दीन को अपने साथ ले जाय।

अिस निश्चय से पर्याप्त अशमें निर्भय हुआ हुआ वह जावरा शीघ्र ही राजधानी की ओर चल पडा। कटक और रफिअुद्दीन जगल ही में ठहरे रहे। अुनके दिलमें घबराहट भर गयी थी कि, जाने आगे क्या हो और जावरे क्या करे। अुसपर भी रफिअुद्दीन की मूल आततायी वृत्ति के सवध में कटक मनही मन सदैव आशक्ति तथा सावधान रहता था। पुनश्च, 'मालती' की मुक्तता हो जाय, अिस राक्षस का पूर्व वैर जागरित हो अुठे, तब यह अिस अेकात अरण्य में अपने ही अुपर अुलट पडे तो— अिस भीति के कारण, कटक अविस्मरण पूर्वक अुस बंदूक और बारूद

गोले को अपने हाथ में रखने लग गया था । ऊपरसे ऐसा दिखाता था कि यह सब सहज भावसे ही वह कर रहा है । उसमें भी अब अनु दोनों के सामने ओक नया ही प्रश्न उपस्थित हो गया था । — यह ‘दोलकाष्ठ’ कौन है ? जावरोपर अितने बरसों से अपनी छाप डालने वाला यह ‘मगोडा’ कोभी कर्तृत्ववान् मनुष्य ही होना चाहिये ! वह भिन जावरोमें अिसी-प्रकार यही का यही क्यों रह गया ? वह भी समुद्र लाघकर भागने के मौके की खोजमें है क्या ? साधन सामग्री जुटा रहा है क्या ? कोभी न कोभी कर्तृत्वशाली पुरुषही है, अेतावता, हुआ तो वह ओक अुपयोगी मित्र — नहीं तो अुपद्रवी शत्रु ! क्या सिद्ध होगा कौब जाने ?

और सबसे अधिक परेशान करनेवाली चिंता अिस बात की थी कि अिस घायल जावरे को देखते ही वह राजा नानकोबी क्या कहेगा, क्या करेगा ?

“तूही ! तूही वह रफिअुद्दीन है !...” : : १९

जावरोका जयनृत्य समाप्त हुआ । सूर्य अस्ताचलकी ओर चल पडा । जावरे भी अपनी राजधानी की ओर चल पडे ।

राजा नानकोबी अुस खोहवाले अपने राजमहलमें नहीं गया । अुस मैदानवाले विलास मंदिर में ही प्रविष्ट हुआ । अुस विलास मंदिरमें राज-शय्या का काम करती थी ओक शिला । छतका काम करता था आकाश, तीन ओर की तीन दीवारें थी, तीनो दिशामें ! चौथी दिशा की दीवार थी वृक्षों से बांधी हुआ वास की खपच्चियों वाली टट्टी, और वही अुस राजशय्या का तकिया भी था ! अुसका टेका लेकर शिला शय्यापर नानकोबी बैठा । “फुली ५ !” प्रेमभरी ओक हाक अुसने मारी । फुली रानी असन्नवदन वहा चली आयी । अुसको आखों में कामपूर्ण लपटता और हृदयमें वह ‘विलायती पानी’ हिलोरें ले रहा था ।

आसमान में बरसात नहीं थी । वह खुला था । सांझ की धूपकी कोमल किरणें हिलने झोलनेवाले जंगल के अूपर बूंदपाद मचा रही थी ।

प्रणय के मुग्ध हावभाव प्रदर्शित करती हुमी रानी फुलीने अंक हाथ में धारदार काच का टुकड़ा आगे बढ़ाकर और दूसरे हाथ से किसी ब्रश जितने तथा ब्रश जैसे बड़े हुअे बालोवाले अपने सिर को दिखलाते हुअे आजंवपूर्वक कहा—“तराश न।”

असके अस अभिनय और शब्दों का मिलाकर अर्थ यों था कि, ‘बाल कुछ बढ़ गये हैं, मेरा मस्तक विशोभित हो गया है, जिस काच के टुकड़े-रूप अस्तरे से चिकनी चिकनी हजामत कर डाल न। सिर की बीर बना डाल न, प्रिय तम मेरी, वह भी तेरे अपने ही हाथों से।’

हमारे यहा प्रियपत्नी के केशकलाप की किसी विलासी पति द्वारा वेणी का कसा जाना जैसे प्रणयक्रीडा का अंक अंग है, बाल अपने सींगोंसे गाय को खूजाते हुअे और चाटते हुअे जिस तरह प्रेम में आया होता है, असी प्रकार प्रेमातुर हो अठनेपर अपनी प्रियतमा के सिर के बढ़नेवाले बालों को सर्वथा हलके हाथों से ‘तराश कर’ असकी चिकनी चिकनी हजामत बनाना जावरो के प्रणयी जनो की अंक हविस हुआ करती है। अून के रतिविलास का ही वह अंक शृंगारभाग है। विधवा का केशवपन अपने धर्मशास्त्रों के अनुसार जितना अनिष्ट-नहीं, जितना अंक प्रकार का अनुल्लध्य धर्मसंस्कार, असी प्रकार सधवा का केशवपन भी जावरो के धर्म शास्त्र के अनुसार अंक सौभाग्यलक्षण और अंक धर्मसंस्कार समझा जाता है।

अपनी प्रिय पत्नी की अस हविस की पूर्तिके लिये नानकोवीने तत्काल असे समीप ले लिया। शिलाशय्या पर असे सुलाकर, असका सिर अपनी जांघपर लेकर अस काच के धारदार टुकड़े से वह लाडभरे तथा हल्के हाथोंसे असका सिर साफ करने लगा। सिर सफा चट हो चुकने के पश्चात् जब वह अठकर बैठी, तब अपने चिकने चुपड़े सिर से अधिकाधिक शोभायमान वह विकेशा रानी फुली असे जितनी मोहक और आकर्षक प्रतीत होने लगी कि, असने प्रणयावेश में असका चुवन वहीं का वहीं ले लिया। और जिस तरह असने रानी की विच्छा पूरी की थी असी तरह रानी भी असकी विच्छा पूरी करे विम अर्थ की अंक वितति जावरो की रीति के अनुसार अभिनय की भाषा में करते हुअे, अंक हाथ से असने वह

काच का टुकड़ा सामने की ओर किया और दूसरे हाथ से अपना सिर दिखलाते हुअे नानकोवी अपनी प्रियतमा से आर्जवपूर्वक बोला, “तराश !”

तब रानी फुलीने नानकोवी को अुसी पत्थर की सेजपर सुलाया । अुसका सिर अपनी विवस्त्र जवापर लिया और काच के दूसरे अेक अेकदम कोरे धारदार अुस्तरे से वह जावरा सुदरी ‘करं करं’ करती हुअी अपने पति की हजामत बनाने लगी । अुतने मे नानकोवी की वहन और अेक दो लडके भी वहां आये । ताजे ताजे दो तीन छवडी भर के सजीव सीपियाँ वे लोग फलाहार के लिये ले आये थे । अपनी सीपियो का मुंह खोल कर अदर के नानाविध प्राणियो को मूंगफली के दानों की तरह मुँह में डालते हुअे तथा अुन सीपियो को अुस पुरातन गढे में फेंकते हुअे वे सारे लोग गपशप लडाते हुअे बैठ गये ।

त्योही, “आगया ! आगया ! अूऽऽ अूऽऽ” अिस तरह अकस्मात् चिल्ला कर नानकोवी की वहन नाचती हुअी अुठ खडी हुअी । दूरस्थ झाडी की ओर सकेत कर के अुसने सब का ध्यान जिधर आकर्षित कर लिया था, अुधर जव नानकोवीने देखा तो अुसे दिखाअी दिया कि, अुस का गुम हुआ वह घायल जावरा, अपनी अुस वहिन का पति, थोडा लगडाते हुअे किंतु साकल्येन सर्वथा निर्भय, निश्चित वृत्ति से अपनी राजधानी की ओर चला आ रहा है । तत्क्षण आनद से ताली पीट कर वे सारे खडे हो गये और नाना प्रकार के अिशारे करते हुअे तथा विचित्र प्रकार से चिल्लाते हुअे “चल, चल, जल्दी आ, तेरा स्वागत हो !” अैसा भाव व्यक्त करने लगे ।

अपने विषय में अपने जातभाअियो के मन में किसी भी प्रकार का किल्मिष नही आया यह देख हर्षोत्फुल्ल वह जावरा भी आनद अेव अौत्मुख्य से दौडता हुआ ही आगे आया । पर अपने अुन भाओवदों के समुख आते ही अेकदम ठिठक गया । नानकोवी, फुली और अुस जावरे की स्त्री अित्यादि सारे के सारे न हँसे, न बोले, तन कर खडे हुअे और अुसकी तरफ देखने लगे । धीमे धीमे अुन्होंने अपनी आंखें अुसरर फाडी । वह भी तन कर खडा हुआ और मानो गुस्से मे भर आया हो, अिस तरह अुनकी ओर आंखें फाड कर घूरने लगा ।

अस के पश्चात् वे दोनों पक्ष अेक के बाद अेक करके खांसने खसारने लगे । पाच छै मतंवा यह खांसना हो चुकने के पश्चात् वे फिर निश्चल वृत्ति से अेक दूसरे को घूरते हुअे खडे रहे ।

कारण, जावरो के शिष्टाचारके अनुसार वही नमस्कार चमत्कार की पद्धति है । कोअी भी व्यवित, वह अपना खास लडका ही क्यो न हो कुछ दिन बाहर रह कर घर वापिस आया कि अससे मिलने जुलने से पूर्व अिसी प्रकार का नमस्कार चमत्कार करना पडता है ।

अिस रूढि का मूल जावरो की स्मृतिक्षीणता में होगा । अुन्हे याद तो किसी वस्तुकी ठीकसे रहती ही नहीं । अत मनुष्य कुछ दिन लापता होकर वापिस अपने में आया कि जबतक असकी पहचान ठीक ढंगसे न हो जाय, तबतक असे ठीकसे निरख परखकर देखना पडता है, खास खसारकर असकी शत्रुता किंवा मित्रता का ठीक से पता चलाकर असको अपनी टोली में घुसने देना यह भी सावधानता का अेक कर्तव्य हुआ करता है । अस प्रारम्भिक काल की आवश्यकता का ही रूपांतर अिस शिष्टाचार के रूप में हुआ और पहचान हुअी हुअी भी हो तो भी अभ्यागतो के साथ अस प्रकार का नमस्कार चमत्कार किये बिना न बोलने की पद्धति ही पड गयी होगी ।

अस शिष्टाचार के पूर्ण होते ही, अुन्ही विस्फारित नेत्रोंसे आनद का अश्रुजल वेगसे वह निकला और अपने अस खोये हुअे वीरवधुके गले में अन्य बाधवो के तथा पतिके गले में पत्नी के प्रेमपूर्ण आलिगन की भुजाओं जा पडी ।

अपने छुटकारेका अद्भुत वृत्तात सुनाते समय अस पुनरागत जावरे ने कंटक के तथा रफिअुद्दीन के अपने अूपर हुअे अुपकारोका अितना अधिक अुल्लेख किया कि, जब असने अत में अुन दोनों भगोडोको जावरे आश्रय देने और अुनके द्वारा असे दिये गये प्राणदान के अृण से अुश्रृण हो अैसी साग्रह विनति अस समयतक वहा आये हुअे अुन टोलीके अनेक लोगो को संवोधित करते हुअे की, और अुन भगोडो की और से ययेच्छ तमाखू और शराव मिलने का आमिष (लालच) भी दिखाया तब असपर जिसने स्वीकृति सूचक सिर न हिलाया हो अैसा अेक भी जावरा नजर नहीं आया । तथापि किंचित् विचार करने वाली, नेताको सुहाने योग्य मुखमुद्रा कर के

नानकोवी थोड़ी देर चुप बैठा और तत्पश्चात् विशारो से वाक्यका अधिकांश व्यक्त करते हुये केवल अितना ही शब्द अुसने अुच्चारण,

“दोलकाष्ठ !”

अुसमें अितना अर्थ भरा हुआ था कि, अैसे भगडोकी सच्ची परीक्षा दोलकाष्ठ ही को है ! अुसी को हमारी ओरसे अुनके पास भेजो ! यदि कटक और रफिअुद्दीन को दोलकाष्ठ ने आश्रयाह समझा तो आश्रय अवश्य देंगे ।

अुधर सध्याकाल के समय अुसकी मुलाकात हो रही थी, अिधर कटक और रफिअुद्दीनने सूर्यास्त से पूर्वही किसी पशुका शिकार किया, अुसका मांस अग्निपर भूना और अुससे पेट भर चुकने के पश्चात् अुस भयानक दलदल और कीचड़ वाले जगलमें अपने विस्तरेकी खोज करने लगे ! वहाका पलग, पलगकी मूलप्रवृत्ति वृक्षके अतिरिक्त और कौनसा हो सकता था ? वृक्षोको देखते देखते वे अैसे दो अलग अलग वृक्षोपर चढ़े जिनकी चौड़ी चौड़ी टहनियाँ अूचाभी पर जाकर अेक दूसरेसे चिपकी हुयी दिखायी दी । अुन वृक्षोकी टहनियों द्वारा तय्यार-किये गये तख्तोपर वे सो गये । गाढ़ निद्रामें कहो लुढ़ककर नीचे ही न आ पडें । अिस भय के अपाकरण के लिये अुन्होंने अपने आपको अरण्यवल्लरियों की रस्सीके सदृश मजबूत छालो से अुन टहनियों के पलग के साथ बांध लिया । बरमात बहुत देर तक बंद रही । तथापि जगलमें से पानी तो टपकता ही रहा । बीच बीचमें अेकाध झड़ी भी आ ही जाती थी । पर अिसमें सदेह नहीं कि वे दोनों शीघ्रही गहरी नीदमें सो गये । पर वह गहरी नीदही थी अथवा ग्लानिजन्य बेसुधी थी, यह अुनके अपने ध्यानमें भी नहीं आया ।

तडके ही उद्दीन अुठा । अुसे अुस गहरी नीद के पश्चात् अितनी प्रफुल्लता अनुभव हो रही थी कि वह थोड़ी देरके लिये यह भी भूल गया कि अुसके सिरपर सकट की भयानक तलवार लटक रही है । समीप ही दुसरे वृक्षपर कटक सोया हुआ था । अुसकी ओर अुसने देखा तो वह भी अगडाअियाँ लेता हुआ नीदसे जागकर अुठ ही रहा था । थोड़ा विनोद करने की अिच्छा हो आते ही अुद्दीनने कटक को पूरी तरह अुठाने के लिये अूची और सुरीली आवाजमें यह भूपाली छेड़ी—

घन श्याम सुवरा, धीधरा अरुणोदय झाला ।

बुठो कंटक बाबूजी बुदयाचलीं सूर्य आला ॥

कटक को हँसी आयी । वह भी बुठकर के टहनीपर ही कुछ देर बैठा, बाघ की टोहमें मचान बाघकर मृगयु लोग जिस तरह बैठते हैं, उसी तरह कटक को बैठा देख बुद्दीनने मजाक की,

“क्यों बाबूजी, कितने बाघ मारे ?”

कटकने उत्तर दिया,

‘भय्या, जो सचमुच बाघ, वो तो अभी आनेवाला है । वे जावरे कल के निश्चयानुसार अभी वापिस आयेंगे । तब या तो वे मानुषायित दिखायी देंगे या व्याघ्रायित ! — बाणों के नखोंसे फाड़ फाड़कर खा जायेंगे तुझे और मुझे ।’

कटक अभी अितना बोल ही रहा था कि, त्योही सामने की झाड़ीमें हलचल होने लगी । केवल सौ कदमों की दूरीपर आते ही जावरेने अपनी अरुण्यक भाषामें ‘‘ भू ऽ ऽ भू ऽ ऽ ’’ करके जोरसे चिल्लाना शुरू किया । उस जावरेको पहचानते ही कटक झटपट वृक्षसे नीचे अुतरा । रफिअुद्दीन अपने पेटपर उसी तरह बना रहा । जिसका कुछ अंशमें तो यह कारण हुआ कि वह अपने चारों ओर बाघी हुआ बेलोकी छालोको जल्दीसे खोल नहीं पाया परंतु कुछ अंश में अुसने जो दोरी लगायी वह अपने रक्तमांस में भिनो हुआ शठवृत्ति के कारण भी थी । उस जावरे के साथ वह अपरिचित ‘दोलकाष्ठ’ भी आया हुआ था । अुन दोनोंका निश्चय कटक और अुद्दीन को आश्रय देनेका था अथवा नहीं यह अभी पूरी तौरसे पता चलाना था । तब ऐसी शकाकुल स्थितिमें स्वयं आगे न बढ़कर कटकको ही आगे जाने दिया जाय, यदि यह दिखायी दे कि पास आनुकूल पड रहा है तो खुदभी वहाँ जायें । प्रतिकूल दीखा कि पीछेसे पीछेही निकलकर भाग खड़े हो सके ऐसा कपट भावभी रफिअुद्दीन के अुस तरह पीछे रहने में था ही नहीं यह कौन कहे ?

कटक को आगे आया देखते ही अुस जावरेने आनंदका चीत्कार किया और अुसे अपनी भुजाओं में लिपट लिया । ‘ये ही है कटकबाबू ।’ ऐसा

असने असका परिचय ‘दोलकाष्ठ’ को करवा दिया । तत्काल दोलकाष्ठ ने भी आगे बढ़कर कटकसे कहा,

“कटक बाबू, मुझे लगा ही था कि आप होंगे ! मैं यद्यपि गत दो तीन बरसोंसे अिन जावरो मँ अस प्रकार नगा होकर अेक जावरा ही बन गया हूँ, तथापि वेषांतर करके मैं कालेपानी के अपनिवेश में निरतर घूमता रहता हूँ । मैंने आपको अनेक बार देखा है । आपकी अधिकारियों में जो प्रतिष्ठा है और आपका भाग जाने का जो निश्चय है वह भी मुझे मालूम है । सत्तावन के स्वातन्त्र्यवीर अप्पाका मैं भी अेक विश्वासपात्र मित्र था । आपको सहायता पहुँचाने के लिये मरते समय मुन्होंने मुझसे कहा था ! वे अेक गुप्तमन्त्र मनुष्य थे ! मुन्होंने मेरा परिचय आपको नहीं दिया था । कारण आपके साथ मुनकी जान पहचान नमी थी और मेरी पुरानी । मुझे कालेपानी परसे भाग जाने के लिये जैसा साथी चाहिये वैसे आपही है ! कटक बाबू, आपकी वहन कटकी को मैं आनकी आन में छुड़ाकर ले आऊंगा ! चौंकियेगा नहीं ! मुझे सब कुछ मालूम है —कैसे यह सब मौका मिलने पर सुनाऊंगा । आपके लिये मैंने जावरो की ओरसे आश्रय दिलाया है । पर आपका जो दूसरा साथी जो भगोडा है, उसे देखे वगैर असके विषय में मैं अभी कोअी वचन नहीं देना चाहता । कारण, कारण, कारण,— असका जो नाम अस जावरे के टूटे फूटे मुच्चारणसे मैंने पता चलाने की चेष्टा की है, वह रफिशुद्दीन का सा कुछ बनता है ! और कटकबाबू, मुझे अस नामसे सख्त नफरत है । पर अस मनुष्य को देख लेने के पश्चात यदि वह अस नामके समानही अवमाधम नहीं निकला तो मैं उसे भी आश्रय दिला सकूंगा । ठीकसे बताविये असका नाम क्या है ! ”

कुछ सुकुचाते हुअे कटक बोला,

“रफिशुद्दीन ही है । पर वह मनुष्य यहातक हमारे भाग आने में बहुत अधिक सहायक सिद्ध हुआ है, मेरे लिये तो कम से कम उसे आश्रय—”

कटक को बीच ही में टोककर दोलकाष्ठ बोला, “वह अस मनुष्य को देखने के बादका प्रश्न है । कहा है वह ? ”

जब तक मिशर मिनका यह बोलना चालना हो रहा था तब तक रफिअुद्दीन अपने चारों ओर के लताबधन छुड़वा कर अुस दूरस्थ वृक्षके नीचे आ ही रह था । कारण, अुस जावरे द्वारा हसते हुअे दिया गया भुजबधन, वह आनंद चीत्कार दोलकाष्ठ द्वारा स्मितमुख से कटक के साथ किया गया हस्तादोलन मिन सब लक्षणोंपर से अुसे असदिग्ध रूपसे यह विदित हो गया कि अब जावरो ने अुनके साथ स्नेह सबध स्थापित कर लिया है, आगे जाने में अब कोभी विघ्न नहीं अैसी अुसकी दृढ धारणा हो चुकी थी । अितने में कटकने जोरसे पुकारा, “ रफिअुद्दीन आगे आब, जावरे अपने मित्र हो गये है ! ”

रफिअुद्दीन मुक्तमनस्क तथा हसता हुआ आगे आया । दोलकाष्ठ अुस की ओर निहार कर देख रहा था । पर रफिअुद्दीन जब नजदीक आया तब अुससे भी अधिक लवे विशाल देह अेव शक्तिशाली अुस नग्नकाय दोलकाष्ठ का सत्रस्त भावसे झुकुचन होने लगा । वह बार बार मिटाने का प्रयत्न करता था किंतु अुसके माथेपर की क्रोध की रेखाओं पुन पुन प्रज्ज्वलित हो अुठती थी । अुफनाते हुअे मद्य की बोतल का काग ताड करके अुडने की कोशिश करे तादृश त्वेषसे अुसका देह कहीं अुफन कर अुड तो नहीं जायगा अैसा प्रतीत होता था । और अुस बोतलके अुडनेवाले काग को जिस तरह हम मजबूती से अूपर से दबाकर धरते है, अुस तरह वह जमीनपर अपने पैर मजबूती से जमाकर रखने लगा । अितने में अुसके मन में जिस अेक शकाने विक्षोभ निर्माण किया था, अुसकी आवश्यकता को पूर्ण करने वाली अेक कल्पित अुसे सूक्ष्म गयी । अुसने बलपूर्वक अपने मुंहपर मुस्कराहट लाकर रफिअुद्दीन के साथ प्रेमपूर्ण हस्तादोलन करने की अिच्छा से अपना हाथ आगे बढ़ाया । ‘आओये, आओये’ दोलकाष्ठ, के अैसा स्वागतात्मक संबोधन करते ही रफिअुद्दीन की कली खिल अुठी । अुसने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाकर दोलकाष्ठ का हाथ पकड़ा और सिर झुका कर दोलकाष्ठ को प्रत्यभिवादन किया ।

रफिअुद्दीन के पजेकी ओर देखते ही दोलकाष्ठ को जिस निशानी की आवश्यकता थी वह मिल गयी । रफिअुद्दीन के दहिने हाथ की कनिष्ठिका की अेक पोर टूटी हुअी थी । यह रफिअुद्दीन तो वही रफिअुद्दीन है ! और तत्क्षण दोलकाष्ठ ने दात पीसकर गर्जना की,

“तूही ! तूही वह रफिअुद्दीन है ! नीच—।।”

अस भयंकर औसान और आरोप का अर्थ कटक को तो क्या अभी रफिअुद्दीन को भी पूरी तरह मालूम पडने से पहले ही दोलकाष्ठ ने अपने हाथ में आया हुआ अुद्दीन का हाथ झटाक से एक झटका देकर खीचा, और अेक कुस्तीका पेंच मारकर असे पीठकी तरफ से अपने पेटमें कर लिया, अुसकी कमर में बाँधे हाथ की अेक मजबूत लपेट मारकर दहिना हाथ अुसकी दोनों टाँगों के बीच धँसाकर असे अुपर अुठाया और अेक पछाडमें जमीनपर दे पटका । तत्काल अुसकी छातीपर सवार होकर अपने दोनों हाथोंसे दोलकाष्ठने अुद्दीन का गला कसकर दबाया । अब अुद्दीन के ध्यानमें आया कि, अरे, यह अेक अपना पुराना दुश्मन छातीपर चढ बैठा है । अुद्दीनने असे पहचाना पर तब जब वह अुस की मुठ्ठीमें पूरी तरहसे आ चुका था ।

“है ! है ! छोडो ! छोडो !” कहता हुआ कटक घबराया सा ज्योही बीचमें आने लगा, त्योही अत्यंत दृढ और निष्ठुर स्वर में दोलकाष्ठ चिल्लाया

“बाबूजी आप थोडा चुप रहिये ! यह मनुष्य नहीं है, शैतान है । आपके भले के लिये भी अिसका काटा निकाल फेंकना चाहिये ! मेरा तो यह अेकमात्र जानी दुष्मन है ! वह सब पीछे बताअूगा ! बोल, रफिअुद्दीन तू ने तो अपनी ओरसे मुझे जान से मारही डाला था न ? यह मेरा पुनर्जन्म । — अब मैं अपनी ओर से, नीच कहीं के, तेरा खात्मा किये डालता हूँ ।

दात ओठ पीसते हुअे विकराल क्रोध से दोलकाष्ठ अपनी वज्र मुष्टियों द्वारा प्रहार पर प्रहार अुस छटपटाते हुअे और बकरेकी तरह चिल्लाने वाले अुद्दीन की आँखोंपर, नाक पर, छातीपर करने लगा । अुद्दीन की आँखोंमें, नाकसे और मुँहसे अून की धारा चिरं करके अुपर निकलने लगी । वह लथड पथड होकर बेसुद गिर पडा ।

जो अपने मालिक का दुष्मन वही अपना दुश्मन, अिसप्रकार जैसे अेक पालतू और अीमानदार कुत्ते को अनुभव होता है और अुसका शत्रुत्वभाव जागरित हो अुठता है, अुसी तरह जो दोलकाष्ठ का दुष्मन वही अपना भी दुश्मन अैसा समझने के कारण असे जावरे की भी वंरज्वाला जागरित हो अुठी और

अपना घनुष्य हाथमें लिया और रफिअुद्दीन पर ताना । तथा अुसमेंसे सन सनाते हुअे छूटा हुआ बाण रफिअुद्दीन की छातीमें बिस तरह गाड़ दिया मानो कोभी-मेखही गाड़ दी हो । रफिअुद्दीन जहाका तहा ठडा हो गया !

तत्क्षण दोलकाष्ठ अुस अघोरी सतोषके आवेशमें कटक की ओर मुड़कर बोला,

“कटकवावू, सुनिये, मैंने बिस रफिअुद्दीनको यो बकरेकी तरह मुक्को से कुचलकर क्यो मारा । आपको लगता होगा कि मैं ही आततायी हू ; पर बिस अुद्दीन को जबसे आप जानते ह, अुससे भी बहुत पहले से मैं जानता हू । बिसने बिसी तरह गला घोटकर कितनो ही की जानें ली हैं । यह पहले अेकवार कालेपानी पर आजन्म कैदी था । अुस समय मैं भी कैदहीमें था । मुझे लकड़ियाँ भरकर भेजनेवाली नौका पर काम मिला था । अुस कारण नौकानयन की कलामें मैं खूब निष्णात हो गया । यह मेरे हाथके नीचे लकड़ी जमादार था । आगे चलकर हमने भाग जाने की गुप्त अभिसधि की । अुस साहसमें बिससे मुझे सहायता मिली । बिसके पास नहीं थी दमड़ी, और मेरे पास थी हजार दो हजार की रोकड । मैं जिस नावपर काम करता था, वही नाव अेकदिन मौका पाकर हमने हाथमें ली और रातोंरात समुद्रमें छोड़ दी।

“वायु अनुकूल था । हम भगोड़े समुद्रमें अच्छे रास्ते पर आ लगे। अैसे मौकेपर बिसने मेरे पास की सारी रकम हथियाने की दुष्ट भावना से, हालाकि मैंने बिसका कुछ भी बिगाडा नहीं था, तो भी बिसने मेरा घात करने का निश्चय किया । मैं जब अेकवार, अेक तस्तेपर नाव के किनारेपर बिसकी तरफ पीठ किये खडा था तब बिसने अुस तस्तेको अकस्मात् अुलटा कर अुसके सहित मुझे भरे समुद्रमें धकेल दिया । मैं ज्योही अुस नाव को फिर से पकडने के बिचार से गया, त्योही बिसने चप्पूका डडा अुठाकर मेरे सिर पर दे मारा । मैं चक्कर खाकर पानी में गंते खाने लगा, डूब गया । नाव झपट्टे से आगे निकल गयी । मैं डूब गया ।

“पर अद्भुत योगायोगसे मैं ज्योही पानीके अूपर आया त्योही लकड़ीका तस्ता मेरे हाथ लगा । अुसे पकडकर मैं अपनी जान बचानेकी भरसक चेष्टा करने लगा । अुसी बीच जावरो की अेक बड़ी ‘हुगी’ आगे निकलकर मेरे समीप आयी । अुन जावरोने अपनी नौकामें मुझे डाल लिया और बिस तरह

मेरी जान बचा ली। पर जिसके विचारसे तो मैं मरही गया था। — आगे जिसका क्या हुआ वह मुझे जिस क्षणतक मालूम नहीं था। अब तो जिसका नाम सुनतेही, और जिसे प्रत्यक्ष जिस जगह देखतेही, यही वह नीच है, यह मैंने पहचान लिया। जिसने मुझपर तथा अन्य लोगों पर जो अत्यंत वीभत्स स्वरूप के अत्याचार किये हैं उनका मैंने आज अिकठ्ठा ही बदला चुका दिया है। अब आप मेरे काम को ठीक बताये या न बतायें यह आपकी मर्जी पर है।

“तुमने ठीकही किया है। तुमने जिस नीच को अब जिस तरह मारा है, किसी तरह और तीन बार मारा होता तब भी मैं यही कहता कि, आपने ठीक ही किया है।—अतने जिसके जघन्य अपराध हैं ? और मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ। पर जो मुझे स्वयं करना था, किंतु परिस्थिति बश कर नहीं पाया, वही तुमने किया है। मेरे पैरों गड़ा हुआ काटा, जिसे मैं नहीं निकाल सका उसे तुमनेही निकाल दिया है। उसके कारण मेरी अग्रिम योजना में जो कठिनावियाँ न पेश होती वे यदि पेश भी हो जाय तो भी अब मैं उनकी चिंता नहीं करूँगा।”

“नहीं, नहीं, यह यदि रहता तो आपकी अग्रिम योजना में कठिनावियाँ निश्चित ही अुपास्थित होती। बहुत करके, मेरी तरह ही यह आपका भी घात करनेमें कसर न रखता। वह सकट अब जिस अवम सर्प के अिम प्रकार कुचले जाने से नष्टप्राय हो गया है। आपकी अग्रिम योजना अब अधिक निर्विघ्न हो गयी है, यह मैं शीघ्रही आपको दिखा दूँगा। मैं कौन—”

“हो, वही थोड़ासा पता चलाने की मुझे अुत्कठा अव आवश्यकता है।

“पर मेरी समति यही बात आप मुझ से न पूछें और मैं न बताऊँ कारण आप अविश्वासी हैं यह नहीं, स्वर्गवासी अप्पाजीने आपके चारित्र्य के सबध में जो प्रशस्तिपत्र दिया है वही अिम शका निर्विवाद निराकरण है। पर अदमान के जघन्य अपराधी जगत् में अुन्ही अपराधियों के सहकार्य से कालेपानी से भाग जाने जैसे प्राणातिक अभिसधि में जिसे पडना हो उसे दो बातें छोड देनी चाहिये। अेक बात यह कि काम के लिये जितनी अपरिहाय हो उससे अधिक खुदकी पूर्वपीठिका दूसरों को बताना तथा दूसरी बात है प्राणोंका मोह !—अिन दोनों बातों का त्याग आवश्यक है

यह मैंने अनुभव के आधार पर निश्चित कर लिया है। आपकी जितनी आवश्यक है उतनी पूर्वपीठिका मैंने पता चला ली है। मेरा नाम दोलकाष्ठ है अतनी मेरी पूर्वपीठिका आपको प्रस्तुत कार्य के लिये पर्याप्त है। जैसा जैसा प्रसंग आता जायगा वैसे वैसे मैं अपने आपही अपनी अन्य जानकारी आपको थोड़ी थोड़ी करके बताता जाऊंगा। अब पहले आप जावरो की ओर चलिये। राजा नानकोवी मेरी आपके प्रति अनुकूल समति होने के कारण स्वयं आपकी मुलाकात के लिये मुत्सुक है। हा, पर आपके पास एक बंदूक, कुछ गोला बारूद और पुलिस के कपड़े भी थे न? यह जावरा कहता था।”

“है न, पर मैं एक वजह से मुन्हें छिपाता रहा हू। जावरे हमारे हाथों में उस प्रकार के शस्त्र देख कर कहीं विचलित न हो जायें। और वे वस्तुओं में अपने ही हाथों में रखता चला आया हू।—मिस अधम मुद्दीनपर अपने गूढ़ अविश्वास के कारण।”

“पर सच पूछिये तो, उस भाग जाने के काम के लिये जो वस्तु अत्यावश्यक है, और जिस वस्तुका मेरे समीप अभाव है ऐसी वस्तु आपके समीप है, यह सुनकर ही मुझे आपके सहकार्य का अतना अधिक आकर्षण प्रतीत हुआ। जायिये, पहले वे वस्तुओं लायिये अघर।”

पत्तों के ढेरमें छिपायी हुईं उन सब वस्तुओं के कटक द्वारा वहा लाये जाते ही दोलकाष्ठ पहले पहल उस बंदूक पर मिस प्रकार टूटा, जैसे एक वुभुक्षित व्यक्ति किसी पक्वान्नपर टूट पड़ता है। और बड़ी शानसे वह बंदूक उस नग्नकाय वीर ने अपने कंधेपर रखी, आगे हुआ और विलकुल सैनिक की अदा से कटक को हुक्म दिया,

“चलो, अब मेरे पीछे पीछे।”

“वाह,” कटक हसा, “बंदूक के स्पर्श समकाल ही आपके पैर भी किसी सैनिक की भांति टपटप करते हुये पड़ने लगे हैं। आपके शरीर में किसी सैनिक का संचार हो गया हो ऐसा प्रतीत होता है।”

“किसी सैनिक का काहे को? मैं स्वयं एक सैनिक ही तो था पहले! मैंने लड़ाई देख रखी है। बाबूजी, प्रत्यक्ष रणांगण में लड़ा भी हूँ मैं ...।

पर मुहसे अकस्मात् निकली हुयी अपने पूर्व वृत्तात की अितनी जानकारी भी अधिक हो गयी जिस भावना से ही कदाचित् दोलकाष्ठ अेकाअेक चुप हो गया और कटक तथा जावरे के जिस छोटेसे सैन्यका अग्रणीत्व स्वीकार करके किसी सेनानी की भाति वह नानकोवी की अुस अरण्यक राजधानी पर अभिमान करने के लिअे चलने लग गया !

—वह कौन ?—पुलिस ? : : : : २०

स्त्रियो के जेलखाने की रसोअी वाली छपरी में अेक बडी भारी साग भाजी पकाने की 'डेग' के नीचे आग सरकाती हुयी कटकी खडी थी । कैदी स्त्रियोके वेष के अनुसार अेक घुटनेतक का मोटा झोटा लुगरा, सिर में हफ्तो हफ्तो तक तेल नही, कधी नही, सर्वथा अमगल और नीच कैदी स्त्रियो का सहवास, अिन सब कारणो से वालो म जुअे भरी हुयी, धगधग करने वाली—बडी बडी भट्टियो की आच में लगातार अम करते करते घूमवर्णाक्त अेव स्वेदमलीमस शरीर, पर अुस स्थिति में भी मौलिक सुभगता लिये हुअे वह युवती कटकी, मालती अुन अग्नियो द्वारा प्रज्वलित बडी बडी भट्टियो के मध्यभागमें पंचाग्नि साधन में शोभायमान मूर्तिमती तपस्या के सदृश सुहा रही थी ।

कम अज कम अुसके सामने अुस समय खडी हुयी तथा अुसकी ओर सहृदयतापूर्ण कौतुकसे विहारती हुयी अनसूया जमादारनी को तो वह कटकी अुसी प्रकार शोभायमान अवस्थामें दृष्टिगोचर हुयी !

वहाँ अुस समय अेक और कैदी स्त्री काम कर रही थी । वह जब आटे की थैलियाँ लाने के लिअे बाहर चली गयी तब कटकी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिअे अनसुयाने चुटकी वजायी । कटकीने अूपरकी ओर देखा, थोडी आगे बडी, अिधर अुधर अच्छी तरहसे देखा, अनसूयाके हाथमेंसे शटपट अेक चिठ्ठी ली और लकडियो के ढेर की आड में जा छिपी । अनसूया दरवाजे ही में खडी रही, ताकि कोअी अदर न आ सके । अेक दो मिनिट ही में कटकीने वह चिठ्ठी पढ डाली आगमें फेंक दी, अनसूयाने सिफं गर्दन ही के सकेत से पूछा, 'काम हो गया न ?'

कटकी ने भी गर्दन ही के सकेतसे अुत्तर दिया, 'हाँ।' तब शीघ्रही अनसूया वहासे चली गयी। कटकी से अपना कोमी स्नेहसबध है जिसकी किसी को शका तक न आये जिस ख्याल से आजकल अनसूयाने कटकी के साथ बोलना कतमी छोड दिया था। अन्य कैदी स्त्रियो से वह जितना बोला करती थी, अुतना भी वह कटकी से नही बोलती थी। कामकाजके मामलो में भी कटकी का अपने साथ कोमी सबब नही आने देती थी।

कटकीने वह चिठ्ठी पढी, अुसका हृदय किसी उत्कट आशाके अुद्रेक से तथा साहस कार्य की भीति से धडकने-लगा। अुसका शरीर अुस कैदखाने में था। पर मन वहासे अुठाकर कहीं अन्यत्र पहुँचा दिया गया है, ऐसा अुसे प्रतीत होने लगा। वह चिठ्ठी कोमी भयानक किंतु शुभ सूचना अुसे दी गयी थी। अुस सूचना के अनुसार अुसको जो कुछ करना था वह किस तरह पूर्ण किया जाय, जिसी अुधेडबुनमें वह पड गयी। क्या करना है, कैसे करना है, जिसे वह मन ही मन अकित करती जाती थी। जिस कार्य में अणुमात्र भी गलती न हो जिसके लिअे जो कुछ आवश्य करणीय कृत्य थे अुनका क्रम वह ठीक ठीक बाधती जाती थी। तत्रापि यदि दुर्दैव से अुस क्रम में कोमी त्रुटि आ गयी, तो अुसे वर्तमान सकटकी अपेक्षा भी अनेक गुने अधिक भारी सकट में पड जाना होगा, जिस कल्पना के आते ही वह बीच बीचमें थर्रा भी अुठती-थी। पर सुदैव से यदि वह कार्यक्रम व्यवस्थित रूपसे पूरा हो गया तो ?—केवल चौबीस घटोके बीच में ही सुखके स्वर्ग में पैर और किशन के-गले में बाहुपाश।

अुसके मनमें यह सारा लुफान चल रहा था। पर अुसका व्यवहार जेलखाने की घडियाल की तरह, जेलद्वारा निर्धारित नियमोंके अनुसार व्यवस्थित रूपसे चल रहा था। सारे कैदियोका जीमना हो गया। दो पहर के समय नित्य नियम के अनुसार रसोमी विभाग की स्त्रियो को मिलने वाली छुटी में कटकी थोडी देर आराम से सुस्ताने लगी। पर अुसका मन बुरी तरह बेचैन था। क्या होगा, कैसे होगा,—ये चिन्ताअें अुसे खापे डाल रही थी। वह बार बार देखती कि अनसूया जमादारनी आ-रही है या नही।

घड़ी ने तीन बजाये, उसे लगा कि चारही बज गये हैं। उसने सोचा कि अब बाहर कामपर जानेका उसका समय हो आया। पर जब मालूम पड़ा कि अभी तीन ही बजे हैं, वह थोड़ी निराश हो गयी और फिर नीचे बैठ गयी। अतने में सचमुच के चार बज गये। अनसूया जमादारनी ने जेलर के हुक्मके मुताबिक 'कटकी' कहकर उसे पुकारा। सबके सामने कटकी को आपने साक्ष के कामपर बाहर जानेकी आज्ञा मिली।

कैदियों के लिये कैदखाने से बाहर एक प्रेमोद्यान बनाया गया था। वहा जाकर झाड़ने बुहारने का काम कटकी की ओर था। कटकीका चाल-चलन अच्छा है यह देखकर वह काम जेलरने उसीके सुपूर्द किया था। वह हररोज उस प्रेमोद्यान में जाने के लिये इसी प्रकार जेलकी फाटकसे बाहर चली जाया करती, साक्षके झाड़ने बुहारने का काम खत्म हो चुकने पर जब प्रेमोद्यान बंद हो जाता तब वह फिर उस फाटक के भीतर आकर कैदखाने में खुदभी बंद हो जाया करती थी। पर आज—?

आज उसका निश्चय था कि कैदखाने से—बाहर निकल आने के बाद अब कभी अंदर वापिस नहीं जाना। चिठ्ठी में जैसा लिखा था उस प्रकार भाग जाने में सफलता मिल गयी तब तो ठीक है ही, न मिली तो तत्काल पेट में छुरा भोक कर अपने आपको समाप्त कर लेना है। बधनमुक्त तो हर हालत में होना है, जिस फाटक से अब सजीवावस्था में तो भीतर नहीं जाना है, यह उसका पक्का निश्चय हो गया था। उसने मन ही मन कहा, "आज मेरे आजन्म कारावासकी सजा यहीं समाप्त हो गयी न।" आज जब वह प्रेमोद्यान की सफाईके लिये झाड़ू लेकर निकली थी, तब- उसके साथ ही रसोमी घरका एक छुरा भी छिपाकर ले लिया था। उसे उसने एक बार फिर हाथसे टटोलकर देखा। जब वह फाटक से बाहर निकल रही थी तब उसने अपना चेहरा, अपना व्यवहार ऐसा कुछ भोला भाला और निरपराध व्यक्ति का सा बना लिया था कि किसी पहरेदार को उसकी तलाशी लेने की आवश्यकता तक महसूस न हो। अनसूया उस समय कटकी को दूरसे झांककर देखने तक के लिये वहा नहीं आयी। अपने स्वप्न तक में वह मामला नहीं था, यह आगे चलकर

वह सिद्ध कर सके जिस हेतुसे अनसूया किसी अन्यही काम में तल्लीन है, ऐसा बहाना बनाने की चतुराई दिखा कर जेलखाने के बीचोबीच चने हुअे चौक में कभी की चली गयी थी ।

जब अच्छे चालचलन वाले स्त्री पुरुषोको विवाह की अनुमति मिल जाती तब वे कालीपानी के कैदी अपनी पसंदकी जोड़ी का चुनाव करने के लिये उस बागमें आया करते थे । वे हररोज की तरह उस दिनभी वहा जमा होने लगे, आपस में बात चीत करने, भुठने बैठने में मग्न हो गये । झाडना बुहारना हो चुकने के बाद कटकी भी उन लोभो के बीचमें फिरने लगी । पर उसका चित्त तो सारा उस बागके सामनेसे जानेवाली सडक की तरफ केन्द्रित था । पाच बजे । पर अभीतक जो आदमी उसे चाहिये था, वह सडक पर दिखायी ही न दे । वह बेचैन हो गयी । आँखें फाड फाड कर देखने लगी । पाच के बाद का-अेकअेक मिनिट उसे अेक अेक घटेकी तरह अनुभूत होने लगा । सब्बा पाच हो गये । — वह कौन ? — पुलिस ?

हा, हा ! पुलिस ही है वह । पर कटक कहा है ? सडकपर चिट्ठी में लिखे अनुसार पुलिस तो दीखा, पर कटक ?

अितने में उस पुलिसने स्थिरीकृत सकेत के अनुसार हाथ हिलाया । कटकी झटसे प्रेमोद्यान से बाहर निकल कर सडक पर आयी । वह पुलिस निश्चक होकर सामने आया और उसने कटकी का हाथ पकड लिया । उस स्पर्श से कहिये, अथवा समीप आनेके कारण निरखकर देखने से कहिये, पर कटकीने तत्काल पहचान लिया कि, यह पुलिस कटक ही है । उसके पीछे ही अेक अध-गोरा, अूंचा, पूरा किंतु उसके लिये सर्वथा अपरिचित अेक और सिपाही खडा था ।

पहला पुलिस कटक था, दूसरा 'दोलकाष्ठ ।' उन दोनों ने पुलिस का भेस बना, कवेपर बढ़क, कमरमें सरकारी पुलिस के पट्टे धारण किये, विलकुल पुलिसवालो की ठसक में सामने आकर कटकी का हाथ पकड कर उसे अूची आवाज में आज्ञा दी, " तुम्हे चीफ कमिशनर साहुब ने वगलेपर बुलाया है । हम ले जाने के लिये आये है । " कटकी के पीछे पीछे उस बागका पहरेदार भी उनके पास आ रहा था । उसे

आये तब बुन्होने कमिशनरका यह सदेसा सुनाया कि, “हमारी ओरसे कटकी नामकी किसी भी स्त्री कैदी के लिम्मे बुलावा नही भेजा गया।”

निश्चयही से किन्हीं दो पुलिसवालोंने उस तरुण स्त्री कैदी को भगाया होगा। यह बात स्पष्ट होतेही जेलर गडबडमें पड गया। जेलखाने की ‘सकट घटा’ अकदम जोर जोर से बज अुठी। जिधर तिधर सिपाहियोंकी दौडधूप, खोज और नाकेबंदी का काम शुरू हुआ। विशेषत पुलिस की बैरको में वे दोनों पुलिसवाले कौन हैं, जिसकी सस्ती से छानबीन होने लगी। कारण, उस लडकी को पकडकर ले जानेवाले दो पुलिस के सिपाही थे जिसी के सबूत चारों ओर से मिलते चले गये। अनेक राहगीरोंने बताया कि रास्तेपर आते जाते हमने दो हथियारबद सिपाहियों को अक लडकीको लेकर जाते हुअे देखा है, पर वे चूकि पुलिसवाले थे अत कोभी सरकारी काम होगा असा समझकर हमने अुधर बहुत ध्यान नही दिया। रातभर खोज होती रही, पर वह पुलिस कौन था जिसका कुछ पता ही न चले। उस लडकीको लेकर वे गये किधर यह समझ ही में न आये।

जिस रीतिसे कमिशनर की ओर से विवरण प्राप्त कर के दूत रातको जबतक वापिस न आये और कटकी को भगाया गया है यह जबतक पक्का नही हुआ तबतक कटक और दोलकाष्ठको अपना काम पूरा करने के लिम्मे चारपाच घंटे निर्विघ्न रूपसे मिल गये। उस समय तक किसीने उनका पीछा तक नही किया था। पुलिसवालोंका भेस बनाने में बुन्होने जो चतुराबी दिखायी अुमका अुन्हें अच्छा अुपयोग हुआ। कारण, सरकारको जो सदेह हुआ वह भिन्न ही दिशा का हुआ। जिस दिशामें खोज नही करनी चाहिये थी, अुसी दिशा में खोज होने लगी। जिसका कटकने पूरा पूरा फायदा अुठाया। जब पिछली दफा जावरोंने अग्रेजोंपर धावा बोला था, तब जो अग्रेजी पोलिस का जमादार मार डाला गया था, अुसकी बटूक, कपडे पट्टे वगैरे कटक ने निकाल लिये थे। दोलकाष्ठ सी जिसी तरह कही से पुलिस के कपडे, बटूक, पट्टा वगैरे झपट लाया था। जिस मौके पर अुस वेषके कारण, अुनके साहसी गूढोद्यमका आरम्भ तो निर्विघ्न रीतिसे पूर्ण हो गया।

दोलकाष्ठ जब कैदसे भाग गया था, तब उसके पकड़ने के सबधमें हुक्म तो जारी हुआ था ही। किंतु जिस पुलिस के भेसके कारण, छद्म वेष में उस अदमान के सरकारी अपनिवेग में वह घूमता रहा था, और ज्योंही आवश्यकता होती त्योंही वह जाकर जावरो की राजधानीमें अपने को छिपा लेता था। सत्तावन के स्वातन्त्र्य युद्ध के वीर वृद्ध आप्पाजी के समीप भी वह इसी छद्म वेषसे नित्य आया जाया करता था। कटककी जब जावरोने आश्रय दिया तब दोलकाष्ठने उसे भी जिस विद्यामें पूर्ण प्रवीण बना दिया था। कटककी वहन कटकी को जेलखाने से छुड़ाने का यह षड्यंत्र दोलकाष्ठने ही रचा था। उसीने कटक के साथ जिस छद्म वेषमें अनसूयाके घर जाकर मुलाकात की थी। कटकने उसके समीप धरोहरके तौरपर जो हजार डेढ़ हजार की रकम रखी हुमी थी वह वापिस ले ली थी और कटकी को जेलखाने में जाकर पकड़ाने के लिये उस षड्यंत्रसे सबध रखनेवाली गुप्तचिठ्ठी अनसूयाके हाथों भिजवायी थी। उस चिठ्ठीमें लिखी विषय-वस्तु के आधारपर ही कटकी निर्भय होकर बागसे निकलकर सड़क पर चली आयी थी। और छद्म वेषमें आये हुअे अपने अने साथियोंके साथ आजन्म कारावास की लौहशृंखला को तोड़ फेंकने का यह प्राणातिक साहस कृत्य किया था।

कटक और दोलकाष्ठ के साथ कटकी जो निकल भागी सो उसे सड़क छोड़कर शीघ्र ही अेक वक्र मार्ग से समुद्र तटपर लाया गया। वहाँ अेक 'डुगी' तय्यार ही थी। वृक्ष की अेक बड़ी भारी जड़ को काटकर उसे मध्य भाग में खोद कर नाव की तरह खोखली बनाकर, नाव का ही आकार देकर, उस अखड्डूममूल का जो अेक टोकरासा वहा के लोग बनाते हैं और जिसकी सहायता से वे लोग अत्यंत द्रुतगति से जलप्रवास करने में निष्णात हो जाते हैं, उस अत्यंत प्राक्कालिक नाव को वहाँ 'डुगी' कहा जाता है। नौका विद्या में मनुष्य द्वारा किया गया वह प्रथम आविष्कार है। जावरे जिस प्रकार की डुगियों में बैठ कर समुद्र में सफर करने में खूब प्रविण होते हैं। उसी प्रकार की अेक डुगी समुद्र के अेक दुर्लक्षित अेक वक्रमार्गोपगम्य तट प्रदेश पर कटकने तय्यार रखी थी। कटकी को लेकर वे पुलिस के भेसवाले दोनो गस्त्रहस्त व्यक्ति डुगी में बैठ गये और डुगी

भी द्रुतगति से समुद्र में प्रविष्ट होने लगी। तटपर रहनेवाले जिन कुछ थोड़े से लोगोंने उस डुगी को उस प्रकार अके तरुणी को लेकर दूर जाते हुअे देखा, अन्हे मले ही वह दृश्य बहुत आश्चर्यकारक प्रतीत हुआ हो किंतु चूकि उस में शस्त्रहस्त पुलिस के आदमी भी बैठे हुअे थे अत किसी प्रकार का शोर शरावा करने का ख्याल अथवा साहस नहीं हुआ। थोड़ी ही देर में डुगी कालेपानी के निर्जनाति निर्जन अवे निविडतम अरण्य के अपकठवर्ती समुद्र-भाग में प्रविष्ट हुअी।

कटक के शरीर से अपना शरीर सटाये हुअे कटकी बैठी थी। उसे कटक की सुगी वहन माननेवाले दोलकाष्ठ को उस में कोअी वैचित्र्य नहीं अनुभव हुआ। परंतु उसकी वह मनोहर तनु लतिका और वह मिलनसारी का हनना, बोलना, वर्तना आदि देख देख कर दोलकाष्ठ को बार बार यह अनुभव हुअे बिना नहीं रहा कि यदि यह युवती मेरे शरीर के साथ भी किसी तरह सटकर बैठे तो कितना मोठा अनुभव होगा।

वह डुगी निर्जन और विघ्न विरहित समुद्र भाग में प्रविष्ट होते ही जलौघपर जैसी जैसी सलील वृत्ति से डोलने लगी, वैसे वैसे ही कटकी का हृदय भी आनदौघपर सलील वृत्ति से डोलने लगा। पीजरे से छूटे हुअे पक्षी को निस्सीम आनद तो होता ही है, पर उस कैदखाने से निकल कर आयी हुअी मालती का आनद उस से भी अधिक निस्सीम था। कारण, पीजरे से छूटकर आया हुआ पक्षी जो वृक्ष दिखायी दे उस पर जा बैठता है, किंतु उस के सगे सबधी तथा मित्र कहलाने वाले अन्य पक्षी उसे खदेडने लगते हैं, उसे असा घोसला ही नहीं मिल पाता जहा वह निर्भय होकर रह सके। पर आजन्म कारावास के बधनो से मुक्त यह पक्षी जिस डुगी में हंस और खिलखिला रहा है, उसे उस के अकेमात्र मित्रने, सबधीने तत्काल अपना लिया है, किशन के प्रणय परिपूर्ण प्रेमव्यवहार में जिस पक्षी को स्नेहमय सगति की मनपसद गर्मी देनेवाला अके मधुर घोसला तत्काल ही मिल गया था। वह पक्षी, वह मालती उस मुक्तता के अल्लास में और किशन की सगति में अितनी तल्लीन हो गयी कि वह उस क्षण के लिअे यह भी भूल गयी कि उसे कभी आजन्म कारावास की सजा हुअी थी तथा उस कारावास की कृत्या अब भी अपने चारो ओर चक्कर मार रही है। अब मैं

कटकी हू, मालती नहीं जिस को भी मूल गयी। खग्रास ग्रहण के समय जिस प्रकार आकाश में शशिकला विलुप्त हो जाती है, उसी प्रकार उस के भीतर की 'मालती' जो विलुप्त ही हो गयी थी, वह 'कटकी' की अनुभूति के उस ग्रहण के छूटते ही पुनः पहले जैसी ही सुंदर सुभग अब सुखद स्वरूप में प्रकट हो गयी। उस आनंद के आवेग में मालती मालती ही की भांति पुनरपि हसने, रूठने, डोलने और बोलने लगी। किशन भी उसे पुनः किशन ही सा अनुभूत होने लगा। वह 'डुगी' उस समुद्र के सलील तरंगों पर ऊँची नीची होती हुई थोड़ी सी जब एक ओर को झुक जाती तब अपने को समालना कठिन हो गया है। ऐसा प्रणय मधुर वहाना कर के मालती किशन के वक्षःस्थल अपना भार डालकर गिर पड़ती, किशन उसे अपनी भुजाओं से समालकर घरते समय आलिंगन कर के पकड़ता। ऐसे स्वच्छंदता के सौख्य का आस्वाद करते करते उस का नशा ही चढ़ता गया। उस नशे में अपने चारों ओर अद्यापि विद्यमान छद्मता के आवरण को मालती ने दूर हटा दिया और असावधान अवस्था में बोल गयी,

“किशन ! देख, देख, उस छोटीसी लहर के ऊपर सूर्यकी साध्यकिरण के पड़तेही गुलाबके फूलोंसे बने हार की भांति वह लहर कैसी सुहाने लगी है देख ! समुद्रके रगविरगी गुलाबोका हार कैसा रहता है, यह दिखाने के लिये यह छोटीसी पुष्पमण्डित लहर ऐसी की ऐसी मुठाकर अदमान के एक आश्चर्य के रूपमें यादगार के लिये माको ले जाकर दिखायी जाय ऐसा मुझे लगता है ! ओ किशन —”

वह आगे कुछ बोलना चाहती थी की अंतर्नेही में किशनने उसकी चिन्ची अगुली उसे सावधान करने के खयाल से दवायी। वह भी थोड़ीसे सकपका गयी। कारण, दो बार उसने किशनको 'किशन' कह कर ही संबोधन किया था। अतःवता दोलकाष्ठ के मन में सहजही जिज्ञासा उत्पन्न हुई और वह पूछने लगा

“क्या ? किशन ! अर्थात् कटक बाबू का घरका असली नाम किशन था मालूम पड़ता है ! और तुम्हारी मा है अभी ? कहा रहती है वे ? कटक बाबू का असली जैसे किशन है, वैसेही तुम्हारा नाम भी कटकी न होकर कुछ और

ही होगा । सचमुच तुम्हारे जैसे पुष्प पक्षी के लिये किसी फूल किंवा पक्षीक ही सुंदर नाम होना चाहिये ।”

दोलकाष्ठ अपने मुँहफट स्वभाव के अनुसार जो अच्छा लगा वह बुद्ध रूपसे बोल गया । किशन मन ही मन सकपकाया ! अपने अज्ञातवासके छद्म स्वरूपको अतार फेंकने योग्य अवस्था अभी आ पहुँची हो मितने कुछ वे अभी सकट के चंगुल से मुक्त नहीं हुए हैं, इस बात को वह अच्छी तरह जानता था । विनोदके खुभे हुए काटेको विनोदहीके काटेसे बाहर निकालने के लिये किशन हसा ।

“ देखिये, नाम ही की बात करनी हो तो आपका भी यह ‘दोलकाष्ठ’ नाम पलने ही में रखा गया होगा, और जब मैंने आपसे नाम तथा पूर्ववृत्त पूछा था, तब याद कीजिये, आपने मुझे कौनसा सूत्र सिखाया था । ‘कालेपानी’ पर से जिन्हे सफलतापूर्वक भागना हो अर्हें अपना पूर्ववृत्त बताना तथा प्राणों की भीति भिन दो वस्तुओं का त्याग कर देना चाहिये ।’ ठीक है तब । उसी उपदेशके अनुसार हम भाभी वहन अपना सच्चा नाम तबतक नहीं बताएँगे, जबतक आप अपने इस कृतक नाम दोलकाष्ठ का परित्याग नहीं कर देते ।”

“ अर्थात् आप दोनोंके असली नाम तो ये नहीं हैं, अतना तो आपके बोलने से पता चलता ही है, और आपका नाम तो ‘किशन’ ही — ”

इस सारे झमेलेको यही समाप्त कर डालने के हेतुसे मालती बीच ही में बोल बूठी,

“ देखिये, मैं हूँ न, मैं आनदातिरेकसे थोड़ी विक्षिप्तसी हो बूठी हूँ अपने वचन के अंक सवधीका नाम मेरी जवानपर चढ़ा हुआ है, वही जिस समय मेरे मुँहमे निकल पड़ा अपने कटक भय्या को सवोवन करते समय !”

परंतु जिस भूल की अनुभूति के साथ ही उसके ध्यान में अत्यंत अनिच्छापूर्वक यह भी आया कि, यह जो छुटकारे का अपरपार आनंद अपने को हुआ है वह भी भूल ही है, यह छुटकारा क्या है, छुटकारे के लिये किये जानेवाले प्रयत्न का फलोन्मुख आरम्भ है, अंतिम सफलता नहीं है । वह किंचित् सी विमनस्क होकर बैठ गयी ।

अस गभीर समुद्र पर पक्षों की भाति बुडती, बैठती, चलनेवाली वह

डुगी, वह जलवीचि, वे रगबिरगी किरणें, और कारागृहसे छूट आनेकी अनुमादक अनुभूति आदि ही में वह मग्न थी, पर अब वह आनंद की नौका जिसपर तरंगे लेती हुयी चल रही थी वह समुद्र कितना गहरा है मिस ओर भी उसका ध्यान गया !

“ कितना गहरा है रे यह समुद्र, और कितनी छोटी है यह अपनी डुगी । ” समुद्रकी भीषण गहराभी की ओर ध्यान देती हुयी विमनस्क मालती किशन से बोली ।

“ नि सदेह, पर ऐसी छोटी नौकाओं जैसे महागभीर समुद्रों को भी तैरकर परली ओर जा सकती हैं न ! ” किशनने उसकी मानसिक स्थिति के लिये योग्य प्रोत्साहनभरा उत्तर दिया ।

“ किती गोड बोलतोस रे तू ” लाड भरे हाथोंसे किशन की पीठ पर हल्कीसी थपकी देते हुये मालती मराठी में बोल गयी । उसे लगा कि, दोलकाष्ठ को मराठी नहीं आती होगी । कारण, अबतक वे सारे उसी हिंदी में बातचीत कर रहे थे, जिसमें सारे अदमानी बातचीत किया करते है ।

“ पण माझ्या पाठीवर तुम्ही तसच लडिवाळपण थोपटून विचारल न, तर मी पण तसच गोड बोलेन की । ” दोलकाष्ठ अपने सैनिक बाने के योग्य अजड्ड विनोद से मराठी भाषा ही में बोला । अितना ही नहीं तो कपट शून्य घनिष्ठता के कारण मालतीके पीठपर उसने स्वयंभी अेक हल्की सी थपकी मारी ।

मालती चौंक कर बोली, “ अयँ, आपको भी मराठी आती है ? आपका मूलका घर महाराष्ट्र ही में है क्या ? ”

“ हा, किसीसे उसका पूर्व वृत्तात पूछना ठीक नहीं मिस तरह ! जो कोभी अपने आपही जितना कुछ बतला दे अुतना सुन लेना ही ठीक है । कटकवाबू का और हमारा यह प्रस्ताव पहले ही स्थिर हो चुका है । ”

दोलकाष्ठ यह बोल ही रहा था कि अितने में पार्श्ववर्ती सिंधु तट की ओरके पहाड पर ‘अू S S !’ ऐसी किलकारियाँ और तालियाँ सुनायी दी । पहले ही स्थिरीकृत निश्चयके अनुसार ज्वार भाटे की दृष्टिसे जहा सुरक्षित स्थल होगा वहा अुतरवा लेने के लिये जावरे उस बाजू में आकर मिस प्रकार का सकेत करनेवाले थे । तदनुसार वे जावरें घनुष-

वाणसे सज्ज होकर अेक ओटवाले अुतारके समीप आये हुअे थे । वहा अुस डुगी के आते ही अुन्होने कटकी सहित सबको अुतरवा लिया । सघन अरण्य में से होकर अनेक मोड पार करते हुअे, अघेरा होने से पूर्वही सारे लोग राजा नानकोवी की अुस अरण्यक राजधानी में आ पहुचे ।

जावरे लोग अेक बडी सी आग जलाकर अुस समय अुसके चारो तरफ बैठे हुअे थे । अुस आगपर अेक अरण्य शूकर का पूरा घड का घड अुलटा टाग रखा था । अुनका जब समिलित ठिकार होता है, अुस समय अुस प्राणी को अिस प्रकार आग पर टागे रखते है, और जब वह खूब धूआ खा लेता है, भुन जाता है, तब अुसे वहा से निकाल कर अुसके अुस अध कच्चे मास के टुकडे सब लोगो में तकसीम कर दिये जाते है । वह जेवनार खत्म हुअी कि अुस आग के चारो तरफ वे सारे स्त्रीपुरुष मिलजुलकर तथा नग्नावम्या में अपना नृत्य आरम्भ कर देते है । अिस किस्म की आगें कभी कभी तीन तीन, चार चार जगहो पर भी जलायी जाती है और अुनके चारो तरफ जेवनार की तथा नाचकी भी भिन्न भिन्न तीन चार पक्तियाँ लग जाती है । अिन तीनों अभ्यागतो के प्राणातिक साहस कृत्य में अिस प्रकार सफल होकर वापिस आ जाने के कारण अुनके अिस नियमित कार्यक्रम में अेक भिन्न ही रग भर गया । वे सारे के सारे अुन तीनों के चारो ओर भिनभिनाते हुअे से जमा हो गये ।

अिस में भी जिसका देखो, अुसका ध्यान कटकी पर । राजा नानकोवी को अिस साहसपूर्ण गूढ अभिसधिका परित्तान था ही । अुसके विचारसे ही कटक और दोलकाष्ठ कटकी को छुडा लाने के लिये गये थे । अग्नेजो के अुस कडे पहारे में से कटकी को अिस तरह अुठा लाने से तो अग्नेजो ही का अवमान हुआ और वह भी अपने जावरो के साहाय्य से अेवच जावरो के आश्रित व्यक्तियो के हाथो ।—अिस प्रकार नानकोवी को अपना ही गौरव अनुभूत हुआ । अुस विजय की मूर्तिमत पताका ही बनी हुअी थी वह कटकी । अत अुसे देख देखकर भी अुसका जी अघाता नहीं था । पर अुन सब में जावरो की स्थियो और वच्चोकी गडबड का तो कुछ न पूछिये । आगकी अुस प्रज्वलित ज्वाला के प्रकाश में वे अुसे अपनेपनसे देखती हुअी, हंसती हुअी, अुगलियोके अिगारे करती हुअी,

भीड़ लगाकर खड़ी रही। पर उसकी अपेक्षा भी यदि किसी वस्तुकी ओर विशेष रूपसे देखने की अनुकी विच्छा होती थी तो वह भी उसकी साड़ी।

मालती की ओर वे जावरों की विवस्त्र स्त्रियाँ निरंतर अिशारे करने लगी, “यह क्या है ? उस स्त्रीने अपने शरीर के चारों तरफ यह क्या अमर्र लपेट रखा है ? यो देखने में वह कितनी सुंदर दीखती है ! तब शरमा सकुचा कर अपने को कपड़ों में छिपाती काहे को है ? क्या पहना हुआ है जी, उसने ? ” ऐसे नाना प्रकारके प्रश्न वे आपस में पूछ रही थी।

दोलकाष्ठ ने उनमें से एक स्त्री को जवाब दिया, “वह साड़ी है साड़ी ! लुगरा कहने हैं उसे।”

यह सुनते ही वे सारी औरते मँहपर हाथ रखकर अकदम खिलखिला पड़ी और नाक सिकोड़ कर बोली, “छी, औरते भी कभी क्या लुगरा पहना करती है ? कुछ मर्यादा !”

विवस्त्र रहनेवाली उन स्त्रियों को स्त्री का वस्त्र पहनना जिस प्रकार स्त्रीत्व के लिये अशोभा उत्पन्न करनेवाली एक अमर्यादा प्रतीत हुमी, उसकी अपेक्षा भी सौगुना अधिक उन जावरा स्त्रियों को अपाद मस्तक नगी तथा नि सकोच भावसे पुरुषों में उसी तरह अुठती बैठती देखकर मालती को भी हरदर्जे की शरम महसूस हुमी। उसने एक दो बार तो अपनी आँखें ही बंद कर लीं। तत्पश्चात् नीचे की ओर देखती हुमी खड़ी रही।

राजा नानकोवी के सामने भी एक सवाल सा खड़ा हो गया। उसकी रानी फुली ने आग्रह किया कि, “कटकी जबतक अपने यहाँ है, तब तक उसे साड़ी नहीं पहननी चाहिये। उसके इस अुदाहरण को देखकर अपनी लड़कियोंको भी यह अश्लील आदत पड जायगी !”

कटकी पर अुन्हें तरस आता था। उसकी यातनाओं को सुनकर और उसकी ओर देखकर सब स्त्रियों को अपना भी अनुभव होता था। पर वस्त्र धारण करने की इस अश्लीलता से मात्र अुन्हें नफरत महसूस होती थी। अतमें रानी फुलीने कटकी की साड़ीके आँचल को थोड़ासा झटका देकर ममतापूर्वक सकेतित किया, “छोड़ दे यह साड़ी और स्त्री को सुहानेवाली विवस्त्रतापूर्वक रहने का शिष्टजनोचित आचरण का पालन कर !” पर

झटके से अतरे हुअे आँचल को फिरसे यथा स्थान रखकर मालती ने असे और भी मजबूती से पकड लिया ।

अब मामला कही हदमे बाहर न चला जाय, अिस डर से दोलकाष्ठ बीचमें पडा और सब बातों को हसीपर अुडाकर अिस बात का आश्वासन दिया कि, “ कटकी की कपडे पहनने की जनम की बुरी आदत हैं ! अेकदम अुसमें सुवार कैसे होगा ? दो चार दिनमें सभ्य स्त्रियोंकी तरह विवस्त्र रहने की आदत अुसे भी हर हालत में पड जायगी । तब तक शिष्टाचार के विषय में अुसपर सक्ती न की जाय । केवल पहनने के प्रकरण ही में नही अपितु खाने, गाने, नाचने आदिके प्रकरण में भी । ”

सबकी आँखें भर आयीं : : : २१

“ छोड, छोड, छोड बाण ! निकल भागा देख वह बराह अुस झाडी में से । ”

किशनके अिन शब्दों के साथ ही वृक्षपर चढकर बैठी हुअी मालतीके धनुषसे सनसनाते हुअे बाणपर बाण छूटने लगे । वह अरण्य बराह अिस झाडी में डुबका बैठा था, अुसके पीछेसे जाकर किशन अेक लबा भाला लिये अुसे ढूढकर खदेडनेकी कोशिश कर रहा था । अुस तकलीफसे परशान होकर अतमें वह बराह अिस झाडीमें था, अुससे बाहर निकला और वेगसे दौडता हुआ आगे जा घुसा । अुसकी अुसी स्थानपर प्रतीक्षा करती हुअी मालती अेक वृक्षपर धनुष्य बाण तय्यार करके बैठी हुअी थी । जावरोंके जगलमें रहते हुअे जावरा स्त्रियाँ अिस तरह अपने पुरुषोंके साथ शिकारके लिये जाती हैं, अुस तरह वह भी प्रतिदिन किशनके साथ शिकारके लिये जाने लग गयी थी । और तीन चार महीने के अुस वन-निवास काल में धनुष्य बाणके प्रयोग और शिकारके साहस भरे काममें जावरा स्त्रियोंकी भाति ही वह भी, अब प्रवीण हो चली थी । आज बराहकी मृगया भी अपने आपही करनेका आग्रह अुसने किया था अिसका पहला पाठ किशन अुसे दे रहा था । बराहको खोजता खदेडता बाणोंकी प्रहार-भूमि में, पेडपर चढकर

मालती जहा अुसकी टोहमें बैठी हुमी थी अुस दिशामें, अुसे लाकर छोडनेका काम किशनकी तरफ था । अुसने अुसे बहुत अच्छी तरह पूरा किया । और वह वराह ज्योही बाहर निकला त्योही मालतीने अुसपर शरवृष्टि करनी शुरू कर दी ।

अुसके पहले दो बाण अुस बलिष्ठ वराह को तृण-शरो (कुशल्य) की भांति ही चुभे, अुनकी पर्वाह न करता हुआ वह पशु अुसी प्रकार दौडता रहा । अितनेमें मालतीने अपने भीतर की सारी शक्ति लगाकर अेक आखिरी बाण छोडा जो सीधा जाकर अुसकी कोखही में जा घसा । थोडा सा लडखडाता हुआ वह वराह ज्योही कुछ और आगे बढ़ा त्यो ही घडाम से जमीन पर गिर पडा ।

यह देखतेही मालती पेड परसे नीचे अुतरी, दौडते हुअे आनेवाले किशनको अुसने बीचही में ठहरा दिया और अपने शौर्य की प्रशंसा अुसके द्वारा अधिकारपूर्वक प्राप्त करनेकी अिच्छा से बोली,

“क्यो आज की है या नही मृगया मैंने प्राणोपर आ बीतनेवाली ?”

“वृक्षपर बैठकर तो की है ।” किशन हसा । “जिसने पैदल पीछा करके हिंस्र प्राणीको लाकर तेरे सामने खडा कर दिया, प्राणोपर आ बीतनेवाला काम तो अुसने किया है । केवल सुरक्षित रूपसे वृक्षपर बैठने का काम ही तूने किया है ।”

“प्रत्येक रानी मृगया करते समय अपने साथ खदेडने वाला आदमी तो रखती ही है । तू अेक अच्छा खदेडने वाला आदमी है, अितना कह ले तेरी मर्जी हो तो । पर जिसका बाण, शिकार तो अुसीका है । अिस वराह की कोखमें घुसा हुआ बाण मेरा है, अत शिकार भी मेरा ही हुआ ।”

“कोओ पर्वाह नही, वह पूरा का पूरा जगली सूअर तू अकेली ही खा डाल, हो गया न । और मैं तो अब शाकाहारी ही होनेवाला हू । जिसे जगली सूअरके गुण अभीष्ट हो वह सूअर खाय ? मैं केले आलू—”

“ठीक बिलकुल ठीक । जिसे अपनी खोपडी में आलू ही आलू भरने हो वह खाय आलू ।” मालतीने अुसे बीच ही में टोका ।

“अितने में ‘अू ऽ ऽ अू ऽ ऽ’करके जावरोकी हांक मारने की किलकारी

सुनायी दी। मुड़कर देखा तो अक जावरा, जो किशनके हाथ के नीचे काम करता था, दौड़ा दौड़ा आता हुआ दिखायी दिया। आते ही अुसने रोनेकी सी आवाज निकालकर, आँखें पोछकर अक दो शब्द बोलकर, जो सदेश पहुँचाया अुसका सपूर्ण वाक्य यो बनता—

“बाबूजी! चलिये चलिये, आपको राजा नानकोबी रोने के वास्ते बुला रहा है।”

अुसके अुस भावार्थको समझ कर किशनने मालती को शब्दोंमें बतलाया,
“सुना? नानकोबी, मुझे रोने के वास्ते बुला रहा है!”

“छी, जिसका क्या मतलब? तुझे रोने के लिये बुला रहा है जिसके क्या मानी है? अुसे रोना हो तो वह रोये जी भरकर!”

“अरी, मगर अुसके अकेले के रोनेसे काम कैसे बनेगा? अुसके सबधियों में से जो अक जावरा कल तक मृगीसे बीमार पड़ा था न, वह मर गया है। अुसके पीछे बचे हुअे लोग जितनी अधिक सख्यामें अिकठ्ठे होकर जोर जोरसे रोयेंगे अुतना ही अुस मृत व्यक्तिका आत्मा,—अुसका भूत—सतुष्ट होगा, अन्यथा वह जीवित सगे सबधियों को कष्ट देता रहेगा, अैसी अिन लोगोंकी धारणा हुआ करती है। अत कोअी मर गया तो वे सबको ‘रोने के लिये चलिये’ कहकर आमत्रण देते हैं। हसती क्या हो, अपनो में भी तो पहले अैसी ही धारणा थी। आज भी हमारी अनेक जातियों में दाम देकर लोगोंको रोने लगाया जाता ही है न?

मोल देके रोदनार्थ लोगोंको लगाया है।

अश्रु है न, पीर है न, मोह है न माया है ॥

क्रिश्चियन—मुसलमानोंमें भी मुर्दों को गाडकर, वे फिर अुठेंगे अिस खयाल से अुन्हे जतन करके रखना चाहिये अैसी जो धार्मिक धारणा है, वह भी जावरोकी अिस परलोक विद्याका ही सबक लेती रही है, नहीं क्या? जावरे तो मृतव्यक्ति सिर्फ रोना ही पर्याप्त समझते हैं, पर पहले मिश्रसे लेकर जापान तक के अनेक राष्ट्र अैसा मानते थे न कि, अक आदमी मर गया तो अुसका साथ देने के लिये अुसके जीवित सगे सबधी भी अपने आपको गाड ले और पर लोक पहुँचे। मरे हुअो की जीवित स्त्रियाँ, नौकर, दासदासी वगैरह को भी अुन्ही की कब्रमें गाड दिया करते

थे । अच्छा—” अुस जावरे की तरफ मुडकर किशन बोला, “जा, और नानकोवीसे जाकर कह कि हम रनेके लिअे अभी आते है । पर ठहर, यह देख, अिस वराह को भी पीठपर डालकर ले जा और राजा नानकोवीसे यह कहना कि, यह हमारी तरफ से अुसे अेक नजराना है ।”

जावरे ने अपने अेक खास तरीके से अुस वराह को बाधा, और अुस ढेरको पीठपर डाल कर वहा से चला गया ।

“कितनी थक गयी हो तुम ।” किशनने मालती की ओर प्रेम भरी दृष्टि से देखा और अुसका अेक हाथ अपने हाथ में लेते हुअे कहा, “मालती शिकार की धुन में सवेरे दौडघूप करती हुअी तुम कितनी पसीना पसीना हो गयी हो, और थकी हुअी दिखायी देती हो । ये देखो पसीने के स्वच्छ और शुभ्र बिंदु मोती की भाति तुम्हारे माथे को और यह लाली तुम्हारे गालो को किस तरह सुंदर बना रही है । आओ, बैठो कुछ देर मेरे पास, थोड़ीसी सुस्ता लो और तब हम चले जावरो की ओर ।” अुसके बालो तथा गालोपर से हाथ फेरता हुआ किशन अेक कुर्सीनुमा चट्टानपर नीचे पैर लटका कर बैठ गया और अपने हाथमें पकडे हुअे अुसके बायें हाथ को अेक प्रणयपूर्ण झटका देकर मालती को और अधिक अपनी ओर खींच लिया ।

मालती को यही वहाना अभीष्ट था । वही मिल गया । अुसकी मुखमुद्रा खिल उठी । वह चुपके से किशन की गोदमें जा बैठी । अपना दहिना हाथ अुसके गले में डाल, अुसके पैरोपर अपने भी पैर लटकाये मालतीने मुखमडल किशन के विशाल वक्ष स्थल पर रख दिया । आँखें मूद ली मदमद श्वासोच्छ्वास लेती हुअी वह विश्राम करने लगी ।

मालती के भाललवी चूर्ण कुतल हवा से भुराभुरा रहे थे । अुन्हे हाथ से सवारते हुअे बीच बीचमें अुसके गालो को थपथपाते हुअे अेक क्षणमें अुसकी ओर प्रेम भरी निगाहसे देखता हुआ, दूसरे क्षण अपने आनत मस्तकको अुसके मस्तक पर टेकता हुआ अपनी आँखें मूदता हुआ किशन भी अपनी प्रियतमा के गाढ आर्लगन के सुखास्वाद में निमग्न हो गया ।

तादृश तल्लीनता में जब अुनके कुछ क्षण व्यतीत हुअे तब मालती

ने अपने लोचन अन्मीलित किये और किशन के वक्ष स्थलपर पड़े पड़े ही उसने अपना मुखमडल किशन के मुखके समीप पहुँचा दिया।

उसकी मूक विनति ही किशन की अभ्यर्थना थी। उसने मालतीके ऊपर अुठाये हुअे मुखका चुवन ले लिया। मालती ने फिर अपना सिर किशनके वक्ष स्थलपर टेक कर आँखें बंद कर ली।

उसकी वह मधुर तद्रा जब थोड़ीसी पूरी हुअी तब वह किशन की गोदहीमें अुठकर सीधी बैठ गयी। उस तद्रा में जिस विषयका ताता उसके मन में बध रहा था। वह मानो किशन को भी सुनाअी देख रहा हो अिस खयालसे, अुसी प्रकार अुसी विषय को चालू रखते मालती ने लाडभरे कठसे पुछा,

“ सच है, तुझे भी अिस प्रकार प्रतीत होता है न ? ”

“ अिस प्रकार ? मधुर न, प्रतीत होता है न। तेरे अीदृश प्रेमपूर्व अलिंगन में मालती यदि अविक्षति रूपसे मृत्यु भी आ जाय तो वह भी मधुर ही प्रतीत होगी। तब जीवन के बारे में क्या पूछती है। ”

“ तब बताअू मैं, तुझसे क्या पूछ रही थी ? सारे आयुष्य भर, अपने अपने हाथो किसी भी प्रकारका आततायित्व का अपराध न होनेपर भी निरंतरअेक के बाद दूसरी दुर्गति को सहन करते करते मुझे जो यह तेरी सगतिका अमूल्य प्रणय—प्रेमल सुख मिल गया है अुसे अिससे भी अधिक सुख कि लालसा से खतरे में डालने का साहस अब मुझ से नहीं होता। सचमुच किशन मैं कहती हूँ अब यहा से भागकर पुन अपने देशकी ओर जाने की अिच्छा से जान खतरे में क्यों डाली जाय ? भरे समुद्र को अेक छोटीसी नावसे पार करना, प्रबल शत्रुअेके सरकारी पहरे समुद्रपर और भूमिपर हमेशा में ताकमें बैठे हुअे, अुनकी आँख बचा कर देशमें जानेकी आशा रखना यह सब अब पागलपनसा नहीं प्रतीत होता ? यदि मनुष्यता पूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिये कोअी अन्य अुपाय ही न होता तो अुस समय साहम करना आवश्यक होता। पर अब यहाँ तेरी सगती में स्वच्छदता या जब हम अिस प्रकार से अपना जीवन व्यतीत कर हो सकते हैं तो फिर यही अिन जावरो के आश्रय में अिस अरण्य में अिसी प्रकार आनंद से क्यों न रहे जन्मभर ?

“ जिस गुहामें हम दोनों आज कल रहते हैं न, वह गुहा मुझे तो सुखका साक्षात् गोकुल प्रतीत होता है । कोभी भी रानी, अपने हीरे मानिकोंसे तथा गदेलोंसे सजे हुअे अपने स्मृतिमंदिर में मुझ से अधिक सुखी नहीं होगी ! किशन, राजमहालो में भी राजा रानी आत्महत्या किया ही करते हैं न ? मेरी मा हमेशा मुझसे कहा करती थी कि जरूरत से ज्यादा सामान का रहना और न रहना समान ही है । सुख केवल सामानमें नहीं रहता मानसिक सतोष में रहता है । वह कहा करती कि यदि पचास भी अपने घर रहे थी तो सोना तो अतनेही स्थल पर पड़ेगा जितनी अपने शरीरकी लवामी चौडामी है । हड्डियाँ बहुत होनेपर भी अपनी शरीर को बढ़ाया नहीं जा सकता । उसी प्रकार जलेबीके सामने ढेर के ढेर क्यों न पड़े हो । आदमी तो अतना ही खा पायेगा जितना उसके अगुश्त भर पेट में समा सकेगा । अतः कहती हू कि अब अधिक सुख देश में जाकर भी कौनसा मिलनेवाला है जिसके लिये अक्षरशः सकटके समुद्र में फिरसे हम विस प्रकार छलांग मारे ? मुझे तो यहा कुछ भी कम नहीं प्रतीत होता । किशन मैं जो तुझसे विस तरह आलिंगन किये हू, कही भी रहू, आलिंगन का सुख तो वितना ही रहेगा ! विस वनमें प्यास लगने पर स्वच्छ पानी पियें तो वह जितना मधुर लगेगा विलकुल अतना ही मधुर वह सिंधु नदीके तीरपर जाकर प्यास बुझानेपर लगेगा । सुख तो वैसाही और अतना ही रहेगा ।

“ सवेरे विस प्रकार शिकार खेलते हुअे समुद्र के किनारे अथवा अरण्य-वन में स्वेच्छा पूर्वक सचार करे, थकावट आयी कि तेरे वक्ष स्थल पर विस प्रकार आकर अपनी थकावट दूर करे, विस तरह अपने शरीर पर हाथ फिरवा ले, फिर गुहा की ओर जा, जोर की भूख का मास, मत्स्य, फल, कंद आदि द्वारा यथेच्छ परिहार करे, दो पहरको समुद्र के किनारे, रेतीले मैदान में जावरा स्त्रियो के खेल खेलते हुअे, गाने गाते हुअे, नाना रगरूप के शख-सीपी आदियो को ढूँढते हुअे वनश्री के और जलश्री के चमत्कार देखें, और दिनभर अतस्ततः स्वच्छद अड अडकर थके हुअे पक्षियो के जोड़े अपने अपने घोंसलो की ओर लौटने लगे कि, उसी प्रकार तेरे हाथ में अपना हाथ डाले अपनी उस गुहारूप गोकुल की ओर वापस जायें

और अेक दूसरे से चिपट कर सोयें ।। मन के मपैने ही से जिसे मापा जा सकता है वह प्रियसगति का सुख जिस गुहागत अपनी रतिशय्यापर जितना समाधान पहुँचाता है, गोकुल में चले जायें तो भी वह अुतना ही पहुँचायेगा । तब यहा से भाग कर आगे जाने के प्रयत्न में प्राणग्राही नवीन नवीन सकटो को क्यो तू जवर्दस्ती मोल लेना चाहता है ? चल हम यही जन्मभर बने रहे । मेरे सुखसमाधान के पलग के लिअे वह गुहा पूर्णतया पर्याप्त है ।”

“ पर वह गुहा पलग के लिअे पर्याप्त रही थी तो भी पालने के लिअे पूरी पडेगी क्या ? कल पालना बाधने का समय आ पहुँचा तो ?” किशनने अुसे गुदगुदी की ।

“ चुप, बाष्कल कही का । ” मालतीने अेक हलकी सी चपत किशन के गालोपर जडा दी और खिलखिला कर हँस पडी । “ मैं जो कुछ कहती हूँ, अुसे मजाक मत समझ । ”

“ नही, प्रिये, मैं मजाक नही समझ रहा हूँ । पर तू यह प्रश्न करते हुअे कि, फिरसे समुद्रपार भाग जाने का प्राणसकट काहे को मोल ले, जिस बात को भुला बैठी कि, पुराने सकट अभी अपने चारों ओर पूर्ववत् चक्कर मार रहे हैं । मैं भाग ही गया हूँ, यह निश्चित रूप से भले ही सरकारी अविकारियो को मालूम न पडा हो, वे कदाचित् अभी तक यह भी सोचते होंगे कि जावरो की मुठभेड में मैं मारा जा चुका हूँ, तथापि तुझे तो दिन दहाडे भगा कर ले जाया गया है, जिस में कोअी शका ही नही है अुन्हे । तुझे तथा तुझे भगाकर ले जानेवालो को जो पकडवा देगा, अुस के लिअे हजार हजार रुपयो के पुरस्कार दिये जावेगे जिस आशय के विज्ञापन सर्वत्र लगे हुअे हैं । जोर शोर से खोज की जार ही है । अुन के गुप्तचरो को और नौकाओ को यदि हमारे यहा के निवास का पता मालूम पड गया तो ? किंवा जिन सैकडो जावरो में से ही अेकाध आदमी को अग्रेजोने अपनी ओर मिला लिया तो ? अैसे अुदाहरण क्वचित् मिलते भी हैं । अैसी यदि स्थिति अुत्पन्न हो गयी, तो अपने ही हाथो अपनी जान ले लेना, अुस कैद की भयकर यातनाओ में फिर से जा पडने की अपेक्षा अच्छा नही लगेगा क्या ?

अस सकट की अपेक्षा, समुद्रपार होने का साहस कार्य हर हालत में कम खतरे का है। पुनश्च, यहाँ पशु पक्षियों के जोड़ों की तरह जीवित रहे भी तो पशुपक्षी बनकर रह पायेंगे, मनुष्य बनकर नहीं। स्वदेश की स्व-राष्ट्र की तथा मनुष्य समाज की कुछ भी सेवा, कुछ भी देशकार्य यदि अपने हाथों न होता हो तो उसे मनुष्य जीवन में मनुष्यता रही कहा? और प्रिये तेरी कुक्षि को यथाकाल धन्य करनेवाले अस नन्हे से देवदूत को अिन जावरो और अिन अरण्य शूकरो की सस्कृति की दीक्षा देनी होगी क्या? अतः हमें अपने देश तो जाना ही चाहिये। समुद्र को लाघना ही चाहिये। दूसरी बात यह भी है कि, जब से हम कालेपानी के कंदस्वानेसे भागकर आये हैं तब से तो गत तीन चार महीनो तक देव भी हमारे लिये अनुकूल हो बना रहा है। अस नराधम रफिअद्दीन का बदला जिस दोलकाष्ठ के पराक्रम से अनायासही चुका लिया गया, जिस से जिस स्थानपर भी तेरे रास्ते में आकर खड़ी होनेवाली रुकावट दूर हो गयी।

अस प्रच्छन्न शत्रुसे जिस किस्म की मदद लेने के विचारसे हमने उसे अपने नजदीक रखा था, अस समुद्रतरण के कार्य में सहायता करने वाला अेक प्राणोपम मित्र भी अस दोलकाष्ठ के रूप में हमें मिल गया। नाविक विद्या में वह प्रवीण और, साहसी है। गत तीन चार महीनो के अस के व्यवहार से अस के स्नेह की परख भी अच्छी तरह हो ही गयी है! असने अेक सुंदर नाव भी कितने परिश्रम से सर्व सामग्री युक्त बनाकर तय्यार रखी है। अब अनुकूल हवा की ही अुतनी प्रतीक्षा है। वे हवाअे बहने लगी कि हम तीनों समुद्र में अस नाव को छोड़कर अपने देश की ओर चल ही पड़ेंगे।

“ पर अस दोलकाष्ठ के मनमें, मेरे सवध में जो अेक दुराशा अुत्पन्न हो गयी है, मैं उसकी पत्नी बन जाऊँ वही जो अेक अभिलाषा असके मनमें सचारित हुयी है, अुमका दुष्परिणाम आज नहीं तो कल शत्रुत्व में परिणत नहीं होगा क्या? ”

“ सहसा वैसा नहीं होगा। कारण उसे तेरी अभिलाषा है भी तो वह अस नराधम रफिअद्दीन की अभिलाषा की तरह राक्षसी स्वरूप की

नहीं है। आजतक तो उसका स्वरूप सात्विक ही है। हमने जो अपना भाभी वहनका नाता आजतक जोड़ रखा है, उसीको वह सच्चा मान रहा है और केवल इसी लिए वह तुझ जैसी कुमारिका को अपनी पत्नी बनाने की विच्छा प्रदर्शित कर रहा है। वह तुझे अभीतक कुमारिका समझता है। उसे जब अपना सच्चा वृत्तांत और सच्चा नाता बतलाने का समय आयेगा—”

“तब फिर बता क्यों नहीं देता सारी बातें ? सचमुच किशन, मुझे भी अब तुझे ऊपरी तौरसे क्यों न हो, ‘भय्या’ कहने में शरम महसूस होती है।”

“सो क्यों ?” किशनने उसके चुटीसी काटी और हँसा।

“छी, क्यों की क्या पूछता है ? अपने प्रियतम को भी कोभी भाभी कहा करता है ? जावरो में भी भाभी वहन की शादी को कोई मनुष्यता की रीति नहीं समझता।”

जावरो में नहीं समझते होंगे, पर मनुष्य समाज में वहिन की भाभी की शादिया कभी हुयी ही नहीं, ऐसा मत समझ ! मनुष्य समाजने सब तरह के विवाहो को ही नहीं, अपितु स्वच्छद सभोगो को भी जिन जिन परिस्थितियों में वे विष्ट अथवा अपरिहार्य प्रतीत होंगे, उन उन परिस्थितियों में धर्म्य माना हुआ है। प्रत्यक्ष गौतम बुद्ध का जन्म जिस कुल में हुआ उसी कुलकी कथा ग्रन्थांतर में यो लिखी हुयी है कि सूर्य कुलके एक राजकुमारको और उसकी वहिन को सकटावस्था के कारण एक निर्जंत अरण्य में जन्म व्यतीत करना पड़ा। तब उन भाभी वहनो ने आपसही में विवाह किया और उनकी सति के मुदर से ही आगे चलकर अनेक पीढियों के पश्चात् बुद्ध सदृश महात्मा उत्पन्न हुआ।

“राजकुलका रक्नबीज दैवी। उसका मनुष्यो से सवध नहीं होना चाहिये ऐसी अनुवशिकता की अतिरेक युक्त शुद्धता की रक्षा के लिये ब्रह्मदेशके, मेक्सिको के, और अनेक स्थानो के प्रख्यात “दैवी” राजवशो में राजपुत्रका विवाह उसकी सगी वहन ही से होना चाहिये ऐसी ‘वर्माज्ञा’ थी, शिष्टजन समत प्रथा ही थी। जिन समाजो को उस धर्मसे दुष्परिणाम होते हैं ऐसा अनुभव हुआ, उन्हो ने उसी को अधर्म सावित किया। आज भी हिंदू-मुसलमान क्रिश्चनदिक समाजो में कही ममेगी वहन

तो कही मौसेरी वहन, प्रत्यक्ष सगी चचेरी वहन से भी विवाह करना अधर्म नहीं माना जाता । तब हम तो केवल प्राणोपर आये हुअे सकटो के परिहारार्थ ही इस भाभी वहन के नाते का वहाना बनाये हुअे हैं ”

“ सच सच बता, कल वह क्या कह रहा था तुझसे । मेरी ओर अतना अधिक हँसते हँसते अगली का अशारा करते हुअे ? ”

“ अरी, वह दोलकाष्ठ सचमुच अेक सैनिक की तबीयत का खुले दिलका मनुष्य है । छक्के पजे असे मालूम ही नहीं हैं । ज्यो ही वह नाव कल तय्यार हो गयी त्यो ही बडे आनदसे असने मुझे वह दिखायी और पूछा,

“ इस नावसे तुझे और तेरी अस गोरी वहन को यदि मैंने सुरक्षित रूपसे स्वदेश में पहुँचा दिया तो, इस मल्लाह को तू इस नावका किराया क्या देगा ? ”

“ मैंने कहा, ‘ क्या चाहिये तुझे ? ’ ”

तब असने तेरी तरफ अगली करके कहा, “ सिर्फ वह सोने की प्रतिमा मुझे चाहिये ! ”

“ मैं हँसा, मैंने कहा, मुझे कोयी आपत्ति नहीं । यदि असके मनको तू बश कर सका तो परतीरपर पहुँचाते ही मैं तुम दोनों का विवाह कर डालूंगा । ”

“ तब अेकदम छातीपर हाथ मारकर वह दोलकाष्ठ हँसा, ‘ वह काम मेरा । मेरे सीटी देते ही यदि वह पछी मेरे हाथपर आकर नहीं बैठा तो मैं अपना नामही बदल डालूंगा । ”

तत्काल असने मुझसे वचन भी ले लिया कि यदि कटकी अनुकूल हो गयी मैं असे दोलकाष्ठको आनदसे अर्पित कर डालूंगा । ”

“ बाहरे तू, और बाहरे तेरा वचन । किशन ! ” असकी ओर रुष्ट दृष्टिसे देखती हुयी मालती बोली, “ किशन, सारा बुरापन और अुत्तरदायित्व मुझपर डालकर तू अपना अलग थलग हो गया । पर क्यों रे, यदि वह अबसे सचमुच ही मेरे साथ लाडप्यार करने लग गया और मैं असकी हो गयी तो—? ”

“ तो क्या ? तेरी अिच्छा पूर्ण करके तुझे आनदयुक्त देखने के

लिअे मैं अपने आपको अुसके पश्चात् सचमुच का तेरा सगा भाजी समझने लगूंगा और अुसके साथ तेरा विवाह अपने हाथोंसे कर दूंगा ।”

क्रोधके अेक झटके के साथ अुसकी गोद में से अुठने की अिच्छावाली मालती को हाथ पकडकर अुसी तरह से बैठाते हुअे किशन समझाने बुझाने लगा ।

“ अिस तरह गुस्सा क्यो करती है ? जब तूने सवाल किया था, तब तुझे किस तरह अच्छा लगा था ? तो जैसे दो वैसे लो ! पर मालती, मैं बिलकुल हृदयसे कहता हूँ तुझसे, कि तुज जैसी सुंदर और गोरीपान तरुणी के लिअे मेरे जैसा काला कलूटा कुरूप और किसी भी प्रकार की विशेषता से हीन प्रियतम अनुरूप नहीं है यह मैं अपने मन में पहले ही से जानता हू । मुझे यदि तेरा स्नेह ही मिल गया, तेरी सगति में सेवक के रूपसे भी यदि मैं रह सका, तो भी मेरी योग्यताके अनुसार मुझे जो मिलना चाहिये वह मिल जायगा अैसा मैं मानता चला आया हू । मेरी अपेक्षा भी जो तेरे लिअे अधिक अनुरूप है, अुस प्रियतम के चुनने में तू सर्वथा स्वतत्र है ।”

“ ठीक है न ? मैं स्वतत्र हू तभी तो मैंने चुनाव किया है । चुनाव तेरी आखो अथवा मपैने से न करके मैंने अपनी आँखो और मपैने से अिसी प्रियतम का किया है ! मेरे किशन ! मेरे प्रियतम !”

मालती ने गद्गद् होकर किशन को अपने बाहुओंमें कस लिया और अुसके वक्षस्थलपर अपना माथा टेककर क्षणभर निस्तब्ध होकर प्रेमाश्रु बहाती रही । परतु फिर अपनी गर्दन अूपर अूठाकर चुभती हुअी दृष्टिसे किशन को निहारते हुअे हँस पडी,

“ किशन, तुम पुरुषो को रूपरगकी ही जानकारी अधिक रहती है । कारण, तुम्हारी प्रीति तुम्हारी आँखो में रहती है । पर हम ललनाओ की प्रीति हमारे हृदयो मे रहती है । ललनाओ की प्रीति हमारे हृदयरूपी नेत्रोंसे देखा करती है । अत अुसे रूप और रग दिखायी तो पडते है, पर शील स्वभाव और सद्गुण अुसे अधिक मुग्ध करते हैं । पराक्रम और पौरुषका सौंदर्य रूप और रगसेभी कितना अधिक आकर्षित होता है, यह घनश्यामल रामको वरनेवाली, सुवर्ण गौर मीतासे पूछ, सावले श्रीकृष्ण को वरनेवाली अथवा शिशुपालादिक गोरे, कम्बस्त तथा लपट व्यक्तियो का तिरस्कार

करने वाली स्वरूपशालिनी रुक्मिणी से पूछ । अतमेव ललनाओं का स्ने, रूपरग के दो दिन में सूख जानेवाले घास की भाँति अस्थिर नहीं होता, अपितु शील के आम्न तरुके सदृश सरस, सुस्थिर और फलवान् होता है ! ”

“ कम अज कम होना तो चाहिये ही था । ” किशन ने उसे चुटते हुअे कहा, “ पर स्त्रियो के आधे हृदय में प्रीतिका निवास है यह तेरा कहना यदि रुक्मिणी के अुदाहरण से सत्य माना जाय, तो स्त्रियो के वचे हुअे आधे हृदय में कपट का निवास है यह मेरा कहना भी उसी अुदाहरण द्वारा तुझे मानना ही चाहिये । कारण, रुक्मिणी के चोरी चोरी किये गये पत्र-व्यवहार भी प्रसिद्ध ही है । तब तू कम आज कम मेरे लिये तो दोलकाष्ठ को अेकदम निराश मत कर । देश में जाने के पश्चात् तेरी प्रेमयाचना को स्वीकार करूँगी अैसी आशा उसके सामने सतत बनाये रख । वह सज्जन है जिसमें सदेह नहीं, पर अेक निष्कपट अुजडु आदमी है वह थोडासा । जिस लिए वह जो भी लाल लपेट की बात करे, उसका अेकदम तिरस्कार न कर । कारण देश में जाने के पश्चात् तेरी की आशा छूट गयी तो जिस समय समुद्रलघन के कार्य में जो साहसपूर्ण और मनोयोगपूर्ण सहायता कर रहा है, उसमें वह ढिलायी करने लग जाय, किसे मालूम ? अच्छा और यदि तेरा और मेरा अमली नाता अेव पूर्ववृत्त बतला दू तो अपने प्रेम के विषय में से उसके मनमें मात्सर्य अुत्पन्न नहीं होगा, यह कैसे कहा जा ।

और हमने जिस हत्या के कारण यह सजा पायी है, उस के बारे हुअे अभियोग के समय जिस सकट से परित्राण पाने के लिये हमने कृतक नाम और कृतक नाता प्रसिद्ध किया था, वे सकट अिन नामों के पुन जाहीर होते ही अपने अूपर पुनरपि टूट पडें अैसी अभी भी सभावना है । अत स्वदेश में पहुँचने तक अपने को यह नाटकीय भूमिका इसी प्रकार बनाये रखना लाजमी है । देश में जाने पर दोलकाष्ठ के प्रेम की तू सुखेनैव अपेक्षा कर । वह सज्जन है । तेरी अिच्छाके विरुद्ध बलपूर्वक अपना प्रेम लादनेवाला दुर्जन नहीं है । पर कही वह विगड भी खडा हुआ और दुश्मनी करने लगा तो वहा उसका मुकाबला करना अथवा उसे चकमा दे देना हमारे लिये यहा की अपेक्षा सौगुना अधिक आसान रहेगा । आज हम पूरी तरह परवश हैं । उसकी सहायता के बिना समुद्र का अुल्लघन

अत्यंत कठीण ! जिन मुद्द और मुच्छृखल मनुष्यों में अनवस्था ही समाज व्यवस्था होकर बैठती है, उन की सगति में जिसे जीवन व्यतीत करना हो आपद्घर्म ही को सद्घर्म मानकर चलना होगा । ”

अतने में पुन ‘ भू ऽ ऽ ऽ । कटक बावू ऽ ऽ ’ ऐसी किलकारियाँ सुनायी दीं ।

“ अठ अठ ! वे जावरे फिर अपने को बुलाने चले आये हैं, अब जाना ही चाहिये उनके साथ समारम्भपूर्वक गेने के लिए । ”

कटक और कटकी जब जावरो की खोहपर पहुँचे तब उन जावरो का मृतक सस्कार अपने पूरे जोरपर था । वह मृत जावरा राजा नानकोवी का एक विशेष स्नेही और जावरो का एक ‘ दादा ’ था, अतः उसके मृतक सस्कार के लिए वे सारे जावरे आये हुये थे । उस शव को बीच में रखकर सब लोग उसके चारों ओर एक वृत्त में बैठे हुये थे । उस मृत व्यक्तिकी पत्नी और बच्चों को स्वभावतः ही दुःखनें पहले ही से विव्हल कर रखा था । परंतु मृत सस्कार के लिये वह सारी जातिकी जाति जब बिस प्रकार सार्वजनिक शोकके लिये एकत्र हुयी, उस समय उस दृश्य को देखते ही वह मृत व्यक्तिकी पत्नी शोक का आवेग बढ़ गया हो किसी खयाल से नहीं प्रत्युत उस मृतक सस्कार सबधी कर्तव्य की जानकारी के कारण भी विलखते विलखते बीच ही में अँचे स्वर से चिहूँक अठी । उसके साथही एक खाम स्वर और तालपर वे सारे जावरे भी रोने लग गये । पहले पहल एक कर्तव्य समझकर भलेही अन्होंने रोना शुरू किया हो तो भी आगे चलकर वे सचमुच ही रोने लग गये । क्यों कि जनपद विध्वंसक सक्रामक रोग ही की भाँति समाजानुभूति भी एक सक्रामक रोग ही हुआ करता है । अस्तु सब की आँखें पानी से डवडवा आयी ।

वह सार्वजनिक सगीत मिश्र आक्रंद असवरणीय सा हो गया । बिस बीच, उनमें से कुछ वृद्धोंने उस शव की एक गठरी बांधी और उसे लेकर वे सब एक वृक्ष की ओर चले । एक निश्चित ताल में अपनी छाती पीटते हुये तथा एक निश्चित स्वरमें गले फाड़कर रोते हुये वे वहा गये । उस वृक्षकी अँचायी पर एक खोखल थी । उसमें उस शवकी गठरी बिस ढगसे बिठायी गयी कि, मानो वह मनुष्य पालयी मारकर मँह

असके बाद सब जावरो ने अपने शरीर पर के सारे रगविरगी श्रृगारिक मिट्टीके पट्टे पोछ डाले । हजामत किये हुअे सब सुहागिन स्त्रियो और पुरुषो ने सूतक के चिन्ह के तौरपर केवल भूरे रगकी मिट्टी लेकर अपने शरीरोपर अथच ' तराशे गये ' विकेश सिरोपर मल ली । असके पश्चात् मृतक के अतिम दर्शनो के लिअे वे सारे जावरे खडे हो गये । अनुमें धार्मिक कृत्य करवानेवाला पुरोहित तो कोअी रहता ही नहीं । अस अस कालमें जो भी अगुआपन पाया हुआ वूढा होगा, वही प्रथाके अनुसार सारे सस्कार कराता है ।

“ अब जिस अपने भूत सवधी की ओर तीन महिनो तक कोभी भूलकर भी न देखे । अुसका यदि अेकातवास भग हो गया तो अुसका भूत गुस्सा करेगा । हम अुसे भूल तो नही जाने, अुसके प्रीति के प्रति कृतघ्न तो नही हो जाने यह सब अुसका भूत जिस अँची खोखल में बैठा बैठा देखता रहेगा । जिस लिए अिन तीन महिनो में कोभी भी शूगार—मज्जा अथवा आमोद—प्रमोद न करे । नाचरग तीन महिने तक बढ । रगीन मिट्टीके नखरे बढ । — भूरी मिट्टी ही सिर्फ शरीर पर मलनी चाहिये कारण जहरीले मच्छर वगैरे जो जगलमें नगे जावरो को काट खाते है, अुनसे देह सरक्षण के लिअे किसी न किसी मिट्टी का लेप आवश्यक होता है ।

एक विशिष्ट आवाजमें सब जावरों ने इस आदेश को स्वीकार किया और सब अपनी खोह की ओर वापिस चले गये ।

किशन और मालती भी अपनी स्वतंत्र गुफा की ओर चल पड़े। जाते समय वही अजीजीसे मुन्होने दोलकाष्ठ को भी अपने साथ चलने के लिये कहा।

दोलकाष्ठ के सिरपर उस वक्त दार्शनिकता का भूत सवार हो रहा था। अपने पांडित्य का प्रभाव मालतीपर डालने के बिरादेसे वह किशनके साथ जावरो के मृतक सस्कारके विषयमें रास्तेभर बातचीत करता चला,

“ देख मृतक के सवध में प्रीति और भीति भिन्न दो भावनाओं परही सारे मृतक सस्कार किस प्रकार खड़े हैं। हमारे वैदिक मृतक सस्कार और्ध्वदेहिक और सूतकश्राद्ध आदि भिन्न धर्मशून्य भेद वन्य जावरोके आरण्यक मृतक सस्कारही के तो सस्करण हैं। हिंदू, क्रिश्चियन, मुस्लिम सभी मृतक सस्कार मृत व्यक्ति विषयक प्रीति और भीति की भावनापरही आधारित हैं। कैसे सो देखिये। भिन्न जावरो के मृतक सस्कारोपरही बीचबीचमें हस रही थी न कटकी? पर मुनके जगली और पागलपने के प्रतीत होनेवाले मृतक सवधी प्रत्येक प्रथा ही की प्रतिध्वनि अपने सुधारणायुक्त वैदिक—क्रिश्चियन—मुस्लिम प्रभृति औश्वरोक्त धर्म कह ठोल पीटनेवाले मृतक सस्कारोंमें आकर्णित होती है असा यदि मैंने सिद्ध कर दिया तो तू मुझे क्या देगी? आदिम मानव मुर्देपर जिस लिये पत्थरोका ढेर चुनता है कि कहीं वह भूत बनकर उठ न खड़ा हो—असीके पेटसे भिन्न औसाभियो और मुसलमानोंके कब्रिस्तान, भव्य मकबरे और पिरामिड पैदा हुअे। मृत व्यक्तियोंकी नौका वैतरणी को तर जानेमें समर्थ हो सके इसीलिये—”

“ वस हुआ बाबा, तेरा तत्त्वज्ञान। ” किशन ने यह देखकर कि अब यह तत्त्वज्ञान की धारा में बेतहाशा बहता चला जायगा, दोलकाष्ठको बीचहीमें टोक दिया। “ मृताको वैतरणी पार ले जानेवाली नौकाओंके सवधमें जानकारी देनेकी अपेक्षा पहले यदि तू जीवितोंको पार ले जानेवाली नौकाके बारेमें जानकारी देगा तो अधिक अुपकार होगा। वैतरणीका मृत समुद्रपार करने के लिये अेकाध नौका मरनेके पश्चात् हमारे मुर्दोंको कहीं से भी मिल जायेगी। न भी मिली तो भी तवकी तव देख लेगे। पर आज जिस वक्त कालेपानी का समुद्र जीवितावम्यामें पार करनेके लिये अुपयोगी हो सके अैसी जो नौका तू तय्यार कर रहा था, उसका क्या हुआ सो बता पहले। ”

जो नाव तूने अुस दिन मुझे दिखायी भी अब अुसे किस दिन समुद्रमें ढकेलना है ? परसो तूने कहा था कि अब सारी तय्यारी पूरी हो चुकी है, पर अभी तू कल-परसो, कल-परसो किये ही चला जा रहा है ! अब प्राणोकी अिस नैया को सकट समुद्र में कब ढकेलनेवाला है बता ? बिलकुल पक्की तारीख चाहिये ! फिर चाहे दैव हमें पार ले जाय या बीचहीमें डुबा दे ! पर अब अेक दिन भी केवल डरके ख्यालसे यहा ठहरना ठीक नहीं । बता, दिन बता । ”

“ बिलकुल निश्चित दिन बतलाता हूँ । तीन महीने और तीन दिन समाप्त होते ही जो दिन अुदित होगा, अुसी दिन नाव को समुद्रमें ढकेलना है । ”

“ बापरे, क्यों ? अब अेकदम अितनी देर क्यों ? परसो तो तूने बतलाया था कि सारी तय्यारी हो चुकी है ? और अब बिलकुल ज्योतिपीके ठाठमें तीन महीने तीन दिनकी बात कर रहा है ? मुहूर्त विहूर्त की खपत तो सवार नहीं हो गयी कही ?

“ यह जिस दिन तय्यारी पूरी हुयी, अुसी दिन दोलकाष्ठ का मुहूर्त हुआ करता है । पर मुहूर्तकी खपत को अेक और रख भी दे तो भी अपने को दो और खप्तो का खयाल रखना ही चाहिये । अेक खपत है समुद्रकी और दूसरी है नानकोवी की ! राजा नानकोवी ने मुझे अभी जताकर कहा है कि, जब तक अिस जावरे का सूतक समाप्त न हो तब तक नौका समुद्रमें नहीं छोडनी । सो यह जावरोका सूतक तीन महीने बाद जाकर खत्म होगा । अुसके पश्चात् वे हमारे लिअे दो तीन दिन बाद अपनी डुगिया सहायतार्थ देकर अिस समुद्रके तटके समीपस्थ वक्रमार्गों में से रास्ता निकालते निकालते भरे समुद्र में हमारी नाव को अपने पहरे के अदर पहुँचा देनेवाले हैं । और समुद्रकी हवाओं भी अुम कालमें हमारे लिअे अनुकूल होनेवाली हैं । अिसी लिअे तो मुझे ठहरना पड रहा है । अरे, देश जाने की जल्दवाजी जितनी तुझे है, अुससे कम मुझे है अैसा तुझे लगता तो किस आधारपर है ? तुझे होगी सादी जल्दवाजी, पर मुझे तो भय्या, शादीकी जल्दवाजी है न ! क्यों कटकी, ठीक है या नहीं ? कटकने पर तीर पर पहुँचाने के बदले में जो दाम देना मजूर किया है अुसकी हुडी मकारी जानेवाली है तेरे ही प्रेम के साहूकारे पर समझी । ” ढिठायी के

साथ दोलकाष्ठ ने हसते हसते कटकी के गालपर एक लाडभरी चुटकी मारी ।

“ पर, काम होने के बाद दाम का सवाल ! कंटक द्वारा दी गयी हुडी सकारी जायगी तो अुसी दिन सकारी जायगी यह बात मल्लाह को भी भुलानी नही चाहिये । ” मछली को आमिषमात्र दिखाभी दे सके जिस चतुरतासे मालतीने अपना जाल फेंका ।

“ . . . चली मातृगेह को ” : : : २२

“ किशन ! ओ किशन ! ” अपनी गुहाके द्वारपर खडी मालतीने मन ही मन दो तीन बार पुकारा । वह कुछ हताश सा मुह किये खडी थी । फिर मनही मन गुनगुनाया, “ बोलते बोलते जाने किधर चला गया । सवेरे का गया अितनी देर होनेपर भी अभीतक नही लौटा । अुन जावरो ही की धुन में अुघरका अुघर ही अटक गया मालूम पडता है । — पर यह कौन आ रहा है, अुन वाम की झाडियो में से वास जैसा ही अूचा ? दोलकाष्ठ ! और कौन ? मेरा मन बस में करने के लिअे कितना प्रयत्न करता रहता है बेचारा ! अितना प्रेमयुक्त और माफ हृदयका मनुष्य है यह कि मचमुच ही अुसके अूपर मुझे तरस आती है । पर क्या करे ? अुसके प्रेम को मैं स्वीकार भी नही सकती और अिनकार भी नही सकती । आज महीनो से मवेरा हुआ कि जिस अरण्य के ताजे ताजे फूल और ताजा ताजा शहद लेकर मुझे अुपहार देने में अेकदिन का भी जिसने नागा नही किया । मैं जिसे पति मान लू अैसा जो अेक असवरणीय मोह जिसके मन में अुत्पन्न हुआ है, अुसे त्यागकर यह यदि मुझसे कहे कि तू मुझे भाभी मान ले तो मैं अभी जिसी क्षण अपने अंत करणसे अुसे अपना भाभी बना लूंगी कारण अब मुझे मचमुच ही वह पसद आने लगा है । ”

मालती मन में अितना बोल ही रही थी कि दोलकाष्ठ अुस गुहा के समीप आ पहुँचा । अुसके अेक हाथ में अेक सुंदर शस्त्र था । वह गुलाबी रंग का था । अुसे तराशकर और घिसकर अूपर बेलवूटियाँ काढकर

सजाया हुआ था। मिथरके सिंधु पुलिम भिन शंखो के लिभे बहुत अधिक विख्यात है। भुसके दूसरे हाथ में अेक अत्यंत हरे पत्तोका द्रोण था। भुस में ताजे फूल थे। वहाके वनो में शहद के छत्ते विपुल। जावरे लोग भुन को तोडकर वानकी वात में जितना चाहिये भुतना ताजा शहद लाकर देने में प्रवीण थे। भुस प्रकारका ताजा बहुत सा शहद भुस शखके कुप्पेमें भरा हुआ था। दोलकाष्ठ ने वह कटकी को दिया। कटकीने भुसे अपनी गुहा में रख लिया। भुसके पश्चात् भुसने वे फूल भुसे दिये तथा कुछ भुसके बालो में स्वय खोसने के भिरादे से हाथ आगे बढाया। हा हा ना ना करते हुभे कटकी ने भुसे वे फूल खोसने दिये। बचे हुभे फूलोका द्रोण दोनो हाथोसे भूपर भुठाकर भुन्हें सूघती हुभी और रगोको देखती हुभी प्रसन्नायिता कटकी बोली,

“ कितने सुदर फूल है ये। मै आपकी आभारी हूँ । ”

“ पर कटकी भिन सब फूलो से बढकर सुदर अेक और फूल है भिस अरण्य में, पर वही अभी कुछ मेरे हाथ में नही आया है । ”

“ काहे का है जी, वह भितना सुदर फूल ? ”

“ तेरे सौंदर्यका ! कटकी— ” दोलकाष्ठ ने भुड्डतापूर्वक अपना मासल हाथ भुसकी कोमल ठोढीपर लगाने के लिभे आगे बढाया।

“ छी ” ठोढी बचाकर पीछेकी ओर हटकर पर क्रोध न जताती हुभी कटकी प्रत्युत्तर में बोली “ अ ह। वह फूल समुद्रके भिस अदमानी तट के जगल का भले ही रहे पर हाथ में यदि आता हुआ तो आयेगा समुद्र के भुस परली ओरके भारतीय तट के जगल ही में । ”

“ भुसी आशा पर तो मै जीवित हूँ। और मेरी नाव भी यदि तैरेगी तो भुसी आशापर तैरेगी। बस ? अब सिर्फ तीन दिन बाकी है। आज ही जावरो के तीन महीनो का सूनक समाप्त होनेवाला है। अपने को अब भुधर ही चलना है। वह खत्म हुआ कि चौथको हमने अपने साहस की नाव समुद्र में ढकेल ही दी समझो। देशकी तरफ ले जानेवाली हवाभे भी अब अनुकूल वह रही है। अब भितने पर जो कुछ परमेश्वर करेगा वही सत्य है ? ”

“ जो भलाभी की बात हो विलकुल वही करेगा परमेश्वर ! आज भुझे

“ऐसा शुभशकुन दीखा है कि मुझे अब किसी प्रकार का सदेह ही नहीं रह गया। मैंने कदक भय्या से सब किस्सा सबेरे ही कह दिया था।”

“वह कौन किस्सा है, क्या मैं जान सकता हूँ ? शकुन विलकुल सत्य हुआ करते हैं, समझो।”

“अच्छा तो सुनानी हूँ। कल रात मेरी लाडली मा सपने में दिखायी दी। समुद्रके जिस तटपर मैं खड़ी हूँ, बीचमें यह कालेपानी का समुद्र है, उस ओर के तटपर मेरी मा खड़ी है। अपने दोनों हाथ फैलाकर वह मुझसे कह रही है, ‘अरी, चल न, देखती क्या है, आ, मेरी भुजाओं में घुसकर आलिंगन पूर्वक भेट मुझसे। मार छलांग, डर मत, मैं तुझे सहार दूँगी।’ माके ये शब्द सुनते ही मैंने, अक जोरकी छलांग मारी, पानी की छोटीसी धाराको जिस तरह लाघते हैं, उसी तरह समुद्रको लाघ कर मैं झटसे अपनी माँकी भुजाओं में समा गयी। अतने में मानो दृश्य परिवर्तन हो गया। मैं अपने घर में हूँ, झूलेपर मैं और मेरी मा बैठी है मुझे जो गाने पसंद हैं, वह मेरी मा मुझे गा गाकर सुनाती है। सचमुच दोलकाष्ठ, उस स्वप्न के बाद से मैं अधीर हो गयी हूँ, मेरी माके वे गाने मेरे कानों में लगाकर गूँज रहे हैं, मेरी मा ? हाय, अब वह मुझे कब मिलेगी।” कटकी रोने लगी।

“चुप हो, चुप हो। रो मत, तुझे अपनी माकी स्मृति जिस प्रकार विव्हल कर देती है, ठीक उसी तरह मुझे भी अपनी मा की स्मृति विव्हल करती है। मेरी मा— मेरी एक छोटीसी दस बारह बरस की लाडली बहन। मेरे अतिरिक्त अुनके लिये अन्य कोई आधार नहीं था। वे लोग भी मेरी किसी प्रकार राह देखा करते होंगे। मेरा और अुनका किसी प्रकार विछोह हो गया है। अुनसे मैं कब जाकर मिलूँगा, यही मैं भी सोचता रहता हूँ।” अितना बोलते बोलते दोलकाष्ठ का भी गला भर आया और आँखोंसे अश्रुओं की धारा बहने लगी।

विशालकाय रुक्ष, और मुस्टडा दिखायी देनेवाले उस दोलकाष्ठको जिस तरह भावाविष्ट देखकर कटकी को कौतुक मा प्रतीत हुआ। अक बड़े भारी रुखी चट्टानोवाले पर्वत शिखरको यकायक झरते हुअे देखकर कौतुक

तो प्रतीत होगा ही न ? उसकी और क्षणभर दत्तक दृष्टि निहारते रहने के पश्चात् उसने पूछा—

“ तुम्हारी वह छोटी बहन अब बड़ी हो गयी होगी ! ”

“ काहे की बड़ी हो गयी होगी ! होगी कोजी वीस अेक बरसकी । उसे परेशान करना हो तो बस उसे यो दोनो हाथोपर अुठाया और जबतक वह चिल्लाने न लग जाय तब तक उसे जोरसे फिराते रहे । अब भी जब मैं उसे मिलूंगा न, तब पहलेही सपट्टे में उसे अितना फिराअूंगा, अितना फिराअूंगा, ि उसे बुरी तरह चक्कर आ जाय और मेरी माँ गुस्से में आकार ढाटने लगे । वह बीस बरसकी हुअी तो क्या हुआ, मेरी हथेली ही में समा जायगी ! तेरे भाअीने कभी सारे जनम में इतना लाड किया है ? ”

“ सच कहू क्या— ” मालती भावनाके आवेशमें अेकदम बोल बैठी, “ मेरा अेक अिकलौता अैसाही प्रेमी भाअी था— ”

“ क्या मतलब ? ” दोलकाष्ठने बीचहीमें टोक कर कहा, “ था के क्या मानी ? तब यह कटक कौन लगता है तेरा ? ”

मालती यह प्रश्न सुनते ही अितनी चकरा गयी कि चेहरा अेकदम फक्क पड गया । पर अितने में कटक ही अुधर आता दिखाअी दिया । वह विषय स्वभावत ही बद पड गया ।

“ वह देख कटक ! नाम लेतेही चला आया ! सौ बरसकी अुम्न है तेरी ! ” हसते हसते दौडकर वह कटकसे लिपट गयी ।

“ शाबास, दोलकाष्ठ, शाबास ! भले मानस, मैंने तुझे अिधर भेजा कटकीको बुला लाने के लिअे, सो तू यहां आकर गप्पे ही छाँटने लगा ! सूतक समाप्ति के सस्कार के लिअे वे सारे जाबरे चल पडे न अुधर ! राजा नानकोअी हमारी ही राह देख रहा है । चलो, चलो, झटपट ! ”

“ कटकबाबू, मैं जो ताजा शहद लाया हू, उसे खाये बगैर यहांसे आगे अेक कदम नहीं रखना । कटकी, वह शहद ले आ ! ”

दोलकाष्ठके आग्रहको मिर माथे करके मालती शहद ले आयी, हरे हरे पत्तोपर उस शख के सुदर गगासागर से वह शहद परोसा गया और उस मधुर आरण्यक प्रात्तराशके समाप्त होतेही वे तीनो जाबरोकी उस खोहकी ओर चले गये ।

जावरोकी पद्धतिके अनुसार तीन मास का सूतक आज समाप्त होनेवाला था। अपने उस मृतक व्यक्तिके और्ध्वदेहिक के अंतिम संस्कारके लिये वे सारे जावरे शरीर तथा सिरपर भूरी मिट्टी मलकर जोरजोरसे अंकही स्वरपर और तालपर रोते हुए, उस वृक्षकी ओर अंकत्र होकर चले जिसपर उस मृतकके शव को अन्होंने बैठा ले रखा था। उस प्रचंड वृक्षके आते ही वे रुक गये। तत्पश्चात् दोलकाष्ठने उस अूची खोखलमें से उस मुर्दे की गठरी को नीचे अुतारा। वरसात, हवा, धूप, और गीघ-अिन सबके अंकत्रित कारंवाअीसे उस मुर्देकी शरीर का मासभाग अुन तीन महीनो में नास्तिप्राय तो हो ही गया था। हड्डियोका ढाचा ही बच रहा था। अुसे मध्यमें रखकर जावरोके अंक मुखियाने उसकी गर्दन मरोडकर तोड डाली। खोपडी समेत वह सिरका ढाचा अुसने हाथमें अुठा लिया। उस मृतक की विधवा आगे आअी। अुसके फैलाये हुअे हाथो में मुडीको फेंकते हुअे उस मुखियाने कहा,

“यह हिस्सा तेरा।”

अुस विधवाने उस मुडी को धोकर, पोछकर, धिसकर, अुसमें छेद करके, धागा पिरोकर सबके सामने अुसे गलेमें बाध लिया और पीठपर लटका लिया। अपने यहां विधवाके चिन्ह हैं, केशवपन, कापायवस्त्र अंग्रेजो में विधवा का चिन्ह है, अंक काला प्रावरण जो सिर परसे आचलकी भांति लेकर पीठपर छोडा जाता है। अुसी प्रकार जावरोकी विधवाअें जबतक विधवा रहती है, तबतक अपने मृत पतिकी मुडी गलेमें बाधकर पीठपर लटकाये रहती है। पुनर्विवाह किया तो अपर पति हो अुसे अुसके गले से निकाल सकता है।

अुस विधवाको सिरका ढाचा दे चुकने के पश्चात् अुस मृतक के अंक अंक जोडोको तोडफोडकर हड्डी हड्डी अलग कर डाली गअी अुनमें से कुछ हड्डियाँ मृतकोके बच्चोमें तकसीम की गयी। किन्हों खास मवधियोमें तकसीम की गअी। बची हुअी सारी हड्डियोको चेटकीने अपने सामने रखकर, चुनाव करके अंतमें अुसके तीन भाग कर डाले। अंक अरण्यभूत के प्रत्यौषध के रूपमें, अंक अग्नि के और अंक समुद्रके। जिमको जिस भूत का प्रत्यौषध चाहिये, अुनने अुस ढेरकी हड्डी अुठाअी। मृतकोकी अिन हड्डियोके नाना-

विष भूषण, हार, ताजीत वगैरे बनाकर जावरे स्त्री-पुरुष गले में अथवा शरीरपर पहनाते हैं। अुसके योगसे तत्तत् रोगो तथा भूतोसे अुनका बचाव होता है, ऐसी अुनकी श्रद्धा होती है।

अुसमें भी मृत जावरा यदि कोअी प्रतिष्ठित और बडा आदमी रहा तो अुसकी अेकाध हड्डी को अुपयोगमें लाने का अधिकार मिल जाय तो अुसे अेक सम्मान की वस्तु समझा जाता है। अैसे मृतो की हड्डियाँ स्नेहियों तथा अभ्यागतो को अुपहार के रूपमें भी दी जाती है।

दोलकाष्ठ राजा नानकोवीका बडा ही प्रिय मित्र तथा सहाय्यक था। अुसके लिये सम्मान की वस्तु के तौरपर समुद्रीय भूतके प्रत्यौषध रूप हड्डियोमेंसे अेक अच्छासा छोटासा अस्थिखड मुठाकर राजा नानकोवीने दोलकाष्ठको दिया। तथा सकेतो अेव शब्दोद्वारा कहा कि “अव तुम्हें समुद्रकी भीति नही। तुम्हें अपने देश में वह सुरक्षित रूपमें तरा ले जायगा।”

दोलकाष्ठके मन पर भी अुस भयानक मुर्दे के मस्तक, धड, हड्डियाँ जोड आदि के कडकडाहट के साथ तोडने फोडने की अुस सारी क्रिया का अेक विशेष प्रकार का गभीर प्रभाव सा पड ही रहा था। अुसमें भी अुस चेटकीने जावरो की भाषा के श्रुतित शब्दो में अुसे सकेत किया,

“अिघर! जुरुविन! अस्थिखड! मत्र।” अर्थात् जुरुविन नामक समुद्रीय भूत के लिये यह मत्र मैं तुझे वताती हू। अुसे बोलकर ही अुस अस्थिखड को गले में बावना चाहिये।

वे जावरा स्त्रियाँ ठिगनी थो। दोलकाष्ठ के कमर तक ही पहुँच पाती थीं। अेतावता, चेटकी के मुँह तक अपना कान ले जाने के लिये अुसे नीचे बैठना पडा। तत्पश्चात् अुस चेटकीने अेक विचित्र मुखमुद्रा बनायी, जिस तरह अिशारे किये मानो अुस के शरीर में कोअी भूत सचरित हो गया हो तथा अुस के कान में फूक मारी। अेक निरर्थक से अक्षर का अुस के कान में अनेक बार अुच्चारण किया, जिस तरह हमारे यहा मात्रिक लोग ‘होम्’ ‘हुम’, ‘होम्’ आदि अर्थशून्य अेकाक्षर का अुच्चारण किया करते हैं। जावरो के वातावरण में रहते रहते जावरी बनते चले आनेवाले दोलकाष्ठ के

भोले मन का अुन मत्रोपर तथा अस्थिखड के प्रत्यौषध पर पूर्ण विश्वास रहा करता था ।

सूतक के समाप्त होते ही जावरोने अपनी अपनी अभिरुचि के अनुसार मंगल शृंगार करने शुरू कर दिये । अुन्होंने शरीरपर भरी हुमी भूरी मिट्टी घो डाली । पुरुषोंने लाल, पीले, भगवे, सफेद मिट्टी के पट्टे अपने शरीर पर टेढ़े मेढ़े खींचे । सुवासिनी स्त्रियोने अपने सिरो के वालोंके खूटे साफ करवा कर खोपडियो को चिकनी चुपड़ी बनाने की बिच्छा से अपने अपने प्रेमियो अथवा सखियो के हाथो, धारदार काच के टुकडो द्वारा अपनी हजामत करवा ली । अेक दूसरे की चोटी गूथती हुमी जिस तरह अपने बिघर की सुहागिन स्त्रियाँ उत्सव आदि के समय कायब्यग्र सी रहती है, अुसी प्रकार वे जावरो की विवस्त्र सुहागिनेँ और कुमारिकाओं वडे प्रेम से दूसरे की खोपडियोकी चिकनी चिकनी हजामत करती हुमी अपना शृंगार सपन्न करते हँसती खिलखिलाती बैठी रही । अुस के पश्चात् मूंगोकी, अथवा रगीन सीपियोंकी अथवा मृतकोकी हड्डियोकी मालाओं अुन्होंने अपने गले में पहनी । अिस प्रकार शृंगार क्रिया के सपन्न हो चुकने पर, सूतक के कारण गत तीन महिनो अुन की जो नृत्यलिप्सा सचित होती चली आमी थी, अुसकी पूर्ति करने के ख्याल से सूतक समाप्ति का जो सार्वजनिक नृत्य आज सिंधु तटपर होनेवाला था अुघर सारे नग्नकाय आवालवृद्ध स्त्रीपुरुष मिल जुलकर जाने लगे । और इधर, 'अच्छा, अभी थोडी देर में हम भी आते हैं नाच में शरीक होने के लिअे ।' अिस प्रकार राजा नानकोवी से कह कर कटक कटकी दोलकाष्ठ सहित अपनी गुहा की ओर चले ।

गुहा के समीप जाकर वहा के शिलातक्त पर वे तीनो बैठे । कटकी कुछ फल, कच्चे नारियल, शहद और भुना हुआ मास ले आयी । मूख तो लग ही रही थी । सवने अुस वन्य भोजन को अत्यंत रसास्वादन पूर्वक खाया ।

“वस । अब अिन वन्य मिष्ठान्नोंके खाने के और दो दिन ही बाकी रह गये । परसो से वनभोजन समझ कर के समुद्र भोजन का आरम्भ करना होगा । ” दोलकाष्ठ कटक की पीठपर थपकी देकर आश्वसन देने लगा ।

“ और परमेश्वर की अनुकृपा रही तो अगले महीने की किसी तारीख को हमारा अपने घर में, अपने देश में प्रिय जनो के मध्य हँसते खेलते प्रिय भोजन चल रहा होगा ! ” कटकने कटकी को पीठ पर स्नेहभरी थपकी मारी ।

“ परमेश्वर की अनुकृपा रही तो, ऐसा क्यों कहता है अब ? ” दोलकाष्ठने अत्यंत भुल्लसित वृत्ति से कटक को बीचही में टोक दिया, “ परमेश्वर की अनुकृपा भी हो ही गयी है न आज ! कटकबाबू, मैं नाव अच्छी तय्यार की है, पुलिस के कपड़े, बंदूक, गोला बारूद भी हमने तय्यार रख लिया है । जावरोके प्रवीण नाविको को ढुंगियाँ दूरतक साथ आनेवाली हैं । नाव में मास, मधु, फल, मद्य, भरपूर अन्न जल संगृहीत कर के रखा है । मछलियाँ पकड़ने के लिये जाले ले लिये हैं । देश पहुँचते ही जो धन संग्रह चाहिये सो वह भी हमने अंकत्र कर ही लिया है । लाडली कटकी, जो जो पुरुष प्रयत्न साध्य वस्तु थी वह वह हमने जुटा ली । पर यह नटखट समुद्र है, जिसे योही कालापानी नहीं कहा जाता । उस कालके मुँह में सीधी सादी हवा से चलनेवाली नाव ठकेल कर जाना है, उस में सफलता तो दैव ही के अधीन रहेगी, परमेश्वर की कृपा अपेक्षित है, जिस कल्पना से मेरी छाती सदा घडकती रहती थी । पर आज समुद्र के उस ‘ जुरुबिन ’ नामक मृत पर प्रतिवधक का काम करने वाला वह मंत्र और यह प्रत्यौबध जब मुझे उस चेटकीने दिया, तब मुझे सचमुच बहुत सतोष हुआ । दैवी कृपा को यह देख वह लिखित वचन चिठ्ठी ! ” ऐसा कहते हुअे दोलकाष्ठने उस मृत जावरे का चेटकी द्वारा प्रदत्त अंगुली की पोर जितना मंत्रित अस्थिखड निकाल कर गभीरता पूर्वक कटक के सामने रख दिया ।

“ शी ! दोलकाष्ठ ! कितना आरुण्यक हो गया है तेरा मन भी । बुद्धू है क्या तू भी ! ” कटकने अपहास किया ।

“ क्या कहा ? बुद्धू ? जगली ? कटक, बिन जगली जावरो में ही नहीं अपितु अपने आयों में भी मृतो की अस्थियों में दैवीय गुणों की सत्ता को स्वीकार करनेवाले ढेर के ढेर भरे पडे हैं ! किन्ही ब्राह्मणादिक जातियों में मृतो की

खोपड़ी का चूर्ण खीर में मिश्रित कर के श्राद्ध के दिन पितरस्थानीय पुरुषों को तथा यजमानको खाना चाहिये ऐसा शास्त्रीय विधान नहीं था क्या ? बुद्धादिक व्यक्तियों के दंत, अस्थि, प्रभृति अवशेषों का कितना स्तोम क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादिक पथियों में रचाया जाता है, मालूम नहीं ? क्रिश्चियन, मुसलमानादिकों की तो बात ही मत कर । मृतकों की अस्थियों पर ही उनकी कब्रें बनायी जाती हैं और कब्रों के भीतर की हड्डियों ही की सुरक्षा के लिये जीवित व्यक्तियों की हड्डियाँ कब्र में गाड़ने की वारी आने तक दगे लड़ाई झगड़े करने में कोभी कम नहीं करते । मृतों की अस्थिका का महत्ववाद अब उसमें निवसनेवाले मायिक गुणों पर विश्वास की भावना जावरो ही में केवल नहीं — सारे जगभर में है । तब बेचारे जावरो ही को जगली क्यों कहता है ? कहना हो तो सारे जगको जगली कह । खैर, मेरा मिम मिश्रित अस्थिपर पूर्ण विश्वास बैठ गया है । जिस-के गले में यह चेटकी प्रदत्त समग्र ताबीत बाधा जायगा उसे उस 'जुरुविन' का-सामुद्रिक भूत का — भय नहीं रहेगा, वह समुद्रमें कभी भी नहीं डूबेगा । समुद्रप्रवाह में वह सुरक्षित रूपसे पर तीर को जाकर पहुँचेगा ही यह उस-चेटकी का आश्वासन अमत्य है यह कहने का अधिकार, उसका परीक्षा करके देखे वगैर, तुझे भी तो नहीं है ? अनुभव होने से पूर्वही किसी वस्तुको आग्रहपूर्वक असत्य बतलाना भी तो एक प्रकार पागलपन ही है न ? और वह भी अनुनाही परित्यक्क्य है जितना कि उसे आग्रहपूर्वक सत्य बतलाना ।”

“अच्छा भाभी, वैसाही सही ! बाघ ले वह हड्डियों का ताबीत तू समग्रक अपने गले में । न सही नावसे, उस ताबीत ही से सही, किसी प्रकार सुरक्षित रूपसे समुद्रपार के अपने देश पहुँच जाय तो बस ।”

“मुझे अपने जीवन के लिये अपने गले में नहीं बाधना है । मेरी जो लाडली है न कटकी, तेरी बहन और मेरी प्रियतमा । — वह यदि सुरक्षित और सुखी रही तो बस हम भी सुरक्षित और सुखी रहेंगे । अतएव यह ताबीत मुझे मुसीके गले में बाधना है और मुझे दीक्षा देते समय चेटकी ने जिस मंत्रका उपदेश दिया था उसी का मैं भी उसके कान में उपदेश देनेवाला हूँ । यह ताबीत जब तक तेरे गले में बना रहेगा न तब तक मेरी लाडली, तेरे प्राणों के लिये समुद्र में कोभी खतरा नहीं । हमारी नाव रास्ते में यदि टूट फूट

भी गयी तो भी केवल लहरों पर बहाकर, स्वतः समुद्रदेव ही तुझे पर तीर तक पहुँचा देगा। चल आ अधर अंस आचल को थोड़ासा नीचेकी ओर सरका ले।”

दोलकाष्ठ सकोच शून्य प्रेमभावसे कटकी के कंधेपर हाथ रखकर अंसके अधरे कितु शान के साथ कसकर बाधे हुअे आँचल को ढीला कर के नीचे की ओर सरकाने लगा।

अंसकी अिस छेडछाड में अपद्रवकारी लपट वृत्ति नहीं थी। कुछ पागलपन, थोड़ा मर्यादाशून्य अुज्जडपन ही था। जिस बातचीत में कपट नहीं रहता है अैसे अंसके प्रेमको देखकर कटकी को दोलकाष्ठ पर गुस्सा नहीं आता था प्रत्युत् सहानुभूति और करुणा ही प्रतीत होने लगी थी। किंतु वह अिस बात को समझती थी कि यदि वह अिसके आतुर प्रणय को अनिर्वंध रूपसे बढ़ने दे तो देश में पहुँचने पर अंसके प्रणय अेवच विवाह विषयक आग्रहका अनादर करने के लिये कोअी मार्ग नहीं रह जायगा। पुनश्च अुसे सशय में न रखकर यदि वह वाणीसे तथा अपने व्यवहार से यह पक्का जतला दे कि वह अंसका पति रूपमें वरण करेगी तो देश पहुँचने के बाद अुससे विवाह करने से अितकार करने पर दोलकाष्ठके मन में विश्वासघातकी जानकागे के कारण भयकर, वैरबुद्धि के जाग अुठने की भी सभावना है, इस बात का डरही कटकी को आजकल लगने लग गया था।

अुसने अंसको पीठ थपथपाकर कंधेपर जो हाथ रखा था अुसमें कामवासना नहीं थी प्रत्युत अेक प्रकार की वत्सलवृत्ति ही अधिक थी, यह कटकी जान भी गयी थी। अुसकी तादृश छेडछाड किसी स्नेही बड़े, भाअी की छेडछाड की भांति अुसे आनददायक भी प्रतीत हो रही थी। तत्रापि अपरिनिर्दिष्ट भीती के कारण ही अुसने दोलकाष्ठ के हाथ को थोड़ा सा परे करते हुअे और आँचलको अपने कमर में फिर खोसते हुअे कृतककोप पूर्णम्बर में कहा,

“ ताअीत ही बाधना है न, तो वह मेरा कटक भअिया बाध देगा, तुम्हारी कोअी आवश्यकता नहीं है बेकार की छेडछाड करने के लिये।”

कटकी की अुस भर्त्सनासे दोलकाष्ठ के प्रणयी मन को अैसी गहरी

‘घोट पहुँचो कि अुसकी आँखोंसे आसू ही टपक पड़े—साथ ही शब्दों में से क्रोध भी। वह कटकी के पास से दूर हटकर खड़ा हो गया। अुस अपमानको मजाक रूपमें न लेकर अुसने कटकीसे अत्यंत विव्हल से स्वर में कहा,

“कटकी, अभीतक तू मुझे पराया ही समझती है न। तेरे स्वयंवर का अेक पण समझकर ही अिस टटपूजी नाव को समुद्र में डालकर तुम्हें अिस कालेपानी से अुस पार पहुँचाने के लिये अपनी जान की बाजी में लड़ा रहा हूँ यह तुझे मालूम नहीं ? किंतु तेरे मन में मेरे सवध में अबभी अितना परभाव हो तो जवर्दस्ती तेरे सामने नाचते-हुअे, तुझे तक्लीफ पहुँचाते हुअे अपनी पगड़ी अुछलवानेवाला आदमी कम अज कम यह दोलकाष्ठ तो नहीं है। तू अगर आजतक मुझ से आगे चलकर विवाह करने की वाते बनाकर मुझे अुल्लू ही बनाती आमी हो तो वह तेरे लिये कोमी शोभाजनक बात नहीं है। अुसका परिणाम—”

कटकने दोलकाष्ठ को आज तक अितने गभीर अेव विषादपूर्ण स्वर में बोलते हुअे नहीं देखा था। अत दोलकाष्ठ का अैसा विगड़ा हुआ राग-राग देखते ही कटक सहमसा गया। स्वदेश पहुँचने के अनंतर कटकी के अनुपलाभ से अुत्पन्न होनेवाले वैरभाव का सूत्रपात यही तो नहीं हो जायगा, जिन बटूको और गोलावारुद को हमने अपने सरक्षण के लिये जुटाया था अुनको अब अेक दूसरे पर आक्रमण करने के लिये अुपयोग में लाने का प्रसंग तो नहीं आ जायगा। आज या कल अिसी मालतीके कारण दोलकाष्ठ अेक नये राफअुद्दीन का रूप धारण कर के अपनी तथा मालती की जान लेने पर तो अुतारू नहीं हो जायगा, अैसी भयप्रद शकाओं के आते ही कटक का सिर चक्कर खा गया। पर अिस समय अुसके सामने यही अेक मार्ग बच रहा था कि जहाँ तक हो सके अिस अनिष्ट प्रसंग को कलपर टालता चला जाय, और जहाँतक निभ सके दोलकाष्ठ से निभाता चला जाय। वह यह अब भी अच्छी तरह समझता था कि, दोलकाष्ठ सीजन्य से अेकदम हाथ धोकर बैठ जानंवाला व्यक्ति नहीं है। अत दोलकाष्ठ के आगे के कोप परिपूर्ण उद्गारों के व्यक्त होने से पूर्व ही अुसे ठंडा करने के विचार से अत्यंत नरमाओसे बोलने लगा।

“कैसा परिणाम, मेरे मित्र? अैसे स्त्री-सुलभ सकोच को देखकर

गुस्सा आना चाहिये ? या आनन्द प्रतीत होना चाहिये ? प्रेयसीकी अनुरजना कैसे करना चाहिये, यह अमृता जगली जावरो को जितना मालूम है अतना भी तुझे मालूम नहीं ऐसा प्रतीत होता है, बाध वह ताभीत तू ही कटकी के गले में। मैं उसका बड़ा भाओ हूँ। मेरा कोई अधिकार नहीं है क्या उस-पर ? जिस लिये यह चतुर लड़की जब तक भाओके नाते मैं उसे आज्ञा न दूँ तब तक आपसी तीरपर अस्वीकार जतलाती रहो ? हा वहन बाधने दे दोलकाष्ठ को अपने गले में ताओत । ”

“ गुस्से में आगये अतने ही में । विलकुल पगले हो तुम । ” कटकी ने समय सूचकता प्रदर्शित करते हुये ओक आकर्षक मुस्कराहट के साथ दोलकाष्ठ की अंगली पकड़कर खींच ली । अमृता अंगली पकड़कर खींचते ही परवश हाथीकी भाँति वह दोलकाष्ठ क्षट से उस के समीप खिंचा चला आया और पुनः प्रसन्न वृत्तिसे उससे कहने लगा,

“ तू ही हटा ले वह आचल नीचे की ओर, हा, बस है अतना । गले में ताओत तो बाधने को आना चाहिये न । पर उसके पहले तेरे कान में मुझे मन्त्र पढ़ना पड़ेगा । पढ़ूँ न ? तेरे कान के समीप अपना मुँह ला सकता हूँ ? हा, नहीं तो फिर मर्यादा का भंग हो जायगा और तू फिर फुफकार अठेगी । ” दोलकाष्ठ अब पूरी तरह प्रणयरस में मग्न हुआ हुआ था । ठीक कान के समीप अपना मुँह ले जाकर ओक हाथ उसके गले के चारों ओर कंधे पर रखकर उसने उसको अपने नजदीक कर लिया और चेटकीका वह अर्थहीन अक्षरोवाला मन्त्र तीन बार उसके कान में पढ़ा ।

कटकी से सटकर उस तरह खड़ा रहना दोलकाष्ठ को जितना प्रिय प्रतीत हो रहा था कि यदि सौ बार भी अमृता मन्त्रका पाठ करते हुये उसे वहाँ खड़ा रहना पड़ता तो भी अमृता कोभी कष्ट न होता । पर कटकी कही फिर अखण्ड खड़ी न हो जिस भयसे अमृता ने जितना आँचल अतर चुका था अतना ही अतारकर, बेहदगी न नजर आये जिस विचारसे तीन बार मन्त्र की दीक्षा देनी आवश्यक थी, अतनी जब दी जा चुकी तब जिस विधि को समाप्त करके दोलकाष्ठ हाथ में पड़े ताओत को ठीक करता हुआ दूर हट गया ।

“ जल्दी ही खत्म कर दिया ” कटकी धूर्तता पूर्वक हँस पड़ी । पर अिन गरारती गुलाबी काटो की खरोच का ज्ञान हो अितनी होश अुस आनद प्रवाह में वहनेवाले दोलकाष्ठ को कहा से रह सकती थी ? अुसने सरल भावसे अुत्तर दिया,

“ वाह, खत्म कहा हुआ ! अब यह ताभीत बाधना है न तेरे गले में ! जैसे ! हा, सामने हो अिस तरहसे ! गले को ठीक से अूपर अुठा ! गिरने दे अुस आचल को ! बार बार अुसको ठीक करने के लिये हाथ क्यों लाती है बीचमें ! —हां, यो ! तनकर खड़ी रह, समझी ! ”

अुसके सामने विलकुल समीप खड़े होकर अुसने वह ताभीत अुस की वक्षस्थल पर ठीकसे लटकता रहे अिस अदाजसे बाधना शुरू किया ।

अितने में अुसके वक्ष स्थल पर और गले के मध्यभाग में कुछ लाल लाल से चिन्ह अुसे दिखायी दिये ।

“ यह क्या ? ये लाल लाल खरोचे कँती हैं तेरे गले के नीचे ? शिकार के समय कही काटो बाटो में तो नहीं गिर पड़ी थी न ? ” अिस प्रकार वह अुससे पूछ ही रहा था कि, अुतने ही में अुसे मालूम पडा कि, ये खरोचे नहीं हैं बल्कि लाल रंगसे बेलबूटे, तथा कुछ अक्षर गोदे गये हैं, अैसा अुसे दिखायी दिया । क्षणार्ध में अुसने वे अक्षर पढ डाले — “ मालाती ”

“ क्या ? मा-ला-ती-? मालती ? ”

ज्यो ही अुसने ये शब्द जोरसे पढे, त्योही दोलकाष्ठ की आकृति की सारी रेखाओं ही बदल गयी ! अुसके शरीरपर रोमाच खड़े हो गये !

घनीभूत अचेतावस्था में से धीरे धीरे चेतना में आनेवाले मनुष्य की भाति वह कटकी को निनिमेष दृष्टि से निहारने लगा । क्षणार्ध ही में अुसने अत्यत स्निग्ध किंतु अत्यत विस्मयपूर्ण स्वरमें कटकी से पूछा,

“ सच बता, सौगध है तेरी लाडली मा की ! यही तेरा मच्चा नाम है न ? तू मालती ही है न ? किसने गोदा था यह नाम तेरे वक्ष स्थल पर ? ”

कटकी को जब मालूम पडा कि, अुसका अमंगी नाम अिस प्रकार अचानक दोलकाष्ठ को मालूम पड गया है तब वह थोड़ीनी सहम गयी

तो भी किसी प्रकारकी हानिकी कोभी सभावना दृष्टिगत न होने के कारण और इस कारण भी कि दोलकाष्ठने अत्यंत स्नेहाकुल स्वर में उसकी अपनी ही मा की सौगंध खिलायी थी, अतः उस अपनी मा की स्मृति के ताजा होते ही थोड़ी सी भावमूर्च्छित सी हो कर अपने आपको संभालते हुअे बोलने का प्रयत्न करने पर भी बोल वही गयी जो सत्य वस्तु थी ।

“ वह जो नाम है न, वह मेरा वचन का प्यार का नाम है । मेरे बड़े भय्याने प्रेम में आकर इस प्रकार लाल रंगसे मेरे शरीरपर गोदा था एक दफा ! पर मेरा मूल का नाम तो कटकी ही है । ”

‘ नहीं ! मालती, तू मालती ही है । यह देख, उस नाम के चारो ओर कड़े हुअे बेलबूटे, वह देख उस नाम को गोदते गोदते मेरे हाथसे मूलसे ‘ ल ’ को लगी हुअी ‘ आ ’ की काना ! वह गलत रूप ‘ मालाती । ’ —सब गलत ! सब असंभव ! पर वह सब क्यों ! ” गद्गद् स्वर से मालतीको नखशिखात तक निहारता हुआ दोलकाष्ठ बोला, “ यह देख, यह तेरी प्रत्यक्ष मूर्ति ! ये बाल, यह माथे से लेकर पैरो तक की गात्र-रचना ! मेरी बेसुधी के घुम्रवलय में छिपी हुअी तेरी आकृति, मेरे होश में आते ही उस घुम्रवलय के तिरोहित होते ही किस प्रकार नखशिखात तक मेरी मालती के रूपमें प्रकट हो गयी है ! कटक बाबू, आप कोभी भी क्यों न हो, पर यह आपकी धर्म की वहन कटकी मेरी सगी वहन मालती है ! । सत्य कहिये, यह सारा किस्सा क्या है ! मैं अब आपका ही हूँ, मुझसे डरिये नहीं । ”

कटक के इस अत्यंत अप्रत्याशित वाक्य के सुनते ही कटक को बिजली का शॉक ही वैठा ! बहुत बरसो पहले मालती का बड़ा भाभी सजा पाकर कालेपानी गया था, यह उसे तत्काल स्मृत हो आया । परंतु यदि दोलकाष्ठ मालती का सच्चा भाभी ही है तब तो उसके मार्ग की एक और बड़ी बाधा अपने आपही अपसारित हो गयी । दोलकाष्ठ के मनमें अब मालती के विषय में न तो कोभी विषयलालसा निर्माण होगी और नहीं तजन्म वैर भावना के ही उत्पन्न होने का कोभी भय रह जायगा । यह सब प्रत्युत्पन्न रीत्या उसके ध्यानमें आ गया और वह दोलकाष्ठ से बोला,

“ मित्र, जो सत्यवार्ता है, वही मैं तुझे सुनाऊंगा, पर ! पर ! —थोड़ा

ठहर, जिस मेरी मालती का नाम गोदनेवाला जो जिसका बड़ा भाभी था, वह आगे चलकर अंकलडाम्नी पर गया और वहाँ उसके सिरपर अंक चोट आ गयी। उस चोट की अंक निशानी उस के माथे पर बनी हुयी है, असा हमें अच्छी तरह पता चला था। वसी कोभी निशानी तेरे सिर पर--”

कटक अपना वाक्य अभी पूराभी नहीं कर पाया था कि, दोलकाष्ठने अपने माथे पर आये हुये वालों के गुच्छे को दोनों हाथों से हटाकर अपने माथे को कटक के सामने कर दिया। दो अंगुल चौड़े घाव की निशानी स्पष्ट रूप से उसके माथेपर दिखायी देती थी। निशानी मिल गयी।

कटकने अपनी अब तक की सारी कथा कह सुनायी। उस का नाम जब किशन था तथा उस लडकी का नाम मालती था उस समय वे किस प्रकार के सकट में जा पड़े और किस तरह उन्हें कटक और कटकी ये बनावडी नाम रख लेने पड़े यह तथा अन्य सारा वृत्तांत कह दिया।

कटक बोला, “तुम्हारे लडके के सिरपर लडाम्नी में अंक चोट आयी होगी असा मुखे अतज्ञान द्वारा दीख रहा है,” कह कर उस अधम कितवने, उस रफिअुद्दीनने साधु के भेस में जब कहा, तभी मालती की माता की उस पर श्रद्धा बैठी। जिस सकट के चक्र में पडने के लिये अंक दृष्टि से जो मूल कारण बनी, वही यह तेरी चोट की निशानी आज तुम भाभीवहनों के पुनर्मिलन का भी कारण बनी। मालती को सकट से मुक्त करने का साधन बनी। उसी प्रकार उस अधम कितवको तेरे ही हाथों प्राणदण्ड भोगना पडा और जिस प्रकार अविज्ञात रूप से मालती के भाभीने मालती के अवमान का बदला चुकाया, यह योगायोग जितना ही आल्हाददायक है, उतना ही आश्चर्यकारक भी है।”

“अरे, क्या कहता है।” वह गुस्सेवाज दोलकाष्ठ तनकर खड़ा हो गया और अपना जवर्दस्त बाहु हवा में फेंक कर, दातओठ चवाता हुआ मुठ्ठी तानता हुआ बोला, “उस अद्दीन को तो मैंने अपना बदला समझ कर मारा है। मेरी बहन का बदला लेने के लिये उस का गला अंक बार और जिस तरह घोट कर अंक बार फिर उसे जिस तरह जान से मारना चाहिये।” क्रोध के आवेश में हवा का ही गला दोलकाष्ठने कसकर दबाया।

“रहने दे भय्या, अब मुस गुस्से को ।” अपने भाभी की तथा वचपन से लेकर अबतक के सारे सुखदुःखों की स्मृति से मुस के नेत्र भर आये थे । मुसने अपने भाभी का हाथ पकड़ कर धीमेसे नीचे की ओर खींचा और अपने हाथ से मुसे दवाती हुयी लाडभरे कठसे मुसके क्रोध को शांत करने लगी ।

“ मालू, बहन ! — मेरे हाथों तेरा कुछ भी तो कल्याण नहीं हुआ । तेरे लिये मुझ भाभी का रहना और न रहना समान ही रहा न ! तेरे मन के अनुकूल—”

“ भय्या, अब तू मुझसे मिल गया है न ? इसी में मेरा सब कुछ मनोऽनुकूल हो गया है । अब अगर कुछ और होना बाकी रहा है तो वह अपनी मा की मुलाकात ! भय्या, मुझे एक बार अपने पेट में छिपा ले न ? ”

“ मालू ! बहन ! ” अपने गले से लिपटी हुयी मुस अपनी बहन को सहलाता हुआ, मुस के बालों के ऊपर से हाथ फेरता हुआ मिलन की मुस मधुर अचेतावस्था में वह बीचबीचमें यों ही पुकार उठता, “ मालू ! ” “ मेरी बहन ! ” और वह भी लाडभरे कठ से उत्तर देती— “ अू ! ” “ हा ! ” “ भय्या ! ”

क्षणभर बाद मालती की भुजाओं को छुड़ाकर मुस का वह भाभी किशन की ओर मुड़ा,

“ किशन, मेरी बहन को अनेक सकटों में से तूने बचाया है । तेरे मुझपर अनंत उपकार है । पर देख, मेरे भी तुझपर कुछ कम उपकार नहीं है, समझे ! तूने मेरी बहन मुझे वापस दी, मैं भी यह ले, तेरी प्रियसी तुझे वापिस देता हूँ । अपने आशिर्वाद के दहेज के साथ जिस अपनी भगिनी का मैं यथाशास्त्र कन्यादान कर रहा हूँ । ”

“ विवाह के पश्चात् न ? ” किशन हसा ।

तत्पश्चात् मुस निश्चित किये हुअे दिन अून बेचारे आतिथ्यशील जावरोने बड़े साजबाज से अून तीनों को विदा दी । जिस समय किशन, मालती और मुस का भय्या (दोलकाष्ठ को अब सब लोग ‘ बड़ भय्या ’ कहने लगे थे ।) मुस नावमें बैठे, चांदनी रात के समय चुपचाप तट का परित्याग किया, मुस समय समुद्र के भूत को ‘ जुरुविन ’ को प्रसन्न करने

के लिये जावरोने नानाविध चेटक कृत्य किये । और दो तीन डुगियो को साथ ले जावरो में से कुछ प्रवीण नाविक किशन की अुस नाव को खाडियो खाडियो में से, अृजु-वश्र मार्गों से होते हुअे, अग्रेजों के पहरे के स्थानों से बचाकर कालेपानी के भरे समुद्र में अुन्हें पहुँचा आये ।

कालेपानी के भरे समुद्र में । — वह केवल वाताश्रित तरी । रात के अधिकार में तो चारों दिशाओं में साक्षात् काल ही अपनी जभा खोले खड़ा रहता । अितने भयानक ! अितने घातक ! अितने सुनसान, अितना असहाय साहस कृत्य वह ! मध्यरात्र कालेकुट्ट करोखे में वह अशाख विस्तीर्णय समुद्र जब गरजता तब अैसा प्रतीत होता मानो मृत्यु ही खरट्टे भर रही हो ! पर अजन्म कारावास के वधनों में सडते रहने की अपेक्षा यह साहस—यह मृत्युका आलिंगन — ये महाकाल के भुजपाश — सचमुच अिसमें कितना अधिक सुख है ।

कालेपानी के समुद्र में वह नाव भी अनाटक गति से चली जा रही थी । हवा अनकूल थी । पाल का पेट भी भरभर कर खव फूल गया था । वारी वारी से वे तीनों निरतर चप्पू चलाते जाते थे । मालती भी चप्पू चलाने की अपनी वारी में अपनी अक्तिभर चप्पू मारती थी ।

आसमान में कभी वादल छा जाते, अघेराही अघेरा हो जाता, कभी धूप चिलचिला अुठनी, दिशाओं हसने लग जाती । समुद्रभी कभी अुफनाता हुआ श्रोधी दिखाअी पडता कभी टलमल टलमल लघु लघु तरंगे अुठाता हुआ सरोवर ही की भाति प्रसन्न दीखने लगता । थोडा सा कहीं खटका हुआ कि तीनों के मुखोंपर मन में छिपाये हुअे भयकी कृष्णच्छाया अेकदम फैल जाती ? फिरसे अुसे दवाकर छिपाकर वे अेक दूसरेको धैर्य देते, हमते, चप्पू चलाते हुअे गाया भी करते ।

अनुकूल हवा अुनके पालमें भरी हुअी थी । पर अुसीके आधारपर कुछ वह तरी निष्कटक रूपसे नहीं जा रहो थी । अजन्म कारावास के पद—वधनोंको तोडकर हम कालेपानीसे भागे जा रहे हैं, अिस कल्पना के आनंद का पवन जो अुनके हृदयके पालमें भरा हुआ था, मुख्यतः अुसीके आवारपर वह तरी अिस तरह वेलगाम चली जा रही थी ।

मनुष्यकी आशा—निराशा, पाप—पुण्य, न्याय—अन्याय, साध्य—असाध्य

आदि की कमौटीपर जगकी गतिविधियोंको कुछ पारख कर देखते नहीं बनता । उस विचारकी कोभी खास गिनती भी नहीं की जाती । अपने को जो वस्तु सभव प्रतीत होती है वह अकस्मात् असभव हो जाती है । और जो असभव प्रतीत होती है वही कभी कभी अकस्मात् सभव हो जाती है । अिमी को हम योगायोग कहते हैं । निश्चिन्तसे अुन गतिविधियों का हमारी अिच्छा और हमारे तर्कके अनुरोधसे कुछ भी ख़ुलासा नहीं हो पाता अैसा हम माना करते हैं ।

सर्वथा राजमहलोंमें सैकड़ों दासदासियों द्वारा लालित पालित होते समय अथवा प्रत्यक्ष राजारानी द्वारा गोदी में लेकर खिलाये जाते समय मनौती के आयास से प्राप्त हुआ हुआ राजकीय पिंडवाला वच्चा अूँचे प्रासाद परसे, रानीकी अथवा राजाकी गोदमेंसे फिसल कर नीचे फरश पर गिर पड़ता है और चकनाचूर हो जाता है । श्रीमत् रघुनाथराव पेशवे का अेक अपत्य कहते हैं, जब वे अुसे हाथ में खिला रहे थे, अुस समय नीचे गिरकर चिथ गया था । अिसके विपरीत क्वेटा किंवा बिहार में हुअे भीषण भूकंप के धक्के के समकाल जब नगरके नगर ढहकर जमीन में विला गये, अुस समय चार चार मजिल के बड़े बड़े भवन घडाम से विदीर्ण भूमिके अुदरमें राशि रूप होकर गिर पड़े । मनुष्य, मावाप, वच्चे दबकर लुगदी बनकर पत्थरो की राशिमें चूने और गारेकी तर चिन डाले गये । और अुसीमें म्बुदाअी करने पर किसी माका दूधपीता वच्चा दो पत्थरोंके तबूके नीचे सुरक्षित रूम में मिल गया ! यही है योगायोग । दैव । अिसके कार्यकारण की अुलझन को हम सुलझा नहीं पाते अथवा जो हमारी अिच्छाके अनुरूप सुलझ नहीं पाती, अुसी को हम दैव कहते हैं । दैव, योगायोगका दूसरे शब्दोंमें कहे तो अर्थ ही है हमारा अज्ञान, हमारी निराशा ।

कालेपानी के भरे सागरमें हवाके आधारपर चलने वाली इस छोटी सी नाव में बैठे हुअे प्रतिक्षण मृत्युकी चट्टानपर टक्कर खाने की सभावनावाले अिन तीन जीवोंके दैव में अुस अुलटे सुलटे योगायोगों में से कौनसा योगायोग आनेवाला है ?

अिनका क्या होगा ? कैसे होगा ? —

आज आठवाँ दिन जैमे तैसे करके अुग आया । सकटोका मुकाबला

करते करते अुनका भय भी कुछ न्यून हो चुका था । केवल यही अेक अप्रिय बात थी कि अश्र तथा पानीका संग्रह खत्म होने के करीब आ गया था । पर यात्रा भी तो आधे से अधिक समाप्त हो चुकी थी । वे लोग बीच बीचमें मछलियाँ पकड़ते थे और खाते थे, अुससे अुनका कुछ निभाव हो जाता था । पर अशक्ति बढ़ गयी । अुसमें भी मालती तो बहुत ही श्रान्त हो चुकी थी । तथापि अुसका बड़ा भय्या अुसे बताता था कि, अब आधे से अधिक यात्रा खत्म हो चुकी है, और कहता,

“आततायी, पापी—अुम रफिअुद्दीन मरीखे कितव यदि मिस कालेपानी के समुद्रको पार करके अपने देश पहुँच सकते हैं, तो तेरे जैसे निरपराध, निष्पाप और सुशील अवला को सहाय्यता दिये बिना वह देव किस प्रकार रह सकेगा ? तेरे पुण्यसे हम सभी पार पहुँच जायेंगे । स्वदेश पहुँच जायेंगे ! फिर वह ताभीत, वे चेटक, वे शुभ शकुन—वे सब योही जायेंगे ?”

मिस प्रकार धीरज बघाने से अुसकी शरीरकी थकावट न भी सही तो भी मानसिक थकावट तो दूर हो ही जाती थी । रात आतेही किशनकी जाघपर जब वह सिर रखकर सो जाती और वह अुसे थपकियाँ देता, तब चिंता का लेश भी अुसे स्पर्श नहीं करना था । अितनी शीघ्रता से अितनी गाढ़ निद्रामें वह सो जाती कि, सबेरे ही अुसका जागना होता, और वह तब पूर्ण प्रफुल्ल होकर अुठती ।

आठवा दिन भी निर्विघ्न रूपसे व्यतीत हुआ । अुस मध्याह्न के सूर्यास्त की शोभा और अुस शांत नमुद्रके आश्वासन पूर्ण व्यवहार के कारण अुन तीनों को विपुल अुल्लास प्रतीत होने लगा । हवाभी कुछ माथामें मद पड़ गयी थी । मिस लिये अुन्होंने अपने चप्पू अधिक वेगसे चलाने शुरू किये । प्रत्येक चप्पूके प्रहारके साथ स्वदेश का तट द्रुतगति से समीप आता जा रहा है, इस अनुभूति के कारण अुस श्रम का अधिक आस अुन्हें अनुभव नहीं होता था । अुलटे, अुल्लास आवेग में किशन ने अेक नाविको का गाना गाना आरम्भ किया, तथा मध्य मध्य मालती की ओर देखते हुअे विनोदभरी हँसी हँसने लगा । अुसके बड़े भैया ने भी अुसके सुर में अपना सुर मिलाया

और तालकी गतिपर चप्पू चलाने लगा, तथा स्वयमपि जोर जोरसे गाने लगा—

वायु रे, पवन रे,
बढाये जा तरी को भिस,
नाविक रे,
चलाये जा सवेग चप्पुओं को तू ।
करती स्मरण आज स्वजनों के स्नेह को,
सांवली सलौनी वाला चली मातृगेह को,
सांवली सलौनी वाला चली मातृ-गेहको ।

एक चरण यह बोलता तो दूसरा चरण दूसरा । इस प्रकार गाते गाते और सपासप चप्पू चलाते हुअे वे लोग चले । नाव भी वेगसे समुद्रमे आगे बढती चली, और स्वदेश वेगसे समीप आता चला । जब तक अघेरा नही हुआ और जिघर तिघर चाँदनी चमचमाने नहीं लगी तब तक वे लोग गाते ही रहे और चप्पू चलाते ही रहे ।

अुस गाने को सुनते सुनते और अुस नाव के झूलते हुअे पलगपर किशन की गोद को सिरहाना बनाये मालती कब सो गयी, यह अुसका अुसे भी नही मालूम हो सका ।

हवा फिर अनुकूल दिशामें वह अुठी । पाल भर गयी, चप्पूका चलाना मद पड गया । मध्यरात्र का समय, आकाश में चद्रमा—अितने ही में नाव से कुछ दूरके अतर पर खलमलाट की बडी भारी आवाज हुअी और एक अूचासा पानीका भारी भरकम खभा अ्पर को अुठ आया । —

बडे भय्याने ठीकसे निहारकर देखा, तो एक प्रचड मत्स्य आधे से अधिक अ्पर अुठ आया हो अैसा चमकने लगा । समुद्र में अनेक बार अनुभव प्राप्त किये हुअे दोलकाष्ठने तत्काल पहचान लिया कि यह मत्स्य एक महाभयानक जातिका मत्स्य है । तत्काल अुसने बडूक अुठायी । त्योही पुन पानीके बीच खलमलाहट की आवाज हुअी और वह मत्स्य पानीमें डुबकी मारकर विलुप्त हो गया । एक बडी विपत्ति टल गयी अैसा सोच दोलकाष्ठ तथा किशनने निश्चितता की सास ली ।

अस भीषण मत्स्य के ऊपरसे असो प्रकार की मछलियों की बातों का प्रमग छिड़ा । दोलकाण्ड सुनाने लगा, “ समुद्रयात्री लोग बताते हैं कि कभी कभी अैसे मच्छो से पाला पड़ता है जिनकी पूंछ में विजली भरी रहती है, और असके प्रहारसे वे बोटकी बोटको अलटा डालते हैं । छोटी मोटी पवनवाह्य नाकाओका तो अनेक मत्स्य वक्रमार्गों से होकर पीछा करते हैं, जिनमें कितने ही मत्स्य नरभक्षक जातिके भी होते हैं ।”

किशन के शरीर पर रोगटे खड़े हो गये । “ नरभक्षक ! तू सच कहता है ? ”

पर किशन के अस प्रश्न का उत्तर देने की दोलकाण्डको आवश्यकता ही नहीं हुअी, समय ही नहीं मिला । —

कारण, किशन वह पूछ ही रहा था कि, अतने ही में, कोअी राक्षस किसी दुबले पतले व्यक्तिके गालपर जड़ दे, अस तरह अस छोटीसी अबच समुद्रकी लहर पर अारूढ नाव के अेक पार्श्व को अेक करारी चपत लगी और जिस तरह कोअी कटोरी अलट जाय अस तरह वह नाव चूपके से सुलटी से अलटी हो गयी । !

अेक प्रचंड लहर अठी । अेक भयकर मत्स्य का घड अस नाव के चारो ओर गरगर फिरा, पिछली बार जो मत्स्य गोता मारकर निकल भागा था वही अस समय अस प्रकार गुप्तरूपसे धावा बोलकर आया और अपनी अेक ही फटकार में नाव को अलटा दिया । अस नाव में से कोअी आदमी बाहर फेंका गया है या नही, यह देखने ही के लिये वह तथा असके अेक जोड़ीदार मत्स्य नावके चारो ओर चक्कर मारते हुअे ऊपर अठ आये थे ।

नावके अलटते समय अस चपेट के साथ जो व्यक्ति दूर फेंक दिया गया वह किशन ही था । अस राक्षसी मत्स्यने असपर झपट्टा मारा और उसे समुद्र के अंदर खींच ले गया ।

अिधर दोलकाण्डने अपने पर अलटी हुअी अस नाव से बाहर निकलने का प्रयत्न किया । पर वह असके प्राणात ही का प्रयत्न ! ! असी ही भी न पाया था कि, अतने ही में समाप्त भी हो गया । नाकपर

मँहपर लहरो के थप्पड़ पडने लगे, दम घुट गया, देखते देखते दोलकाष्ठ समुद्र के अंदर में समा गया । ।--

और मालती ? वह डूब गयी है यह तक उसे विदित नहीं हो पाया । वह गाढ़ निद्रा में थी । उसे उस आदोल्यमान तरी के कारण सुख-स्वप्न आ रहे थे, कि वह अपने वचन के उसी झूलेपर बैठी हुअी है, उस की मा उस के लिये स्नेहभरे गाने गा रही है, झूलेके अँचे अँचे जाकर नीचे की ओर आने की अनुभूति उसे अत्यधिक मधुर प्रतीत हो रही है ।

उस मधुस्वप्न में, वह जिस तरह सोयी हुअी थी, वैसी की वैसी ही, नाव के अटनेपर, समुद्र की अर्मियोंके झूले पर सुला दी गयी । जाग उसके पश्चात् उसे कभी आयी ही नहीं । ।

वह सुखस्वप्न ही उसकी आखीरकी जाग थी । उसकी आखीर की अनुभूति थी, अर्थात् उसके अपने विचार से तो वह सुरक्षित तौरपर घरपर जाकर अपनी मा से मिली ही । उसके भर के लिये उसकी अनुभूति की वह अतीम रेखा सुखात ही रही । ।



हिंदी स्वाध्यायमाला आदि हिंदी पुस्तकें

श्यामू की माँ—पृ. २८८, मूल्य रु. ३. महाराष्ट्रके प्रसिद्ध नेता सानेगुरुजी द्वारा यह कथा लिखी हुयी है। जिसका अनुवाद श्री. गोपी वल्लभजी अुपाध्यायने किया है। माताकी सुदार शिक्षाका सरल, सादा और करुण अेव मधुर कथाका चित्र।

नागरी लिपिमें अुर्दू-हिंदी-मराठी (त्रैभाषिक) शब्दकोष—

संपादक—कुलकर्णी व शिंदेकरे. मूल्य रु. २॥, शुभ्र कागज, पृष्ठ २७५. हिंदी और अुर्दू पद्योमें प्रचलित अुर्दू शब्द, निजाम रियासतके राजनैतिक तथा शिक्षासंबंधी अुर्दू शब्द, प्रत्यय, अुपसर्ग, मुहावरे, कहावते आदि ६५०० शब्दों और वाक्प्रचारोंके लिये हिंदी और मराठी इन दो भाषाओंमें प्रतिशब्द दिये हैं।

राष्ट्रभाषा-मराठी लघुकोष—

संपादक प. ग. र. वैशंपायन, पुणे मूल्य रु. २॥, सजिल्द रु. ३. दस हजार हिन्दी शब्दोंके लिये मराठी प्रतिशब्द और वाक्प्रचार जिसपॉकेट कोषमें दिये हैं।

मराठीसे हिंदी शब्दसंग्रह—

स-प ग र वैशंपायन, पुणे. मूल्य रु. ६. सफेद कागज. पृष्ठ ५३०. मराठीके १८,००० शब्द तथा २३०० वाक्प्रचारोंकेलिये हिंदी प्रतिशब्द तथा वाक्प्रचार जिस ग्रंथमें संग्रहित हैं।

गाँगा रहस्य—

(हिंदी अनुवाद), सस्करण ७ वाँ-ले. स्व. लोकमान्य तिलक. मू. रु. १०

कंपोज कला—

ले. 'मोनो नागरी'के निर्माता श्री. शं. रा. दाते. मुद्रणविषयपर अनूठी पुस्तक। मूल्य रु. २

हिंदी स्वाध्याय माला—

(८ पुस्तिकाओंका पहला संच प्रकाशित) हर पुस्तिकाका मूल्य ४६

ये पुस्तके अवधूत बुकडेपो गिरगाव मुबई ४ से भी मिलती हैं।

पुणे अ. वि. गृह प्रकाशन, पुणे २.

